CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

A Descriptive Catalogue of Manuscripts

IN THE

Bhattarkiya Granth Bhandar NAGAUR

CENTRE FOR JAIN STUDIES

University of Rajasthan, Jaipur

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

72.4

A
Descriptive Catalogue of Manuscripts

Presented by
[redacted]

Prof. B C. [redacted] Jain
Director
Centre for Jain Studies
University of Rajasthan
JAIPUR-4
20.7.84

IN THE

Bhattarkiya Granth Bhandar NAGAUR

3486

By :
Dr. P. C. Jain

Centre for Jain Studies
UNIVERSITY OF RAJASTHAN, JAIPUR
1981

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Published by :
Director,
Centre for Jain Studies
University of Rajasthan

Copies can be had direct from the Centre for Jain Studies
University of Rajasthan, Jaipur-4 [India]

Price Rs. 45·00

Printed at :

Kapoor Art Printers, Jaipur-3

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Foreword

Dr. P. C. Jain is already known to the Jain scholars through the publication of his first Volume of the Five-volume project on the Descriptive Catalogue of the Manuscripts collected in the Bhattarakiya Granth Bhandar, Nagaur. This collection is rich numerically as well as qualitatively. It contains 30,000 manuscripts in Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa, Rajasthani, Hindi, Marathi and Gujarati languages. Some of these manuscripts belong to the 12th Century A. D. Others not so old belong to the succeeding centuries including the 19th. History of Indian literature will not be complete without taking notice. of innumerable manuscripts which are still uncatalogued and hidden from the scholars' view. Rajasthan is specially rich in Jain manuscripts as this state has always been a citadel of Jainism for the long past. The manuscripts of Nagaur Bhandar relate to various subjects including the Agamas, Ayurveda, Subhasitas, tales, poems, dictionarries, **Carita**-literature, rhetorics, prosody, astrology, astronomy, logic, drama, music, Puranas, Tantra, Yoga, grammar, **vratas**, **Stotras**, **Mahatmya** etc. Some of these manuscripts are illustrated with beautiful paintings. In fact, the vast literature produced in medieval India reveals the nature and form of intellectual and creative activity and spiritual movement of the Indians. Much of what is contained in the **stotras**, **vratas**, **Mahatmyas** and the kindred literature manifests the living religion and culture of India gleaned through these works. This Bhandara has old manuscripts of known and published works. Such as the Samayasara of Acharya Kundakunda and more importantly it has some manuscripts, say about 150, which are not known to the scholarly world. In my trips abroad in recent years I found a growing interest in the rich treasure of the manuscripts which India possesses and which are still lying uncared for in the different Bhandaras. Jainas did not have a sectarian outlook in developing collections of the manuscripts. The catholic outlook of this community and its Saints has been mainly responsible in organising a broad-based collection of the manuscripts. While Jainism in its origin patronised the Prakrit, it

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

remains an historical fact that it extended full support to Sanskrit considered by some to be the language of the Brahmins and the Brahmanical or Vedic culture. Some of the great works were not only written in Sanskrit by the Jainas, many others were preserved and commented upon by them. Mallinatha who commented upon the works of Kalidasa and Bharavi is the shining example of this catholic tradition and patronage of the Sanskrit language and literature by the Jainas.

I need not commend this volume to the scholars, I should however be permitted to state very briefly some facts. This volume contains entries of 2,000 manuscripts. Each manuscript is serially numbered and is followed by the necessary details of the title, author, commentator, if any, number of folios, script, language, probable date, beginning and end of the work and remarks wherever necessary. Various appendices will be found useful by the researchers, more particularly the appendix giving the list of rare manuscripts.

After publication of the five volumes of this project, the Centre would promote cataloguing of the manuscripts in other Bhandaras in Rajasthan. The complete project is quite ambitious as it also aims at the publication of important manuscripts found in the Jain Bhandaras in Rajasthan. How long will it take for us is a matter of guess for me too. But I believe and trust the words of Bhavabhuti. "कालो ह्ययं निरवधि" :

Dated 14-6-81

R. C. Dwivedi
Dean, faculty of Arts &
Director, Centre for Jain Studies,
University of Rajasthan, Jaipur

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३५६६

विषय-सूची

प्रस्तावना :— I–xxx

ग्रन्थों के लिखने की परम्परा का विकास, लेखन सामग्री का उपयोग, पुस्तकों के प्रकार, उपलब्ध एक हजार वर्ष के ग्रन्थों में प्रयुक्त लेखन सामग्री— लिप्यासन, ताड़पत्र, कागज, कागज के पन्ने काटना, घुटाई, कपड़ा, काष्ठ पट्टिका, लेखनी, प्रकार, ओलिया, स्याही तथा उसके प्रकार—काली स्याही, एवं रूपहली स्याही, लाल स्याही, लेखक, लेखक के गुण, ग्रन्थों का रख रखाव, राजस्थान के प्रमुख ग्रन्थ-भण्डार, ग्रन्थ-सूचियों की अनुसंधान एवं इतिहास लेखन में उपयोगिता, नागौर का ऐतिहासिक परिचय, ग्रन्थ-भण्डार की स्थापना एवं विकास, भट्टारक परम्परा, ग्रन्थ के सम्बन्ध में, आभार आदि।

अध्यात्म, आगम, सिद्धान्त एवं चर्चा	१–२८
आयुर्वेद	२९–३३
उपदेश एवं सुभाषितावली	३४–३६
कथा—	३७–५२
काव्य—	५३–६७
कोश—	६८–७१
चरित्र—	७२–९२
चित्रित ग्रन्थ	९३–९८
छन्द एव अलंकार	९९–१०२
ज्योतिष	१०३–११६
न्याय शास्त्र	११७–११९
नाटक एवं संगीत	१२०–१२१
नीतिशास्त्र	१२२–१२३
पुराण	१२४–१३०
पूजा एवं स्तोत्र	१३१–१६२
मन्त्र एवं यन्त्र	१६३–१६६
योग	१६७–१६९
व्याकरण	१७०–१७९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्रत–विधान १८०–१८३

लोक विज्ञान १८४–१८५

श्रावकाचार ग्रौर १८६–१९७

ग्रवशिष्ट साहित्य १९८–२०३

परिशिष्ट—

(i) ग्रज्ञात एवं ग्रप्रकाशित ग्रन्थों की नामावली १९८–२०८

(ii) ग्रन्थानुक्रमणिका २०९–२४६

(iii) ग्रन्थकारानुक्रमणिका २४७–२६६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रस्तावना

ग्रन्थों के लिखने की परम्परा का विकास

प्राचीन काल में लेखनकला का प्रचलन नहीं था। लोगों की स्मृति इतनी तीव्र थी कि उन्हें कभी इसकी आवश्यकता ही नहीं पड़ी। शिक्षा पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से ही दी जाती थी। शिक्षा की यह परम्परा केवल जैनों तक ही सीमित नहीं थी अपितु जैनेतर समाज में भी यही परम्परा प्रचलित थी।

यही कारण है कि समस्त वैदिक वाङ्मय प्रारम्भ से ही मौखिक रूप से ही चला आ रहा था। विद्यार्थियों की स्मरणशक्ति इतनी तीव्र थी कि वे उच्चारण तक में बिना अशुद्धि किये पूरी वैदिक ऋचाओं को स्मरण कर लेते थे। इसी परम्परा के कारण वेदों को श्रुति भी कहा गया है।

जैन मान्यता है कि तीर्थंकरों द्वारा प्रतिपादित उपदेश मौखिक रूप से ही दिये गये थे। यद्यपि प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ ने हजारों लाखों वर्ष पूर्व ब्राह्मी लिपि का आविष्कार कर दिया था। लेकिन महावीर तक मौखिक परम्परा ही चलती रही।

भगवान् महावीर के निर्वाण के पश्चात् जब समूचे आगम साहित्य को मौखिक रूप से स्मरण नहीं किया जा सका तो आगम साहित्य को लिपिबद्ध करके सुरक्षित रखने के लिये विभिन्न नगरों में सभायें आयोजित की जाती रहीं। दिगम्बर सम्प्रदाय के अनुसार भूतबली पुष्पदन्त ने अवशिष्ट आगम साहित्य को लिपिबद्ध किया। जब कि श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार अंतिम वाचना देवर्द्धिगणि क्षमाक्षमण की अध्यक्षता में वीर निर्वाण सम्वत् ९८० में वल्लभी में समस्त आगमों को लिपिबद्ध किया गया। उसके बाद ग्रन्थों को लिपिबद्ध करने की परम्परा में अधिकाधिक विकास हुआ। इसके पूर्व भी कथंचित् आगम लिखाने का उल्लेख सम्राट् खारवेल के उल्लेख में पाया जाता है। अनुयोग-द्वार सूत्र में पुस्तक पत्रारूढ़ श्रुत को द्रव्य-श्रुत माना है।[1]

वल्लभी वाचना के पश्चात् तो मौखिक ज्ञान को लिपिबद्ध करने की होड़ सी लग गयी। यही नहीं, नये-नये ग्रन्थों का निर्माण किया जाने लगा। ग्रन्थों को लिखने, लिखवाने पढ़ने एवं सुनने में महान् पुण्य की प्राप्ति मानी जाने लगी।

श्रुतज्ञान की अभिवृद्धि में जैनाचार्यों, भट्टारकों, मुनियों एवं श्रावकों ने सविशेष योगदान दिया। हरिभद्र सूरि ने "योग-दृष्टि समुच्चय" में, "लेखना पूजना दानं" द्वारा पुस्तक, लेखन को योगभूमिका का अंग बतलाया है। "वद्धमान कहा" में पुस्तकलेखन के महत्त्व को इस प्रकार बतलाया है—

१—"से किं तं जाणयसरीर–भवीयसरीरवइरित्तं ? दव्वसुयं पत्तयपोत्थयलिहि।' पत्र–३४–१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एहु सत्थु जो लिहइ लिहावइ, पढ़इ पढ़ावइ कहइ कहावइ ।
जो णरु णारि एहु मणि भावइ, पुणह अहिउ पुण्यफल व पावइ ॥

इसी तरह "उपदेश-तरंगिणी" में ग्रन्थों के लिखने, लिखवाने, सुनने एवं रक्षा करने को निर्वाण का कारण बतलाया है—

ये लेखयन्ति जिनशासनं पुस्तकानि, व्याख्यानयन्ति च पठन्ति च पाठयन्ति ।
श्रवणन्ति रक्षणविधौ च समाद्रयन्ते, ते देव मर्त्यशिवशर्म नरा लभन्ते ॥

कुछ समय पश्चात् तो ग्रन्थों के अन्त में लिखी हुई प्रशस्तियों में पुस्तक-लेखन के महत्त्व का वर्णन किया जाने लगा—

ये लेखयन्ति सकलं सुधियोऽनुयोगं शब्दानुशासनमशेषमलंकृतीश्च ।
छन्दांसि शास्त्रमपरं च परोपकारसम्पादनैकनिपुणाः पुरुषोत्तमास्ते ॥९४॥

किं किं तैर्न न किं विवपितं दान-प्रदत्तं न किं ।
के वाऽऽपन्ननिवारिता तनुमतां मोहार्णवे मज्जताम् ॥९५॥

नो पुण्यं किमुपार्जितं किमु यशस्तारं न विस्तारितं ।
सत्कल्याणकलापकारणमिदं यैः शासनं लेखितम् ॥

इस प्रकार हस्तलिखित ग्रन्थों की पुष्पिकाओं तथा कुमारपाल प्रबन्ध, वस्तुपाल चरित्र, प्रभावक चरित्र, सुकृतसागर महाकाव्य, उपदेश तरंगिणी, कर्मचन्द आदि अनेकों रास एवं ऐतिहासिक चरित्रों में समृद्ध श्रावकों द्वारा लाखों करोड़ों के सद्व्यय से ज्ञान-कोश लिखवाने तथा प्रचारित करने के विशुद्ध उल्लेख पाये जाते हैं। शिलालेखों की भांति ही ग्रन्थ-लेखन-पुष्पिकाओं का बड़ा भारी ऐतिहासिक महत्त्व है। जैन राजाओं, मन्त्रियों एवं धनाढ्य श्रावकों के सत्कार्यों की विरुदावली में लिखी हुई प्रशस्तियां भी किसी खण्ड काव्य से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। गुर्जरेश्वर सिद्धराज, जयसिंह और कुमारपालदेव ने वहुत वड़े परिमाण में शास्त्रों की ताड़पत्रीय प्रतियां स्वर्णाक्षरी व सचित्रादि तक लिखवायीं थी। यह परम्परा न केवल जैन नरपति श्रावक-वर्ग में ही थी अपितु श्री जिनचन्द्र सूरि का अकवर द्वारा "युग-प्रधान" पद देने पर वीकानेर के महाराजा रायसिंह, कुंवर दलपतसिंह आदि द्वारा भी संख्यावद्ध प्रतियां लिखवाकर भेंट करने के उल्लेख मिलते हैं। एवं इन ग्रन्थों की प्रशस्तियों में वीकानेर, खम्भात आदि के ज्ञान-भण्डारों में ग्रन्थ स्थापित करने के विशद वर्णन पाये जाते हैं।

जैन श्रावकों ने अपने गुरुओं के उपदेश से वड़े-वड़े शास्त्र-भण्डार स्थापित किये हैं। भगवती सूत्र श्रवण करते समय गौत्तम-स्वामी के ३६ हजार प्रश्नों पर स्वर्ण मुद्रायें चढ़ाने का पेथड़साह, सोनी संग्रामसिंह आदि का एवं ३६ हजार मोती चढ़ाने का वर्णन मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्र के चरित्र में भी पाया जाता है। उन मोतियों के बने हुए चार-चार सौ वर्ष प्राचीन चन्दवा पुठिया आदि आज भी वीकानेर के वड़े उपाश्रय में विद्यमान हैं। जिनचन्द्र सूरि के उपदेश से जैसलमेर, पाटण, खम्भात, जालौर, नागौर आदि स्थानों में शास्त्र-भण्डार स्थापित होने का वर्णन उपाध्याय समयसुन्दर गणि कृत "कल्पलता" ग्रन्थ में भी पाया जाता है। धरणा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शाह मण्डन, धनराज और पेथड़शाह, पर्वत कान्हा, थारुशाह आदि ने ज्ञान-भण्डार स्थापित करने में अपनी-अपनी लक्ष्मी को मुक्त हस्त से व्यय किया था। थारुशाह का भण्डार आज भी जैसलमेर में विद्यमान है। जैन ज्ञान-भण्डारों में विना किसी धार्मिक भेद-भाव के ग्रन्थ संग्रहीत किये जाने लगे। यही कारण है कि कितने ही जैनेतर ग्रन्थों की पाण्डुलिपियां तो केवल जैन-ग्रन्थागारों में ही उपलब्ध होती हैं।

राजस्थान के जैन मन्दिरों में उपलब्ध एवं प्रतिष्ठापित ग्रन्थ संग्रहालय भारतीय संस्कृति एवं विशेषतः जैन-साहित्य एवं संस्कृति के प्रमुख केन्द्र हैं। राजस्थान में ऐसे ग्रन्थ भण्डारों की संख्या सैकड़ों में हैं और उनमें संग्रहीत पाण्डुलिपियों की संख्या तो लाखों में है। राजस्थान के इन भण्डारो में पाँच लाख से भी अधिक ग्रन्थों का संग्रह उपलब्ध होता है। ये शास्त्र भण्डार प्रत्येक गांव एवं नगर में जहाँ भी मन्दिर हैं, स्थापित हैं, और भारतीय वाङ्मय को सुरक्षित रखने का दायित्व लिये हुए हैं। ऐसे स्थानों में जयपुर, नागौर, जैसलमेर, बीकानेर, उदयपुर, कोटा, बून्दी, भरतपुर, अजमेर आदि नगरों के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं। वास्तव में इन ज्ञान-भण्डारों ने साहित्य की सैकड़ों अमूल्य निधियों को नष्ट होने से बचा लिया। अकेले जैसलमेर के ज्ञान-भण्डार को देखकर कर्नल टॉड, डा० व्यूहलर, डा० जैकोबी जैसे पाश्चात्य विद्वान् एवं भण्डारकर, दलाल जैसे भारतीय विद्वान् आश्चर्य चकित रह गये थे, और उन्हें ऐसा अनुभव होने लगा था कि मानों उनकी वर्षों की साधना पूरी हो गयी हो। मेरा मानना है कि यदि उक्त विद्वानों को उस समय नागौर, अजमेर एवं जयपुर के ग्रन्थ-भण्डारों को भी देखने का सौभाग्य मिल जाता तो सम्भवतः उनकी साहित्यिक धरोहर को देखकर नाँच उठते और फिर न जाने जैनाचार्यों की साहित्यिक सेवाओं पर कितनी श्रद्धांजलियां अर्पित करते। स्वय लेखक को राजस्थान के पचासों ग्रन्थ-भण्डारों को देखने का अवसर प्राप्त हुआ है। वास्तव में मुस्लिम युग में धर्मान्ध शासकों द्वारा इन शास्त्र-भण्डारों का विनाश नहीं किया होता अथवा हमारी स्वयं की लापरवाही से सैकड़ों, हजारों ग्रन्थ चूहों, दीमकों एवं सीलन में नष्ट नहीं हुए होते तो पता नहीं आज कितनी अधिक संख्या में इन भण्डारों में पाण्डुलिपियां होती। फिर भी जो कुछ आज अवशिष्ट हैं वही हमारे अतीत पर पर्याप्त प्रकाश डालती हैं, और उसी पर हम गर्व कर सकते हैं।

लेखन सामग्री का उपयोग

प्राचीनकाल में पुस्तकें किस प्रकार लिखी जाती थी? और लिखने के लिए किन-किन साधनों का उपयोग होता था? इन्हीं सब बातों पर विचार करने से पूर्व, ग्रन्थ किस-किस प्रकार के होते थे? यह जानकारी देना अधिक उपयुक्त होगा।

जैसे आजकल पुस्तकों के बारे में रॉयल, सुपर रॉयल, डेमी, क्राउन आदि अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उसी तरह प्राचीनकाल में अमुक आकार और प्रकार में लिखी जाने वाली पुस्तकों के लिए कुछ विशिष्ट शब्द प्रयुक्त होते थे। इस बारे में जैन-भाष्यकार, चूर्णिकार और टीकाकार जो जानकारी देते हैं वह जानने योग्य है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राचीनकाल में विविध आकार-प्रकार की पुस्तकें होने के उल्लेख दशवैकालिक सूत्र की हरिभद्रीय टीका[1], निशीथ चूर्णि[2], बृहत्कल्प सूत्र वृत्ति[3] आदि में पाये जाते हैं। इनके अनुसार पुस्तकों के पाँच प्रकार थे—[4]

गण्डी, कच्छपी, मुष्टि, संपुट तथा छेदपाटी। इनका संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है—

१. **गण्डी पुस्तक**—जो पुस्तक चौड़ाई और मोटाई में समान हो किन्तु विविध लम्बाई वाली ताड़पत्रीय पुस्तक को गण्डी पुस्तक कहते हैं। गण्डी शब्द का अर्थ कतली होता है, अर्थात् जो पुस्तक गण्डिका अर्थात् कतली जैसी हो, गण्डी-पुस्तक कही जाती है। आजकल जो छोटी-मोटी ताड़पत्रीय पुस्तक मिलती है उसको, एवं इसी पद्धति में लिखे कागज के ग्रन्थों को भी गण्डी-पुस्तक कहा जाता है।

२. **कच्छपी पुस्तक**—जो पुस्तक दोनों तरफ के छोरों में पतली हो तथा मध्य में कछुए की भांति मोटी हो, उसे कच्छपी पुस्तक कहते हैं। इस प्रकार की पुस्तकें इस समय देखने में नहीं आ रही हैं।

१—"गण्डी कच्छवि मुट्ठि, संपुडफलए तहा छिवाडी य। एय पुत्थयपणयं, वक्खाणमिणं भवे तस्स॥ बाहल्ल–पुहत्तेहिं, गण्डीपुत्थो उ तुल्लगो दीहो। कच्छवि अंते तणुओ, मज्झे पिहुलो मुणेयव्वो॥

चउरंगुलदीहो वा, वट्टागिइ मुट्ठिपुत्थगो अहवा. चउरंगुलदीहो च्चिय, चउरंसो होइ विन्नेओ॥

संपुडगो दुगमाई, फलगा वोच्छं छिवाड़िमेत्ताहे। तणुपत्तूसियरुवो, होइ छिवाड़ी बुहा बेंति॥

दीहो वा हस्सो वा, जो पिहुलो होइ अप्पबाहल्लो। तं मुणियसमयसारा, छिवाड़िपोत्थं भणतीह॥"

—दशकालिक हरिभद्रीय टीका, पत्र २५।

२—पोत्थगपणगं-दीहो बाहल्लपुहत्तेण तुल्ला चउरंसो गंडीपोत्थगो। अंतेसु तणुओ मज्झे पिहुलो अप्पबाहल्लो कच्छभी। चउरंगुलो दीहो वा वृत्ताकृति मुट्ठिपोत्थगो, अहवा चउरंगुलदीहो चउरंसो मुट्ठिपोत्थगो। दुमादिफलगा संपुडगं। दीहो हस्सो वा पिहुलो अप्पबाहल्लो छिवाड़ी, अहवा तणुपत्तेहिं उस्सितो छिवाड़ी।

—निशीथचूर्णी।

३—गंडी कच्छवि मुट्ठि, छिवाडी संपुडग पोत्थगा पंच।

४—गण्डीपुस्तकः कच्छपी पुस्तकः मुष्टिपुस्तकः सम्पुटफलकः छेदपाटी पुस्तकश्चेति पंच पुस्तकाः।

—बृ. क. सू. उ. ३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३. **मुष्टि पुस्तक**—जो पुस्तक चार अंगुल लम्बी हो और गोल हो उसको मुष्टि पुस्तक कहते हैं। अथवा जो चार अंगुल की चारों तरफ से चोखण्ड हो, तो भी मुष्टि-पुस्तक कही जाती है। छोटी-मोटी टिप्पणकाकार में लिखी जाने वाली पुस्तकों का इसमें समावेश होता है। दूसरे प्रकार में वर्तमान की छोटी-मोटी डायरियों का या हाथ पोथी जैसी लिखित गुटकाओं का समावेश होता है।

४. **संपुटफलक**—लकड़ी की पट्टियों पर लिखी हुई पुस्तकों का नाम संपुट-फलक होता है। यन्त्र, जम्बू-द्वीप, अढाई-द्वीप, लोकनालिका, समवशरण आदि की चित्रावली जो लकड़ी की पट्टिकाओं पर लिखी हों तो संपुट–फलक में समाविष्ट होती हैं। अथवा लकड़ी की पाट्टी पर लिखी पुस्तक को सम्पुट-पुस्तक कहते हैं।

५. **छेदपाटी**—कम पन्नों वाली पुस्तक को छेदपाटी पुस्तक कहते हैं, जो लम्बाई में कितनी ही हो किन्तु मोटाई में थोड़ी हो तो छेदपाटी कहलाती हैं।

उपर्युक्त सभी प्रकार की पुस्तकें सातवीं शती तक के लिखित प्रमाणों के आधार पर बताई गयी हैं। इस प्रकार की पुस्तकें आज एक भी उपलब्ध नहीं हैं।

उपलब्ध एक हजार वर्ष के ग्रन्थों में प्रयुक्त लेखन सामग्री

पुस्तक लेखन के आरम्भकाल के बाद का लेखनकला का वास्तविक इतिहास अंधेरे में डुबा हुआ होने से प्राचीन उल्लेखों के आधार पर उसके ऊपर जितना प्रकाश डाला जा सकता है उतना प्रयत्न किया गया है। अब उसके बाद वर्तमान में उपलब्ध विक्रम की ११वीं शती से २०वीं शती तक की लेखन-कला के साधन और उनके विकास के सम्बन्ध में कुछ प्रकाश यहाँ डाला जा रहा है—

लिप्यासन—राजप्रश्नीय सूत्र में "लिप्यासन"–लिपि + आसन=लिप्यासन का अर्थ मषीभाजन रूप में लिया है। पर हम यहाँ लिपि के आसन अथवा पात्र, तरीके के साधन में, ताड़पत्र, वस्त्र, कागज, लकड़ी की पट्टिया, भोजपत्र, ताम्रपत्र, रौप्यपत्र, सुवर्णपत्र, पत्थर आदि का समावेश कर सकते हैं।

गुजरात, मारवाड़, मेवाड़, कच्छ दक्षिण आदि प्रान्तों में वर्तमान में जो जैन-ज्ञान भण्डार हैं उन सबको देखने से स्पष्ट समझा जा सकता है कि पुस्तकें मुख्य रूप से विक्रम की तेरहवीं सदी के पहले ताड़पत्र और कपड़े दोनों पर ही लिखी जाती थीं। लेकिन इन दोनों में भी ताड़पत्र का विशेष प्रचार था। लेकिन बाद में कागज का आविष्कार हो जाने से कागज पर ही ग्रन्थ लिखे जाने लगे, और इस प्रकार धीरे-धीरे ताड़पत्र का युग क्रमशः लुप्त होता गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कपड़े पर पुस्तकें क्वचित् पत्राकार के रूप में लिखी जाती थी।[1] इसका उपयोग टिप्पणी के लिखने के लिये तथा चित्र, पट, मन्त्र, यन्त्र, लिखने के लिए ही विशेष प्रमाण में हुआ करता था। कपड़े पर लिखे ग्रन्थों में धर्म-विधि-प्रकरण वृत्ति, कच्छूलीरास[2] और त्रिषष्टि-शलाका-पुरुष चरित्र की प्रतियां पत्राकार के रूप में पायी जाती हैं। जो २५"×५" की लम्बाई और चौड़ाई की हैं। परन्तु लोकनालिका, अढाईद्वीप, जम्बूद्वीप, नवपद, ह्रींकार, घण्टाकर्ण, पंचतीर्थीपट आदि के चित्रवस्त्र पट पर प्रचुर परिमाण में पाये जाते हैं। पन्द्रहवीं शताब्दी तक के प्राचीन कई पंचतीर्थीपट भी पाए गये हैं।

भोजपत्र का उपयोग बौद्ध एवं वैदिक लोगों ने ही पुस्तकें लिखने में किया है। अद्यावधि एक भी जैन ग्रन्थ प्राचीन भोजपत्र पर लिखा हुआ नहीं मिला है। सिर्फ १८वीं एवं १९वीं सदी से ही यतियों ने मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र आदि के लिखने में इसका उपयोग किया है। किन्तु वह भी थोड़े परिमाण में।

मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र आदि के लेखन के लिए कांस्यपत्र,[3] ताम्रपत्र, रौप्यपत्र, स्वर्ण-

---

१. (क) "एकदा प्रातर्गुरुन् सर्वसाधूंश्च वन्दित्वा लेखकशालाविलोकनाय गतः। लेखकाः कागदपत्राणि लिखन्तो दृष्टाः। ततः गुरुपार्श्वे पृच्छा। गुरुभिरुचे—श्री चौलुक्यदेव ! सम्प्रति श्रीताड़पत्राणां त्रुटिरस्ति ज्ञानकोशे, अतः कागदपत्रेषु ग्रन्थलेखनमिति ॥" कुमारपाल प्रबन्ध पृष्ठ ९६।

(ख) श्री वस्तुपालमन्त्रिणा सौवर्णमषीमयाक्षरा एकासिद्धान्त प्रतिर्लेखिता। अपरास्तु श्रीताड़कागदपत्रेषु मषीवर्णाञ्चिताः ६ प्रतयः। एवं सप्तकोटिद्रव्य-व्ययेन सप्त सरस्वतीकोशाः लेखिताः ॥" उ० त० पृष्ठ १४२

२. संवत् १४०८ वर्षे चीबाग्रामे श्री नरचन्द्रसूरीणां शिष्येण श्री रत्नप्रभसूरीणां बांधवेन पंडित गुणभद्रेण कच्छूली श्रीपार्श्वनाथगोष्ठिक लींबाभार्या गौरी तत्पुत्र श्रावक जसा डूंगर तद्भगिनी श्राविका वींझीतिल्ही प्रभृत्येषां साहाय्येन प्रगुश्री श्री प्रभसूरिविरचितं धर्मविधिप्रकरणं श्री उदयसिंहसूरि विरचितां वृत्ति श्रीधर्मविधेग्रन्थस्य कार्तिक-वदिदशमी दिने गुरुवारे दिवसपाश्चात्यघटिकाद्वये स्वपितृमात्रोः श्रेयसे श्रीधर्मविधि ग्रन्थमलिखत् ॥ उदकानलचौरेभ्यो मूषकेभ्यस्तथैव च। कष्टेन लिखितं शास्त्रं यत्नेन परिपालयेत् ॥छ॥

३. कांस्यपत्र, ताम्रपत्र, रौप्यपत्र, अने सुवर्णपत्रमां तेमना केटलीकवार पंचधातुना मिश्रितपत्रमां लखाअेना ऋषिमण्डल, घण्टाकर्ण घोसहियो यंत्र, वीसो यंत्र वगेरे मंत्र-यंत्रादि जैनमन्दिरोमां घणे ठेकाणे होय छ। जैन पुस्तको लखवा माटे......... १

देखिये—भारतीय जैन श्रमण संस्कृति अने लेखन कला पृष्ठ—२७

वसुदेवहिण्डी प्रथम खंडमां ताम्रपत्र ऊपर पुस्तक लखवानो उल्लेख छेः

इयरेण तंबपत्तेसु तणुगेसु रायलक्खणं रएऊणं तिहलास्सेणं तिम्मेऊण तंवभायणे पोत्थओ पक्खित्तो, निक्खित्तो नयरवाहिं दुव्वावेदमज्झे। पत्र १८९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पत्र, पंचधातु आदि का अधिकांश उपयोग मन्त्र और यन्त्र लेखन में हुआ है। लेकिन जैन-पुस्तकों के लेखन में प्रयोग किया हो ऐसा देखने में नहीं आया है। राजाओं के दानपत्र ताम्रपत्रों पर लिखे जाते थे। जैन शैली में नवपद यन्त्र, विंशतिस्थानक यन्त्र, घण्टाकर्ण, ऋषिमण्डल आदि विविध प्रकार के यन्त्र, आज भी ताम्रपत्र पर लिखे जाते हैं और वे मन्दिरों में नाए जाते हैं। ताम्रपत्र पर लेखन का उल्लेख वसुदेवहिण्डी जैसे प्राचीन ग्रन्थों में भी पाया जाता है।

बौद्धों ने हाथी दांत, तथा उसके दांतों से बने हुए पन्नों का ग्रन्थ लेखन में उपयोग किया है। पर जैनों ने पुस्तकों के साधन जैसे आकंड़ी, कांवी, ग्रन्थी, दावड़ा, कुदड़ी आदि के वास्ते हाथी दांत का उपयोग किया है पर ग्रन्थलेखन में नहीं। इसी प्रकार रेशमी कपड़ा तथा चमड़ा की पाटली अथवा पट्टी चढ़ाए हों और उसके ऊपर ग्रन्थों के नाम वगैरह लिखे हों, पर स्वतन्त्र रूप से ग्रंथ लेखन में उसका उपयोग नहीं किया है। वृक्षों की छाल आदि का उपयोग जैनेतर ग्रंथों में हुआ है। अगुरुछाल पर संवत् १७७० में लिखी हुई ब्रह्मवैवर्तपुराण की प्रति बड़ौदा के ओरियेन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट में उपलब्ध हुई है।[1] जैन ग्रंथों में ऐसे उपादानों का उपयोग नहीं हुआ है। उपर्युक्त सभी साधनों पर संक्षिप्त में आगे प्रकाश डाला जा रहा है।

ताड़पत्र—ये ताड़ वृक्ष के पत्ते हैं। इस पेड़ का संस्कृत नाम तल अथवा ताल है, और गुजराती में इसको ताड़ कहते हैं ताड़ वृक्ष दो प्रकार के होते हैं—(१) खरताड़ और (२) श्रीताड़। गुजरात की भूमि पर जो ताड़ देखने में आता है वह खरताड़ है। इसके पत्र मोटे, लम्बे और चौड़ाई में छोटे होते हैं। ये पत्र झटका लगते ही टूट जाते हैं। अतः इनका उपयोग ग्रंथ लेखन में नहीं होता है। श्रीताड़ के पेड़ मद्रास, ब्रह्मादिदेशों में विशेष प्रमाण में पाए जाते हैं। उनके पत्र मुलायम, ३७"×३" से भी ज्यादा लम्बे. मोटे तथा कोमल होते हैं। इनके सड़ने का, और नमाने में भी एकाएक टूटने का भय नहीं रहता है। पुस्तक लिखने में इन्हीं ताड़पत्रों का प्रयोग किया जाता था।

कागज—कागज के लिए प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में कागद या कद्गल शब्द का प्रयोग हुआ है। जैसे आजकल अलग-अलग प्रान्तों में छोटा-मोटा झाड़ा-पतला, अच्छा-बुरा आदि अनेक जाति के कागज बनते हैं। उसी तरह पुराने जमाने से लेकर आज तक देश के प्रत्येक विभाग में काश्मीर, दिल्ली, पटना, सांगानेर, कानपुर, खम्भात, अहमदाबाद, कागजीपुरा (दौलताबाद के पास) आदि अनेक स्थानों में अपनी खपत और आवश्यकतानुसार कागज तैयार होता था। विविध जाति के कागजों में विशेषतः काश्मीर का काश्मीरी कागज, कानपुर का कानपुरी कागज, अहमदाबाद का अहमदाबादी और सांगानेर का सांगानेरी कागज सर्वोत्तम होते थे। प्राचीन ज्ञान-भण्डारों में प्राप्त कागज आज के कागज के अनुसार ही लगते हैं। आजकल तैयार होने वाला मिल का कागज तो प्राचीन कागज की तुलना में कम टिकाऊ है।

कागज के पन्ने काटना—कागज बड़े-बड़े आकार के तैयार होते थे। उसमें से अपनी आवश्यकता के माप का पन्ना काटने के लिए उस समय आज की भांति पेपर-कटर मशीन नहीं

---

१. भारतीय जैन श्रमण संस्कृति अने लेखन कला पृष्ठ-२८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थी। उस समय कागज को बांसों की चीपों या लोहे की चीपों के नीचे दवाकर हाथों से सावधानी पूर्वक काटा जाता था। तथा इसके लिये एक होशियार व्यक्ति की आवश्यकता होती थी।

घुटाई—पुस्तक लिखने के लिए सभी देशी कागजों की घुटाई की जाती थी। जिससे उनके ऊपर स्याही नहीं फूटती थी। कागज के बहुत दिनों तक पड़े रहने से अथवा बरसात व सर्दी के प्रभाव से उसका घूंट कम हो जाता था जिससे उसकी चिकनाहट कम हो जाती थी या हट जाती थी। चिकनाहट कम होने से अक्षर फूट जाया करते थे। इसके लिए उन पर पुनः पालिश चढ़ाना होता था। पालिश चढ़ाने के लिए कागजों अथवा पन्नों को फिटकड़ी के पानी में डुबोकर सुखाने के बाद, कुछ सूखा जैसा हो जाय तब उसको अकीक अथवा कसौटी अथवा किसी जाति के घूंटा से अथवा कोड़ा से घुटाई की जाती थी। जिससे अक्षर नहीं फूटते थे।

कपड़ा—पुस्तक लिखने के लिए अथवा चित्र यंत्र आदि के लेखन के लिए कपड़े पर गेहूँ या चावंल की कड़प लगाई जाती थी। कड़प लगाकर सुखा लेने के बाद उसको कसौटी आदि से घोट देने से कपड़ा चिकना लिखने लायक बन जाता था। पाटण के बखतजी के "केसरी जैन-भण्डार" में खादी के कपड़े के ऊपर लिखी हुई पुस्तक है। पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में भी कपड़े का एक १६वीं शताब्दी में लिखा हुआ ग्रंथ मिलता है।

काष्ठ पट्टिका—लेखन के साधन के रूप में काष्ठ पट्टिकाएं (लकड़ी की सादी अथवा रंगीन) भी उपयोग में आती थीं। पुराने जमाने में व्यापारी लोग अपने रोजीन्दा, कच्ची वही वगैरह को पट्टी पर लिख रखते थे। उसी प्रकार ग्रंथ की रचना करते समय ग्रंथ का कच्चा खड्डा लकड़ी की पाट्टी के ऊपर करते थे और निश्चित हुए बाद ही पाट्टी के ऊपर से पक्की नकल किया करते थे। लकड़ी की पट्टियों का स्थाई चित्रपट अथवा यंत्र, मंत्र चित्रित करने के लिए भी उपयोग होता था। उत्तराध्ययन वृति (सं० ११२९) को नेमिचन्द्राचार्य ने पट्टिका पर लिखा था जिसे सर्वदेव गणि ने पुस्तकारूढ़ किया था।[1]

लेखनी—जैसे आजकल लिखने में पैन और डॉटपैन का उपयोग होता है वैसे पहिले होल्डर (कलम) पैन्सिल आदि का उपयोग होता था। उससे पूर्व वांस वेंत आदि के अण्ट से लिखा जाता था। आजकल उसका प्रचलन अत्यधिक अल्पमात्रा में रह गया है। पर हस्तलिखित ग्रंथों को लिखने में आज भी कलम का उपयोग होता है।

कर्नाटक, सिंहल, उत्कल, ब्रह्म आदि देशों में जहाँ ताड़पत्र पर कोटकर पुस्तक लिखी जाती है वहाँ लिखने के लिए नोकदार सुइया की जरूरत होती है। कागजों पर

---

१. पट्टिकातोऽलिखच्चेमां, सर्वदेवाभिधो गणिः।
आत्मकर्मक्षयायाथ, परोपकृति हेतवे॥

—उत्तराध्ययन टीका नेमिचन्द्रीया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यन्त्र व लाइने बनाने के लिए जुजवल का प्रयोग किया जाता था। जो लोहे के चिमटे के आकार की होती थी। आजकल के होल्डर की नीव इसी का विकसित रूप प्रतीत होती है। कलमों के घिस जाने पर उसे चाकू से छील कर पतला कर लिया जाता था, तथा बीच में से एक खड़ा चीरा कर दिया जाता था। जिससे आवश्यकतानुसार स्याही नीचे उतरती रहती थी।

लेखनियों के शुभाशुभ, कई प्रकार के गुण-दोषों को बताने वाले अनेक श्लोक पाए जाते हैं। जिसमें उनकी लम्बाई, रंग, गांठ आदि से ब्राह्मणादि वर्ण, आयु, धन, सन्तान हानि, वृद्धि आदि के फलाफल लिखे हैं। उनकी परीक्षा पद्धति ताड़पत्रीय युग की पुस्तकों से चली आ रही है। रत्न परीक्षा में रत्नों के श्वेत, पीत, लाल और काले रंग ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की भांति लेखनी के भी वर्ण समझना चाहिए। इसका किस प्रकार उपयोग करना, इसका पुराना विधान तत्कालीन विश्वास व प्रथाओं पर प्रकाश डालता है।[1]

प्रकार—चित्रपट, यन्त्र आदि में गोल आकृतियां करने के लिए एक लोहे का प्रकार होता था। यह प्रकार जिस प्रकार की छोटी-मोटी गोल आकृति बनानी हो उस प्रमाण में छोटा-बड़ा बनाया जाता था। आज भी यह मारवाड़ वगैरह में बनाया जाता है। आजकल इसके स्थान में कम्पास भी काम में लाया जाता है।

ओलिया, उसकी बनावट और उत्पत्ति—प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों को एकधार सीधी लाइन में लिखे हुए देखने से मन में यह प्रश्न उठता है, कि यह लेख सीधी पंक्ति में किस प्रकार लिखा गया होगा? इस शङ्का का उत्तर यह ओलिया देती है। ओलिया को मारवाड़ी में लहीआवो फाटीऊ के नाम से जानते हैं। लेकिन इसका वास्तविक उत्पत्ति या अर्थ क्या है? यह समझ में नहीं आता है। इसका प्राचीन नाम ओलियु मिलता है। ओलियु शब्द संस्कृत आलि

---

1. ब्राह्मणी श्वेतवर्णा च, रक्तवर्णा च क्षत्रिणी।
   वैश्यवी पीतवर्णा च, असुरीश्यामलेखिनी ॥१॥
   श्वेते सुखं विजानीयात्, रक्ते दरिद्रता भवेत्।
   पीते च पुष्कला लक्ष्मीः, असुरी क्षयकारिणी ॥२॥
   चितांग्रे हरते पुत्रमधोमुखी हरते धनम्।
   वामे च हरते विद्यां, दक्षिणालेखिनी लिखेत् ॥३॥
   अग्रग्रन्थिः हरेदायुर्मध्यग्रन्थिर्हरेद्धनम्।
   पृष्ठग्रन्थिर्हरेत् सर्वं, निर्ग्रन्थिर्लेखिनी लिखेत् ॥४॥
   नवांगुलमिता श्रेष्ठा, अष्टौ वा यदि वाऽधिका।
   लेखिनी लेखयेन्नित्यं, धनधान्यसमागमः ॥५॥
   अष्टांगुलप्रमाणेन, लेखिनी सुखदायिनी।
   हीनाय हीनकर्म स्यादधिकस्याधिकं फलम् ॥१॥
   आद्यग्रन्थिर्हरेदायुर्मध्यग्रन्थिर्हरेद्धनम्।
   अन्त्यग्रन्थिर्हरेत् सौख्यं, निर्ग्रन्थिर्लेखिनी शुभा ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओर प्राकृत ओलि ओर गुजराती ओल शब्द से बना है। लकड़ी के फलक या गत्ते के मजबूत पुठे पर छेद कर मजबूत सीधी डोरी छोटे-बड़े अक्षरों के चौड़े-सकड़े अन्तरालानुसार दोनों ओर कसकर बांध दी जाती है और उस पर रंग–रोगन लगाकर तैयार किये फाटिये पर कागज को रख कर अगुलियों द्वारा तान कर लकीर चिह्नित कर ली जाती है। तथा ताड़पत्रीय पुस्तकों पर छोटी सी बिन्दु सीधी लकीर आने के लिए कर दी जाती थी।

स्याही पुस्तक लेखन में अनेक प्रकार की स्याहियों का प्रयोग दृष्टिगत होता है। परन्तु सामान्य रूप से लेखन के लिए काली स्याही ही सार्वत्रिक रूप में काम में लाई गई है। सोने–चांदी की स्याही से भी पुस्तकें लिखी जाती थीं, पर सोना-चांदी के महार्घ्यता के कारण उसका उपयोग अत्यल्प परिमाण में ही विशिष्ट शास्त्र लेखन में श्रीमन्तों द्वारा होता था। लाल रंग का प्रयोग बीच-बीच में प्रकरण समाप्ति व हांसिए की रेखा में तथा चित्रादि के आलेखन में प्रयोग होता था।

भारत में हस्तलेखों की स्याही का रंग बहुत पक्का बनाया जाता था। यही कारण है कि वैसी पक्की स्याही से लिखे ग्रंथों के लेखन में चमक अब तक बनी हुई है। विविध प्रकार की स्याही बनाने के नुस्के विविध ग्रंथों में दिये हुए है। भारतीय जैन श्रमण संस्कृति अने लेखन कला में जो नुस्खे दिये हुए हैं वे इस प्रकार हैं—

प्रथम प्रकार—

"सहवर–भृंग–त्रिफलाः, कासीसं लोहमेव नीली च
समकज्जल–बोलयुता, भवति मषी ताड़पत्राणाम् ॥

व्याख्या—"सहवरेति काटांसेहरीओ (धमासो) भृंगेति भांगुरओ। त्रिफला प्रसिद्धैव। कासीसमिति कसीसम्, येन काष्ठादि रज्यते। लोहमिति लोहचूर्णम्। नीलीति गलीनिष्पादको वृक्षः तद्रसाः। रसं विना सर्वेषामुत्कल्य क्वाथः क्रियते, स च रसोऽपि। समवर्तितकंज्जल–बोलयोर्मध्ये निक्षिप्यते, ततस्ताड़पत्रमषी भवतीति ॥"

अर्थात्—धमासा, जलभांगरा का रस, त्रिफला, कसीस, लोहचूर्ण को उबाल कर, क्वाथ बनाकर इसके बराबर परिमाण में गली के रस को मिलाकर, काजल व बीजाबोल मिलाने से स्याही बन जाती है। इसका उपयोग ताड़पत्र पर लिखने के लिए होता है।

दूसरा प्रकार—

कज्जल पा (पो) इण बोलं, भूमिलया पारदस्स लेसं च।
उसिणजलेण विघसिया, वडिया काऊण कुट्टिज्जा ॥१॥

तत्तजलेण व पुणओ. घोलिज्जंती दंढ मसी होई।
तेण विलिहिया पत्ता, वच्चह रयणीइ दिवसु व्व ॥२॥

अर्थात्—काजल, पोयण, बीजाबोल, भूमितला, जलभांगरा और पारे को उबलते हुए पानी में मिलाकर, ताम्बे की कड़ाई में सात दिन तक घोटकर एक रस करलें। फिर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उसकी वड़ियां वनालें और उन्हें कूट कर रखें और फिर जब आवश्यक हो उसे गरम पानी में खूब मसल लें स्याही तैयार हो जाती है।[1]

तीसरा प्रकार—

"कोरड़ए वि सरावे, अंगुलिआ कोरडम्मि कज्जलए।
मद्दह सरावलग्गं, जावं चिय चि (क्क) गं मुअइ ॥३॥
पिचुमंदगुंदलेसं, खायरगुंदं व वीयजलमिस्सं।
भिज्जवि तोएण दढं, मद्दह जा तं जलं सुसई ॥४॥
इति ताड़पत्रमस्याम्नायः॥"

अर्थात्—नये काजल को मिट्टी के कोरे सिकोरे में अंगुली से इतना मलें कि उसका चिकनापन छूट जाये। फिर उसे नीम या खेर के गोंद के साथ बीआजल के मिश्रण में भिगोकर खूब घोंटे जब तक कि पानी सूख न जावे, फिर वड़ियां वनालें।

चौथा प्रकार—

निर्यासात् पिचुमन्दजाद् द्विगुणितो बोलस्ततः कज्जलं,
संजातं तिलतैलतो हुतवहे तीव्रातपे मर्दितम्।
पात्रे शूल्वमये तथा शन (?) जलैर्लाक्षारसैर्भावितः।
सद्भल्लातक-भृंगराजरसयुक् सम्यग् रसोऽयं मषी ॥१॥

अर्थात्—नीम का गोंद, उससे दूगना वीजावोल, उससे दूगने काजल को गोमूत्र के साथ घोटकर ताम्रपात्र में गरम करें। सूखने पर थोड़ा-थोड़ा पानी देते रहें, फिर इसमें शोधा हुआ भिलावा तथा भांगरे का रस डालें, उत्तम स्याही बन जावेगी।

पांचवा प्रकार—

ब्रह्मदेश, कर्नाटक आदि देशों में ताड़पत्र पर लोहे की सूई से कोर कर लिखा जाता है। उन अक्षरों में काला रंग लाने के लिए नारियल की टोपसी या बादाम के छिलकों को जलाकर, तेल में मिलाकर, कुरेदे हुए अक्षरों पर काले चूर्ण को पोतकर, कपड़े से साफ कर देते हैं। इससे चूर्ण अक्षरों में भरा रह जाता है, और अक्षर स्पष्ट पढ़ने में आ जाते हैं। उपर्युक्त सभी प्रकार, ताड़पत्र पर लिखने की स्याही के हैं।

---

१. श्लोक में तो यह नहीं वताया गया है कि उक्त मिश्रण को कितनी देर घोंटना चाहिये। परन्तु जयपुर में कुछ परिवार स्याही वाले ही कहलाते हैं। त्रिपोलिया के बाहर उनकी प्रसिद्ध दूकान थी। वहाँ एक कारखाने के रूप में स्याही बनाने का कार्य चलता था। महाराजा के पोथीखाने में भी "सरखराकार" स्याही तैयार किया करते थे। इन लोगों से पूछने पर ज्ञात हुआ कि स्याही की घुटाई कम से कम आठ पहर होनी चाहिए। मात्रा अधिक होने पर अधिक समय तक घोंटना चाहिए।

—गोपालनारायण बहुरा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसी प्रकार कागज और कपड़े पर लिखने की स्याही के बनाने की भी कई विधियां हैं:—

पहली विधि—

जितना काजल उतना बोल, तेथी दूणा गुंद झकोल।
जो रस भांगरा नो पड़े, तो अक्षरे-अक्षरे दीवा बले॥

दूसरी विधि—

मष्यर्धे क्षिप सद्गुन्दं गुन्दार्धे बोलमेव च,
लाक्षाबीयारसेनोच्चैर्मर्दयेत् ताम्रभाजने॥१॥

अर्थात्—काजल से आधा गोंद, गोंद से आधा बीजाबोल, लाक्षारस तथा बीआरस के साथ ताम्रपात्र में रगड़ने से काली स्याही तैयार होती है।

तीसरी विधि—

बीआ बोल अनइल लक्खा रस, कज्जल वज्जल (?) नइ अंबारस।
"भोजराज" मिसी नियाद्, पान ,अो.फाटई मसी बनि जाई॥

चौथी विधि—

लाख टांक वीस मेल, स्वाग टांक पांच मेल।
नीर टांक दो सौ लेई हांडी में चढाइये॥
ज्यों लों आग दीजे त्यों लों और खार सब लीजे।
लोदर खार बाल-बाल पीस के रखाइये॥
मीठा तेल दीय जल, काजल सो ले उतार।
नीकी विधि पिछानी के ऐसे ही बनाइए॥
चाइक चतुर नर लिखके अनूप ग्रन्थ।
बांच बांच बांच रीझ-रीझ मौज पाइए॥

पांचवीं विधि—

स्याही पक्की करने की विधिः—लाख चौखी अथवा चौपड़ी ६ पैसे भर लेकर तीन सेर पानी में डालें, २ पैसा भर सुवागा डालें, ३ पैसा भर लोध डालें, फिर उसको गरम करें और जब पानी तीन पाव रह जावे तब उतार लें। बाद में काजल १ पैसा भर डाल कर घोंट-घोंट कर सुखा लें। आवश्यकतानुसार इसमें से लेकर शीतल जल में भिगो दें। तो पक्की स्याही तैयार हो जाती है।

छठी विधि—

काजल ६ टांक, बीजाबोल १२ टांक, बेर का गोंद ३६ टांक, अफीम १/२ टांक, अलता पोथी ३ टांक, फिटकड़ी कच्ची १/२ टांक, नीम के घोंटे से ताम्बे के बरतन में सात दिन तक घोंटे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपर्युक्त नुस्खे मुनि श्री पुण्यविजय जी ने यहाँ वहाँ से लेकर दिये हैं। उनका अभिमत है कि पहली विधि से बनी स्याही सर्वश्रेष्ठ है। अन्य स्याही पक्की तो है पर कागज-कपड़े को क्षति पहुँचाती है। लकड़ी की पट्टी पर लिखने के लिए सब ठीक हैं।[1]

सुनहरी एवं रूपहली स्याही--

सोना और चांदी की स्याही बनाने के लिए वर्क को खरल में डालकर धोक के गूंद के स्वच्छ जल के साथ खूब घोंटते जाना चाहिए। बारीक हो जाने पर मिश्री का पानी डालकर हिलाना चाहिए। स्वर्ण चूर्ण नीचे वैठ जाने पर पानी को धीरे-धीरे निकाल देना चाहिए। इस प्रकार तीन-चार धुलाई पर गूंद निकल जायेगा और सुनहरी या रूपहली स्याही तैयार हो जावेगी।

लाल स्याही--

हिंगुल को खरल में मिश्री के पानी के साथ खूब घोंटकर ऊपर आते हुए पीलास लिए हुए पानी को निकाल दें। इस तरह दस पन्द्रह बार करने से पीलास बाहर निकल जावेगा और शुद्ध लाल रंग रह जावेगा। फिर उसे मिश्री और गूंद के पानी के साथ घोंट-कर एक रस कर लें, फिर सुखा कर, बड़ीयां बना लें और आवश्यकतानुसार पानी में घोल कर स्याही वनालें।

लेखक—

"लेखक" शब्द लेखन-क्रिया के कर्त्ता के लिए प्रयुक्त होता है। लेखक के पर्याय-वाची शब्द जो भारतीय परम्परा में मिलते है वे हैं[2]—लिपिकार या लिविकार या दिपिकार। इस शब्द का प्रयोग चतुर्थ शती ई०पू० से हुआ मिलता है। अशोक के अभिलेखों में भी इसका कई बार उल्लेख हुआ है। इनमें यह दो अर्थों में आया है—प्रथम तो लेखक, दूसरा शिलाओं पर लेख उत्कीर्ण करने वाला व्यक्ति। संस्कृत कोषों में इसे लेखक का ही पर्यायवाची माना गया है। जैसे अमरकोश में—

"लिपिकारोऽक्षरचणो.क्षरऽचु-चुश्च लेखके"।

मत्स्यपुराण में लेखक के निम्न गुण बताये गये हैं—

लेखक के गुण—

सर्वदेशाक्षरभिज्ञः सर्वशास्त्रविशारदः।
लेखकः कथितो राज्ञः सर्वाधिकरणेषु वै॥

---

१. इसी वात को स्पष्ट करते हुए मुनि जी ने वताया है कि जिस स्याही में लाख, कत्था और लोध पड़ा हो तो वह स्याही कपड़े और कागज पर लिखने के काम की नहीं होती है। इससे कपड़े एवं कागज तम्बाकू के पत्ते जैसे हो जाते हैं।

—भारतीय जैन श्रमण संस्कृति अने लेखन कला पृष्ठ ४२

२. पाण्डे, आर० बी०, इण्डियन पालायोग्राफी पृष्ठ ९०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शीर्षोपेतान् सुसंपूर्णान् शुभश्रेणिगतान् समान् ।
अक्षरान् वै लिखेद्यस्तु लेखकः स वरः स्मृतः ॥

उपायवाक्यकुशलः सर्वशास्त्रविशारदः ।
बह्वर्थवक्ता चाल्पेन लेखकः स्यान्नृपोत्तम ॥

वाचाभिप्रायः तत्वज्ञो देशकालविभागवित् ।
अनाहार्यो नृपे भक्तो लेखकः स्यान्नृपोत्तम ॥

अध्याय, १८९

गरुड़-पुराण में लेखक के निम्न गुण बताये गये हैं—

मेधावी वाक्पटुः प्राज्ञः सत्यवादी जितेन्द्रियः ।
सर्वशास्त्रसमालोकी ह्यर्षे साधु सः लेखकः ॥

ऊपर के श्लोकों में लेखक के जिन गुणों का उल्लेख किया गया है, उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण है "सर्वदेशक्षराभिज्ञः"—समस्त देशों के अक्षरों का ज्ञान लेखक को अवश्य होना चाहिये। साथ ही "सर्वशास्त्रसमालोकी"—समस्त शास्त्रों में लेखक की समान गति होनी चाहिए।

ऊपर उद्धृत पौराणिक श्लोकों में जिस लेखक की गुणावली प्रस्तुत की गई है, वह वस्तुतः राज-लेखक की है। उसका स्थान और महत्त्व लिखिया या लिपिकार के जैसा माना जा सकता है। हिन्दी में लेखक मूल रचनाकार को भी कहते हैं। लिपिकार को भी विशेषार्थक रूप में लेखक कहते हैं।

मन्दिरों, सरस्वती तथा ज्ञान-भण्डारों में लेखक-शालाओं के उल्लेख मिलते हैं। "कुमारपाल प्रबन्ध" में इसका उल्लेख इस प्रकार आया है—"एकदा प्रातर्गुरून् सर्वसाधूंश्च वन्दित्वा लेखकशाला विलोकनाय गतः। लेखकाः कागदपत्राणि लिखन्तो दृष्टाः।[1] जैनधर्म में पुस्तक लेखन को महत्त्वपूर्ण और पवित्र कार्य माना है। आचार्य हरिभद्रसूरि ने "योग-दृष्टि-समुच्चय" में लेखना पूजना दान" में श्रावक के नित्य कृत्यों में पुस्तक लेखन का भी विधान किया है। जैन ग्रन्थों से यह भी विदित होता है कि ग्रन्थ रचना के लिए विद्वान लेखक को विद्वान शिष्य और श्रमण विविध सूचनायें देने में सहायता किया करते थे।[2] ऐसी भी प्रथा थी कि ग्रन्थ

---

१. कुमारपाल प्रबन्ध पृष्ठ ९६।

२. (क) "अणहिल्लवाडयपुरे, रइयं सिज्जंससामिणो चरियं।
साहज्जेणं पंडियजिण चन्द्रगणिस्स सीसस्स ॥"

— भगवति वृत्ति अभयदेवीयाः

(ख) साहेज्जं सव्वेहिं कयं...... ...... समित्थ गंधम्मि।
नयकित्तिवुहेणं पुण, विसेसओ सोहणाईहिं।"

—अरिष्टनेमिचरित्र रत्नप्रभीय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रचनाकार अपने विषय के मान्य शास्त्रवेत्ता और आचार्य के पास अपनी रचना संशोधनार्थ भेजा करते थे। उनसे पुष्टि पाने के बाद ही रचनाओं की प्रतियां कराई जाती थीं। ग्रन्थ लेखन या लेखक का कार्य पहले ब्राह्मणों के हाथों में रहा, बाद में "कायस्थों" के हाथों में चला गया। "कायस्थ" लेखकों का व्यवसायी वर्ग था। विज्ञानेश्वर ने याज्ञवल्क्य स्मृति (१/३३६) की टीका में मूल पाठ में आये कायस्थ शब्द का अर्थ लेखक ही किया है—"कायस्थगणका लेखकाश्च"। इसमें सन्देह नहीं कि कायस्थ वर्ग व्यवसायिक लेखकों का वर्ग होता था। यही आगे चलकर जाति के रूप में परिणत हो गया। कायस्थों का लेखन बहुत सुन्दर होता था। डॉ० हीरालाल माहेश्वरी ने निम्न दस प्रकार के लिपिकार बताये हैं :—

(१) जैन/श्रावक या मुनि

(२) साधु

(३) गृहस्थ

(४) पढ़ाने वाला (चाहे कोई हो)

(५) कामदार (राजघराने के लिपिक)

(६) दफ्तरी

(७) व्यक्ति विशेष के लिए लिखी गई प्रति का लिपिक कोई भी हो सकता है।

(८) अवसर विशेष के लिए लिखी गई प्रति का लिपिक कोई भी हो सकता है।

(९) संग्रह के लिए लिखी गई प्रति का लिपिक कोई भी हो सकता है।

(१०) धर्म विशेष के लिए लिखी गई प्रति का लिपिक कोई भी हो सकता है।

लेखक की साधन सामग्री—

लेखक को लेखन कार्य के लिए अनेक प्रकार की सामग्री की आवश्यकता रहती थी। एक श्लोक में "क" अक्षर वाली १७ वस्तुओं की सूची मिलती है[१]—(१) कुंपी (दवात), (२) काजल (स्याही), (३) केश (सिंह के बाल या रेशम), (४) कुश (दर्भ), (५) कम्बल, (६) कांबी, (७) कलम, (८) कृपाणिका (छुरी), (९) कतरनी (कैंची), (१०) काष्ठ पट्टिका, (११) कागज, (१२) कीकी (आंखें), (१३) कोठड़ी (कमरा), (१४) कलमदान, (१५) क्रमण-पैर, (१६) कटिकमर और (१७) कंकड़।

लेखक की निर्दोषता—

जिस प्रकार ग्रन्थकार अपनी रचना में हुई स्खलना के लिए क्षमाप्रार्थी बनता है वैसे ही लेखक अपनी परिस्थिति और निर्दोषता प्रकट करने वाले श्लोक लिखता है—

---

१. भारतीय जैन श्रमण संस्कृति अने लेखन कला,—पृष्ठ ५५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अदृष्टदोषात्मतिविभ्रमाद्वा, यदर्थहीनं लिखितं मयाऽत्र ।
तत् सर्वमार्यैः परिशोधनीयं, कोपं न कुर्यात् खलु लेखकस्य ॥

यादृशं पुस्तके दृष्टं, तादृशं लिखितं मया ।
यदि शुद्धमशुद्धं वा, मम दोषो न दीयते ॥

भग्नपृष्ठिकटिग्रीवा, वक्रदृष्टिरधोमुखम् ।
कष्टेन लिखितं शास्त्रं, यत्नेन परिपालयेत् ॥

बद्धमुष्टिकटिग्रीवा, मंद दृष्टिरधोमुखम् ।
कष्टेन लिखितं शास्त्रं, यत्नेन परिपालयेत ॥

लघु दीर्घ पदहीरा. वंजरणहीरा लखारणं हुई ।
अजाणपरणइ मूढपणइ पंडत हुई ते सुधकरी भरण्ज्यो ॥ इत्यादि ।

ग्रन्थसुरक्षा के लिए शास्त्रभण्डारों की स्थापना—

ग्रन्थों की सुरक्षा के सम्बन्ध में ओझाजी[1] ने यह टिप्पणी दी है कि ताड़पत्र, भोजपत्र या कागज या ऐसे ही अन्य लिप्यासन यदि बहुत नीचे या बहुत भीतर दाब कर रखे जाएं तो दीर्घ-जीवी हो सकते हैं। पर यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि ऐसे दबे हुए ग्रन्थ भी ई० सन की पहली दूसरी शताब्दी से पूर्व के प्राप्त नहीं होते।

इसका एक कारण तो भारत पर विदेशी आक्रमणों का चक्र हो सकता है। ऐसे कितने ही आक्रमणकारी भारत में आये जिन्होंने मन्दिरों, मठों, विहारों, पुस्तकालयों, नगरों, बाजारों को नष्ट और ध्वस्त किया। अपने यहाँ भी कुछ राजे महाराजे ऐसे हुए हैं जिन्होंने ऐसे ही कृत्य किए। अजयपाल के सम्बन्ध में टॉड ने लिखा है कि—इसके शासन में सबसे पहला कार्य यह हुआ कि उसने अपने राज्य के सब मन्दिरों को, वे आस्तिकों के हों या नास्तिकों के, जैनों के हों या ब्राह्मणों के नष्ट करवा दिया।[2] इसी में आगे लिखा है कि समधर्मानुयायियों के मतभेदों और वैमनस्यों के कारण भी लाखों ग्रन्थों की क्षति पहुँची है। उदाहरणार्थ तपागच्छ और खत्तरगच्छ के जैन धर्म के भेदों के आपसी कलह के कारण ही पुराने ग्रन्थों का नाश अधिक हुआ है और मुसलमानों द्वारा कम।[3]

अतः इन परिस्थितियों के कारण शास्त्रों की सुरक्षा के लिए ग्रन्थागारों या पोथीखानों या शास्त्र भण्डारों को भी ऐसे रूप में बनाने की समस्या आई, कि किसी आक्रमणकारी को आक्रमण करने का लालच ही न हो पाए। इसलिए ये भण्डार तहखानों में रखे गये।[4]

---

१. भारतीय प्राचीन लिपिमाला, पृष्ठ १४४-४५
२. टॉड, जेम्स–पश्चिम भारत की यात्रा, पृष्ठ २०२
३. वही, पृष्ठ २६८
४. वही, पृष्ठ २४६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डा. कासलीवाल ने बताया कि अत्यधिक असुरक्षा के कारण ग्रन्थ भण्डारों को सामान्य पहुँच से बाहर के स्थानों पर स्थापित किया गया। जैसलमेर में प्रसिद्ध जैन भण्डार इसलिए बनाया गया कि उधर रेगिस्तान में आक्रमण की कम सम्भावना थी। साथ ही मन्दिर में भू-गर्भस्थ कक्ष बनाए जाते थे, और आक्रमण के समय ग्रन्थों को इन तहखानों में पहुँचा दिया जाता था। सांगानेर, आमेर, नागौर, मौजमाबाद, अजमेर, फतेहपुर, दूनी मालपुरा तथा कितने ही अन्य मन्दिरों में आज भी भू-गर्भित कक्ष हैं। जिनमें ग्रन्थ ही नहीं मूर्तियां भी रखी जाती हैं।

इन उल्लेखों से स्पष्ट होता है कि ग्रन्थों की रक्षा की दृष्टि से ही पुस्तकालयों के स्थान चुने जाते थे। और उन स्थानों में सुरक्षित कक्ष भी उनके लिए बनवाये जाते थे। साथ ही उनका उपर का रूप भी ऐसा बनाया जाता था कि आक्रमणकारी का ध्यान उस पर न जा पाये।

ग्रन्थों का रख रखाव—

ग्रन्थों की सुरक्षा, के एवं संग्रह की दृष्टि से जैन समाज ने सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। उन्होंने प्रत्येक पाण्डुलिपि के दोनों ओर कलात्मक पुट्ठे लगाये। कभी-कभी ऐसे पुट्ठों की संख्या एक से अधिक भी होती थी। ये पुट्ठे कागज के ही नहीं किंतु लकड़ी के भी होते थे। ग्रंथ को दोनों पुट्ठों के बीच में रखने के पश्चात् ग्रन्थ को वेष्टन में बांधा जाता था। "रक्षेत् शिथिलबंधनात्" का मन्त्र इन्हें खूब याद था। वेष्टन में लपेटने के पश्चात् उस पर डोरी (फीता) से कसकर बांधा जाता था। जिससे हवा, सीलन एवं दीमक से उसे सुरक्षित रखा जा सके। आज से २०० वर्ष पूर्व तक ऐसे वेष्टनों को मोटे कपड़े के बोरों में रख दिया जाता था और उसको डोरी से बाँध दिया जाता था। आमेर शास्त्र भण्डार में पहिले सारे ग्रन्थ इसी तरह रखे जाते थे। इससे ग्रन्थों को सुरक्षित रखने में पर्याप्त सहायता मिली। ताड़पत्र अथवा कागज पर लिखे हुए ग्रन्थों के बीच में एक धागा पिरोया हुआ होता था, जिसे ग्रन्थि कहा जाता था। कालान्तर में ग्रन्थि से बांधने के कारण ही शास्त्रों को ग्रन्थ के नाम से जाना जाने लगा। इसके पश्चात् ग्रन्थों को तलघर में रखा जाता था तथा चूहों, दीमकों एवं सीलन से उनकी पूर्ण सुरक्षा की जाती थी।

सचित्र ग्रन्थों की सुरक्षा के विशेष उपाय किये जाते थे। प्रत्येक चित्र के ऊपर एक बारीक लाल कपड़ा रखा जाता था। जिससे कि चित्र का रंग खराब न हो सके। साथ ही ग्रन्थ के शेष भाग पर भी चित्र का कोई असर नहीं हो। ग्रन्थों की सुरक्षा के लिए निम्न पद्य ग्रन्थों के अन्त में लिखा रहता था—

"जलाद् रक्षेत् स्थलाद् रक्षेत्, रक्षेत् शिथिलबन्धनात्
मूर्खहस्ते न दातव्या, एवं वदति पुस्तिका"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"अग्ने रक्षेत्, जलाद् रक्षेत् मूषकेभ्यो विशेषतः ।
कष्टेन लिखितं शास्त्रं, यत्नेन परिपालयेत् ।।
उदकानिलचौरेभ्यो, मूषकेभ्यो हुताशनात् ।
कष्टेन लिखितं शास्त्रं यत्नेन परिपालयेत् ।।"

स्याही का भी पूरा ध्यान रखा जाता था। इसलिए ग्रन्थों के लिए स्याही को पूरी तरह से तैयार किया जाता था। जिससे न तो वह स्याही फैल सके और न एक पत्र दूसरे पत्र से चिपक सके।

ग्रन्थों के लिए कागज भी विशेष प्रकार का बना हुआ होता था। प्राचीन काल में सांगानेर में इस प्रकार के कागज के बनाने की व्यवस्था थी। जयपुर के शास्त्र भण्डारों में १४वीं शताब्दी तक के लिखे हुए ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं। उनकी न तो स्याही ही बिगड़ी है और न कागज में ही कोई विशेष असर आया है।

इस प्रकार ग्रन्थों के लिखने एवं उनके रख रखाव में पूर्ण सतर्कता के कारण सैकड़ों वर्ष पुरानी पाण्डुलिपियाँ आज भी दर्शनीय बनी हुई हैं। और उनका कुछ भी नहीं बिगड़ा है।

राजस्थान के प्रमुख शास्त्र भण्डार—

सम्पूर्ण देश में ग्रन्थों का अपूर्व संग्रह मिलता है। उत्तर से दक्षिण तक तथा पूर्व से पश्चिम तक सभी प्रान्तों में हस्तलिखित ग्रन्थों के भण्डार स्थापित हैं। इनमें सरकारी क्षत्रों में पूना का भण्डारकर-ओरियंटल इन्स्टीट्यूट, तंजोर की सरस्वती महल लायब्रेरी, मद्रास विश्वविद्यालय की ओरियन्टल मैनस्क्रपट्स लायब्रेरी, कलकत्ता की बंगाल एशियाटिक सोसायटी आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। सामाजिक क्षेत्र में अहमदाबाद का एल० डी० इन्स्टीट्यूट, जैन सिद्धान्त भवन-आरा, पन्नालाल ऐलक दि० जैन सरस्वती भवन उज्जैन, झालरापाटन; जैन शास्त्र भण्डार कारंजा, लिम्बीडी–सूरत, आगरा, दिल्ली आदि के नाम भी लिये जा सकते हैं। इस प्रकार सारे देश में इन शास्त्र भण्डारों की स्थापना की हुई हैं।

हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रह की दृष्टि से राजस्थान का स्थान सर्वोपरि है। मुस्लिम शासनकाल में यहाँ के राजा महाराजाओं ने अपने-अपने निजी संग्रहालयों में हजारों ग्रन्थों का संग्रह किया, और उन्हें मुलसमानों के आक्रमण से अथवा दीमक एवं सीलन से नष्ट होने से बचाया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् राजस्थान सरकार ने जोधपुर में जिस प्राच्यविद्या शोध प्रतिष्ठान की स्थापना की है, उसमें एक लाख से अधिक ग्रन्थों का संग्रह हो चुका है। जो एक अत्यधिक सराहनीय कार्य है। इसी तरह जयपुर, बीकानेर, अलवर जैसे कुछ भूतपूर्व शासकों के निजी संग्रहों में भी हस्तलिखित ग्रन्थों का महत्त्वपूर्ण संग्रह है, जिसमें संस्कृत ग्रन्थों की सर्वाधिक संख्या है। लेकिन इन सबके अतिरिक्त राजस्थान में जन ग्रन्थ भण्डारों की संख्या सर्वाधिक है। डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल, जिन्होंने राजस्थान के ग्रन्थ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भण्डारों की सूचीकरण का कार्य किया है, के अनुसार उनमें संग्रहित ग्रन्थों की संख्या चार लाख से कम नहीं है।

राजस्थान में जैन समाज पूर्ण शान्तिप्रिय एवं प्रभावक समाज रहा है। इस प्रदेश की अधिकांश रियासतों—जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, नागौर, जैसलमेर, उदयपुर, कोटा, बूंदी, डूंगरपुर, अलवर, भरतपुर, झालावाड, सिरोही आदि में जैनों की घनी आवादी रहीं है। यही नहीं शताब्दियों तक जैनों का इन स्टेट्स की शासन व्यवस्था में पूर्ण प्रभुत्व रहा है तथा वे शासन के सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित रहे हैं। इसी कारण साहित्य संग्रह के अतिरिक्त उन्होंने हजारों जैन मन्दिर भी बनवाये। जिनमें आबू, जैसलमेर, जयपुर, सांगानेर, भरतपुर, बीकानेर, सोजत, रणकपुर, मोजमावाद, केशोरायपाटन, कोटा, बून्दी, लाडनूं आदि के मन्दिर आज भी पुरातत्त्व एवं कला की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।

ग्रंथों की सुरक्षा एवं संग्रह की दृष्टि से राजस्थान के जैनाचार्यों, मुनियों, यतियों, सन्तों एवं विद्वानों का प्रयास विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन्होंने अपनी कृतियों द्वारा जनता में देश-भक्ति, नैतिकता, एवं सांस्कृतिक जागरूकता का प्रचार एवं प्रसार किया। उन्होंने नागौर, बीकानेर, अजमेर, जैसलमेर, जयपुर आदि कितने ही नगरों में ग्रंथ-भण्डारों के रूप में साहित्यिक दुर्ग स्थापित किये। जहां भारतीय साहित्य एवं संस्कृति की सुरक्षा एवं उसके विकास के उपाय सोचे गये तथा सारे प्रदेश में ग्रंथों की प्रतिलिपियां करवाने, उनके पठन–पाठन का प्रचार करने का कार्य व्यवस्थित रूप से किया गया, और राजनैतिक उथल–पुथल एवं सामाजिक झगड़ों से इन शास्त्र भण्डारों को दूर रखा गया। इन शास्त्र भण्डारों ने राजस्थान के इतिहास के कितने ही महत्त्वपूर्ण तथ्यों को संजोया और उन्हें सदा ही नष्ट होने से बचाया। ये ग्रथ संग्रहालय छोटे-छोटे गांवों से लेकर बड़े-बड़े नगरों तक में स्थापित किये हुए हैं। जयपुर, नागौर, बीकानेर, अजमेर, जैसलमेर, बून्दी जैसे नगरों में एक से अधिक ग्रथ संग्रहालय हैं। अकेले जयपुर नगर में ऐसे ३० ग्रंथ-भण्डार हैं। जिन सभी में हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का अच्छा संग्रह है। इनमें सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी भाषा के हजारों ग्रंथों की पाण्डुलिपियां सुरक्षित हैं। यहाँ किसी एक विषय पर अथवा एक ही भाषा की पाण्डुलिपियां संग्रहित नहीं है अपितु धर्म, दर्शन, पुराण, कथा, काव्य एवं चरित के अतिरिक्त इतिहास ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद, संगीत जैसे लौकिक विषयों पर भी अच्छी से अच्छी कृतियों की पाण्डलिपियाँ उपलब्ध होती हैं। इसलिये ये प्राचीन साहित्य, इतिहास, एवं संस्कृति के अध्ययन करने के लिए प्रामाणिक केन्द्र हैं।

राजस्थान के इन ग्रंथ-भण्डारों में ताड़पत्र की पाण्डुलिपियों की दृष्टि से जैसलमेर का वृहद् ज्ञान-भण्डार अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है किन्तु कागज पर लिखी पाण्डुलिपियों की दृष्टि से नागौर, बीकानेर, जयपुर एवं अजमेर के शास्त्र-भण्डार उल्लेखनीय हैं। अकेले नागौर के भट्टारकीय शास्त्र भण्डार में १५००० हस्तलिखित ग्रंथ एवं २००० गुटकों का संग्रह है। गुटकों में संग्रहित ग्रंथों की संख्या की जावे तो वह भी १०,००० से कम नहीं होगी। इसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तरह जयपुर में ३० से भी अधिक संग्रहालय हैं जिनमें आमेर शास्त्र भण्डार, दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर ग्रंथ भण्डार, तेरहपन्थियों का शास्त्र भण्डार, पाटोदियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इन भण्डारों में अपभ्रंश एवं हिन्दी के ग्रंथों की पाण्डुलिपियों का अच्छा संग्रह है। इन शास्त्र भण्डारों में जैन विद्वानों द्वारा लिखित ग्रंथों के अतिरिक्त जैनेतर विद्वानों द्वारा निबद्ध ग्रंथों की भी प्राचीनतम एवं महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों का संग्रह मिलता है।

ग्रंथ भण्डारों में संग्रहित पाण्डुलिपियों के अन्त में प्रशस्तियां दी हुई हैं। जो इतिहास की दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। ये प्रशस्तियां ११वीं शताब्दी से लेकर १९वीं शताब्दी तक की हैं। जैसे प्रशस्तियां दो प्रकार की होती हैं—एक स्वयं लेखक द्वारा लिखी हुई तथा दूसरी लिपिकारों द्वारा लिखी हुई होती हैं। ये दोनों ही प्रामाणिक होती हैं और इनकी प्रामाणिकता में कभी शंका नहीं की जा सकती। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि इन ग्रथकारों एवं लिपिकारों ने इतिहास का महत्त्व बहुत पहले ही समझ लिया था इसलिए ग्रंथ लिखवाने वाले श्रावकों का, उनकी गुरु परम्पराओं तथा तत्कालीन सम्राट् अथवा शासक के नामोल्लेख के साथ-साथ उनके नगर का भी उल्लेख किया करते थे। राजस्थान के इन जैन भण्डारों में संग्रहित प्रतियों के मुख्य केन्द्र हैं—अजमेर, जैसलमेर, नागौर, चम्पावती, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, चित्तौड़, उदयपुर, आमेर, बून्दी, बीकानेर आदि। इसलिए इनके शासकों एवं राजस्थान के नगरों एवं कस्बों के नाम खूब मिलते हैं, जिनके आधार पर यहाँ के ग्राम और नगरों के इतिहास पर भी अच्छा प्रकाश डाला जा सकता है।

अभी तक जैसलमेर भण्डार के अलावा अन्य किसी भी भण्डार का विस्तृत अध्ययन नहीं किया गया है। जिन्होंने अभी तक सर्वेक्षण किया है उनमें विदेशियों में ब्यूहलर, पीटर्सन, तथा भारतीय विद्वानों में श्रीधर, भण्डारकर, हीरालाल, हंसराज, हंसविजय, सी०डी० दलाल आदि ने केवल जैसलमेर भण्डार का ही सर्वेक्षण का कार्य किया है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् राजस्थान साहित्यानुसंधान के कार्य में काफी आगे बढ़ा है। राजस्थान सरकार ने जोधपुर में "राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान" के नाम से एक शोध केन्द्र स्थापित किया है। इसकी मुख्य प्रवृत्ति महत्त्वपूर्ण प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों को संग्रहित व प्रकाशित करने की है। इस केन्द्र की बीकानेर, जयपुर, उदयपुर, कोटा, चित्तौड़गढ़ आदि स्थानों पर शाखा भी हैं। इसके अतिरिक्त राज्य सरकार से अनुदान प्राप्त संस्थाओं में साहित्य संस्थान उदयपुर, भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान बीकानेर, राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी आदि मुख्य हैं। स्वतन्त्र रूप से हस्तलिखित ग्रंथों के संरक्षण का कार्य करने वाली संस्थाओं में महावीर भवन जयपुर, अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, विनय चन्द्र ज्ञान-भण्डार लाल भवन, जयपुर, खतर गच्छीय ज्ञान भण्डार-जयपुर आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

राजस्थान के ग्रन्थ भण्डारों के सूची-पत्रों के प्रकाशन की दिशा में भी थोड़ा बहुत कार्य अवश्य हुआ है, पर वह पर्याप्त नहीं है। बीकानेर की अनूप संस्कृत लायब्रेरी व उदयपुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के सरस्वती भवन के हस्तलिखित ग्रन्थों के सूची-पत्र प्रकाशित हुए हैं। साहित्य संस्थान उदयपुर की ओर से हस्तलिखित ग्रन्थों के सात भाग प्रकाशित हो चुके हैं। राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर व जयपुर के हस्तलिखित ग्रन्थों के भी ७ भाग प्रकाशित हुए हैं। राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी के हस्तलिचित ग्रंथों के भी कुछ भाग प्रकाशित हुए हैं। महावीर भवन जयपुर ने भी इस दिशा में अनुकरणीय कार्य किया है। वहाँ से डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल एवं प० अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ के तैयार किए हुए राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रन्थ सूचियों के पाँच भाग प्रकाशित हो चुके हैं। विनयचन्द्र ज्ञान भाण्डार में उपलब्ध हस्तलिखित ग्रन्थों के एकभाग का प्रकाशन हुआ है। प्रस्तुत ग्रन्थ द्वारा भट्टारकीय ग्रन्थ भण्डार नागौर के हस्तलिखित ग्रन्थों का प्रथम भाग सामने आ रहा है। यदि राजस्थान के सभी भण्डारों की व्यवस्थित सूचियां प्रकाशित होकर सामने आ जायें तो साहित्य-जगत् एवं शोधकर्ताओं के लिए बड़ी हितकारी सिद्ध हो सकती हैं।

ग्रन्थ सूचियों की अनुसंधान एवं इतिहास लेखन में उपयोगिता

साहित्यिक, दार्शनिक, ऐतिहासिक अनुसंधानों में ग्रन्थ सूचियों का विशेष महत्त्व होता है। एक प्रकार से ये ग्रथ सूचियाँ शोध कार्य में आधार-भित्ति का कार्य करती हैं। भारतीय साहित्य की परम्परा बड़ी समृद्ध और वैविध्यपूर्ण रही है। छापेखाने के अविष्कार के पूर्व यहां का साहित्य कंठ-परम्परा से लेखन परम्परा में अवतरित होकर सुरक्षित रहा। विदेशी आक्रमणकारियों ने यहाँ की साँस्कृतिक परम्पराओं को नष्ट करने के लक्ष्य से साहित्य और कला को भी अपना लक्ष्य बनाया। राजघरानों में संरक्षित बहुतसा साहित्य नष्ट कर दिया गया। राजघरानों में निवर्तमान साहित्य उस विशाल साहित्य का अल्पांश ही है। व्यक्तिगत संग्रहालय किसी न किसी रूप में थोड़े बहुत सुरक्षित अवश्य रहे हैं, पर उनके महत्त्व को ठीक प्रकार से न समझने के कारण बहुत सी महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियां देश से बाहर चली गई हैं। स्वतन्त्रता के बाद भी यह क्रम जारी है। इस सांस्कृतिक निधि की सुरक्षा का प्रश्न राष्ट्रीय स्तर पर हल किया जाना चाहिए।

प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों की दृष्टि से राजस्थान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रदेश है। रेगिस्तानी इलाका होने के कारण विदेशी आक्रमणकारियों से यह थोड़ा बहुत बचा रहा। इस प्रदेश में जैनों की संख्या अधिक होने के कारण भी भारतीय साहित्य का बहुत बड़ा भाग जैन मन्दिरों और उपाश्रयों के माध्यम से सुरक्षित रहा। जैन श्रावकों में शास्त्र-वाचन और स्वाध्याय की विशेष परम्परा होने के कारण उन्होंने महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ करवा कर उनकी प्रतियाँ मन्दिरों, उपाश्रयों एव व्यक्तिगत सग्रहालयों में सुरक्षित रखीं। ग्रंथों की सुरक्षा एवं संग्रह की दृष्टि से जैनाचार्यों, साधुओं, यतियों एवं श्रावकों का प्रयास विशेष उल्लेखनीय है। प्राचीन ग्रंथों की सुरक्षा एवं नये ग्रंथों के संग्रह में जितना ध्यान जैन समाज ने दिया है उतना अन्य समाज नहीं दे सका। ग्रंथों की सुरक्षा में उन्होंने अपना पूर्ण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवन लगा दिया और किसी भी विपत्ति अथवा संकट के समय ग्रंथों की सुरक्षा को प्रमुख स्थान दिया।

यहाँ एक बात और विशेष ध्यान देने की है और वह यह है कि जैनाचार्यों एवं श्रावकों ने अपने शास्त्र-भण्डारों में ग्रंथों की सुरक्षा एवं संग्रह करने में जरा भी भेदभाव नहीं रखा। जिस प्रकार उन्होंने जैन–ग्रन्थों की सुरक्षा एवं उनका संकलन किया उसी प्रकार जैनेतर ग्रन्थों की सुरक्षा एवं संकलन पर भी विशेष जोर दिया।

राजस्थान के इन जैन–भण्डारों में संग्रहीत ग्रन्थों का अभी तक मूल्यांकन नहीं हो सका है। विद्या के एवं शोध के अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जिन पर इन भण्डारों में सग्रहीत ग्रन्थों के आधार पर कार्य किया जा सकता है। आयुर्वेद, छन्द, ज्योतिष, अलंकार, नाटक, भूगोल, इतिहास, सामाजिक शास्त्र, न्याय व्यवस्था, यात्रा, व्यापार तथा प्राकृतिक सम्पदा आदि विभिन्न विषयों पर इन भण्डारों में सग्रहीत ग्रन्थों के आधार पर शोध कार्य किया जा सकता है। जिससे कितने ही नये तथ्यों की जानकारी मिल सकती है। भाषा–विज्ञान, अर्थशास्त्र एवं समीक्षा ग्रन्थों पर कार्य करने के लिए भी इनमें प्रचुर सामग्री सग्रहीत है। देश में विभिन्न बादशाहों एवं राजाओं के शासन काल में विभिन्न वस्तुओं की क्या–क्या कीमतें थीं? तथा भुखमरी, अकाल जैसे आर्थिक रोचक विषयों पर भी इनमें पर्याप्त सामग्री उपलब्ध होती हैं। ऐसे कितने ही पत्रों का सग्रह मिलेगा जिनमें मां बाप ने भुखमरी के कारण अपने लड़कों को बहुत कम मूल्य में बेच दिया था। इन सब के अतिरिक्त भण्डारों में संग्रहीत ग्रन्थों में एवं उनकी प्रशस्तियों के आधार पर देश के सैंकड़ों हजारों नगरों एवं ग्रामों के इतिहास पर, उनमें सम्पन्न विभिन्न समारोहों पर, वहाँ के निवासियों पर प्रचुर सामग्री का संकलन किया जा सकता है।

नागौर का ऐतिहासिक परिचय, ग्रन्थ भण्डार की स्थापना एवं विकास

वर्तमान में नागौर राजस्थान प्रदेश का एक प्रान्त है जो इसके मध्य में स्थित है। पहिले यह जोधपुर राज्य का प्रमुख भाग था। नागौर जिले का प्रमुख नगर है तथा यहाँ की भूमि अर्द्ध रेगिस्तानी है।

रामायण कालीन अनुश्रुति के अनुसार पहिले यहाँ पर समुद्र था। लेकिन रामचन्द्रजी ने अग्निवाण चलाकर उस समुद्र को सुखा दिया। महाभारत के अनुसार इस प्रदेश का नाम कुरु-जांगल था। मौर्यवंश का शासन भी इस क्षेत्र पर रहा। विक्रम की दूसरी शताब्दी से पाँचवीं शती तक नागौर का अधिकांश क्षेत्र नागवंशी राजाओं के अधीन रहा। उसी समय से नागौर, नाग पट्टन, अहिपुर, भुजंगपुर अहिच्छत्रपुर आदि विभिन्न नामों से समय-समय पर जाना जाता रहा। बाद में कुछ समय के लिए इस प्रदेश पर गौड़ राजपूतों का शासन रहा। बाद में गौड़ राजपूत कुचामन, नांवा, मारोठ की ओर चले गये, इसलिए यह पूरा प्रदेश गौड़वाटी के नाम से जाना जाने लगा।

विक्रम की ७वीं शताब्दी में यहाँ पर चौहानों का शासन हुआ। चौहानों की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजधानी शाकम्भरी (साम्भर) थी। इनके शासन काल में यह क्षेत्र सपादलक्ष के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यही कारण है कि आज भी स्थानीय लोग इसे सवालक्ष कहते हैं।

इसी बीच कुछ समय के लिये यह नगर प्रतिहारों के अधीन आ गया। जयसिंह सूरि के धर्मोपदेश की प्रशस्ति में मिहिरभोज प्रतिहार का उल्लेख मिलता है। जयसिंह सूरि ने नागौर में ९१५ वि. सं. में इस ग्रन्थ की रचना की थी।[1]

अणहिलपुर पाटन (गुजरात) के शासक सिद्धराज जयसिंह ने १२वीं शताब्दी में इस क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया। जो भीमदेव के समय तक बना रहा। महाराजा कुमारपाल के गुरु प्रसिद्ध जैनाचार्य कविकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्र सूरि का पट्टाभिषेक सवत् ११६६ की वैशाख सुदी ३ को यहीं पर हुआ था।

इसके बाद यह नगर तथा क्षेत्र वापिस चौहानों के अधिकार में चला गया। प्राचीन समय से ही यहाँ पर छोटा गढ़ बना हुआ था जिसके खण्डहर आज भी उपलब्ध होते हैं। चौहानों ने अपने मध्य में होने के कारण तथा लाहौर से अजमेर जाने के रास्ते में पड़ने के कारण यहाँ पर दूर्ग बनाना आवश्यक समझा क्योंकि उस समय तक महमूद गजनवी के कई वार आक्रमण हो चुके थे। इसलिए नगर में विशाल दुर्ग का निर्माण वि० सं० १२११ में पृथ्वीराज तृतीय के पिता सोमेश्वर के शासनकाल में प्रारम्भ हुआ। जिसका शिलालेख दरवाजे पर आज भी सुरक्षित है।

सन् १२९३ में पृथ्वीराज चौहान (तृतीय) की हार के बाद यहाँ पर दिल्ली के सुल्तानों का अधिकार हो गया। उसी समय यहाँ पर प्रसिद्ध मुस्लिम संत तारकीन हुआ जो अजमेर वाले ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का शिष्य था। इसकी दरगाह परकोटे के बाहर गिनाणी-तालाव के पीछे की तरफ वनी हुई है। इसके लिए उर्स के अवसर पर अजमेर के मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह से चादर कब्र पर ओढाने के लिए आती है। इसी समय से नागौर मुस्लिम धर्म का भी केन्द्र वन गया।

एक शिलालेख के अनुसार सन् १३९३ में इस क्षेत्र पर देहली के शासक फीरोज-शाह तुगलक का शासन था। फिरोजशाह के शासन में ही दिगम्बर जैन भट्टारक सम्प्रदाय के द्वारा संवत् १३९० पौष सुदी १५ को दिल्ली में वस्त्र धारण करने की प्रथा का श्रीगणेश हुआ। उसके पूर्व वे सव नग्न रहते थे। इन भट्टारकों का मुस्लिम शासकों (बादशाहों) पर अच्छा प्रभाव था। इसलिये उन्हें विहार एवं धर्म प्रचार की पूरी सुविधा थी। यही नहीं मुस्लिम बादशाहों ने इनकी सुरक्षा के लिए समय-समय पर कितने ही फरमान निकाले थे। उसी समय से दिल्ली गादी के भट्टारक नागौर आते रहे और सम्वत् १५७२ में नागौर में एक स्वतन्त्ररूप में भट्टारक गादी की स्थापना की।

सन् १४०० ई. के बाद नागौर की स्वतन्त्र रियासत स्थापित हुई। जिसका[2] फिरोजखान प्रथम सुल्तान था। जो गुजरात के राजवंश[3] से सम्वन्धित था। जिसका प्रथम

---

१. Jainism in Rajasthan by Dr. K.C. Jain Page, 153.
२. History of Gujarat, page 68.
३. Epigraphika Indomuslimica 1923–24 and 26.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिलालेख १४१८ A.D. का मिलता है। सुल्तान फिरोजखान के समय मेवाड़ के महाराजा मोकल ने नागौर पर आक्रमण किया तथा डीडवाना तक के प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया। मोकल के लौटने पर शम्सखां के पुत्र मुजाहिदखां ने इस क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया। शम्सखां ने शम्स तालाब बनवाया। शम्स तालाब के किनारे अपने गुरु की दरगाह तथा मस्जिद बनवाई। इसी दरगाह के प्रांगण में ही शम्सखां तथा उनके वंशजों की कब्रें बनी हुई हैं। इस तालाब के चारों ओर परकोटा बना हुआ है।

महाराजा कुम्भा ने भी एक बार नागौर पर आक्रमण किया था। जिसका शिलालेख गोठ मांगलोद के मातांजी के मन्दिर में लगा हुआ है। महाराजा कुम्भा ने राज्य को वापस पुराने सुल्तान को ही सौंप दिया। इसी वंश में मुजाहिद खां, फिरोज खां, जफरखां, नागौरीखां आदि सुल्तान हुए। ये सुल्तान मुस्लिम होते हुये भी हिन्दू तथा जैनधर्म के विरोधी नहीं थे। इनके राज्यकाल में दिगम्बर जैन भट्टारक तथा साधुओं का विहार निर्बाध गति के साथ होता था। उस समय जैनधर्म के बहुत से ग्रन्थों की रचनाएं एवं लिपि करने का कार्य सम्पन्न हुआ। तत्कालीन प्रसिद्ध भट्टारक जिनचन्द्र संवत् १५०७ से १५७१ का भी यहां आगमन हुआ था। जिनके द्वारा संवत् १५४८ में प्रतिष्ठित सैंकड़ों मूर्तियां सम्पूर्ण देश के बड़े-बड़े जैन मन्दिरों में उपलब्ध होती हैं। पं० मेधावी ने नागौर में ही रहकर सवत् १५४१ में धर्मगृह श्रावकाचार की रचना की थी।[1] इसमें फिरोजखान की न्यायप्रियता, वीरता और उदारता की प्रशंसा की है।[2] मेधावी भट्टारक जिनचन्द्र के शिष्य थे। इस ग्रन्थ की प्रतियां भारत के सभी जैन ग्रन्थ भण्डारों में प्रायः पाई जाती हैं। इसी वंश के नवाब नागौरीखां के दीवान परबतशाह पाटनी हुए थे। जिनका शिलालेख श्री दिगम्बर जैन बीस पन्थी मन्दिर में लगा हुआ है। इन परबतशाह पाटनी ने एक वेदी बनवाई तथा उसकी प्रतिष्ठा बड़ी धूम-धाम से कराई थी। ऐसा शिलालेख में लिखा है। चूने की पुताई हो जाने से पूरा लेख पढ़ने में नहीं आता है।

सुल्तानों के शासन के पतन के पश्चात् नागौर पर मुगल सम्राट् अकबर का अधिकार हो गया। स्वयं अकबर भी नागौर आया था। उसने गिनाणी तालाब के किनारे दो मीनारों वाली मस्जिद बनवाई। जो आज भी अकबरी मस्जिद के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें अकबर के समय का फारसी भाषा का शिलालेख लगा हुआ है।

जोधपुर नरेश महाराजा गजसिंह के दो पुत्र थे–बड़े अमरसिंह तथा छोटे जसवन्त सिंह। अमरसिंह बड़े अक्खड़, निर्भीक और वीर थे। जोधपुर के सरदार अमरसिंह से नाराज हो गये। शाहजहां ने इनकी वीरता पर खुश होकर नागौर का प्रदेश इनको जागीर में दे दिया।

---

१. राजस्थान के ग्रन्थ भण्डारों की सूची, भाग प्रथम, पृष्ठ ७६

२ सपादलक्षे विषयेति सुन्दरे, श्रियापुरं नागपुरं समस्तितत्‌:।
फैरोजखानो नृपतिः प्रयाति यन्नायेन शौर्येण रिपून्निहन्ति च ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अमरसिंह के पश्चात् शाहजहाँ ने इन्दरसिंह को नागौर का राजा बना दिया। इन्दरसिंह ने शहर में अपने रहने के लिए एक सुन्दर महल बनवाया। जिसका उल्लेख महल के दरवाजे पर लेख में मिलता है।

सैंकड़ों वर्षों तक मुस्लिम शासन में रहने के कारण कई धर्मान्ध शासकों ने यहाँ के हिन्दू एवं जैन मन्दिरों को खूब ध्वस्त किया। मन्दिरों को मस्जिदों में परिवर्तित किया गया। फिर भी नागौर जैन सस्कृति का एक प्रमुख नगर माना जाता रहा। सिद्धसेनसूरि (१२वीं शताब्दी) ने इसका प्रमुख तीर्थ के रूप में उल्लेख किया है। जैनाचार्य हेमचन्द्रसूरि के पट्टाभिषेक के समय यहाँ के धनद नाम के श्रेष्ठि ने अपनी अपार सम्पत्ति का उपयोग किया था। १३वीं शताब्दी में पेथड़शाह ने यहाँ एक जैन मन्दिर का निर्माण कराया था। तपागच्छ की एक शाखा नागपुरीय का उद्गम भी इसी नगर से माना जाता है। १५वीं १६वीं शताब्दी में यहाँ कितनी ही श्वेताम्बर मूर्तियों की प्रतिष्ठा हुई। उपदेशगच्छ के कक्कसूरि ने ही यहाँ शीतलनाथ के मन्दिर की प्रतिष्ठा कराई थी।

शास्त्र भण्डार की स्थापना एवं विकास—

सम्वत् १५८१, श्रावण शुक्ला पंचमी को भट्टारक रत्नकीर्ति ने यहाँ भट्टारकीय गादी के साथ ही एक वृहद् ज्ञान भण्डार की स्थापना की। जिनचन्द्र के शिष्य भट्टारक रत्नकीर्ति के पश्चात् यहाँ एक के बाद दूसरे भट्टारक होते रहे। इन भट्टारकों के कारण ही नागौर में जैनधर्म एवं साहित्य का अच्छा प्रचार प्रसार होता रहा। नागौर का यह ग्रन्थ भण्डार सारे राजस्थान में विशाल एवं समृद्ध है। पाण्डुलिपियों का ऐसा विशाल संग्रह राजस्थान में कहीं नहीं मिलता। यहाँ करीब १५ हजार पाण्डुलिरियों का संग्रह है जिनमें करीब दो हजार से अधिक गुटके हैं। यदि गुटकों में संग्रहींत ग्रन्थों की संख्या की जावे तो इनकी संख्या भी १०,००० से कम नहीं होगी। भण्डार में मुख्यतः प्राकृत, अपभ्रंश संस्कृत, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा में निबद्ध कृतियाँ सर्वाधिक संख्या में है। अधिकांश पाण्डुलिपियां १४वीं शताब्दी से १९वीं शताब्दी तक की हैं। जिनसे पता चलता है कि गत १५० वर्षों से यहाँ ग्रन्थ संग्रह की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया। इससे पूर्व यहाँ ग्रन्थ लेखन का कार्य पूर्ण वेग से होता था। सम्पूर्ण भारत वर्ष के शस्त्रागारों में सैंकड़ों ऐसे ग्रन्थ हैं जिनकी पाण्डुलिपियाँ नागौर में हुई थीं। प्राकृत भाषा के ग्रंथों में आचार्य कुन्दकुन्द के समयसार की यहाँ सन् १३०३ की पाण्डुलिपि है, इसी तरह मूलाचार की १३३८ की पाण्डुलिपि उपलब्ध होती है। कुछ अन्येतर अनुपलब्ध ग्रन्थों में वरांग-चरित (तेजपाल) वसुधर चरिउ (श्री भूषण), सम्यक्त्व कौमुदी (हरिसिंह), णेमिणाह चरिउ (दामोदर), जगरूपविलास

---

१. Dr. P. C. Jain, JAIN GRANTH BHANDARS IN JAIPUR AND NAGAUR P, 118.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(जगरूप कवि), कृपण पच्चीसी (कल्ह), सरस्वती-लक्ष्मी संवाद (श्री भूषण), क्रियाकोश (सुखदेव) आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

भट्टारक परम्परा—

नागौर की परम्परा में निम्न भट्टारक हुए[1]—

(१) भट्टारक रत्नकीर्ति—संवत् १५८१
(२) भट्टारक भुवनकीर्ति— संवत् १५८६
(३) भट्टारक धर्मकीर्ति[2]—संवत् १५९०
(४) भट्टारक विशालकीर्ति—संवत् १६०१
(५) भट्टारक लक्ष्मीचन्द्र—संवत् १६११
(६ भट्टारक सहस्त्रकीर्ति—संवत् १६३१
(७) भट्टारक नेमिचन्द्र—संवत् १६५०
(८) भट्टारक यशःकीर्ति—संवत् १६७२
(९) भट्टारक भानुकीर्ति—संवत् १६९०
(१०) भट्टारक श्रीभूषण—संवत् १७०५
(११) भट्टारक धर्मचन्द्र—संवत् १७१२
(१२) भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति प्रथम—संवत् १७२७
(१३) भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति - सवत् १७३८
(१४) भट्टारक रत्नकीर्ति द्वितीय
(१५) भट्टारक ज्ञानभूषण
(१६) भट्टारक चन्द्रकीर्ति
(१७) भट्टारक पद्मनन्दि
(१८) भट्टारक सकलभूषण
(१९) भट्टारक सहस्त्रकीर्ति
(२०) भट्टारक अनन्तकीर्ति
(२१) भट्टारक हर्षकीर्ति

---

१. (क) नागौर ग्रन्थ भण्डार में उपलब्ध भट्टारक पट्टावली के आधार पर।
(ख) डॉ० जोहरापुरकर-भट्टारक सम्प्रदाय पृष्ठ-१२४-२५
२. डॉ० कासलीवाल ने अपनी पुस्तक शाकम्भरी प्रदेश के सांस्कृतिक विकास में जैन-धर्म का योगदान में "भुवनकीर्ति" नाम दिया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२२) भट्टारक विद्याभूषण

(२३) भट्टारक हेमकीर्ति

(२४) भट्टारक क्षेमेन्द्रकीर्ति

(२५) भट्टारक मुनीन्द्रकीर्ति

(२६) भट्टारक कनककीर्ति

(२७) भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति

भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति नागौर गादी के अन्तिम भट्टारक हुए हैं। नागौर गादी का नागपुर, अमरावती, अजमेर आदि नगरों से भी सम्बन्ध रहा है। भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के पश्चात् नागौर ग्रन्थ भण्डार बन्द पड़ा रहा। अनेक वर्षों के बाद पं० सतीशचन्द्र तथा यतीन्द्र कुमार शास्त्री ने ग्रन्थ सूची निर्माण एवं प्रकाशन का कार्य अपने हाथों में लिया था परन्तु किन्हीं कारणों से वे इसे पूरा नहीं कर पाये।

ग्रन्थ सूचीको अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए अन्त में तीन परिशिष्ट दिये गये हैं। प्रथम में कतिपय अज्ञात एवं अप्रकाशित महत्त्वपूर्ण रचनाओं की नामावली दी गई है। ये रचनायें काव्य, पुराण, चरित, नाटक, रास एवं अलंकार, अर्थशास्त्र इतिहास आदि सभी विषयों से सम्बन्धित हैं। उनमें से बहुत सी रचनायें तो ऐसी हैं जो संभवतः सर्व प्रथम विद्वानों के समक्ष आयीं होंगी। इनमें से अपभ्रंश भाषा के ग्रन्थों में जिनपूजा पुरन्दर विधान (अमरकीर्ति), नायकुमार चरिउ (पुष्पदन्त), नारायण पृच्छा जयमाल, बाहुबली पाथड़ी, भविष्यदत्त चरिउ (पं० धनपाल), प्राकृत के ग्रन्थों में जयति उखाण (अभयदेव सूरि), चौबीस दण्डक (गजसार), वनस्पति सत्तरी (मुनिचन्द्र सूरि), संस्कृत के ग्रन्थों में— आत्मानुशासन (पार्श्वनाग), आराधना कथा कोश (सिंहनन्दि), आलाप पद्धति (कवि विष्णु) आशाधराष्टक (शुभचन्द्र सूरि), कुमारसम्भव सटीक (टीकाकार पं० लाल्लू), मूलसंघ्रागणि (रत्नकीर्ति), योग शतक (विदग्ध वैद्य), रत्न परीक्षा (चण्डेश्वर सेठ), वाक्य प्रकाश सूत्र सटीक (दामोदर), सम्यक्त्व कौमुदी (कवि यशः सेन), सुगन्ध दशमी कथा (ब्रह्म जिनदास), हेमकथा (रक्षामणि), तथा हिन्दी के ग्रन्थों में इन्द्रवधुचित हुलास आरती (रुचीरंग), खुदीप भाषा (भूवानीदास), श्रेषठ शलाका पुरुष चौपई (पं० जिनमति), प्रथम बखाण, रत्नचूड़रास (यशः कीर्ति), रामाज्ञा (तुलसीदास), वाद पच्चीसी (ब्रह्म गलाल), हरिश्चन्द्र चौपई (ब्रह्म वेणिदास), आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ-सूची के सम्बन्ध में—

ग्रन्थ सूचियों के निर्माण में कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। प्रत्येक पाण्डु-लिपि को सावधानी के साथ पढ़कर, ग्रन्थ, ग्रन्थकार, रचना-संवत्, लिपि-संवत्, रचना स्थल, लिपि स्थल, विषयादि कई बातों का पता लगाना होता है। कभी कभी एक ही पन्ने में एकाधिक रचनाएं भी मिलती हैं। थोड़ी सी भी प्रमाद की स्थिति, लिपि की अस्पष्टता व लिपि-पढ़ने की लापरवाही से अनेक भ्रान्तियों व अशुद्धियों की परम्परा चल पड़ती है। कभी लिपिकार को रचनाकार और कभी रचनाकार को लिपिकार समझ लिया जाता है। इसी तरह कभी लिपि-संवत् को रचना-संवत् समझ लिया जाता है।

रचना के अन्त में दी गई प्रशस्तियों का ऐतिहासिक दृष्टि से बड़ा महत्त्व होता है। ये प्रशस्तियाँ दो प्रकार की होती हैं-पहली स्वयं लेखक द्वारा लिखी हुई तथा दूसरी लिपिकारों द्वारा लिखी हुई। ये दोनों ही प्रामाणिक होती हैं, और इनकी प्रामाणिकता में कभी शंका भी नहीं की जा सकती। ऐसा प्रतीत होता है कि इन ग्रन्थकारों एवं लिपिकारों ने इतिहास के महत्त्व को बहुत पहले ही समझ लिया था, शायद इसलिए ही ग्रन्थ लिखवाने वाले श्रावकों का, उनकी गुरु-परम्रा तथा तत्कालीन सम्राट् अथवा शासक के नाम्मोल्लेख के साथ-साथ उनके नगर का भी उल्लेख किया जाता था। इनमें ग्रन्थ, ग्रन्थकार, रचना-संवत्, लिपि-संवत्, लिपिकार, लिपिस्थल आदि की भी बहुमूल्य सूचनाएं मिलती हैं। साहित्य के इतिहास लेखन में इन सूचनाओं का बड़ा महत्त्व होता है।

प्रत्येक रचना से सम्बन्धित ऊपर लिखित जानकारी प्राप्त कर लेने के बाद समग्र रचनाओं को वर्गीकृत करना पड़ता है। वर्गीकरण का यह कार्य जितना सरल दिखाई देता है, वह उतना ही दूरुह भी है। कई विषय और काव्य–रूप अन्य विषयों और काव्य–रूपों से इस तरह मिले दिखाई देते हैं कि उनको अलग-अलग वर्गों में बाँटना बड़ा मुश्किल हो जाता है। इसका एक कारण तो यह है कि जैन-साहित्यकारों ने काव्य-रूपों के क्षेत्र में नानाविध नये-नये प्रयोग किये। एक ही चरित्र व कथा को भिन्न-भिन्न रूपों में वर्णित किया। उन्होंने प्रचलित सामान्य काव्य–रूपों को हुबहु स्वीकार न कर उनमें व्यापकता, लौकिकता और सहजता का रंग भरा। संगीत को शास्त्रीयता से मुक्त कर विभिन्न प्रकार की लोकदेशियों को अपनाया। आचार्यों द्वारा प्रतिपादित प्रबन्ध-मुक्तक की चली आती हुई काव्य परम्परा के बीच काव्य रूपों के कई नये नये स्तर निर्मित किये। साथ ही काव्य विषय की दृष्टि से भी उन्हें नयी भाव-भूमि और मौलिक अर्थवत्ता दी। उदाहरण के लिए वेलि, बारहमासा, विवाहलो, रासो, चौपई संज्ञक विभिन्न काव्यों व रूपों का परिक्षण किया जा सकता है।

इस ग्रन्थ-सूची में समाविष्ट हस्तलिखित ग्रन्थों को २२ विषयों में विभाजित किया गया है। ये विषय क्रमशः इस प्रकार हैं—(१) अध्यात्म, आगम, सिद्धान्त एवं चर्चा, (२) आयुर्वेद (३) उपदेश एवं सुभाषितावली, (४) कथा, (५) काव्य, (६) कोश, (७) चरित्र (८) सचित्र ग्रन्थ, (९) छन्द एवं अलंकार, (१०) ज्योतिषः (११) न्यायशास्त्र, (१२) नाटक एवं संगीत,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१३) नीतिशास्त्र, (१४) पुराण, (१५) पूजा एवं स्तोत्र, (१६) मन्त्र एवम् यन्त्र, (१७) योग, (१८) व्याकरण, (१९) व्रत विधान, (२०) लोक विज्ञान, (२१) श्रावकाचार, (२२) अवशिष्ट साहित्य ।

इस प्रकार इस ग्रन्थ-सूची में कुल मिलाकर १८६८ हस्तलिखित ग्रन्थों का विवरणात्मक परिचय प्रस्तुत किया गया है । ग्रन्थों का परिचय प्रस्तुत करते समय मैंने प्रत्येक ग्रन्थ के सम्बन्ध में निम्न अट्ठारह प्रकार की जानकारी देने का प्रयत्न किया है—

(१) क्रमांक (२) ग्रन्थ नाम (३) ग्रन्थकार (रचयिता) (४) टीकाकार या भाषाकार (५) लिप्यासन का स्वरूप (६) पत्र संख्या (७) आकार (८) ग्रन्थ की दशा (९) पूर्ण या अपूर्ण (१०) भाषा (११) लिपि (१२) विषय (१३) ग्रन्थ संख्या (१४) रचनाकाल (१५) लिपि-काल (१६) ग्रन्थ का आदिभाग (१७) अन्त भाग और अन्त में (१८) विशेष ।

'क्रमांक' सूची में समाविष्ट ग्रन्थों का क्रम सूचित करते हैं। 'ग्रन्थनाम' में रचना का नाम, 'ग्रन्थकार' में ग्रन्थ के रचयिता का नाम तथा 'टीकाकार' या 'भाषाकार' में टीका करने या भाषा (अनुवाद) के करने वाला का नाम दिया गया है । "लिप्यासन के स्वरूप" में जिस पर ग्रन्थ लिखा गया है बताया गया है, उदाहरण के लिये कागज, ताड़पत्र, भोजपत्र या वस्त्र आदि पर। 'पत्र संख्या' में ग्रन्थ के लिखित पन्नों की संख्या बताई गयी है । 'आकार' में ग्रन्थ की लम्बाई व चौड़ाई के बारे में जानकारी दी गई है। 'दशा' में ग्रन्थ की हालत के बारे में बताया गया है। पूर्ण या अपूर्ण शब्द ग्रन्थ की पूर्णता या अपूर्णता को द्योतित करते हैं। 'भाषा' से तात्पर्य ग्रन्थ के लिए प्रयुक्त की गई भाषा से है अर्थात् किस भाषा में ग्रन्थ लिखा गया है। 'लिपि' में भाषा के लिए कौनसी लिपि का प्रयोग किया गया है । 'विषय' में ग्रन्थ किस विषय का है बताया गया है । 'ग्रन्थ संख्या' से ग्रन्थ विशेष के उस क्रम का बोध होता है जो भण्डार की सामान्य सूचीपत्र में ग्रन्थ विशेष के लिए अंकित है । रचनाकाल एवं लिपिकाल में ग्रन्थ की रचना तथा लिपि के समय की जानकारी दी गई है। ग्रन्थ के महत्त्वपूर्ण होने तथा अप्रकाशित आदि की जानकारी देने के लिए उसका आदि एवं अन्तभाग तथा 'विशेष' दिया गया है ।

ग्रन्थ-सूची को अधिकाधिक उपयोगी बनाने की दृष्टि से इसकी विस्तृत प्रस्तावना लिखी गई है । इसमें ग्रन्थों के लिखने की परम्परा का विकास, लेखन सामग्री तथा उसका उपयोग, ग्रन्थ सुरक्षा के लिए शास्त्र भण्डारों की स्थापना, राजस्थान के प्रमुख शास्त्र भण्डार, ग्रन्थ सूचियों की अनुसंधान एवं इतिहास लेखन में उपयोगिता, नागौर का ऐतिहासिक परिचय, ग्रन्थ भण्डार की स्थापना, सुरक्षा एवं विकास आदि विभिन्न विषयों की जानकारी दी गई है।

ग्रन्थ के अन्त में तीन परिशिष्ट भी दिये गये हैं । प्रथम परिशिष्ट में अज्ञात एवं अप्रकाशित ग्रन्थों की अकारादि क्रम से नामावलि दी गई है। इससे अनेक ग्रन्थ जो साहित्य के इतिहास में अब तक अज्ञात रहे हैं वे इस ग्रन्थ द्वारा पहली बार प्रकाश में आ रहे हैं। दूसरे परिशिष्ट में अकारादि क्रम से ग्रन्थानुक्रमणिका दी गई है। तीसरे परिशिष्ट में भी अकारादि क्रम से ही ग्रन्थकारानुक्रमणिका दी गई है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थसूची के इस भाग में करीब दो हजार ग्रन्थों का विवरणात्मक परिचय प्रस्तुत किया गया है। इसमें यदि कोई कमी रह गयी हो अथवा लेखक का नाम, लिपिकाल, रचनाकाल आदि के देने में कोई अशुद्धि रह गयी हो तो पाठक विद्वान् हमें सूचित करने का कष्ट करेगें, जिससे भविष्य के लिए उन पर ध्यान रखा जा सके। नागौर का परिचय जब मैं प्रथम बार ग्रन्थ भण्डार देखने के लिए गया था तब श्री मदनलालजी जैन के साथ पूरे नागौर का भ्रमण किया था, तब उन्हीं जैन सा० के माध्यम से तथा वहाँ प्रचलित किंवदन्तियों लेखों तथा शिला-लेखों के आधार पर ही दिया है। इस सूची के आधार पर साहित्य एवं इतिहास के कितने ही नए तथ्य उद्घाटित हो सकेगें तथा राजस्थान के कितने ही विद्वानों, श्रावकों, शासकों एवं नगरों के सम्बन्ध में नवीन जानकारी मिल सकेगी।

आभार—

मैं सर्वप्रथम जैन अनुशीलन केन्द्र के निदेशक प्रो० रामचन्द्र द्विवेदी का आभारी हूँ जिन्होंने ग्रन्थ-सूची के इस भाग को प्रकाशित करवाकर साहित्य जगत् का महान् उपकार किया है। जैन अनुशीलन केन्द्र द्वारा साहित्य-शोध, साहित्य-प्रकाशन एवं हस्तलिखित ग्रन्थों के सूचीकरण के क्षेत्र में जो महत्त्वपूर्ण कार्य किया है, व किया जा रहा है वह अत्यधिक प्रशंसनीय एवं श्लाघनीय है। आशा है भविष्य में साहित्य प्रकाशन के कार्य को और भी प्राथमिकता मिलेगी।

ग्रन्थ-सूची के इस भाग के स्वरूप एवं रूपरेखा आदि के निखारने में जिन विद्वानों का परामर्श एवं प्रोत्साहन मिला है उनमें प्रमुख हैं—प्रो० रामचन्द्र द्विवेदी (जयपुर) प्रो० गोपीनाथ शर्मा (उदयपुर), प्रो० सुधीरकुमार गुप्त (जयपुर), प्रो० के० सी० जैन (उज्जैन), डॉ० कस्तुरचन्द कासलीवाल एवं पं० अनुपचन्द न्यायतीर्थ (जयपुर)। इन सबके सहयोग के लिए मैं आभारी हूँ और कृतज्ञ हूँ।

भट्टारकीय दिगम्बर जैन ग्रन्थ भण्डार नागौर के उन सभी व्यवस्थापकों का आभारी हूँ जिन्होंने अपने यहाँ स्थित शास्त्र-भण्डार की ग्रन्थ-सूची बनाने में मुझे पूर्ण सहयोग दिया। वास्तव में यदि उनका सहयोग नहीं मिलता तो मैं इस कार्य में प्रगति नहीं कर सकता था। ऐसे व्यवस्थापक महानुभावों में श्री पन्नालाल जी चान्दवाड़, श्री डुंगरमलजी जैन, श्री जीवराज जी जैन, श्री शिखरीलाल जी जैन एवं श्री मदनलाल जी जैन आदि सज्जनों के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं, इन सबका मैं हृदय से आभारी हूँ।

प्रेस कापी बनाने, अनुक्रमणिका तैयार करने व प्रूफ आदि में सहधर्मिणी स्नेहमयी चन्द्रकला जैन बी० ए० एलएल० बी० ने जो सहयोग दिया उसके लिए धन्यवाद देकर मैं उनके गौरव को कम नहीं करना चाहता।

अन्त में पुस्तक के प्रकाशन की व्यवस्था आदि में केन्द्र के सक्रिय निदेशक प्रो० द्विवेदी एवं कपूर आर्ट प्रिन्टर्स जयपुर के प्रबन्धकों का जो सहयोग मिला है उसके लिए मैं इन सबका हृदय से आभारी हूँ।

डॉ० प्रेमचन्द जैन

दि० १५-६-८१

२१५१ हैदरी भवन,

मणिहारों का रास्ता, जयपुर-३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भट्टारकीय ग्रन्थ भण्डार नागौर में संकलित

ग्रन्थों की सूची

विषय—अध्यात्म, आगम, सिद्धान्त एवं चर्चा

१. अभक्ष वर्णन— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–९" × ४$\frac{१}{४}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२५७२ । रचना काल— × । लिपिकाल— × ।

२ अष्टोत्तरी शतक—पं० भगवतीदास । देशी कागज । पत्र संख्या–३३ । आकार–१०" × ६" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या २२६५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

३. आगम — × । देशी कागज । पत्र संख्या–२० । आकार–१०"$\frac{३}{४}$ × ४$\frac{३}{४}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या–१३७४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–ज्येष्ठ सुदी १ मगलवार, सं० १६५६ ।

४. आठ कर्म प्रकृति विचार—× । देशी कागज । पत्र संख्या–३१ । आकार—११$\frac{३}{४}$" × ६$\frac{१}{४}$" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२६३६ । रचना काल–×·। लिपिकाल– × ।

५. आत्म मीमांसा वचनिका–समन्तभद्र । वचनिकाकार–जयचन्द छाबड़ा । देशी कागज । पत्र संख्या–६६ । आकार–१०" × ४$\frac{३}{४}$" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–हिन्दी एवं संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । रचनाकाल– × । वचनिका रचनाकाल–चैत्र कृष्णा १४ सं० १८६६ । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला २, सं० १९३३ ।

६. आत्म सम्बोध काव्य–रयधू । देशी कागज । पत्र संख्या–२६ । आकार–११" × ५$\frac{१}{२}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या × । रचनाकाल–×। लिपिकाल– ×।

७. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–२५ । आकार–११$\frac{१}{२}$"×४$\frac{३}{४}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१०२४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

८. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या–२७ । आकार–१०$\frac{१}{२}$"×४$\frac{१}{२}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या–१०२७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन सुदी १० बुधवार, सं० १६२९ ।

९. आत्मानुशासन—गुणभद्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–४९ । आकार—१०$\frac{३}{४}$"×४$\frac{१}{२}$" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या–११३८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १४ सोमवार, सं० १६१२ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या २७ । आकार–११×"४½" । दशा जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या १४०५ । रचनालाल–× । लिपिकाल–चैत्र शुक्ला १२ सोमवार, सं० १७४२ ।

११. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या–४६ । आकार–१०½"×४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१३७९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १० शनिवार, सं० १६२८ ।

१२ प्रति संख्या ४ । पत्र संख्या–३८ । आकार–११"×४½" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११८६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ९, मंगलवार, सं० १६०५ ।

विशेष—लिपिकार ने पूर्ण प्रशस्ति लिखि है ।

१३. प्रति संख्या–५ । पत्र संख्या–२७ । आकार–१०½"×४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२७०९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल ।

१४. आत्मानुशासन सटीक—गुणभद्राचार्य । टीकाकार–× । देशी कागज । पत्र संख्या–५० आकार–११¼"×४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या–२५३२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१५. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–७५ । आकार–१०½"×४¾" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१४०६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला १०, सं० १६१८ ।

१६. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या–९८ । आकार–११"×७¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२३६८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला १४ शुक्रवार, सं० १८५३ ।

१७. आत्मानुशासन सटीक—गुणभद्राचार्य । टीकाकार–टोडरमल । देशीकागज । पत्र संख्या–१३६ । आकार–१२½"×६¼" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या–११२७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा ८, शुक्रवार, सं० १८६८ ।

१८. आत्मानुशासन टीका—पं० प्रभाचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–२६ । आकार ११¼"×6" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८०५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ शुक्ला ४, सं० १८५६ ।

आदि भाग :—

वीरं प्रणम्य भववारिनिधिप्रपोप मुद्योतिताऽखिल पदार्थमनल्पपुण्यम् ।
निर्वाणमार्गमनवद्यगुणप्रबन्धमात्मानुशासनमहं प्रवरं प्रवक्ष्ये ।।

वृहद्धर्मभ्रातुल्लोकसेनस्य विषयव्यामुग्ध बुद्धे: संबोधन व्याजेन सर्वोपकारकं सन्मार्गमुपदर्शयितुकामो गुणभद्र देवो निर्विघ्नतः शास्त्र परिसमाप्त्यादिकं फलमभिलषन्नभिष्ट देवताविशेषं नमस्कुर्वाणो लक्ष्मीरित्याद्याह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्तभाग :—

मोक्षोपायमनन्यपुण्यममलज्ञानोदयं निर्मलम् ।
भव्यार्थं परमं प्रभेन्दुकृतिना व्यक्तैः प्रसन्नैः पदैः ॥
व्याख्यानं वरमात्मशासनमिदं व्यामोहविच्छेदतः ।
सुक्तार्थेषु कृतादरैरहरहश्चेतस्यलं चिन्त्यताम् ॥

इति श्री आत्मानुशासनतिलकं प्रभाचन्द्राचार्य विरचितं सम्पूर्णम्

१९. आत्मानुशासन—पार्श्वनाग। देशी कागज। पत्र संख्या–२१। आकार—१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ संख्या–२०६०। रचनाकाल–भाद्रपद १५ बुधवार सं० १०४०। लिपिकाल–×।

२०. आराधना सार—मित्र सागर। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार—१०"×४"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत, संस्कृत एवं हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय—अध्यात्म। ग्रन्थ संख्या–१५२९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२१. आराधना सार पं० आशाधर। देशी कागज। पत्र संग्या–४। आकार—१२"×"५। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ संख्या–२०६५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२२. आराधना सार—देवसेन। देशी कागज। पत्र संख्या–९। आकार–११"×४"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ संख्या–१५१७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२३. प्रति संख्या २। पत्र संख्या–२६। आकार–११"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२६८०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२४. आलाप पद्धति – कवि विष्णु। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार—११"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ संख्या–२०४५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–पोष कृष्णा १५, सं० १६८५।

२५. आलोचना पाठ—जोहरीलाल। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार—१२"×५$\frac{3}{4}$"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ संख्या–१५३५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२६. आलोचना सटीक—जोहरीलाल। टीकाकार–×। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–१२$\frac{1}{2}$"×५$\frac{3}{4}$"। दशा–सामान्य। पूर्ण। भाषा–प्राकृत एवं संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ संख्या–१८०६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२७. इष्टोपदेश—गौतम स्वामी। देशी कागज। पत्र संख्या ५। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ संख्या–१३३७। रचनाकाल–माघ कृष्णा ९ सोमवार, सं० १५२४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२८. प्रति संख्या २। पत्र संख्या–८। आकार–९$\frac{3}{4}$"×३$\frac{3}{4}$" . दशा–सामान्य। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१८५५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२९. इष्टोपदेश—पूज्यपाद स्वामी। देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार–९$\frac{1}{4}$×४$\frac{1}{4}$। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ संख्या–२०४२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३०. प्रति संख्या २। पत्र संख्या–६। आकार–११"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२०३९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा २, बुधवार, सं० १६४६।

३१. प्रति संख्या ३। पत्र संख्या–६। आकार–९$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२०२८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३२. इष्टोपदेश टीका—गोतम स्वामी। टीकाकार पं० आशाधर। देशी कागज। पत्र संख्या–२०। आकार–१०$\frac{3}{4}$"×५। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ संख्या–२४७४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–श्रावण शुक्ला १४, सं० १५६२।

३३ प्रति संख्या २। पत्र संख्या–१८। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×५" दशा। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१९८३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३४. प्रति संख्या ३। पत्र संख्या–३७। आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१५९९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३५. उत्तराध्ययन–×। देशी कागज। पत्र संख्या–६४। आकार–९$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–१७५२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–माघ कृष्णा ५, सं० १७४६।

३६. उदय उदीरण त्रिभंगी—सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमिचन्द्राचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या–२०। आकार–१०$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–१५१८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३७. उपासकाध्ययन वसुनंदी। देशी कागज। पत्र संख्या–१४। आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–सामान्य। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–१९२३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–स० १४२१।

३८. प्रति संख्या २। पत्र संख्या–१३। आकार–११"×५"। दशा–अति जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१९९७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १४२१।

३९. प्रति संख्या ३। पत्र संख्या–१३। आकार–११$\frac{1}{2}$"×६$\frac{1}{2}$"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१४७०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

४०. एक लावणी–×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–९$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ संख्या–१६६२। रचना काल–×। लिपिकाल–×।

४१. एकानेक निरूपण—×। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×५$\frac{3}{4}$"।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२७०७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४२. अंक गर्भ खण्डारचक्र—देवनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार—११½×५ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२३४३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४३. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–४ । आकार–११¾"×५½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२४५२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४४. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या–४ । आकार–१०½"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०७५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४५. प्रति संख्या ४ । पत्र संख्या–४ । आकार–१२"×५" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०३४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ३, सं० १७६७ ।

४६. अंक प्रमाण–× । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०" × ४½" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१६३१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४७. कर्मकाण्ड सटीक–× । टीकाकार–पं० हेमराज । देशी कागज । पत्र संख्या–५० । आकार–१०½"×५¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । टीका हिन्दी में । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१३५६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ५, सं० १८४८ ।

४८. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–३१ । आकार–१०½"×६¼" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१६५४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४६. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या–४४ । आकार–१२½" × ५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२५८५ । रचनाकाल–× । टीकाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ६, सोमवार, सं० १७६४ ।

५०. कर्म प्रकृति—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार—१०½"×४½" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या—१०२८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५१. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–१६ । आकार–११"×५½" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१६७७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५२. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या–६ । आकार–११¾"×६" । दशा–सामान्य । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१८३२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ कृष्णा ५, सं० १८२२ ।

५३. प्रति संख्या ४ । पत्र संख्या–२० । आकार–१०½"×४¼" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१५७४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५४. प्रति संख्या ५। पत्र संख्या–२०। आकार–१०½"×४¼"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१२८८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५५. प्रति संख्या ६। पत्र संख्या–१७। आकार–११¼"×५"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२०९९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–आश्विन शुक्ला १३, सं० १६५६।

विशेष—यह जोवनेर में लिखा गया है।

५६. प्रति संख्या ७। पत्र संख्या–१६। आकार–१०¼"×४½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२०९८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १६१४।

५७. प्रति संख्या ८। पत्र संख्या–१०। आकार–१०"×४¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२२५६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५८. कर्म प्रकृति सार्थ—सि० च० नेमिचन्द्र। अर्थकार–×। देशी कागज। पत्र संख्या–२२। आकार–११"×५¼"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत एवं संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२३९५। रचनाकाल–×। लिपिकाल।

५९. प्रति संख्या २। पत्र संख्या–४०। आकार–१०½"×५"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५३८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६०. प्रति संख्या ३। पत्र संख्या–११। आकार–१२¾"×५¾"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२०९३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ६, शुक्रवार, सं० १७९३।

६१. प्रति संख्या ४। पत्र संख्या–२३। आकार–११½"×४¾"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५१६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–मंगशीर्ष शुक्ला ३, सं० १८२२।

विशेष—सं० १७२७ मंगशीर्ष शुक्ला १४, मंगलवार को महाराष्ट्र में श्री महाराज रघुनाथसिंह के राज्य में प्रति का संशोधन किया गया।

६२. प्रति संख्या ५। पत्र संख्या–२५। आकार–११½"×५¾"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२३४७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६३. प्रति संख्या ६। पत्र संख्या–१९। आकार–१२¾"×५¾"। दशा–सामान्य। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१९५८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६४. प्रति संख्या ७। पत्र संख्या–१२। आकार–१०½"×४½"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१४९९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६५. कर्म प्रकृति सूत्र भाषा–×। देशी कागज। पत्र संख्या–७१। आकार–९¾"×५¼"। दशा–सामान्य। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–१६०१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला १, मंगलवार, सं० १८२८।

६६. प्रति संख्या २। पत्र संख्या–१५९। आकार–१०½"×४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२८०१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–मंगशीर्ष शुक्ला २, बुधवार, सं० १६९१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेष—पद्य संख्या ३५०० हैं।

६७. कार्तिकेयानुप्रेक्षा—कार्तिकेय । देशी कागज । पत्र संख्या–२६ । आकार—$११\frac{१}{२}$"×५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२७०० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १०, रविवार सं० १६०४ ।

६८. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–२८ । आकार–$१०\frac{१}{२}$"×$४\frac{३}{४}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२४७६ । रचनाकाल । लिपिकाल–× ।

६९. काव्य टिप्पण–× । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१०"×$५\frac{१}{२}$" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२०६६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

७०. क्रिया कलाप टीका– । टीकाकार–प्रभाचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या–६५ । आकार–१२"×५" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय—अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या–२६४५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

७१. किया कोष—किशनसिंह । देशी कागज । पत्र संख्या–६१ । आकार–१०"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या–२३६६ । रचनाकाल–भाद्रपद शुक्ला १५, रविवार, सं० १७८४ । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला २, सं० १९३७ ।

७२. गुण स्थान कथा—कान्हा छाबड़ा । देशी कागज । पत्र संख्या–१९ से २८ । आकार–९"×$३\frac{३}{४}$" । दशा–अच्छी । अपूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या २८५७ । रचनाकाल–आषाढ़ शुक्ला १५, सोमवार, सं० १७१३ । लिपिकाल–वैशाख शुक्ला १४, बृहस्पतिवार, सं० १८३६ ।

७३. गुणस्थान चर्चा–× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०"×$४\frac{१}{४}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एवं हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२१४४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

७४. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–१ । आकार–$२२\frac{१}{२}$"×१४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२२३८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–मंगशीर्ष शुक्ला २, सं० १७८७ ।

७५. गुणस्थान चर्चा सार्थ—रत्न शेखर सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या–१६ । आकार–१०"×$४\frac{१}{४}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धांत । ग्रन्थ संख्या–१८२६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

७६. गुणस्थान बंध (व्युच्छति प्रकरण)–× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०"×$४\frac{१}{२}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१६४० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

७७. गोम्मटसार—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या–२५ । आकार—$११\frac{१}{४}$"×५" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२८१९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–वैशाख कृष्णा १३, सं० १६०० ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७८. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–१५ । आकार–१६"×६" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२६०६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ११, सं० १६३६ ।

नोट—ग्रन्थ के पत्र आपस में चिपके हुए हैं । इसकी कालाडेरा जयपुर में लिपि की गई ।

७९. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या–१८ । आकार–११"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२४६० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

८०. गोम्मटसार सटीक—सि० च० नेमिचन्द्र । टीकाकार–× । देशी कागज । पत्र संख्या–३४ । आकार–११"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२८३५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

८१. गोम्मट सार (जीवकाण्ड मात्र)—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या–७१ । आकार–११"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२५९६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १० सोमवार, सं० १५१८ ।

८२. गोम्मटसार सटीक—सि० च० नेमिचन्द्र । टीका–अज्ञात । देशीकागज । पत्र संख्या–२६० । आकार–१२"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१५७५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा २ वृहस्पतिवार, सं० १६५६ ।

८३. गोम्मटसार भाषा–सि० च० नेमिचन्द्र । भाषाकार–महापण्डित टोडरमल । देशी कागज । पत्र संख्या–१०२६ । आकार–१४$\frac{1}{2}$"×८$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–राजस्थानी (ढूंढारी) । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२६२२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल—× ।

विशेष—नागौर गादी के भट्टारक १०८ श्री मुनीन्द्रकीर्तिजी ने "निसरावल" मूल्य देकर इस ग्रन्थ को स० १९१९ माघ शुक्ला ५ को लिया है । भाषाकार ने लिखा है कि जीव तत्त्व प्रदीपिका संस्कृत टीका के अनुसार भाषा की गई है । टीका का नाम "सम्यज्ञान चन्द्रिका टीका" है । वचनिकाकार श्री पं० टोडरमलजी जयपुर निवासी ने अन्त में लिखा है कि लब्धिसार और क्षपणसार शास्त्रों का व्याख्यान भी आवश्यकतानुसार मिला दिया गया है । अक्षर मोटे एवं सुन्दर हैं ।

८४. चक्रवर्ती ऋद्धि वर्णन–× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–९$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या–२२७५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

८५. चतुर्दश गुणस्थान चर्चा—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या–१५ । आकार–८"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१७८२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १, सं० १९४३ ।

८६. चतुर्दश गुणस्थान व्याख्यान—× । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार—१०$\frac{1}{4}$"×५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ संख्या–२५६७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

८७. **चतुर्विंशति स्थानक चर्चा**—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या–२० । आकार–१२½"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१२४३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–आषाढ़ शुक्ला ११, सं० १८०० ।

८८. **चतुर्विंशति स्थानक**—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या—२९ । आकार–१०½"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२३४४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–मंगशीर्ष कृष्णा २, सं० १८७८ ।

८९. **प्रति संख्या २** । पत्र संख्या–४२ । आकार–११"×४½" । दशा–सामान्य । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१०८० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–प्रथम ज्येष्ठ शुक्ला १, स० १८७७ ।

९०. **चतुस्त्रिंशद भावना**—मुनि पद्मनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–११¼"×४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४२२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९१. **चरचा पत्र**—संकलित । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–११"×४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२१३९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९२. **चरचा पत्र**–× । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आमार–८¾"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२१३४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९३. **चरचा पत्र**–× । देशी कागज । पत्र संख्या–४३ । आकार–१२¾"×५¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२७५७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९४. **चर्चायें**—× । देशी कागज । पत्र संख्या–५९ । आकार–११½"×५¼" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एवं हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–चर्चा । ग्रन्थ संख्या–१२७८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९५. **चर्चा तथा शील की नवपाटी**–× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१२"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एवं हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१९६३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९६. **चरचा शतक (सटीक)**—पं० द्यानतराय । टीकाकार–हरजीमल । देशी कागज । पत्र संख्या–५२ । आकार–१२½"×८¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२५०१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ३, बुधवार, सं० १९२८ ।

९७. **प्रति संख्या २** । पत्र संख्या–८२ । आकार–१३"×८½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१५७८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–बैशाख कृष्णा ७, मंगलवार, सं० १९१० ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९८. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या–४७ । आकार–१२$\frac{3}{4}$"×८$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१५७७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९९. चरचा शास्त्र–×। देशी कागज । पत्र संख्या–४५ । आकार–११"×५$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१६४१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–पोष शुक्ला १, सं० १८९९ ।

१००. चरचा समाधान—पं० भूधरदास । देशी कागज । पत्र संख्या–३ से १२६ । आकार–९$\frac{1}{4}$"×५" । दशा–बहुत अच्छी । अपूर्ण । भाषा–प्राकृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–चर्चा एवं सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१२७७ । रचनाकाल–माघ शुक्ला ५, सं० १८०६ । लिपिकाल–× ।

१०१. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–७७ । आकार–१२"×५$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२८१ । रचनाकाल–माघ शुक्ला ५, सं० १८०६ । लिपिकाल–आषाढ़ शुक्ला ४, शुक्रवार, सं० १८३० ।

१०२. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या–४८ । आकार–१२$\frac{1}{2}$"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२८० । रचनाकाल–सं० १८०६ । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा १२, सं० १८८१ ।

१०३. चौबीस ठाणा चौपई भाषा—पं० लोहर । देशी कागज । पत्र संख्या–३५ । आकार–१२$\frac{1}{4}$"×५$\frac{1}{4}$" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१७९६ । रचनाकाल–मंगसिर सुदी ५, सं० १७३९ । लिपिकाल–सं० १८५२ ।

टिप्पणी—चौबीस ठाणा के मूलकर्ता सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमिचन्द्राचार्य हैं। उस ग्रन्थ के आधार पर ही हिन्दी रूप में पं० लोहर ने रचना की है।

१०४. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–५६ । आकार–१२$\frac{3}{4}$"×५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१५७० । रचनाकाल–मंगसिर सुदी ५, सं० १७३९ । लिपिकाल—अश्विन कृष्णा १, सं० १७६० ।

१०५. चौबीस ठाणा पिठीका–× । देशी कागज । पत्र संख्या–८ । आकार—११$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१७७० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०६. चौबीस ठाणा पिठीका तथा बंध व्युच्छति प्रकरण—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या–७३ । आकार–११$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत व संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२२४२ । रनचाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०७. चौबीस ठाणा सार्थ—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या–३० । आकार–१०$\frac{1}{4}$"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या–२४५९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०८. चौबीस दण्डक—गजसार । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०$\frac{3}{4}$"× ४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२७२० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नोट—श्वेताम्बर आम्नायानुसार वर्णन किया गया है।

१०९. चौवीस दण्डक सार्थ—गजसार। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार—१०"×४¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–प्राकृत, हिन्दी तथा गुजराती। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२५६५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

११०. चौवीस दण्डक गति विवरण—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०½"×४½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ संख्या–१६३८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१११. जन्मान्तर गाथा–×। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–१०½"×४¼"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ संख्या–१४२४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

११२. जीव तत्व प्रदीप–केशवाचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या–११३। आकार–१०"×७"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–प्राकृत एवं संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या–२४१४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

११३. जीव प्ररूपण—गुण रयण भूषण। देशी कागज। पत्र संख्या–२८। आकार—१०½"×४¾"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–३७७/अ। रचनाकाल–×। लिपिकाल–चैत्र सुदी २, स० १५११।

११४. जीव विचार प्रकरण—×। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार १०¼"×४¼"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त ग्रन्थ संख्या–१९८२। रचनाकाल—×। लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला १, सं० १७०५।

११५. प्रति संख्या २। पत्र संख्या–१२ आकार–८¾"×४¼"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२८०९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा १२, सं० १८४५।

११६. जीव विचार सूत्र सटीक—शान्ति सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–३१। आकार–१०"×४¼"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय—सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–१३०८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

११७. प्रति संख्या २। पत्र संख्या–५। आकार–१०"×४¼"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२७११। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

११८. प्रति संख्या ३। पत्र संख्या–६। आकार–१०½"×४½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२७१७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–पोष कृष्णा १३, सं० १७९७।

विशेष–अन्तिम पत्र पर २२ अभक्ष पदार्थों के नाम दिये हुए हैं।

११९. जैन शतक—भूधरदास खण्डेलवाल। देशी कागज। पत्र संख्या–१३। आकार–११"×५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२३०८। रचनाकाल–पोष कृष्णा १३, सं० १७८१। लिपिकाल–चैत्र शुक्ला १, बुधवार सं० १९४८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२०. ढाढसी मुनि गाथा—मुनि ढाढसी। देशी कागज। पत्र संख्या—९। आकार—१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—प्राकृत और संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या—२५९५। रचनाकाल—×। लिपिकाल—चैत्र शुक्ला २, सं० १७८८।

१२१. तर्क परिभाषा—केशव मिश्र। देशी कागज। पत्र संख्या—१८। आकार—११$\frac{1}{4}$"×५"। दशा—प्राचीन। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—तर्क शास्त्र। ग्रन्थ संख्या—१६७९। रचनाकाल—×। लिपिकाल—अश्विन शुक्ला ४, सं० १६८६।

१२२. तत्व धर्मामृत—चन्द्रकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या—३३। आकार—११$\frac{1}{4}$"×५$\frac{1}{4}$"। दशा—सामान्य। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—आगम। ग्रन्थ संख्या—३८२/अ। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

१२३. प्रति संख्या २। पत्र संख्या—३३। आकार—१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा—जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—१०९८। रचनाकाल—×। लिपिकाल—भाद्रपद बुदी ६, सं० १५६७।

१२४. प्रति संख्या ३। पत्र संख्या—३२। आकार—१२"×५"। दशा—जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—१०३२। रचनाकाल—×। लिपिकाल—अश्विन शुक्ला ५, सं० १५६७।

टिप्पणी—आमेर शास्त्र भण्डार की ग्रन्थ सूची में इसके कर्ता का नाम चन्द्रकीर्ति उल्लिखित है। प्रारम्भ का एक श्लोक दोनों ग्रन्थों का एक ही है किन्तु अन्तिम श्लोक भिन्न-भिन्न हैं। आमेर के ग्रन्थ में श्लोक संख्या ४७७ हैं जबकि यहाँ इस ग्रन्थ में ५०० श्लोक हैं। यहाँ इस ग्रन्थ के रचयिता का नाम ग्रन्थ में मुझे दृष्टिगत नहीं हुआ। अतः मैंने इसे उसकी रचना ही मानी है।

१२५. तत्वबोध प्रकरण—×। देशी कागज। पत्र संख्या—२१। आकार—१२"×५$\frac{1}{2}$"। दशा—सामान्य। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या—१७५५। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

१२६. तत्व सार—देवसेन। देशी कागज। पत्र संख्या—६। आकार—१०$\frac{1}{2}$"×४"। दशा—जीर्ण। पूर्ण। भाषा—प्राकृत। लिपि—नागरी। विषय—सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या—१५०९। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

१२७. तत्वत्रय प्रकाशिनी—ब्रह्म श्रुतसागर। देशी कागज। पत्र संख्या—७। आकार—१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{4}$। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या—२४४२। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

नोट—टीका का नाम तत्व त्रय प्रकाशिनी है।

१२८. तत्वज्ञान तरंगिणी—भ० ज्ञानभूषण। देशी कागज। पत्र सख्या—१६। आकार—१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या—२८५६। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

१२९. तत्वज्ञान तरंगिणी सटीक—भ० ज्ञानभूषण। टीकाकार—×। देशी कागज।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पत्र संख्या–८९। आकार–११"×७½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२२६७। रचनाकाल–सं० १५६०। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ६, सं० १९८६।

१३०. तत्वार्थ रत्न प्रभाकर—प्रभाचन्द्र देव। देशी कागज। पत्र संख्या–२ से ७४। आकार–११½"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२८५४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

नोट—प्रथम पत्र नहीं है।

१३१. प्रति संख्या २। पत्र संख्या–८२। आकार–१२"×५"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२३५२। रचनाकाल–भाद्रपद शुक्ला ५, सं० १४८९। लिपिकाल–श्रावण शुक्ला १३, शुक्रवार, सं० १५५०।

१३२. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–१६६। आकार×११¾"×३¾"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१२६२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१३३. तत्वार्थ सूत्र—उमा स्वामी। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार—१०¾×५¼"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७६२। रचना काल–×। लिपिकाल–×।

१३४. प्रति संख्या २। पत्र संख्या–२२। आकार–११¾"×५¾"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२५२०। रचनाकाल—×। लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला २, रविवार, सं० १६२०।

१३५. तत्वार्थ सूत्र सटीक—उमास्वामि। टीकाकार—श्रुतसागर। देशी कागज। पत्र संख्या–३०। आकार–१०"×४½"। दशा–अच्छी। अपूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२०८२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१३६. तत्वार्थ सूत्र सार्थ–×। देशी कागज। पत्र संख्या–२७। आकार–१०½"×४¾"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत व हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या—१३४९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१३७. तत्वार्थ सूत्र सटीक—सदासुख। देशी कागज। पत्र संख्या–८६। आकार—१२¼"×५½"। दशा–सामान्य। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८६४। रचनाकाल–फाल्गुन कृष्णा १०, सं० १९१०। लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ३, सं० १९६३।

१३८. तत्वार्थ सूत्र भाषा–कनककीर्ति। देशीकागज। पत्र संख्या–४९। आकार—११½"×५"। दशा–सामान्य। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१३५०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ६, सं० १८७२।

१३९. तत्वार्थ सूत्र वचनिका—पं० जयचंद। देशी कागज। पत्र संख्या–४७६। आकार–१०¾"×५¼"। दशा–सामान्य। पूर्ण। भाषा–संस्कृत एवं हिन्दी। लिपि–नागरी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१८०१ । रचनाकाल–चैत्र शुक्ला ५, सं० १८३६ । लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला ५, सं० १९०४ ।

विशेष—अन्त में वचनिकाकार ने स्वयं का तथा अन्य अनेक पण्डितों का परिचय दिया है ।

१४०. तेरह पंथ खण्डन—पं० पन्नालाल । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार—$12\frac{1}{4}$" × $5\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–चर्चा । ग्रन्थ संख्या–२२७३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

विशेष– दिगम्बर सम्प्रदाय के तेरह पंथ के सिद्धान्तों का खण्डन किया गया है ।

१४१. दण्डक चौपई–पं० दौलतराम । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–$10\frac{3}{4}$" × $5\frac{1}{4}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—१६६३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१४२. दण्डक सूत्र– गजसार मुनि । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–$10\frac{1}{2}$" × $4\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१७३२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–पौष शुक्ला १०, सं० १७५४ ।

१४३. दश अछेरा—× । देशी कागज । पत्र संख्या—८ । आकार—१०" × $4\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२२५७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–मगसिर शुक्ला ५, सं० १७६६ ।

१४४. दर्शनसार सटीक देवसेनाचार्य । टीका–शिवजीलाल । देशी कागज । पत्र संख्या–१२० । आकार–$12\frac{1}{2}$" × $5\frac{1}{2}$" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१५६६ । टीकाकाल–माघ शुक्ला १०, सं० १९२३ । लिपिकाल–× ।

१४५. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–९५ । आकार–$11\frac{1}{2}$" × $7\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२३९९ । रचनाकाल–माघ शुक्ला १०, सं० ९९० । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ८, शनिवार, सं० १९२८ ।

विशेष—वि० सं० ९९० माघ शुक्ला १०, को मूल रचना धारा नगरी के श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में की गई । और हिन्दी टीका १९२३ माघ शुक्ला १० को हुई है ।

१४६. दर्शन सार—भ० देवसन । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–$11\frac{1}{2}$" × ५" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२६५४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१४७. द्रव्य संग्रह—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार—$9\frac{1}{4}$" × ४" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२४१६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा ८, सं० १६९९ ।

१४८. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–१९ । आकार–$9\frac{1}{2}$" × $5\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२६१८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४९. प्रति संख्या ३। पत्र संख्या–४। आकार–१०½"×४½"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५८२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१५०. प्रति संख्या ४। पत्र संख्या–६। आकार–११"×४¾"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१३२९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१५१. द्रव्य संग्रह सटीक—प्रभाचन्द्राचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या–३२। आकार–९¾"×३¾"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–११०९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

आदिभाग—

नत्वा जिनाकर्मपहस्तिततसर्वदोषं,
लोकत्रयाधिपति संस्तुत पादपद्मम्।
ज्ञान प्रभा प्रकटिताखिलवस्तुसार्थं,
षड्द्रव्यनिर्णयमहं प्रकटं प्रवक्ष्ये ॥१॥

अन्तभाग—

इति श्री परमागमिक भट्टारक–श्री नेमिचन्द्रविरचित–षड्द्रव्यसंग्रहे श्रीप्रभाचन्द्रदेवकृत संक्षेप टिप्पणकं समाप्तम् ॥

१५२. द्रव्य संग्रह सटीक—पर्वत धर्मार्थी। देशी कागज। पत्र संख्या–५४। आकार–१०½"×५"। दशा–सामान्य। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–१३५४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा १४, वृहस्पतिवार, सं० १८२८।

१५३. द्रव्य संग्रह सटीक—ब्रह्मदेव। देशी कागज। पत्र संख्या–६८। आकार–११½"×४½"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२४१२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १०, रविवार, स० १४९९।

१५४. प्रति संख्या २। पत्र संख्या–७२। आकार १२½"×५½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२६८१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ७, वृहस्पतिवार, सं० १५२९।

१५५. द्रव्य संग्रह सार्थ–×। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–९"×४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२५७६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१५६. प्रति संख्या २। पत्र संख्या–७। आकार–१२½"×५¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२३८६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१५७. द्रव्य संग्रह टिप्पण—प्रभाचन्द्रदेव। देशी कागज। पत्र संख्या–३२। आकार–११"×५"। दशा प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२७६९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–अश्विन कृष्णा १०, रविवार, सं० १६१७।

१५८. दोहा पाहुड़—कुन्दकुन्दाचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या–१९। आकार—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०"×४½" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२२६१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १०, सं० १५६२ ।

१५९. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–१९ । आकार–१०½"×४¼" । ग्रन्थ संख्या—१४४९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला ५, सं० १५५८ ।

१६०. द्वादश भावना— श्रुत सागर । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार—१०¼"×४¼" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या–१६३५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१६१. धर्म परीक्षा–हरिषेण । देशीकागज । पत्र संख्या–७३ । आकार–१०¾"×४¾" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या–१७७४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा १२, रविवार, सं० १५६५ ।

१६२. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–१३३ । आकार–९½"×४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२७९६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १३, शुक्रवार, सं० १६०६ ।

विशेष– लिपिकार ने अपनी पूर्ण प्रशस्ति लिखी है ।

१६३. धर्म परीक्षा रास—सुमति कीर्ति सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या–२३५ । आकार–९¾"×४½" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या–१०१२ । रचनाकाल–मंगसिर सुदी २, सं० १६२५ । लिपिकाल–× ।

१६४. धर्म प्रश्नोत्तर—भ० सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या–५३ । आकार–१०"×४¾" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या–११४४ । रचनाकाल× । लिपिकाल–× ।

१६५. धर्म रसायण—पद्मनंदि मुनि । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार—११"×५" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या- १९२५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–चैत्र शुक्ला ३, सं० १६५४ ।

१६६ प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–१३ । आकार–११"×४¾" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२३८३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१६७ प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या–१० । आकार–११½×५½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१६४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१६८. धर्म संवाद—× । देशी कागज । पत्र संख्या–११ । आकार–१०½"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२४७७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१६९ ध्यान बत्तीसी—बनारसीदास । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार—१०¾"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२४५३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७०. नन्दी सूत्र— X । देशी कागज । पत्र संख्या–२१ । आकार–१०½"X४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१६०६ । रचनाकाल– X । लिपिकाल– X ।

१७१. नयचक्र—देवसेन । देशी कागज । पत्र संख्या–३९ । आकार–१३½"X५½" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत एवं प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२३२४ । रचनाकाल– X । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा ११, रविवार, सं० १५४२ ।

१७२ नयचक्र बालावबोध—सदानन्द । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–१०½"X४½" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२८२७ । रचनाकाल– X । लिपिकाल– X ।

१७३. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–११ । आकार–१०"X४¼" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१९१८ । रचनाकाल– X । लिपिकाल– X ।

१७४. नयचक्र भाषा—पं० हेमराज । देशी कागज । पत्र संख्या–१८ । आकार–८¼"X४" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६४८ । रचनाकाल–फाल्गुन शुक्ला १०, सं० १७२६ । लिपिकाल– X ।

१७५. नवतत्व टीका— X । देशी कागज । पत्र संख्या–९ । आकार–११"X५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६११ । रचनाकाल X । लिपिकाल– X ।

१७६. नवतत्व वर्णन—अभयदेव सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०¼"X४¼" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत व हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या २७१२ । रचनाकाल– X । लिपिकाल–सं० १७६४ ।

१७७ प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–१३ । आकार–१०½"X४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२७२३ । रचनाकाल– X । लिपिकाल–पौष शुक्ला १२, बृहस्पतिवार, सं० १७४७ ।

१७८. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या–६ । आकार–१०¼"X४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१४०३ । रचनाकाल– X । लिपिकाल– X ।

१७९. नवरत्न— X । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०¼"X४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५३४ । रचनाकाल– X । लिपिकाल– X ।

१८०. नास्तिकवाद प्रकरण— X । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–९¼"X५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१६७२ । रचनाकाल– X । लिपिकाल– X ।

१८१. नित्य क्रिया काण्ड— X । देशी कागज । पत्र संख्या–१-३६ । आकार–११½"X५½" । दशा–अच्छी । अपूर्ण । भाषा–प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२८४९ । रचनाकाल– X । लिपिकाल– X ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८२. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–१-१७ । आकार–११$\frac{3}{8}$"×५$\frac{1}{8}$" । दशा–अच्छी । अपूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२८५१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८३. परमात्म छत्तीसी— पं० भगवतीदास । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–११"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–आगम । ग्रन्थ संख्या–१६५८ । रचनाकाल–सं० १७५० । लिपिकाल– × ।

१८४. परमात्म प्रकाश— योगिन्द्र देव । देशी कागज । पत्र संख्या–२१ । आकार–११"×४$\frac{3}{8}$" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या–१३४४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८५. परमात्म प्रकाश टीका—ब्रह्मदेव । देशी कागज । पत्र संख्या–१०६ । आकार–१०"×४$\frac{3}{8}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश, टीका संस्कृत में । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या–१८४६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ६, मंगलवार, सं० १८८५ ।

१८६ पुण्य बत्तीसी— समय सुन्दर । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०"×४$\frac{1}{8}$" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१३१२ । रचनाकाल–सं० १६६६ । लिपिकाल–माघ कृष्णा ७, सं० १७८६ ।

१८७. पुरुषार्थ सिद्ध युपाय —अमृतचन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–११$\frac{1}{8}$"×५" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२१२४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–सं० १८४८ ।

विशेष––इसकी लिपि इन्दौर में की गई ।

१८८. पंचसंग्रह— × । देशी कागज । पत्र संख्या–७७ । आकार–११$\frac{3}{8}$"×५$\frac{1}{8}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२५३१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–सं० १५३५ ।

१८९. पंचप्रकाशसार— × । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०"×५" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२४९८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१९०. पंचास्तिकाय समयसार सटीक—अमृतचन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या–४८ । आकार–१२$\frac{1}{8}$"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–आगम । ग्रन्थ संख्या–२३८१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ५, सं० १७०९ ।

१९१. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–३५ । आकार–१२"×६" । दशा–सामान्य । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११६० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१९२. पंचास्तिकाय व समयासार टीका– पं० हेमराज । देशी कागज । पत्र संख्या–८४ । आकार–१०"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–आगम । ग्रन्थ संख्या–१९०२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–सं० १८८५ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९३. प्रतिक्रमण सार्थ — ×। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–१०½"×४¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२७३२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–अश्विन कृष्णा ९, सं. १७९०।

१९४. प्रतिमा बहोत्तरी – पं० द्यानतराय। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–११"×५¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–आगम। ग्रन्थ संख्या–२५३३। रचनाकाल–ज्येष्ठ शुक्ला २, सं० १७८१। लिपिकाल– ×।

विशेष—इस ग्रन्थ की रचना दिल्ली में की गई।

१९५. प्रथम बखाण— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–१३। आकार–१०"×४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२७३६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १०, सं० १८०२।

१९६. प्रमेयरत्नमाला वचनिका—पं० माणिक्य नन्दि। वचनिका—पं० जयचन्द। देशी कागज। पत्र संख्या–१४६। आकार–११"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८६५। रचनाकाल–आषाढ़ शुक्ला ४, बुधवार, सं० १८६३। लिपिकाल– ×।

१९७. प्रलय प्रमाण– ×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–९¾"×४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१४९८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

टिप्पणी—त्रिलोकसार के अनुसार प्रलय के प्रमाण का वर्णन किया गया है।

१९८. प्रवचनसार वृत्ति— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–१३९। आकार–१०½" × ४½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ संख्या–१२१७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१९९. प्रवचनसार वृत्ति—अमृतचन्द्र सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–१४१। आकार–११¾" × ५"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत, टीका संस्कृत में। लिपि–नागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ संख्या–१२९०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

टिप्पणी—टीका का नाम तत्वदीपिका है।

२००. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–८९। आकार–११" × ४"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२७३१। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–विक्रम सं०–१६२०।

२०१. प्रति संख्या ३। पत्र संख्या–३४। आकार–१०¾"×५½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२४४०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–विक्रम सं० १६२१।

२०२. प्रवचनसार सटीक— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–५८। आकार–१०" × ५"। दशा–सामान्य। पूर्ण। भाषा–प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ संख्या–१८९७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

टिप्पणी—इस ग्रन्थ का हिन्दी पद्यानुवाद अमृतचन्द्राचार्य की टीकानुसार किया गया है। ग्रन्थ में हिन्दी अनुवाद के कर्ता का नामोल्लेख नहीं है।

२०३. प्रश्नोत्तरोपासकाचार—भ० सकलकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–१५१। आकार–१०½"×५"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२४६५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–माघ कृष्णा २, शुक्रवार, सं० १६२६।

विशेष—अकबर के राज्यकाल में लिपि की गई है। १७१७ भाद्रपद शुक्ला १३, शुक्रवार, शक संवत् १५८२ में दान दी गई।

२०४. प्रश्नोत्तर रत्नमाला—राजा अमोघहर्ष। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–६½" × ४½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–देवनागरी। विषय–अध्यात्म। ग्रन्थ संख्या–१३१३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–माघ शुक्ला १५, सं० १६७३।

२०५. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०"×४¼"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१३३६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–×।

२०६. बंधस्वामित्व (बंधतत्व)—देवेन्द्र सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–१०¼"×४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२७१०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–श्रावण कृष्णा १२, सं० १७१३।

२०७. प्रति संख्या २। पत्र संख्या–८। आकार–१०½"×४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२४८५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–श्रावण कृष्णा ११, सं० १७१३।

विशेष—श्री ब्रह्महेमा ने नागपुर में लिपि की है।

२०८. बन्धोदयदीरणसत्ता विचार—सि० च० नेमिचन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–१२½"×५¼"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२६३१। रचनाकाल–×। लिपिकाल– ×।

२०९. प्रति संख्या २। पत्र संख्या–१। आकार–६¼"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२६८३। रचनाकाल–×। लिपिकाल– ×।

२१०. बन्धोदयदीरणसत्ता स्वामित्व सार्थ—×। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–११½"×४½"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२०५३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–माघ कृष्णा १२, सं० १७१६।

२११. भगवती आराधना सटीक—×। देशी कागज। पत्र संख्या–५६२। आकार–११"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–१७८१। रचनाकाल–×। लिपिकाल—सं० १५१८।

२१२. भव्य मार्गणा—×। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार१२"×५½"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२३८८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१३. भविष्यत् चौईसी— × । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–$११\frac{3}{8}$"×$४\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–आगम । ग्रन्थ संख्या–२२४१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

२१४. भावना बत्तीसी— × । देशी कागज । पत्र संख्या–६४ । आकार–$११\frac{3}{8}$"×५" । दशा–सामान्य । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१२८७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

२१५. भावनासार संग्रह—महाराजा चामुण्डराय । देशी कागज । पत्र संख्या–६१ । आकार–$११\frac{1}{2}$"×$४\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१७३२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

आदिभाग— ।।ॐ।। स्वस्ति ।। ॐ नमो वीतरागाय ।।
अरिहननरजो हननरहस्यहरप्रजनार्हमर्हतं ।।
सिद्धान सिद्धाष्ट गुणान् रत्नत्रयसाधकान् सुवेसाधन् ।।

अन्तभाग—इति सकलागम संयम सम्पन्न श्रीमद् जिनसेन भट्टारक श्री पादपद्म प्रसादा सादित चनु रनु योगपारावार पारग धर्म्म विजयते श्री चामुण्डमहाराज विरचिते भावनासार संग्रहे चारित्र सारे अनागार धर्म्मः समाप्तः ।।छ।।

टिप्पणी—ग्रन्थ के दीमक लग गई है, फिर भी अक्षरों को विशेष क्षति नहीं हुई है ।

२१६. भावसंग्रह—देवसेन । देशी कागज । पत्र संख्या–५४ । आकार–$११\frac{1}{8}$"×$४\frac{3}{8}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२५०० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १३, सं० १५६४ ।

२१७. भावसंग्रह—देवसेन मुनि । देशी कागज । पत्र संख्या–३१ । आकार–१०" × $४\frac{3}{8}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विपय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१०५३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ५, सं० १५२६ ।

२१८. भावसंग्रह—श्रुतमुनि । देशी कागज । पत्र संख्या–४० । आकार–१३"×$५\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१०३१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

आदिभाग—

खविदघण घाइकम्मे अरहंते सुविदिदत्थ – णिवहेय ।
सिद्धट्ठ गुणे सिद्धे रयणत्तय साहगे थुवे साहू ।।१।।
इदि वंदियं – पंचगुरु सरूवसिद्धत्थ भविय बोहत्थं ।
सुत्तुत्तं मूलुत्तर – भावसरुवं पवक्खामि ।।२।।

अन्तभाग—

णाद–णिखिलत्थ–सत्थो सयल–णरिदेहिं पूजिओ विमलो ।
जिण–मग्ग–गमण–सूरोजयउ चिरं चारुकित्तिमुणी ।।२२।।
वर सारत्तय–णिउणो सुद्धं परओ विरहिय – परभाओ ।
भवियाणं पडिबोहणपरो पहाचंद – णाममुणी ।।२३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१९. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–४२। आकार–१०$\frac{3}{4}$"×५"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१००७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–×।

२२०. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–४०। आकार–११$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–११९५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला १०, बृहस्पतिवार, सं० १७२२।

२२१. भावसंग्रह—पं० वामदेव। देशी कागज। पत्र संख्या–३७। आकार–११"×५"। दशा–बहुत अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–१८६६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–आषाढ कृष्णा ३, सं० १९०८।

२२२. भावसंग्रह सटीक— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–३५। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×५"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२०६७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२२३. भाव त्रिभंगी (सटीक)—सि० च० नेमिचन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या–८३। आकार–११$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–१३७६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–प्रथम श्रावण शुक्ला १, सं० १७३३।

२२४. महावीर जिन नय विचार— यशः विजय। देशी कागज। पत्र संख्या–१३। आकार–१२"×६"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या १७०५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा ७, सं० १८६७।

२२५. मोक्षमार्ग प्रकाशक वचनिका—महापण्डित टोडरमल। देशी कागज। पत्र संख्या–२०९। आकार–१६"×६$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (राजस्थानी)। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२३६६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ला १३, शुक्रवार, सं० १९३४।

२२६. मृत्यु महोत्सव वचनिका—पं० सदासुख। देशी कागज। पत्र संख्या–१८। आकार–९$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत एवं हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२३९२। वचनिका रचनाकाल–आषाढ़ शुक्ला ५, सं० १९१८। लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ७, रविवार, सं० १९२५।

२२७. राजवार्तिक—अकलंकदेव। देशी कागज। पत्र संख्या–३०८। आकार–१२"×५"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–आगम। ग्रन्थ संख्या–१८९२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

२२८. लघू तत्वार्थ सूत्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–७$\frac{1}{4}$"×५$\frac{1}{4}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२२७२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्वार्थसूत्र से संकलन करके ही लघूसूत्र की रचना की गई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२२९. बृहद् द्रव्यसंग्रह सटीक—सि० च० नेमिचन्द्र। टीकाकार–× । देशी कागज। पत्र संख्या–१५५ । आकार–१०" × ३½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और टीका संस्कृत में । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–११७२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–ज्येष्ठ बुदी १०, बृहस्पतिवार, सं० १४६२ ।

२३०. व्युच्छति त्रिभंगी—सि० च० नेमिचन्द्र। देशी कागज । पत्र संख्या–११ । आकार–१०½" × ५" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१५०७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–आषाढ कृष्णा ५, बृहस्पतिवार, सं० १५६२ ।

२३१. वाद पचचीसी—ब्रह्म गुलाल । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१९" × ४½" । दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२४४५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

२३२ विचार षट् त्रिशंक (चौबीस दण्डक सार्थ)—गजसार। देशी कागज। पत्र संख्या–२२ । आकार–९¾" × ४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२७४१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १२, शनिवार, सं० १७९४ ।

२३३. विशेष सत्ता त्रिभंगी—नयनंदि। देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१३" × ५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१९९२। रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

२३४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–११" × ४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या १६३९ । रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२३५. वेद कान्ति—×। देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–११¾" × ४½" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–चर्चा । ग्रन्थ संख्या–२२४३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

२३६. शोभन श्रुति—पं० धनपाल। टीकाकार—क्षेमसिंह । देशी कागज । पत्र संख्या–८ । आकार–१०½" × ४½" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१३९४। रचनाकाल–× । लिपिकाल–द्वितीय ज्येष्ठ कृष्णा १३, सं० १५२७ ।

२३७. षट्कर्मोपदेश रत्नमाला—अमरकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–१०४। आकार–१२" × ४¾" । दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२७९५ । रचनाकाल–विक्रम सं० १२७४ । लिपिकाल–माघ शुक्ला ५, सं० १६०१ ।

२३८. षट् दर्शन समुच्चय—× । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१०¾" × ४¾" । दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२६९८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

२३९. षट् दर्शन विचार– × । देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१२"×५¾" ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५२४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

२४०. षट् दर्शन समुच्चय टीका—हरिभद्र सूरि । पत्र संख्या–२८ । आकार–१०$\frac{3}{4}$″×४$\frac{3}{4}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–११५५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

२४१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–११″×५$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१६४९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल-बैशाख शुक्ला १४, सं० १८६१ ।

२४२. षट् द्रव्यसंग्रह टिप्पण—प्रभाचन्द्र देव । देशी कागज । पत्र संख्या–१९ । आकार–११″×५″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१९६९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

२४३. षट् द्रव्य विवरण—× । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०$\frac{1}{2}$″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा· हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४८२ । रचनाकाल—× । लिपिकाल–× ।

२४४. षट् पाहुड़—कुन्दकुन्दाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–१५ । आकार–११″×५″ । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–आगम । ग्रन्थ संख्या–२१०९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

२४५. षट् पाहुड़ सटीक—कुन्दकुन्दाचार्य । टीकाकार– × । देशी कागज । पत्र संख्या–४७ । आकार–१०$\frac{1}{2}$″×४$\frac{3}{4}$″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–११७६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ६, रविवार, सं० १५८९ ।

२४६. षट् पाहुड़ सटीक—श्रुत सागर । देशी कागज । पत्र संख्या–१५३ । आकार–११$\frac{1}{4}$″×५$\frac{1}{2}$″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१०८२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १४, सं० १८३० ।

टिप्पणी—लिपिकार ने अपनी विस्तृत प्रशस्ति लिखी है ।

२४७. षट् पाहुड़ सटीक—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१८ । आकार–११$\frac{1}{4}$″×४$\frac{1}{2}$″ । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत व संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१०७६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–पौष बुदी १३, सोमवार, सं० १७८९ ।

२४८. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–२७ । आकार–१०″×५$\frac{3}{4}$″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१६६९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

२४९. षट् त्रिशंति गाथा सार्थ—मुनिराज ढाढसी । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–९$\frac{3}{4}$″×४$\frac{1}{4}$″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६६७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ कृष्णा १, सं० १६८५ ।

२५०. समयसार नाटक सटीक—अमृतचन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या–७५ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आकार-१०"×४½" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२७३५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १८०६ ।

२५१. समयसार वृत्ति—अमृतचन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-२७ । आकार-११"×४½" । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२६६० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-श्रावण कृष्णा ६, बुधवार, सं० १६२२ ।

विशेष -रणथम्भोर गढ़ के राजाधिराज श्री राव सूरजनदेव के राज्य में जोशी चतुर गर्ग गोत्री बुंदी वाले ने लिपि की है ।

२५२. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-२८ । आकार-१२½"×४½" । दशा-अति जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२६४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-माघ शुक्ला ५, सं० १७३२ ।

२५३. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या-३७ । आकार-१०¾"×४½" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०२० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

२५४. प्रति संख्या ४ । पत्र संख्या-८३ । आकार-१०"×५" । दशा-सामान्य । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१८४८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-पौष शुक्ला १२, शुक्रवार, सं० १६७८ ।

२५५. प्रति संख्या ५ । पत्र संख्या-८० । आकार-८½"×४½" । दशा-सामान्य । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२३७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

२५६. समयसार भाषा—पं० हेमराज । पत्र संख्या-१६४ । आकार-११½"×५½" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०६० । रचनाकाल-माघ शुक्ला ५, सं० १७६६ । लिपिकाल-× ।

२५७. समयसार नाटक भाषा—पं० बनारसीदास । देशी कागज । पत्र संख्या-४० । आकार-६¾"×४½" । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११६८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १७२३ ।

२५८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-५५ । आकार-१०"×४¾" । दशा-सामान्य । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२३८ । रचनाकाल-अश्विन शुक्ला १३, रविवार, सं० १६६३ । लिपिकाल-× ।

२५९. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-२२ । आकार-१०¾"×४" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०५६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल- × ।

२६०. समाधिशतक—पूज्यपाद स्वामी । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-११"×४¾" । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२३६७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा ६, सं० १७०० ।

२६१. सत्ता त्रिभंगी - सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-१७ । आकार-१०½"×४½" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५११ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-माघ कृष्णा ६, शुक्रवार, सं० १५२४ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६२. स्याद्वादरत्नाकर—देवाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१९७२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

२६३. स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामी कार्तिकेय । देशी कागज । पत्र संख्या–२७ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–११२८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा ११, सं० १५९८ ।

२६४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–३३ । आकार–११"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११४६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ५, सं० १६७७ ।

२६५. सागार धर्मामृत—पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या–१२२ । आकार–११"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२३२६ । रचनाकाल–विक्रम सं० १३०० । लिपिकाल– × ।

विशेष—ग्रन्थकर्ता पं० आशाधर की पूर्ण प्रशस्ति दी हुई है ।

२६६. सामायिकपाठ सटीक—पाण्डे जयवन्त । देशी कागज । पत्र संख्या–९३ । आकार–९"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२२९२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ७, सं० १९०२ ।

२६७. सिद्ध दण्डिका—देवेन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४८० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

२६८. सिद्धान्तसार—जिनचन्द्रदेव । देशी कागज । पत्र संख्या–८ । आकार–९"×४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१३२० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा १०, रविवार, सं० १५२५ ।

२६९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–९ । आकार–१२"×५$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१९०१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

२७०. सुभद्रानो चौढालियो—कवि मानसागर । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या–२८२६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा ४, सं० १८४१ ।

२७१. सुभाषित कोष—हरि । देशी कागज । पत्र संख्या–१९ । आकार–११"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या–२०५० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

२७२. संबोध पंचासिका—× । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२०८७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा १, सं० १६८५ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७३. संबोध पंचासिका—कवि दास। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१०"×४½"। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–१६६७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२७४. संबोध सत्तरी—जयशेखर सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–१०½"×४¼"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–१६९७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२७५. संबोध सत्तरी—×। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१०½"×४½"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२७५९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–श्रावण कृष्णा ६, बृहस्पतिवार, सं० १६९७।

२७६ सुखबोधार्थमाला—पं० देवसेन। देशी कागज। पत्र संख्या–१०। आकार–१०"×५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१९८६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–भाद्रपद कृष्णा ६, सं० १८८३।

२७७. श्रुतस्कन्ध—ब्रह्म हेमचन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या–१०। आकार–१०"×४"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–१४५२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२७८. श्रुतस्कन्ध—ब्रह्म हेम। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–१०½"×४¾"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२७७४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–चैत्र शुक्ला ८, सं० १५३१।

२७९. प्रति संख्या २। पत्र संख्या–८। आकार–११½"×४¾"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२४०३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२८०. प्रति संख्या ३। पत्र संख्या–७। आकार–१०¾"×४¾"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२०१९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२८१. श्रेणिक गौतम संवाद—×। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–९½"×५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२६३०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा ११, सं० १७५८।

२८२. क्षपणसार—माधवचन्द्र गणि। देशी कागज। पत्र संख्या–१०३। आकार–११½"×५½"। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–२५४१। रचनाकाल–सं० १२६०। लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ५, सं० १६२३।

२८३. त्रिभंगी—सि० च० नेमिचन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या–२३ (अन्तिम पत्र नहीं है)। आकार–११½"×५¼"। दशा–जीर्ण। अपूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–१६९६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२८४. त्रिभंगी टिप्पण—×। देशी कागज। पत्र संख्या–४९। आकार–१२¾"×५¾"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०६६ । रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा ४, सोमवार, सं० १७६३ ।

२८५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–५१ । आकार–१२″×५½″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२८६. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या–२१ । आकार–१४″×८½″ । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२२५८ । रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

२८७. त्रिभंगी भाषा—×। देशी कागज । पत्र संख्या–१४२ । आकार–११¾″×५¼″ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१२०८ । रचनाकाल–×। लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला ७, शनिवार, सं० १८०७ ।

२८८. ज्ञान पच्चीसी—पं० बनारसीदास । पत्र संख्या–१ । आकार–६½″×४½″ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१६६१ । रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय—आयुर्वेद

२८९. अश्विनीकुमार संहिता—अश्विनी कुमार। देशी कागज। पत्र संख्या—१२। आकार—११"×४½"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत और हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—आयुर्वेद। ग्रन्थ संख्या—२०३०। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

२९०. अंजन निदान सटीक—अग्निवेश। देशी कागज। पत्र संख्या—५०। आकार—११½"×४"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत और हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—आयुर्वेद। ग्रन्थ संख्या—११०५। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

२९१. आयुर्वेद संग्रहीत ग्रन्थ—×। देशी कागज। पत्र संख्या—१७५। आकार—९¾"×४½"। दशा—प्राचीन। पूर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—आयुर्वेद। ग्रन्थ संख्या—१०२२। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

२९२. आसव विधि—×। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—१२½"×५¾"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—आयुर्वेद। ग्रन्थ संख्या—२२७८। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

२९३. काल शास्त्र—शंभूनाथ। देशी कागज। पत्र संख्या—११। आकार—१०"×६¼"। दशा—प्राचीन। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—आयुर्वेद। ग्रन्थ संख्या—१४१७। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

२९४. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या—८। आकार—११"×४½"। दशा—अतिजीर्ण। ग्रन्थ संख्या—१४३६। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

२९५ काल ज्ञान—×। देशी कागज। पत्र संख्या—९। आकार—११¼"×४¾"। दशा—प्राचीन। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—२४५५। रचनाकाल—×। लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा ३, बुधवार, सं० १८१९।

२९६. प्रति संख्या २। पत्र संख्या—११। आकार—८½"×४"। दशा—प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२७७२। रचनाकाल—×। लिपिकाल—माघ शुक्ला १४, सं० १७३४।

२९७. गुण रत्नमाला—दामोदर। देशी कागज। पत्र संख्या—११। आकार—११¼"×५"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—आयुर्वेद। ग्रन्थ संख्या—१६१४। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

२९८. चन्द्रहासासव विधि—×। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—१२½"×५¾"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—२७७९। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

२९९. चिन्त चमत्कार सार्थ—×। देशी कागज। पत्र संख्या—१७। आकार—१०¼"×४¾"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत और हिन्दी। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७७५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–माघ कृष्णा २, रविवार, सं० १८५६।

३००. ज्वर पराजय—पं० जयरत्न। देशी कागज। पत्र संख्या–३९। आकार–१०"×४$\frac{३}{४}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–११७३। रचनाकाल–फाल्गुन शुक्ला १, सं० १६६६। लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला ४, बुधवार, सं० १८६८।

३०१. नाड़ी परीक्षा—×। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–८$\frac{१}{२}$"×४$\frac{१}{२}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१४८४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १९२१।

३०२. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१०"×५$\frac{३}{४}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१६६०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३०३. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१०$\frac{३}{४}$"×७"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२३७५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १९४७।

३०४. नाडी परीक्षा सार्थ—×। देशी कागज। पत्र संख्या-१। आकार–९$\frac{३}{४}$"×४$\frac{१}{२}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८५३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३०५. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या १। आकार–९$\frac{१}{२}$"×५"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१४६५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३०६. निघण्टु—हेमचन्द्र सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या ९। आकार–१०$\frac{१}{२}$"×४$\frac{१}{४}$"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या १५३०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३०७. निघण्टु नाम रत्नाकर—परमानन्द। देशी कागज। पत्र संख्या—५। आकार–१०$\frac{१}{२}$"×४$\frac{१}{४}$"। दशा अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१५२७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३०८. निघण्टु—सोढ़श्री। देशी कागज। पत्र संख्या–४७। आकार–१०$\frac{१}{४}$"×४$\frac{१}{४}$"। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१०२१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–ज्येष्ठ बुदी ८, बुधवार, सं० १६६५।

३०९. निघण्टु—×। देशी कागज। पत्र संख्या–५१। आकार–११"×४$\frac{३}{४}$"। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–११८१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३१० पथ्यापथ्य संग्रह–×। देशी कागज। पत्र संख्या–२६। आकार–१०$\frac{१}{४}$"×४$\frac{३}{४}$। दशा–बहुत अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या १४७४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ५, सं० १८३७।

३११. पाकार्णव–×। देशी कागज। पत्र संख्या–६९। आकार–८$\frac{१}{४}$"×६$\frac{१}{२}$"।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१८७६। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

३१२. मनोरमा— ×। देशी कागज। पत्र संख्या-११। आकार- ११" × ५"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१७२०। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

३१३. योग चिन्तामणि — ×। देशी कागज। पत्र संख्या-१४। आकार- १०$\frac{१}{४}$" × ५$\frac{३}{४}$"। दशा-प्राचीन। पूर्ण। भाषा-संस्कृत और हिन्दी। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-२४६५। रचनाकाल- ×। लिपिकाल-पौष शुक्ला ५, सं० १८४४।

३१४. योग शतक—विदग्ध वैद्य पूर्णसेन। देशी कागज। पत्र संख्या-८। आकार- १२$\frac{१}{२}$" × ५$\frac{३}{४}$"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-२६०४। रचनाकाल- ×। लिपिकाल-मार्गशीर्ष शुक्ला १०, मंगलवार सं.० १८००।

३१५. योग शतक— ×। देशी कागज। पत्र संख्या-१९। आकार-८$\frac{३}{४}$" × ६$\frac{३}{४}$"। दशा-बहुत अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१७१९। रचनाकाल- ×। लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला १, सं० १९१४।

३१६. योग शतक टिप्पण— ×। देशी कागज। पत्र संख्या-१२। आकार- १२$\frac{१}{४}$" × ५$\frac{१}{२}$"। दशा-प्राचीन। पूर्ण। भाषा-संस्कृत और हिन्दी। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१३९८। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- माघ कृष्णा १, सं० १८५२।

३१७. योग शतक सटीक— ×। देशी कागज। पत्र संख्या-२०। आकार- १२" × ४$\frac{१}{२}$"। दशा-प्रतिजीर्ण शीर्ण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या २०१८। रचनाकाल- ×। लिपिकाल-पौष शुक्ला १३, सं० १७३९।

३१८. योग शतक—धन्वन्त। देशी कागज। पत्र संख्या-४। आकार-११$\frac{३}{४}$" × ५$\frac{१}{२}$"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत और हिन्दी। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१४२०। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

३१९ योग शतक सार्थ— ×। देशी कागज। पत्र संख्या-१२। आकार-१२$\frac{१}{२}$"× ५$\frac{१}{२}$"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत और हिन्दी। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१९४६। रचनाकाल-×। लिपिकाल-फाल्गुन कृष्णा १, सं० १८९०।

३२०. रस मंजरी—अज्ञात। देशी कागज। पत्र संख्या २९। आकार-१०" × ५"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-११८३। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

३२१. रस रत्नाकर (धातु रत्नमाला)- ×। देशी कागज। पत्र संख्या ७। आकार- १०$\frac{१}{४}$" × ४$\frac{१}{४}$। दशा-प्रतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१६९१। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

३२२. रसेन्द्र मंगल—नागार्जुन। देशी कागज। पत्र संख्या-१२। आकार- ९$\frac{३}{४}$" × ५$\frac{१}{४}$"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-११०३। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२३. रामविनोद—रामचन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या–६१। आकार–८"×५$\frac{3}{4}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–११८४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–बैशाख शुक्ला ७, शनिवार, सं० १८३९।

३२४. लोकनाथ रस— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–९$\frac{3}{4}$"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२४९३। रचनाकाल–×। लिपिकाल– ×।

३२५. लंघन पथ्य निर्णय—वाचक दीपचन्द। देशी कागज। पत्र संख्या–१३। आकार–१२$\frac{1}{2}$" × ५$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२६६५। रचनाकाल–माघ शुक्ला १, सं० १७९९। लिपिकाल–अश्विन कृष्णा ६, सोमवार, सं० १८३१।

विशेष—श्लोक संख्या ३०४ हैं। अन्तिम पत्र पर गर्भ न गिरने का मन्त्र तथा मिरगी रोग की दवा हिन्दी भाषा में लिखी हुई है।

३२६. वनस्पति सत्तरी सार्थ—मुनिचन्द्रसूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार– १०$\frac{1}{4}$" × ४$\frac{1}{2}$"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२०६३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

३२७. वैद्यकसार—नयनसुख। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–बहुत अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१४४२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

३२८. वैद्य जीवन—पं० लोलिम्मराज कवि। देशी कागज। पत्र संख्या–२६। आकार–१०$\frac{1}{4}$" × ५"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–११९२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ९, सं० १९०४।

३२९. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–४७। आकार–११$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{2}$"। दशा– बहुत अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१३५८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला १५, रविवार, सं० १८४५।

३३०. वैद्य जीवन सटीक—लोलिम्बराज। टीका—रुद्रभट्ट। देशी कागज। पत्र संख्या–३१। आकार–१२$\frac{1}{4}$"×६"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२३६१। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–×।

३३१. वैद्य मनोत्सव—पं० नयनसुख दास। देशी कागज। पत्र संख्या–१५। आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२७३७। रचनाकाल–सं० १६४९। लिपिकाल–×।

३३२. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१६। आकार–११$\frac{1}{2}$" × ७"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१८३६। रचनाकाल–माघ शुक्ला २, बृहस्पतिवार, सं० १६४९। लिपिकाल–×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३३३. वैद्य रत्नमाला—सि० च० नेमिचन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या–४६। आकार–१२$\frac{3}{4}$" × ५$\frac{3}{4}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–११००। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १८७०।

३३४. वैद्य विनोद—शंकर भट्ट। देशी कागज। पत्र संख्या–७३। आकार–१०$\frac{3}{4}$" × ४$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१११५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–मंगसिर बुदी १४, सं० १८३०।

३३५. शत श्लोक—वैद्यराज त्रिमल्ल भट्ट। देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार–१०$\frac{1}{4}$" × ४$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२७०४। रचनाकाल ×। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ७, सं० १७६८।

३३६. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१२। आकार–६" × ४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२८१०। रचनाकाल ×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ८, सं० १७६६।

३३७. सन्निपात कलिका (लक्षण)—वैद्य धन्वन्तर। देशी कागज। पत्र संख्या–१५। आकार– ११$\frac{1}{4}$" × ४$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२५४५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा १४, रविवार, सं० १८४६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय—उपदेश एवं सुभाषित

३३८. दान शील तप संवाद शतक—समयसुन्दर गणि । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार—१०½" × ४½" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सुभाषित । ग्रन्थ संख्या—२६८५ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

३३९. भूषण बावनी—द्वारकादास पाटणी । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार—१०¼" × ४¼" । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सुभाषित । ग्रन्थ संख्या—२००६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल × ।

३४०. भूषण बावनी—भूषण स्वामी । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार—९¾" × ४½" । दशा—अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सुभाषित । ग्रन्थ संख्या—१३०४ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

३४१. सिन्दुर प्रकरण—सौमप्रभाचार्य (सौमप्रभसूरि) । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । आकार—११¼" × ५¼" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सुभाषित । ग्रन्थ संख्या—१११२ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—पौष शुक्ला १०, शुक्रवार, सं० १८६० ।

३४२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—२० । आकार—१०¾" × ५" । दशा—अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१२६५ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—माघ कृष्णा ५, शनिवार, सं० १७७३ ।

३४३. सुक्ति मुक्तावली शास्त्र—सौमप्रभाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । आकार—९" × ४" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१९४४ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—चैत्र शुक्ला ३, बुधवार, सं० १८४१ ।

टिप्पणी—सिन्दुर प्रकरण वर्णित है ।

३४४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१७ । आकार—९¾" × ४¼" । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१९५३ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—अश्विन शुक्ला ६, वृहस्पतिवार, सं० १८०६ ।

३४५. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—९ । आकार—१०" × ४¾" । दशा—अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१९५९ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

३४६. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार—१०½" × ५" । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१९३१ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—फाल्गुन कृष्णा ११, सं० १८६८ ।

३४७. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । आकार—१०½"×४½" । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१५९५ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—कार्तिक शुक्ला ८, सं० १९०२ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३४८. प्रति संख्या ६। देशी कागज। पत्र संख्या–१४। आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२०२०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

३४९. सुक्ति मुक्तावली सटीक— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–२५। आकार–११" × ५"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२६२९। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ४, गुरुवार, सं० १८६८।

३५०. सुप्यदोहड़ा— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–९। आकार–११" × ४$\frac{1}{2}$"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। विषय–सुभाषित। ग्रंथ संख्या–१४२५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

३५१. सुभाषित काव्य— भ० सकलकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–२३। आकार १०$\frac{1}{4}$" × ४$\frac{1}{2}$"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१४००। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–सं० १७०३।

३५२ सुभाषित रत्न संदोह— अमितगति। देशी कागज। पत्र संख्या–६९। आकार–११$\frac{1}{4}$" × ५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२७४८। रचनाकाल–पौष शुक्ला ५, सं० १३१५। लिपिकाल–सं० १५७५।

३५३. सुभाषित रत्नावली— भ० सकलकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–१८। आकार–१०$\frac{1}{2}$" × ४$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२४२१। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ७, सं० १६८७।

३५४. सुभाषित श्लोक—(संग्रहित)— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–२९। आकार–८$\frac{1}{2}$"×४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१६५०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

३५५. सुभाषितार्णव— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–३०। आकार–११$\frac{1}{4}$"×५"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत एवं संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१३६०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३५६. प्रति संख्या— २। देशी कागज। पत्र संख्या–६५। आकार–११$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१२६४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–माघ शुक्ला १, बृहस्पतिवार, सं० १६६१।

३५७. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–६६। आकार–११"×५"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१२५८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३५८. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–५१। आकार–९$\frac{1}{2}$"×४"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१२२०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–माघ शुक्ला २, मंगलवार, सं० १६८६।

३५९. प्रति संख्या ५। देशी कागज। पत्र संख्या–४८। आकार–११"×५"। दशा–बहुत अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१८५९। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–आषाढ़ शुक्ला ७, सं० १९०८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३६०. **सुभाषितावली—भ० सकलकीर्ति।** देशी कागज। पत्र संख्या–१६। आकार–९½"×४¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८८६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा ३, रविवार, सं० १८२३।

३६१. **प्रति संख्या २।** देशी कागज। पत्र संख्या–२४। आकार–१०½"×४¾"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१००५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा २, सं० १६१३।

३६२. **प्रति संख्या ३।** देशी कागज। पत्र संख्या–२६। आकार–१०½"×४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१२२३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–भाद्रपद कृष्णा ४, सं० १६६६।

३६३. **प्रति संख्या ४।** देशी कागज। पत्र संख्या–३१। आकार–११" × ४¾"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१०१०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

३६४. **प्रति संख्या ५।** देशी कागज। पत्र संख्या–२६। आकार–९½" × ४¼"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१०६०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १५, सं० १६१५।

३६५. **प्रति संख्या ६।** देशी कागज। पत्र संख्या–१९। आकार–१०½" × ४½"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१६२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय-कथा साहित्य

३६६. अनन्तव्रत कथा—पद्मनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार-११"×५" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-कथा । ग्रन्थ संख्या-२६२५ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-भाद्रपद कृष्णा ऽऽ शुक्रवार, सं० १६२६ ।

३६७. प्रति संख्या २ । आकार-८½"×४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । गन्थ संख्या-२५१३ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

३६८. अनन्तव्रत कथा—ब्रह्म जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार-१३½"×८½" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-कथा । ग्रन्थ संख्या-२६१४ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-अश्विन कृष्णा ६, रविवार, सं० १६४५ ।

विशेष—ग्रन्थ में पद्य संख्या १७२ हैं।

३६९. अवन्ति सुकुमाल कथा— हस्ती सूरी । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-१०"×४" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भापा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-कथा । ग्रन्थ संख्या-१७३१ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

३७०. अशोक सप्तमी कथा— × । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार-९¾"×४½" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-कथा । ग्रन्थ संख्या-१७८८ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

३७१. अष्टान्हिका व्रत कथा— × । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । आकार-१०¾"×५¼" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४४७ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला १३, सं० १८९७ ।

३७२. आकाश पंचमी व्रत कथा—ब्रह्म जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार-१३½"×८¼" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२८४३ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

विशेष—इस ग्रन्थ में पद्यों की संख्या १२० हैं।

३७३. आखय दशमी व्रत कथा—ब्रह्म जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार-१३½"×८½" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिदि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२६१२ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

विशेष—ग्रन्थ में पदों की संख्या १११ हैं।

३७४. आदित्यवार कथा—कवि भानुकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार-१०½"×४½" । दशा-अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२००१ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेष—इस ग्रन्थ की रचना श्री मलूकादास अग्रवाल गर्ग गोत्र के पुत्र कवि भानु कीर्ति ने की है।

३७५. आदित्यवार कथा—ब्रह्म रायमल्ल। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१०"×४$\frac{१}{४}$"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य) और संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१४५६। रचनाकाल–भाद्रपद शुक्ला २, बुधवार, सं० १६३१। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा १३, सं० १७१०।

३७६. आराधना कथा कोश—ब्रह्म नेमिदत्त। देशी कागज। पत्र संख्या–१५६। आकार–११$\frac{३}{४}$"×५$\frac{१}{४}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२७०५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–अश्विन कृष्णा १, सं० १८०३।

३७७. एक पद—गुलाबचन्द। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०"×४$\frac{१}{२}$"। दशा–बहुत अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१४४३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

टिप्पणी—इसमें आत्मा को सम्बोधित किया गया है।

३७८. एक पद—रंगलाल। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–६$\frac{१}{४}$"×४$\frac{१}{४}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१४८१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३७९. कथा कोश—ब्रह्म नेमिदत्त। देशी कागज। पत्र संख्या–३२३। आकार–६$\frac{१}{२}$"×४$\frac{१}{२}$"। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी।। ग्रन्थ संख्या–१२३१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३८०. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१५६। आकार–१२$\frac{३}{४}$"×५$\frac{३}{४}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१०७८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–भाद्रपद बुदी ५, सं० १८९०।

३८१. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–१२२। आकार–९$\frac{३}{४}$"×४$\frac{१}{२}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१२१९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३८२. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–१०१। आकार–१४$\frac{१}{२}$"×६$\frac{१}{२}$"। दशा–बहुत अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१७९५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३८३. कथा प्रबन्ध—प्रभाचन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या–९२। आकार–११$\frac{१}{२}$"×५"। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–११४१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ७, सं० १५६२।

३८४. कथा संग्रह—×। देशी कागज। पत्र संख्या–२५। आकार–१०$\frac{१}{४}$"×४$\frac{१}{२}$"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश व संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७७५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

३८५. कथा संग्रह—×। देशी कागज। पत्र संख्या–२३। आकार–१०$\frac{१}{४}$"×४$\frac{१}{२}$"। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–११५४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३८६. **कनकावली व शील कथा**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–९$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७८९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

३८७. **काष्टागांर कथा**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१९३९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा ३, सं० १७१० ।

३८८. **काष्टागांर कथा**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२२९० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–आषाढ़ शुक्ला ११, सं० १७०९ ।

३८९ **गौतम ऋषि कुल**— × देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१९१७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

३९० **चतुर्दशी गरुड़ पंचमी कथा**—भिन्न भिन्न कर्ता हैं । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१३$\frac{1}{2}$"×८$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–मराठी । ग्रन्थ संख्या–२८४१ । रचनाकाल - × । लिपिकाल– × ।

३९१. **चन्दनमलयगिरी वार्ता**—भद्रशेन । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–९$\frac{3}{4}$"×३$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२००४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

३९२. **प्रति संख्या** २ । पत्र संख्या–८ । आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२४५४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–वैशाख कृष्णा १२, सं० १६९८ ।

३९३. **चन्दनराजामलयगिरी चौपई**—जिनहर्ष सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२४९० । रचनाकाल–चैत्र शुक्ला १५, सं० १७११ । लिपिकाल– × ।

३९४. **चौबीस कथा**—पं० कामपाल । देशी कागज । पत्र संख्या–२८ । आकार–११"×४" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१२५४ । रचनाकाल–फाल्गुन बुदी ३, सं० १७१२ । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १, सं० १७८३ ।

३९५. **जम्बूस्वामी कथा**—पाण्डे जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार–१२$\frac{1}{4}$"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५११ । रचनाकाल–भाद्रपद कृष्णा ५, गुरुवार सं० १६४२ । लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा २, सं० १७९७ ।

विशेष—इस ग्रन्थ की कुचामण ग्राम में लिपि की गई ।

३९६. **जिनदत्त कथा**—गुणभद्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–६७ । आकार–११"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५८५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–पौष शुक्ला ५, बुधवार, सं० १६१६ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३९७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१९ । आकार–११$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१६२४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला ३, शुक्रवार, सं० १८६१ ।

३९८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–४६ । आकार–११"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२४४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–द्वितीय श्रावण शुक्ला १४, शनिवार, सं० १७०३ ।

३९९. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–३६ । आकार–११"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२४६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ९, बुधवार, सं० १७०३ ।

४००. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या–६७ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२३२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–श्रावण कृष्णा २, सोमवार, सं० १६२४ ।

४०१. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या–५२ । आकार ११"×५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२०३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४०२. जिनपुजा पुरन्दर कथा — × । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–११"×५" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१९८० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४०३. जिनरात्रि कथा — × । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६२० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४०४. जिनांतर वर्णन — × । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–९$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी और अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१३९१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४०५. तीर्थ जयमाल—सुमति सागर । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–८$\frac{1}{2}$"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७९१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४०६. दशलक्षण कथा—पं० लोकसेन । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१२"×५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६५२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ५, सं० १५८८ ।

४०७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–११"×५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२६५९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ११, सं० १६४७ ।

४०८. दशलक्षण कथा—ब्रह्म जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३१/२"×८१/२" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६१३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ७, सं० १६४५ ।

४०६. **दर्शन कथा—पं० भारमल** । देशी कागज । पत्र संख्या–३२ । आकार–१३१/२"×८१/२" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५८० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ कृष्णा ६, सं० १६३६ ।

४१०. **द्वादशचक्री कथा—ब्रह्म नेमिदत्त** । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–११"×५१/२" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६८४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४११. **धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई—विजयराज** । देशी कागज । पत्र संख्या–२० । आकार–१११/२"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१०१७ । रचनाकाल–सं० १७४२ । लिपिकाल– × ।

टिप्पणी—भट्टारक जिनचन्द्र सूरि के तपागच्छ में श्री विजयाराज ने रचना की है ।

४१२. **धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई—लालचन्द** । देशी कागज । पत्र संख्या–१८ । आकार–११३/४"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७६८ । रचनाकाल–सं० १७४२ । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा १३, वृहस्पतिवार सं० १८२६ ।

४१३. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–२७ । आकार–८१/२"×४१/२" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२४६७ । रचनाकाल–सं० १७४२ । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १०, सं० १८२३ ।

४१४. **धूप दशमी तथा अनन्तव्रत कथा— ×** । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१२१/२"×५३/४" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२२८६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४१५. **नन्द सप्तमी कथा—ब्रह्म रायमल्ल** । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०"×४" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६१२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४१६. **नन्दीश्वर कथा— ×** । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१०१/४"×४१/४" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । पत्र संख्या–१५५१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४१७. **प्रति संख्या २** । पत्र संख्या–६ । आकार–६३/४"×४३/४" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२८०२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४१८. **नवकार कथा—श्रीमत्पाद** । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–१०१/४"×४" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६०५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४१६. **नागकुमार पंचमी कथा—उभय भाषा कवि चक्रवर्ती श्री मल्लिषेण सूरि** । देशी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कागज । पत्र संख्या–२० । आकार–११"×४½" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६१० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

आदिभाग—

श्री नेमिं जिनमानम्य सर्वसत्वहितप्रदम् ।
वक्ष्ये नागकुमारस्य चरितं दुरितापहं ॥१॥

कविभिर्जयदेवाद्यै र्गद्यै र्पद्यै र्विनिर्मितम् ।
यत्तदेवास्ति चेदत्र विषमं मन्दमेधसाम् ॥२॥

अन्तभाग—

श्रुत्वा नागकुमार चारुचरितं श्री गौतमेनोदितं
भव्यानां सुखदायकं भवहरं पुण्यास्रवोत्पादकं ।
नत्वा तं मगधाधिपो गणधरं भक्त्यापुरं प्रागभच्छी–
मद्राजगृहं पुरंदर पुराकारं विभूत्या समं ॥६॥

इत्युभयभाषाकवि चक्रवर्ति—श्री मल्लिषेणसूरि विरचितायां श्री नागकुमार पंचमीकथायां नागकुमार—मूनीश्वर—निर्वाणगमनो नाम पंचमः सर्गः ।

जितकषायरिपुर्गुण वारिधिर्नियत चारु चरित्र तपो निधिः ।
जयतु भूपतिरीटविघट्टित क्रमयुगोऽजितसेन मुनीश्वरः ॥१॥

अजनि तस्य मुनेर्वरदीक्षितो विगतमानमदो दूरितांतकः ।
कनकसेन मुनिर्मुनि पुंगवो वर चरित्र महाव्रतपालकः ॥२॥

गतमदोऽजनि तस्य महामुनेः प्रथितवान् जिनसेनमुनीश्वरः ।
सकल शिष्यवरो हतमन्मथो भवमहोदधितारतरं कः ॥३॥

तस्याऽनुज श्चारुचरित्रवृत्तिः प्रख्यातकीर्तिर्भुवि पुण्यमूर्तिः ।
नरेन्द्रसेनो जितवादिसेनो विज्ञाततत्त्वो जितकामसूत्रः ॥४॥

तच्छिष्यो विबुधाग्रणीर्गुणनिधिः श्री मल्लिषेणाह्वयः,
संजातः सकलागमेषु निपुणो वाग्देवतालंकृतः ।
तेनैषा कविचक्रिणा विरचिता श्री पंचमीसत्यकथा,
भव्यानां दुरितौघनाशनकरी संसार विच्छेदिनी ॥५॥

स्पष्ट श्री कवि चक्रवर्ति गणिना भव्याब्जघर्मांशुना,
ग्रन्थी पंचशती मया विरचिता विद्वज्जनानां प्रिया ।
तां भक्त्या विलिखंति चारु वचनै र्व्याव्यर्णयंत्यादरा,
ये शृणवन्ति मुदा सदा सहृदयास्ते यांति मुक्तिश्रियं ॥

इति नागकुमार चरित्रं समाप्तम् ॥

४२०. नागश्री कथा—ब्रह्म नेमीदत्त । देशी कागज । पत्र संख्या–२४ । आकार–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६½"×४½"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१५८७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

४२१. प्रति संख्या २। पत्र संख्या–१५। आकार–११"×४½"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२०५२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

४२२. निर्दोष सप्तमी कथा— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–६¾"×४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७८७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

४२३. निर्दोष सप्तमी कथा—ब्रह्म जिनदास। देशी कागज। पत्र संख्या–१५। आकार–१३½"×८½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२८४२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ५, बुधवार, सं० १६४५। पद्य संख्या १०६ है।

४२४. पद्मावती कथा—महीचन्द्र सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–२७। आकार–१०"×४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–११६३। रचनाकाल–अश्विन बुदी १३, सं० १५२२। लिपिकाल– ×।

४२५. पद्मनन्दि पंचविशंति—पद्मनन्दि। देशी कागज। पत्र संख्या–८८। आकार–११"×१¼"। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१२४८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

४२६. प्रति सं० २। देशी कागज। पत्र संख्या–१०१। आकार–११" × ५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१२४५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

४२७. परमहंस चौपई—ब्रह्म रायमल्ल। देशी कागज। पत्र संख्या–३६। आकार–१०" × ५¾। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१११६। रचनाकाल–ज्येष्ठ बुदी १३, शनिवार, सं० १६३६। लिपिकाल– ×।

४२८. पंचपर्व कथा—ब्रह्मचारी वेणु। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१०" × ४½"। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७२५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

४२९. प्रियमेल कथा—ब्रह्म वेणीदास। देशी कागज। पत्र संख्या–१४। आकार–१०½" × ४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२४८४। रचनाकाल–श्रावण कृष्णा ११, सं० १७००।

विशेष—ग्रन्थ की रचना अलिपुर में की गई है।

४३०. पुण्यास्रव कथा कोश—मुमुक्षु रामचन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या–१५६। आकार–६¾" × ४¼"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२७१३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ३ शुक्रवार, सं० १४८७।

४३१. पुण्यास्रव कथा कोश सार्थ— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–११४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आकार– ११½" × ५½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६४९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा १४, सं० १७९७ ।

४३२ पुष्पांजली कथा—ब्रह्म जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार– १३½" × ८½" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६११ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ११, सोमवार, सं० १९४५ ।

नोट—पद्य संख्या १६१ हैं ।

४३३. पुष्पांजलि कथा—मण्डलाचार्य श्रीभूषण । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार– १०½" × ४¼" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या– १५४५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४३४. प्रति सं० २ । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१०¾" × ४½" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१५७१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल × ।

४३५. प्रद्युम्न कथा—ब्रह्म वेणीदास । देशी कागज । पत्र संख्या–२७ । आकार– ११" × ४¾" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या– २००२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

विशेष—यह ग्रन्थ आणन्दपुर में समाप्त किया गया है । ग्रन्थाग्रन्थ संख्या ६०० है ।

४३६. बारह व्रत कथा— × । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–९¾" × ४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७८५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४३७. बाहुबली पाथड़ी— × । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार– ११" × ४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२११८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ११, सं० १६९७ ।

४३८. बुद्धवर्णन—कविराज सिद्धराज । देशी कागज । पत्र संख्या–२० । आकार–८½" × ४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या– १६२२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४३९. बंकचूल कथा—ब्रह्म जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार– १०½" × ४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२७२९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

विशेष—श्लोक संख्या १०९ है ।

४४०. प्रति सं० २ । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार– १०½" × ४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०९० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ शुक्ला १४, सं० १७१० ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४४१. भरत बाहुबली वर्णन—शीशराज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०½"×५¾" । दशा–जीर्णक्षीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२३३६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४४२. मदनयुद्ध—बूचराज । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–१०½"×४" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२७०० । रचनाकाल–अश्विन शुक्ला १, सं० १५८९ । लिपिकाल—× ।

४४३. मृगीसंवाद चौपाई— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१४ । आकार–९½" × ४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२४९९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४४४. माधवानल कथा—कुंवर हरिराज । देशी कागज । पत्र संख्या–४२ । आकार–१०"×४¾" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या–१३५२ । रचनाकाल–फाल्गुन शुक्ला १३, सं० १६१६ । लिपिकाल–पौष शुक्ला ८ शुक्रवार सं० १६५६ ।

विशेष—यह प्रतिलिपि जैसलमेर में लिखि गई ।

४४५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–२० । आकार–१०"×४½" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११२३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–सं० १७४३ ।

४४६. माधवानल कामकन्दला चौपई—देवकुमार । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार– १०½" × ४½" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या १०२९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ शुक्ला ११, सं० १७१७ ।

४४७. मुक्तावलीकथा— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–९¾"×४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७८६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४४८. मूलसंघाग्रणी—रत्नकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१२"×४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२११७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४४९. मेघमालाव्रत कथा—बल्लभ मुनि । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–८½" × ४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१३१६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

४५०. मेघमालाव्रतकथा–× । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–११½"×५½" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६५१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४५१. यज्ञदत्त कथा— × । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०½"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२१६५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

विशेष—नागपुर में ग्रन्थ की लिपि की गई ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४५२. **रत्नत्रयव्रतकथा—श्रुतसागर** । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–६½" × ४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२०६५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४५३. **रत्नत्रयविधानकथा—पं० रत्नकीर्ति** । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार– १०½" × ४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२८०३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४५४. **रत्नावलीव्रतकथा**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार– १०¼" × ५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२४३१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा २, रविवार, सं० १६६६ ।

४५५. **रक्षाबन्धनकथा**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०"×४" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२८३० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ८, बुधवार, सं० १८६७ ।

४५६. **रात्रि भोजन दोष चौपई—श्री मेघराज का पुत्र** । पत्र संख्या–१२ । आकार– १०½" × ४¼" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१९९६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४५७. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०½" × ४¼" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०८३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४५८. **प्रति संख्या ३** । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–१०½" × ४½" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२००५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४५९. **रात्रि भोजन त्याग कथा—भ० सिंहनंदि** । देशी कागज । पत्र संख्या–२१ । आकार–११½" × ५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२७४९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– सं० १६६२ ।

४६०. **रात्रि भोजन त्याग कथा**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार– १०½" × ४¾" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२४४३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १०, वृहस्पतिवार सं० १७१७ ।

४६१. **रोटतीजकथा – गुणनंदि** । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–८½"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७२९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

४६२. **लब्धिविधानव्रतकथा—ब्रह्म जिनदास** । पत्र संख्या–५ । आकार–१३½"×८½" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६०९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १५, शुक्रवार, सं० १९४५ ।

विशेष—ग्रन्थ में पद्यों की संख्या १६९ हैं ।

४६३. **व्रतकथाकोश—श्रुतसागर** । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार– १२½" × ५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२३८० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४६४. विक्रमादित्योत्पत्ति कथानक—भगवती। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०½"×४"। दशा–अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१५३२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

४६५. विधानवकथासंग्रह—भिन्न-भिन्न कथा के भिन्न कर्ता हैं। देशी कागज। पत्र संख्या–४५। आकार–१०"×४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७६४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

टिप्पणी—पृष्ठ १ से ४ तक नक्षत्रमाला विधान, ५ से ६ तक विमानपंक्ति कथा, ७ से ८ तक मेरुपंक्तिविधान, ११ तक श्रुतज्ञानकथा, १२ तक सुख सम्पत्ति व्रतफल कथा, २२ तक जिनरात्रिकथा, २४ तक रुक्मणि कथा, २७ तक चन्द्रषष्टि कथा, ३३ तक ज्येष्ठ जिनवर व्रतोपाख्यान, ३९ तक सप्त परमस्थान विधान कथा, ४२ तक पुरन्दर विधान कथोपाख्यान, ४३ तक श्रावण द्वादशी कथा, ४५ तक लक्षणपंक्तिकथा वर्णित हैं।

४६६. वैताल पच्चीसी कथानक—शिवदास। देशी कागज। पत्र संख्या–४४। आकार–१२¼"×५¾"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८१५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १८९२।

४६७. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–५०। आकार–११½"×५¼"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५८०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा १४, सं० १८८९।

४६८. शनिश्चर कथा—जीवणदास। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–१२½"×५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या १४४०। रचनाकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ७, सं० १८०४। लिपिकाल–आषाढ़ शुक्ला १३, सं० १८६४।

४६९. शुक सप्तति कथा–×। देशी कागज। पत्र संख्या–४७। आकार—१०¼"×४¼"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७७१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १०, सं० १८७६।

४७०. सप्तव्यसन कथा—सोमकीर्ति आचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या–८५। आकार–१०¾"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–११०६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला ५, मंगलवार, सं० १८९७।

आदिभाग—

प्रणय श्रीजिनान् सिद्धान् आचार्यान् पाठकान् यतीन्।
सर्वद्वन्दविनिर्मुक्तान् सर्वकामार्थदायकान् ॥ १ ॥

अन्तभाग—

नन्दीतटाके विदिते हि संघे श्री रामसेनास्य पद प्रसादात्।
विनिर्मितो मंदधिया ममायं विस्तारणीयो भुवि साधुसघैः ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यो वा पठति विमृश्यति भव्योपि भावनायुक्तः ।
लभते स सौख्यमनिशं ग्रन्थं सोमकीर्तिना विरचितं ॥

रसनयनसमेते बाणयुक्तेन चन्द्रे १५२६ गतवति सति नूनं विक्रमस्यैव काले ।
प्रतिपदि धवलायां माघमासस्य सोमे हरिभदिनमनाज्ञे निर्मितो ग्रन्थः एषः ॥

सहस्रद्वयसंख्योऽयं सप्तषष्ठी समन्वितः ।
सप्तैव व्यसनाद्यश्च कथा समुच्चयोततः ॥

यावत् सुदर्शनो मेरुर्यावच्च सागरा धरा ।
तावन्नन्दत्वयं लोके ग्रन्थो भव्यजनाश्रितः ॥

इतिश्री इत्यार्षे भट्टारक श्री धर्मसेनाभः श्री भीमसेनदेवशिष्य आचार्य सोमकीर्ति विरचिते सप्तव्यसनकथा समुच्चये परस्त्रीव्यसनफलवर्णनो नाम सप्तमः सर्गः । इति सप्तव्यसनचरित्र कथा संपूर्णा ।

४७१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–१०" × ४½" । दशा–बहुत अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१४४८ । रचनाकाल–× । लपिकाल–× ।

टिप्पणी—केवल दो ही सर्ग हैं ।

४७२. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–११" × ५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१६५६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४७३. सम्यक्त्व कौमुदी—जयशेखर सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या–३६ । आकार–१०¾" × ८½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१२१२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ४, मंगलवार, सं० १६४६ ।

४७४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–३७ । आकार १२½" × ५¼" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२२४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४७५. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–३७ । आकार–१५" × ६¾" । दशा–बहुत अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२७० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४७६. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–१०० । आकार–८½" × ४¼" । दशा–बहुत अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२६८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ३, सं० १८४६ ।

४७७. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या–४१ । आकार–११¼" × ४½" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११६६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ७, शनिवार, सं० १५७५ ।

टिप्पणी—अन्तिम प्रशस्ति पत्र नहीं है । कर्णकुब्ज नगर में श्री अहमदखान के राज्य काल में श्री पूज्य प्रभसूरि के शिष्य मुनि विजयदेव ने लिपि की है । लिपिकार ने अपनी प्रशस्ति भी लिखि है—प्रशस्ति का अन्तिम पत्र नहीं है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४७८. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या–६४ । आकार–१२ १/४"×५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११५६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४७९. सम्यक्त्व कौमुदी–पं० खेता । देशी कागज । पत्र संख्या–१३५ । आकार–११"×४ ३/४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१२५३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–स० १८३६ ।

४८०. सम्यक्त्व कौमुदी—कवि यशसेन । देशी कागज । पत्र संख्या–७३ । आकार–१२"×५ ३/४" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५६६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १३, सं० १८५३ ।

४८१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–६६ । आकार–१० १/४"×४ ३/४" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२५६८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–वैशाख कृष्णा ६, बृहस्पतिवार, सं० १५३५ ।

४८२. सम्यक्त्व कौमुदी–जोधराज गोदीका । देशी कागज । पत्र संख्या–३७ । आकार–१२ १/४"×५ ३/४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५५३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १३, शुक्रवार, सं० १७२४ ।

विशेष—छन्द संख्या ११७८ हैं ।

४८३. सम्यक्त्व कौमुदी–× । देशी कागज । पत्र संख्या–१४ । आकार–१० १/२"×४ १/४" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२३३७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४८४ सम्यक्त्व कौमुदी सार्थ—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१४४ । आकार—१० ३/४"×६ १/२" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५७१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ८, सं० १८५० ।

४८५. सिंहल सुत चतुष्पदी—समयसुन्दर । देशी कागज । पत्र संख्या–८ । आकार—१० १/४"×४" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२०७० । रचनाकाल–सं० १६७२ । लिपिकाल–सं० १७००, मेड़ता नगर में समाप्त किया ।

४८६. सिंहासन बत्तीसी—सिद्धसेन । देशी कागज । पत्र संख्या–७३ । आकार–११"×४ १/२" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–११०८ । रचनाकाल–अश्विन बुदी २, सं० १६३६ । लिपिकाल–वैशाख बुदी ५, मंगलवार, सं० १७०३ ।

४८७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१७८ । आकार–१०"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१२३५ । रचनाकाल–अश्विन कृष्णा २, सं० १६३२ । लिपिकाल–× ।

४८८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–१७५ । आकार–११ १/२"×५ १/२" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१२५५ । रचनाकाल–अश्विन कृष्णा २, सं० १६३२ । लिपिकाल–× ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४८९. सुगन्ध दशमी कथा भाषा—खुशालचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या–२२ । आकार–६$\frac{1}{8}$"×६$\frac{3}{8}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा- हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६५४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–सं० १९४४ ।

४९०. सुगन्ध दशमी कथा—सुशीलदेव । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार–११$\frac{1}{2}$"×५" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२७६४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला १०, सं० १५२२ ।

४९१. सुगन्ध दशमी कथा—ब्रह्म जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या–८ । आकार–१३$\frac{1}{2}$"×८$\frac{1}{2}$"। दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६०८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा १०, मंगलवार, सं० १९४५ ।

४९२. सुगन्ध दशमी कथा—ब्रह्मज्ञान सागर । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–९$\frac{1}{8}$"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२३४२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला १, सं० १९०३ ।

४९३. सुगन्ध दशमी व पुष्पाञ्जली कथा–× । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६६४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४९४. षोडषकारण कथा—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार–१०"×४$\frac{1}{8}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी और संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६०२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

४९५. श्रावक चूल कथा—× । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२०५५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ शुक्ला १३, सं० १७१९ ।

४९६. श्रीपाल कथा—पं० खेमल । देशी कागज । पत्र संख्या–३५ । आकार–११"×५$\frac{1}{8}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७२८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १३, सं० १६१० ।

४९७. श्रुतज्ञान कथा–× । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५५० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला १५, सं० १६८५ ।

४९८. हनुमान कथा—ब्रह्म रायमल्ल । देशी कागज । पत्र संख्या–५७ । आकार–९$\frac{1}{2}$"×५" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी(पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१२०० । रचनाकाल–बैशाख कृष्णा ९, सं० १६१६ । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ६, रविवार, सं० १६३९ ।

४९९. हणवन्त चौपई (हनुमन्त चौपई)—ब्रह्म रायमल्ल । देशी कागज । पत्र संख्या–४२ । आकार–१२$\frac{1}{8}$"×५$\frac{3}{8}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५८३ । रचनाकाल–बैशाख शुक्ला ९, सं० १६५७ । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा १३, बृहस्पतिवार, सं० १८६४ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५००. हरिश्चन्द्र चौपई—ब्रह्म वेणिदास। देशी कागज। पत्र संख्या–१७। आकार–९¾"×४¼"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२०२३। रचनाकाल–सं० १७७८, आणन्दपुर मध्ये। लिपिकाल–सं० १८१९।

५०१. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–११ से ३६। आकार–१२"×६"। दशा–अच्छी। अपूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२८६२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५०२. हेमकथा—रक्षामणि। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–११"×४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२४२६। रचना काल–×। लिपिकाल–पौष शुक्ला ११, सं० १६८९।

५०३. होली कथा—छीत्तर ठोलिया। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–६½"×४¼"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२०९१। रचनाकाल–फाल्गुन शुक्ला १५, सं० १६६०। लिपिकाल–सं० १८३१।

५०४. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–१०¾"×५½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५१२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५०५. होलीपर्व कथा–×। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–९"×४¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२६९५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५०६. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१०"×४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२२८७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ११, सं० १७५०।

५०७. होली पर्व कथा सार्थ—×। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–१०½"×४¼"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२८६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा १०,सं० १८५२।

५०८. हंसराज बच्छराज चौपई—भावहर्ष सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–३३। आकार–८¼"×७¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२४७८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–भाद्रपद कृष्णा १४, सं० १९५०।

५०९. हंस वत्स कथा–×। देशी कागज। पत्र संख्या–१६। आकार–१०½"×४¾"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२३५७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५१०. क्षत्र चूड़ामणि—वादिभसिंह सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–३६। आकार–१०"×४½"। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१२९७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १४, सोमवार, सं० १५४४।

५११. क्षुल्लककुमार—सुन्दर। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१०"×४¼"।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२००३। रचनाकाल–फाल्गुन शुक्ला ५, सं० १६६७ में मूलतान नगर में पूर्ण किया गया। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १०, सं० १८०१। लिपि आणन्दपुर नगर में की गई।

५१२ त्रेषठ शलाका पुरुष चौपई––पं० जिनमति। देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार–१२½"×५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२३८५। रचनाकाल–फाल्गुन शुक्ला २, सं० १७००। लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा १३, सं० १८००।

विशेष—इसमें त्रेषठ शलाका पुरुषों का अर्थात् २४ तीर्थंकरों, ९ नारायणों, ९ प्रति-नारायणों, ९ बलभद्रों एवं १२ चक्रवर्तियों के जीवन चरित्र वर्णित हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय—काव्य

५१३. अन्यायपदेश शतक—मैथिल मधुसूदन। देशी कागज। पत्र संख्या—९। आकार—९"×४$\frac{3}{4}$"। दशा—अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—काव्य। ग्रन्थ संख्या—१८९६। रचनाकाल—×। लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा ११, सं० १८३८।

५१४. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या—८। आकार—१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा—अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२५२८। रचनाकाल—×। लिपिकाल—श्रावण शुक्ला ६, शनिवार, सं० १८५४।

५१५. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या—१२। आकार—११$\frac{1}{4}$"×५"। दशा—अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२३११। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

५१६. अष्टनायिका लक्षण। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—१०"×४$\frac{1}{4}$"। दशा—जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—२१३१। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

५१७. अनित्य निरूपण चतुर्विंशति—×। देशी कागज। पत्र संख्या—३। आकार—११"×४$\frac{1}{2}$"। दशा—प्राचीन।। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—२६२३। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

५१८. आत्म सम्बोधन काव्य—×। देशी कागज। पत्र संख्या—३०। आकार—१०"×४$\frac{1}{2}$"। दशा—अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा—अपभ्रंश। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—१२८४। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

५१९. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या—२६। आकार—११$\frac{1}{4}$"×५"। दशा—अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—१३४८। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

नोट—अन्तिम पत्र नहीं है।

५२०. आत्म सम्बोध पंचासिका—×। देशी कागज। पत्र संख्या—४१। आकार—११"×४$\frac{1}{4}$"। दशा—जीर्ण। पूर्ण। भाषा—अपभ्रंश। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—१२१५। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

५२१. आर्य वसुधारा धारणी नाम महाविद्या—बोद्ध श्री नन्दन। देशी कागज। पत्र संख्या—१०। आकार—१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा—प्राचीन। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—२५६०। रचनाकाल—×। लिपिकाल—सं० १७४१।

टिप्पणी—यह बोद्ध ग्रन्थ है। लक्ष्मी प्राप्ति के लिए पाठ कैसे किया जाता है इसमें, बताया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५२२. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या ६। आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५८४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५२३. ईश्वर कार्तिकेय संवाद, रुद्राक्ष उत्पत्ति धारण मंत्र विधान—×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२६७२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५२४. एक गीत – श्रीमती कीर्तिवाचक। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार—८$\frac{1}{2}$"×५"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२३५६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×। मेड़ता में लिपि की गई।

५२५ काठिन्य श्लोक–×। देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार–९$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२४६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५२६. क्रिया गुप्त पद्य–×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा– संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२५९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५२७. किरातार्जुनीय –भारवि। देशी कागज। पत्र संख्या ५१। आकार–११$\frac{1}{4}$"×५$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। । ग्रन्थ संख्या–१८१८ रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५२८. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–८९। आकार–१०"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१०७९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५२९. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–६०। आकार–९$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१०९७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

नोट—केवल प्रथम के दस सर्ग ही है।

५३०. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–७२। आकार–११$\frac{1}{2}$"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२४४९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५३१. प्रति संख्या ५। देशी कागज। पत्र संख्या–१०७। आकार–९$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२३७१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–माघ शुक्ला २, सोमवार, सं० १६७५ को अजयमेरु (अजमेर) में लिपि की गई।

५३२. किरातार्जुनीय सटीक—भारवि। टीकाकार—कोचल मल्लीनाथ सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–२७ से ४८।। आकार–१२"×५$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। अपूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या—१८१९। रचनाकाल—×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला सं० १८६२।

५३३. किरातार्जुनीय सटीक—भारवि। टीकाकार-एकनाथ भट्ट। देशी कागज। पत्र संख्या–२ से ३६। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–सामान्य। अपूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नागरी। ग्रन्थ संख्या–१११२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५३४. कुमार सम्भव—कालिदास। देशी कागज। पत्र संख्या–३५। आकार–९$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–११३७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५३५. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–६५। आकार–९"×४"। दशा–बहुत अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–११७८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १, मंगलवार, सं० १७१७।

नोट–आषाढ़ कृष्णा ७, सं० १७६५ में श्री चतुरभुज ने द्विज सारंगधर से अजमेरु (अजमेर) में लीनी है।

५३६. कुमार सम्भव सटीक—पं० लालु। देशी कागज। पत्र संख्या–४४। आकार–१३$\frac{3}{4}$×५$\frac{3}{4}$"। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२६०५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५३७. केशव बावनी—केशवदास। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२८२२। रचनाकाल–श्रावण शुक्ला ५, सं० १७३६। लिपिकाल–वैशाख शुक्ला १४, सं० १७५८।

५३८. खण्ड प्रशस्ति–×।। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–११$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१५१६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–वैशाख शुक्ला ५, सं० १७१५।

५३९. प्रति संख्या २। देशी कागज पत्र संख्या–३। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अतिजीर्ण क्षीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१९१९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५४०. गीत गोविन्द (सटीक)–जयदेव। देशी कागज। पत्र संख्या–६४। आकार–९$\frac{1}{4}$"×५$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी और संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८९०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–पौष शुक्ला १४, सं० १७८०।

५४१. गुणधर ढाल–×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–८"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२९७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५४२. गौतम पुरुषरी—सिद्धस्वरूप। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–८$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२७७८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५४३. घटकर्परकाव्य–×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–११$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२४०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५४४. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–११"×४$\frac{3}{8}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२३३३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५४५. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१०$\frac{3}{8}$"×५"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२७६४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५४६ चन्द्रप्रभ ढाल–×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–८"×४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२९३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५४७. चातुर्मास व्याख्यान पद्धति––शिव निधान पाठक। देशी कागज। पत्र संख्या–१४। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५५२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला ६, सं० १८००।

५४८. चौबोली चतुष्पदी – जिनचंद्र सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–१६। आकार–९$\frac{1}{8}$"×५$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२३६०। रचनाकाल–सं० १७२४। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ५, बुधवार, सं० १८२०।

५४९. चौर पंचाशिका––कवि चौर। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–९"×४$\frac{1}{8}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७४५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५५०. ढाल बारह भावना—×। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार—९"×४$\frac{1}{8}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२३००। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५५१. ढाल मंगल की—×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–४$\frac{3}{8}$"×४$\frac{1}{8}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२९५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५५२. ढाल सुभद्रारी–×। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–८$\frac{1}{8}$"×४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२८२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५५३. ढाल श्री मन्दिरजी–×। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–९"×४$\frac{1}{8}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२३०१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५५४. ढाल क्षमा की—मुनि फकीरचन्दजी। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–९"×४$\frac{1}{8}$"। दशा–अच्छी पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२९८ रचनाकाल–×। लिपिकाल—×।

५५५. तीस बोल—×। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–७$\frac{3}{8}$"×४"।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२९६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५५६. दया नरसिंह ढाल —दया नरसिंह। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–९½"×४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रथ संख्या–२२९४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५५७. दश अच्छेरा ढाल—रायचन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–८"×४⅞"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२८०। रचनाकाल–सं० १८९५। लिपिकाल–×।

विशेष—मेड़ता सेर में चौमासा किया तब श्री रायचन्द्रजी ने रचना की।

५५८. दान निर्णय—सूत। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१२"×५½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२०७९। रचनाकाल–×। लिपिकाल—×।

५५९. द्विसन्धानकाव्य-नेमिचन्द्र। देशी कागज।। पत्र संख्या–२५४। आकार—११¾"×४⅞"। दशा–जीर्ण क्षीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१०४९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १४, शनिवार, सं० १७०४।

नोटः—विस्तृत प्रशस्ति उपलब्ध है।

५६०. द्विसन्धानकाव्य (सटीक)—नेमिचन्द्र। टीकाकार–पं० राघव। देशी कागज। पत्र संख्या–२२०। आकार–११"×४⅞"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या–१४०९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १७१७।

५६१. धर्म परीक्षा–अमितगती सूरि। देशी–कागज। पत्र संख्या–११७। आकार—११"×४½"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१२२५। रचनाकाल–सं० १०७०। लिपिकाल–सं० १७१५।

५६२. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–४९। आकार–१४¾"×६¾"। दशा–बहुत अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१२७३। रचनाकाल–सं० १०७०। लिपिकाल–×।

५६३. धर्म परीक्षा–पं० हरिषेण। देशी कागज। पत्र संख्या–११७। आकार—८¾"×३¾"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–५५८/A। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५६४. धर्मशर्माभ्युदय— हरिश्चन्द कायस्थ। देशी कागज। पत्र संख्या–२१९। आकार–१०¾"×४¾"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२५२६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–चैत्र शुक्ला ७, सं० १६८२।

५६५. नन्दीश्वर काव्य—मृगेन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–११"×४⅞"।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२३४६ । रचनाकाल–×। लिपिकाल– सं० १७२३ ।

५६६. नलदमयन्ती चउपई –समयसुन्दर सूरी । देशी कागज । पत्र संख्या–३० । आकार–१०"×४$\frac{1}{8}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–११६४ । रचनाकाल– सं० १६०३ । लिपिकाल–ज्येष्ठ बुदी १, सं० १८२८ ।

५६७. नलोदय टीका—रामऋषि मिश्र । टीकाकार–रविदेव । देशी कागज । पत्र संख्या–३० । आकार–१०"×४$\frac{1}{8}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८६८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५६८. नलोदय टीकाकार—रविदेव । देशी कागज । पत्र संख्या–१६ । आकार–११"×४$\frac{3}{8}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८५० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ शुक्ला १५, शनिवार, सं० १७१० ।

५६९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–३५ । आकार–६$\frac{1}{2}$"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११२५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५७०. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–३४ । आकार–१०$\frac{3}{8}$"×४$\frac{1}{8}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२५३५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–बैशाख शुक्ला २, सं० १७७० ।

५७१. नवरत्न काव्य–× । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०$\frac{3}{8}$"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७४१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ शुक्ला १, सं० १८६७ ।

५७२. नीतिशतक—भर्तृहरि । देशी कागज । पत्र संख्या–२८ । आकार–१२"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६३७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५७३. नेमजी की ढाल—रायचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार—६$\frac{1}{8}$"×४$\frac{1}{8}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२२७७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

विशेष—पाली में रचना हुई बताई गयी है, परन्तु समय नहीं दिया गया है ।

५७४. नेमिदूत काव्य—श्री विक्रम देव । देशी कागज । पत्र संख्या–९ । आकार–१०$\frac{3}{8}$"×४$\frac{3}{8}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । । ग्रन्थ संख्या–१८५८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा १२, सं० १८६० ।

५७५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१३"×५$\frac{3}{8}$" । दशा–बहुत अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१६२९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा ९, शुक्रवार, सं० १८२४ ।

नोट—इस महाकाव्य में भगवान नेमिनाथ के दूत का राजमति के पिता के यहाँ जाने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का वर्णन है। इस ग्रन्थ में कवि विक्रम ने महाकवि कालिदास कृत मेघदूत काव्य के पद्यों के एक एक चरण को श्लोक के अन्त में अपने अर्थ में प्रयोग किया है।

५७६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–११ । आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०३७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५७७. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–१४ । आकार–१०"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०८५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–पौष कृष्णा ७, मंगलवार, सं० १८१९ ।

५७८. नेमिनिर्वाण महाकाव्य—कवि वाग्भट्ट । देशी कागज । पत्र संख्या–६७ । आकार–११"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या—११६५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल—× ।

५७९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–६० । आकार–११"×५" । दशा–अति जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१३४५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला ११, मंगलवार, सं० १५९४ ।

५८०. प्रतिसंख्या—३ । देशी कागज । पत्र संख्या–६८ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२४३५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–चैत्र शुक्ला १, बृहस्पतिवार सं० १६९७ ।

५८१. नैषध काव्य–हर्षकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या–२१ । आकार–९$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१०९६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

नोटः—केवल द्वितीय सर्ग ही है ।

५८२. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–९८ । आकार–१४"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२६०१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ११, बृहस्पतिवार, सं० १४५३ ।

५८३. पण्डानौ गीत—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५७८ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

५८४. पांच बोल–× । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२७३९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

५८५. प्रतापसार काव्य—जीवन्धर । देशी कागज । पत्र संख्या–९ । आकार—११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६४६ । रचनाकाल–सं० ११६५ । लिपिकाल–× ।

५८६. प्रश्नोत्तर रत्नमाला—विमल । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्ण क्षीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२५६३। रचनाकाल–×। लिपिकाल—×।

५८७. प्रायश्चित बोल—×। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार ७$\frac{1}{2}$"×४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२८१। रचनाकाल–×। लिपि–काल—×।

५८८. पुष्पांजलि व्रतोद्यापन–पं० गंगादास। देशी कागज। पत्र संख्या–१०। आकार––६$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१७४४। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

५८९. पंचमी सप्ताय—कांतिविजय। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार—१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२७२२। रचना-काल–×। लिपिकाल–×।

५९०. बावन दोहा बुद्धि रसायण—पं० महिराज। देशी कागज। पत्र संख्या–४७। आकार–६$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश और हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२५३६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १७३३।

५९१. भक्तामर री ढाल—×। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–७$\frac{1}{2}$"×४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२७६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५९२. भामिनी विलास—पं० जगन्नाथ। देशी कागज। पत्र संख्या–२१। आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१०४७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

५९३. भोज प्रबन्ध—कवि वल्लाल। देशी कागज। पत्र संख्या–३४। आकार—१०"×४"। दशा–जीर्ण क्षीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१६९५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा २, शुक्रवार, सं० १५५८।

५९४. मदन पराजय–जिनदेव। देशी कागज। पत्र संख्या–४६। आकार–६$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$" दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत (चम्पुकाव्य)। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–११२५। रचना–काल–×। लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ११, सं० १८३७।

५९५. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१७। आकार–११$\frac{1}{4}$"×५$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या– १६४५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–प्रथम ज्येष्ठ कृष्णा १०, सं० १८५८।

५९६. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–३२। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–११८८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–श्रावण शुक्ला २, सं० १५६२।

५९७. मदन पराजय—हरिदेव। देशी कागज। पत्र संख्या–२४। आकार–११$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१३००। रचनाकाल–×। लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १०, बृहस्पतिवार, सं० १५७४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५९८. मयुराष्टक-कवि मयुर । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार—८$\frac{3}{4}$"×४" । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—सस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२३५८ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

५९९. मेघकुमार ढाल—मुनि यशनाम । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार—९$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२०९६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

६००. मेघदूत काव्य—कालिदास । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार—१०"×४$\frac{1}{4}$" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संक्या—१३०३ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—भाद्रपद ५, सं० १७८३ ।

६०१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । आकार—१०"×४$\frac{1}{4}$" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१४३३ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—वैशाख शुक्ला ३, बृहस्पतिवार, सं० १७४९ ।

६०२. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—१४ । आकार—१०"×४$\frac{3}{4}$" । दशा—जीर्ण । । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१३६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—अश्विन कृष्णा ८, सं० १९२० ।

विशेष—सं० १९२० अश्विन कृष्णा ८, सोमवार को पं० खेता ने अहिपुर में लिपि की है ।

६०३. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—१० । आकार—१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१४९ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—द्वितीय आषाढ़ कृष्णा १, सं० १६८६ में अहमदाबाद में लिपि की गई ।

६०४. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या—१९ । आकार—११"×५" । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१६१ । रचना काल—× । लिपिकाल-बैशाख कृष्णा ९, सं० १६८६ ।

६०५. मेघदूत काव्य सटीक—लक्ष्मी निवास । देशी कागज । पत्र संख्या-३० । आकार—९$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{4}$" । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । रचनाकाल—× । लिपिकाल—चैत्र कृष्णा १, सं० १७४५ ।

६०६. मेघदूत काव्य सटीक—वल्लभ देव । । देशी कागज । पत्र संख्या—१० । आकार—१३$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{2}$" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२३४६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—भाद्रपद कृष्णा १२, सोमवार, सं० १४८१ ।

६०७. मेघदूत काव्य सटीक—कालिदास । टीकाकार—वत्स । देशी कागज । पत्र संख्या—२८ । आकार—१२$\frac{3}{4}$"×५$\frac{3}{4}$" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—११७१ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—कार्तिक शुक्ला ७, रविवार, सं० १८२२ ।

६०८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—२० । आकार—८$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१०१८ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६०९. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–२२। आकार—१० १/२"×४ १/२"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१०६३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६१०. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–२२। आकार–१० ३/४"×५ १/२"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१७५६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–माघ शुक्ला १५, सं० १८११।

६११. प्रति संख्या ५। देशी कागज। पत्र संख्या–९। आकार–१२ १/२"×६"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१७५३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–पौष शुक्ला ३, सं० १८५३।

६१२ प्रति संख्या ६। (टीका–मल्लिनाथ सूरि) देशी कागज। पत्र संख्या–३६। आकार–१० १/२"×४ १/२"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–११९४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–माघ कृष्णा १४, सं० १७६३।

६१३. मंगल कलश चौपई—लक्ष्मी हर्ष। देशी कागज। पत्र संख्या–२४। आकार–१० १/४×"४ ३/४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२८६१। रचनाकाल–माघ शुक्ला ११, बृहस्पतिवार सं० १७५९। लिपिकाल–पौष कृष्णा १२, सं० १८०३।

६१४. यमक स्तोत्र—चिरन्तनाचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या–९। आकार—१० १/४"×४ १/२"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१३२३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६१५. रघुवंश महाकाव्य—कालिदास। देशी कागज। पत्र संख्या–७६। आकार–१० १/४"×४ १/४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–११३६। रचनाकाल—×। लिपिकाल–×।

६१६. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–३९। आकार–१० १/२"×४ १/२"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२४६६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६१७. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–३५। आकार–१२ १/२"×६"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२२६३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

विशेष—नवम सर्ग पर्यन्त है।

६१८. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–९८। आकार–११"×५"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५९८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १८०७।

६१९. रघुवंश वृत्ति—कालीदास। टीका–आनन्द देव। देशी कागज। पत्र संख्या–२ से १४०। आकार–१०"×४ १/४"। दशा–जीर्ण क्षीण। अपूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१२३६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

नोट—प्रथम पत्र नहीं है।

६२०. राम आज्ञा—तुलसीदास। देशी कागज। पत्र संख्या–१६। आकार—१०"×४ १/४"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२०४३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६२१. लघुस्त्वराज काव्य सटीक—लघु पण्डित । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–६½"×४¼" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२८३८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–सं० १६४८ ।

६२२. लक्ष्मी सरस्वती संवाद—श्री भूषण । देशी कागज । पत्र सख्या–३ । आकार–१०½"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२११३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६२३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–११"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२५४४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६२४. वर्धमान काव्य—जयमित्र हल । देशी कागज । पत्र संख्या–५६ । आकार—१०½"×४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–४४३/अ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६२५. वसुधारा धारिणी नाम महाविद्या—नन्दन । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०"×४¼" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२७८० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

विशेष—यह बोद्ध ग्रन्थ है । इसमें लक्ष्मी प्राप्ति के लिए कैसे पाठ किया जाता है, बताया गया है ।

६२६. वृन्दावन काव्य—कवि माना । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार—११¼"×५" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२३३५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६२७. विक्रमसेन चौपई–× । देशी कागज । पत्र संख्या–५० । आकार–१०"×४¼" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२७४२ । रचनाकाल–सं० १७२४ लिपिकाल–× ।

६२८. विदग्धमुखमण्डन (सटीक)—धर्मदास बोद्धाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–२२ । आकार—१०½"×५¼" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१०६५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६२९. विद्वद्भूषण काव्य—बालकृष्ण भट्ट । देशी कागज । पत्र संख्या–१६ । आकार–९"×४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२१२३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ६, सोमवार, सं० १८३० ।

६३०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–९ । आकार–१२¼"×५¼" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१४२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६३१. विद्वद्भूषण सटीक–बालकृष्ण भट्ट । टीकाकार–मधुसूदन भट्ट । पत्र संख्या–७७ । आकार–९"×४½" । दशा–बहुत अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५६५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६३२. विशेष महाकाव्य सटीक (ऋतु संहार)—कालिदास। टीकाकार–अमरकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–२५। आकार—१०$\frac{1}{4}$"×५$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१६२५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–पौष शुक्ला १०, सं० १८५७।

६३३. वैराग्यमाला—सहल। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–१२"×५$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२१०५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–प्रथम श्रावण कृष्णा ५, सं० १८२५।

६३४. वैराग्यशतक—भर्तृहरि। देशी कागज। पत्र संख्या–१०। आकार–११$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८१२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६३५. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१७। आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण। अपूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२७६६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६३६. वैराग्य शतक सटीक—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१५। आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२७४५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ११, सं० १८५१।

६३७. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१०। आकार—१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२७१६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ४, सं० १८४०।

६३८. वैराग्यशतक सार्थ–×। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–९$\frac{1}{2}$"×५"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२०८९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–मंगसिर कृष्णा १३, मंगलवार, सं० १८३१।

६३९. शत्रुंजय तीर्थोद्धार—नयसुन्दर। देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार—१०"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२७९१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६४०. शिशुपालवध—महाकवि माघ। पत्र संख्या–७३। आकार–११$\frac{3}{4}$"×५$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८२०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ८, बुधवार, सं० १८५६।

६४१. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१९। आकार–१०"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। अपूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१४५८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६४२. शिशुपालवध सटीक–×। देशी कागज। पत्र संख्या–११८। आकार–९$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२३७०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६४३. शिशुपालवध सटीक—माघ। टीकाकार आनन्ददेव। देशी कागज। पत्र संख्या–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८७। आकार–१२$\frac{1}{4}$"×५$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। अपूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८२६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

नोट—टीका का नाम 'सन्देह विषेवधि' है। ग्यारहवें सर्ग की टीका भी पूर्ण नहीं की गई है। ग्रन्थ अपूर्ण है।

६४४. शीलरथ गाथा—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×६$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२५१७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६४५. शील विनती–कुमुदचन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–११"×५$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी और गुजराती मिश्रित। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२४८३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६४६. शीलोपारी चितासन पद्मावती कथानक–×। देशी कागज। पत्र संख्या–१३। आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२३२०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६४७. सज्जन चित्तवल्लभ—मल्लिषेण। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार—१०$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१९१३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–वैशाख शुक्ला १२, बृहस्पतिवार, सं० १६४६।

६४८. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–११$\frac{3}{4}$"×५$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१९७८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा २, शनिवार, सं० १८१७।

६४९. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–११"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ सख्या–२४९१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–भाद्रपद कृष्णा ऽऽ रविवार, सं० १६८६।

विशेष—१६८९ पौष कृष्णा ७ शुक्रवार को ब्रह्मचारी वेणीदास ने संशोधन किया है। श्लोक संख्या २४ हैं।

६५०. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–९$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५७७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–आषाढ़ शुक्ला ११, मंगलवार, सं० १८४४।

६५१. सप्तव्यसन समुच्चय–पं० भीमसेन। देशी कागज। पत्र संख्या–७१। आकार–११$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२७४। रचनाकाल–माघ शुक्ला १, सं० १५२६। लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला ३, सं० १९७९।

६५२. समगत बोल–×। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–९$\frac{1}{2}$"×४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२८३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १९२७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेष—सम्यक्त्व का श्वेताम्बर आम्नाय के अनुसार वर्णन किया गया है।

६५३. सम्यक्त्वरास—ब्रह्म जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार—९$\frac{3}{4}$"×३$\frac{3}{4}$" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या—१३१० । रचनाकाल—× । लिपिकाल—पौष कृष्णा ३, सं० १८०० मालपुरा मध्ये ।

६५४. सिन्दुर प्रकरण—सोमप्रभाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—९ । आकार—१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा—जीर्ण । अपूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१३२४ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

नोट—इस ग्रन्थ में केवल ७५ श्लोक ही उपलब्ध होते हैं। जबकि आचार्य की अन्य प्रतियों में १०० श्लोक उपलब्ध होते हैं।

६५५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । आकार—१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा—अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२०४६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

६५६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—१४ । आकार—११$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा—अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२४२० । । रचनाकाल— × । लिपिकाल—× ।

६५७. सिन्दुर प्रकरणसार्थं—× । देशी कागज । पत्र संख्या—१७ । आकार—१०$\frac{1}{2}$"×४" । दशा—अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२०४९ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

६५८. सीता पच्चीसी—श्री बृद्धिचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार—१२"×५$\frac{3}{4}$" । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५३६ । रचनाकाल—सं० १९०० । लिपिकाल—माघ शुक्ला १२, सं० १९३९ ।

६५९. सीता सती जयमाला—× । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—१०"×४$\frac{3}{4}$" । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५०५ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

६६०. सुभाषित रत्न संदोह—अमितगति । देशी कागज । पत्र संख्या—६२ । आकार—११"×४$\frac{1}{4}$" । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६७८ । रचनाकाल—सं० १०५० । लिपिकाल—बैशाख कृष्णा ५, सं० १६३२ को नागोर में लिपि की गई ।

विशेष—लिपिकार ने अपनी पूर्ण प्रशस्ति लिखी है। रचना बहुत ही सुन्दर और सरल संस्कृत में है ।

६६१. सुमतारी ढाल—शिव्बूराम । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार—८$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२३०२ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

६६२. सोनागीरि पच्चीसी—कवि भागीरथ । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार—७"×४$\frac{3}{4}$" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२४८२ । रचनाकाल—ज्येष्ठ शुक्ला १४, सं० १८६१ । लिपिकाल—× ।

६६३. सोली रो ढाल—× । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार—८$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$" ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२२९९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६६४ स्थूलभद्र मुनि गीत—नथमल । देशी कागज । पत्र संख्या–१ आकार–१०$\frac{1}{4}$"× ४$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५७० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६६५. श्रृंगार शतक (सटीक)—भर्तृहरि । देशी कागज । पत्र संख्या- ३० । आकार–११$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–११५७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

६६६. श्रीमान् कुतूहल—विनय देवी । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–९$\frac{1}{2}$"× ४$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४५१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला २, सं० १९९० ।

नोट—इस ग्रन्थ में कामिनी को क्रियाओं का वर्णन किया गया है ।

६६७. क्षेम कुतूहल—क्षेम कवि । देशी कागज । पत्र संख्या–२३ । आकार–१०$\frac{1}{4}$"× ४$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७५७ । रचनाकाल–सं० १४५३ । लिपिकाल–सं० १९९३ ।

६६८. ज्ञान हिमची—कवि जगरूप । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"× ५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२०९४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

विशेष—मुसलमान, मुल्ला, पीर, अल्ला आदि शब्दों का विवेचन तात्विक ढंग से किया गया है । ग्रन्थ द्रष्टव्य है ।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय—कोश साहित्य

६६९. अनेकार्थ मंजरी—नन्ददास । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१०″ × ५½″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–कोश। ग्रन्थ संख्या–१३२८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–वैशाख शुक्ला १३, बृहस्पतिवार, सं० १८२३।

६७०. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१०। आकार–९″ × ४″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२०४०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

६७१. अनेकार्थध्वनि मंजरी—कवि सूद । देशी कागज । पत्र संख्या–५। आकार–१०¼″ × ४½″। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२१३३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ८, शनिवार, सं० १६८१।

विशेष—नागौर में लिपि की गई।

६७२. अनेकार्थध्वनि मंजरी— ×। देशी कागज । पत्र संख्या–१९। आकार–१०½″ × ४½″। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२४२४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–मांगशीर्ष शुक्ला १४, सं० १७१०।

विशेष—ग्रन्थ के फट जाने पर भी अक्षरों की कोई क्षति नहीं हुई है।

६७३. प्रति संख्या २। देशी कागज। 'पत्र संख्या– १२। आकार–१०″ × ४½″। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२४१९। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

६७४. अनेकार्थ नाममाला—हेमचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–५४। आकार–१०″ × ४¼″। दशा–जीर्ण क्षीण। अपूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–कोश। ग्रन्थ संख्या–१०४६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

६७५. अनेकार्थ नाममाला— × । देशी कागज। पत्र संख्या–९ । आकार–१०″ × ४¾″। दशा–जीर्ण। पूर्ण । भाषा– संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२३०४। रचनाकाल– × । लिपिकाल– ×।

६७६. अभिधान चिन्तामणि—हेमचन्द्राचार्य। देशी कागज । पत्र संख्या–३०। आकार–११″ × ४¼″। दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५७२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–पौष शुक्ला १, बुधवार, सं० १६१०।

६७७. अमर कोश—अमरसिंह । देशी कागज । पत्र संख्या–७९ । आकार–१०¼″×४¼″। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७१७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १३, सं० १८१५।

६७८. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१९। आकार–८¼″ × ५¾″। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२२६८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १३, सं० १९०८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेष—केवल प्रथम काण्ड मात्र ही है।

६७९. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या—३६ से ११७ तक। आकार—१२" × ५¾"। दशा—अच्छी। अपूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२८४६। रचनाकाल— ×। लिपिकाल— ×।

६८०. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या—२२ से ८१ तक। आकार—११¼" × ४¼"। दशा—अच्छी। अपूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२८६३। रचनाकाल— ×। लिपिकाल—फाल्गुन कृष्णा ३, बुधवार, सं० १८२२।

६८१. अमरकोश वृत्ति—अमरसिंह। वृत्तिकार—महेश्वर शर्मा। देशी कागज। पत्र संख्या—९५। आकार—१२½"×४"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—१६८२। रचनाकाल— ×। लिपिकाल—शक् सं० १७७१।

६८२. अमरकोश वृत्ति—अमरसिंह। वृत्तिकार—भट्टोपाध्याय सुनुलिंगयसूरी। देशी कागज। पत्र संख्या—१२३। आकार—१२"×४½"। दशा—अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—१०२५। रचनाकाल— ×। लिपिकाल—मंगसिर सुदी ९, मंगलवार, सं० १७१२।

६८३. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या—७६। आकार—११" × ५¼"। दशा—अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२४०५। रचनाकाल— ×। लिपिकाल—मंगसिर शुक्ला ५, मंगलवार, सं० १६२२।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ संख्या ६५०० है।

६८४. एकाक्षर नाममाला—पं० वररुचि। देशी कागज। पत्र संख्या—१२। आकार—१०"× ५¾"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—१८८४। रचनाकाल— ×। लिपिकाल—श्रावण कृष्णा ६, सोमवार, सं० १९२२।

६८५. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या—२। आकार—१२" × ५¾"। दशा—अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—१९७१। रचनाकाल— ×। लिपिकाल— ×।

६८६. एकाक्षरी नाममाला—प्राकसूरि। देशी कागज। पत्र संख्या—२। आकार—१०" × ४¼"। दशा—जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—२१५९। रचनाकाल— ×। लिपिकाल— ×।

६८७. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या—२। आकार—१०¾" × ४¾"। दशा—जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२४३३। रचनाकाल— ×। लिपिकाल— ×।

६८८. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या—२। आकार—११" × ४¾"। दशा—जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२४१३। रचनाकाल— ×। लिपिकाल— ×।

६८९. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—१०½" × ४½"। दशा—जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२८५८। रचनाकाल— ×। लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला ८, सं० १८२६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६९०. क्रियाकोश—किशनसिंह । देशी कागज । पत्र संख्या—१७ । आकार—११$\frac{3}{4}$"×५$\frac{3}{4}$" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२३१५ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

६९१. गणित नाममाला—हरिदत्त । देशी कागज । पत्र संख्या—८ । आकार—१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१९४३ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

नोट— ग्रन्थ का दूसरा नाम ज्योतिष नाममाला भी है ।

६९२. चिन्तामणि नाममाला—हेमचन्द्राचार्य । । देशी कागज । पत्र संख्या—४४ । आकार—१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—११७७ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—अश्विन बुदी २, सं० १६७८ ।

६९३. द्वि अभिधान कोश— × । देशी कागज । पत्र संख्या ११ । आकार—८$\frac{1}{2}$"×५" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१९८९ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

६९४. धनंजय नाममाला—धनंजय । देशी कागज । पत्र संख्या—१० । आकार—१०$\frac{1}{2}$"×५" । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१७९६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

६९५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१३ । आकार—१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१९९६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

६९६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—१० । आकार—११" × ५$\frac{1}{2}$" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१७५० । रचनाकाल— × । लिपिकाल—पौष शुक्ला १२, सं० १८२२ ।

६९७. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—१३ । आकार—१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१४५७ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

६९८. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या—१३ । आकार—१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१३९५ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

६९९. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या—१४ । आकार—१०$\frac{1}{4}$" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१२९ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला १, सं० १८०५ ।

७००. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र संख्या—१० । आकार—११$\frac{1}{4}$"×५" । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२६९२ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

७०१. प्रति संख्या ८ । देशी कागज । पत्र संख्या—१८ । आकार—१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२६९१ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

७०२. प्रति संख्या ९ । देशी कागज । पत्र संख्या—१४ । आकार—११$\frac{1}{2}$"×५" । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२६५० । रचनाकाल— × । लिपिकाल—माघ कृष्णा ९, सोमवार, सं० १५९२ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७०३. प्रति संख्या १० । देशी कागज । पत्र संख्या–१६ । आकार–१०"×४$\frac{३}{४}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२४१८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ५, सं० १७१५ ।

७०४. नाममाला—हेमचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–४० । आकार–१०$\frac{१}{२}$" × ४$\frac{१}{४}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१२९९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला १२, वृहस्पतिवार, सं० १६३४ ।

७०५. नाममाला—कवि धनंजय । देशी कागज । पत्र संख्या–१७ । आकार–११"×४$\frac{३}{४}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१३०७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ११, सं० १६८१ ।

७०६. पुण्यास्रव कथाकोश—रामचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या–२०३ । आकार–१०" × ४$\frac{१}{४}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–११२२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–चैत्र शुक्ला १५, सं० १८६२ ।

७०७. महालक्ष्मी पद्धति—पं० महादेव । देशी कागज । पत्र संख्या–११ । आकार–९$\frac{३}{४}$"×५$\frac{१}{२}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१९०६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–श्रावण कृष्णा ६, शुक्रवार, सं० १९२२ ।

७०८. मानमंजरी नाममाला—नन्ददास । देशी कागज । पत्र संख्या–२२ । आकार–७$\frac{१}{२}$"×६" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८७७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला ४, शुक्रवार, सं० १९०३ ।

७०९. लघुनाममाला—हर्षकीर्ति सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या–६३ । आकार–१०"×४$\frac{१}{४}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८६० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १, सं० १८७३ ।

७१०. लिंगानुशासन—अमरसिंह । देशी कागज । पत्र संख्या–९ । आकार–११"×५" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१३०६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–भाद्रपद कृष्णा १३, सं० १८९४ ।

७११. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–७४–९९ । आकार–११"×६" । दशा–जीर्ण । अपूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१०७९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल-माघ शुक्ला ५, सं० १८६६ ।

नोट—इसे अमरकोश भी कहा गया है ।

———

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय—चरित्र

७१२. **अर्जुन चौपई—समयसुन्दर सूरि** । देशी कागज । पत्र संख्या—२० । आकार—१० ३/४"×४ १/२" । दशा—अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—चरित्र । ग्रन्थ संख्या—१११० । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

७१३. **अवन्ति सुकुमाल महामुनि वर्णन—महानन्द मुनि** । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार—१० १/२"×४ ३/४" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—चरित्र । ग्रन्थ संख्या—२८२५ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—मंगसिर शुक्ला ७, सं० १७९६ ।

७१४. **उत्तम चरित्र**— × । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । आकार—१० १/२"×४ १/४" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—चरित्र । ग्रन्थ संख्या—१५१३ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

७१५. **ऋषभनाथ चरित्र—भ० सकलकीर्ति** । देशी कागज । पत्र संख्या—१४५ । आकार—१२ १/२"×५ १/२" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—चरित्र । ग्रन्थ संख्या—२६७७ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा १२, सं० १८३३ ।

विशेष—श्लोक संख्या ४६२८ हैं ।

७१६. **अंबड़ चरित्र—पं० अमरसुन्दर** । देशी कागज । पत्र संख्या—३१ । आकार—९ ३/४"×४ १/४" । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२७१५ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—अश्विन कृष्णा १३, सं० १८२६ ।

७१७. **करकण्ड, महाराज चरित्र—कनकामर** । देशी कागज । पत्र संख्या—७३ । आकार—१० १/२"×४ १/४" । दशा—अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१०७० । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

७१८. **कुल ध्वज चौपई—पं० जयसर** । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । आकार—१०"×४ १/४" । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१३९९ । रचनाकाल—अश्विन शुक्ला १०, सं० १७३४ । लिपिकाल—अश्विन कृष्णा २, वृहस्पतिवार, सं० १७५३ ।

७१९. **गुज सधन्टप चरित्र—पं० सुन्दरराज** । देशी कागज । पत्र संख्या—१८ । आकार—१०"×४ १/४" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१२०६ । रचनाकाल—प्रथम ज्येष्ठ बुदी १५, बुधवार, सं० १५५३ । लिपिकाल—श्रावण शुक्ला १२, शनिवार, सं० १६७० ।

७२०. **गौत्तमस्वामी चरित्र—मण्डलाचार्य धर्मचन्द** । देशी कागज । पत्र संख्या—३१ । आकार—१२"×५ १/४" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१२२९ । रचनाकाल—ज्येष्ठ शुक्ला २, सं० १७१६ । लिपिकाल—चैत्र कृष्णा ८, शुक्रवार, सं० १८३१ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७२१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–३३ । आकार–११$\frac{1}{4}$"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१८६७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ११, शनिवार, सं० १८२१ ।

७२२. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–३८ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११३६ । । रचनाकाल–जेष्ठ शुक्ला २, शुक्रवार, सं० १७२६ । लिपिकाल–पौष शुक्ला ८, रविवार, सं० १८४८ ।

७२३. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–३३ । आकार–११$\frac{1}{4}$"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२५५५ । रचनाकाल–ज्येष्ठ शुक्ला २, शुक्रवार, सं० १७२६ । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ११, सं० १८२५ ।

७२४. चन्द्रप्रभ चरित्र—पं० दामोदर । देशी कागज । पत्र संख्या–६२ । आकार–१२$\frac{1}{4}$" × ५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७४३ । रचनाकाल–भाद्रपद ६, सं० १७२७ । लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा २, सं० १८४४ ।

आदिभाग—

श्रियं चन्द्रप्रभो नित्यां चन्द्रदश्चन्द्र लांछनः ।
भव्य कुमुदचन्द्रो वश्चन्द्रप्रभो जिनः क्रियात् ।। १ ।।

कुशासन वचोव्डज्जगत्तारण हेतवे ।
तेन स्ववाक्य सूरास्त्रं धर्मंपोतः प्रकाशितः ।। २ ।।

युगादौ येन तीर्थेशा धर्मतीर्थः प्रवर्त्तितः ।
तमहं वृषभं वन्दे वृषदं वृषनायकम् ।। ३ ।।

अन्तभाग—

जिनरुचिदृढ़मूलो ज्ञान विज्ञान पीठः शुभवितरण साखश्चारुशीलादि पत्रः ।
सुगुणचयसमृद्धः स्वर्गसौख्यप्रसूनः शिवसुखफलदो वै जैनधर्मद्रुमोऽस्तु ।। ८४ ।।

भूभृन्नेत्राचलशसधरांकप्रमे (१७२७) वर्षेऽतीते नवमीदिवसे मासि भाद्रे सुयोगे ।
रम्ये ग्रामे विरचितमिदं श्रीमहाराष्ट्रनाम्नि नाभेयस्य प्रवरभवने भूरिशोभा निवासे ।।८५।।

रम्यं चतुः सहस्राणि पन्चदशयुतानि वै ।
अनुष्टुप्कैः समाख्यातं श्लोकैरिदं प्रमाणतः ।। ८६ ।।

इति श्रीमण्डलसूरि श्रीभूषण तत्पट्टगच्छेश श्रीधर्मचन्द्र शिष्य कविदांमोदर–विरचिते श्री चन्द्रप्रभचरिते श्री चन्दप्रभ निर्वाणगमन वर्णनो नाम सप्त–विंशतितमः सर्गः ।

७२५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–६५ । आकार–१५"×६$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११५० । रचनाकाल–भाद्रपद शुक्ला ६, सं० १७२७ । लिपिकाल–सं० १८६६ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७२६. **चन्द्रप्रभ चरित्र—यशः कीर्ति।** देशी कागज। पत्र संख्या—११७। आकार—१०" × ४$\frac{1}{4}$"। दशा—जीर्ण क्षीर्ण। पूर्ण। भाषा—अपभ्रंश। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—१३५५। रचनाकाल— ×। लिपिकाल—माघ शुक्ला ५, सं० १६०१।

७२७. **प्रति संख्या २।** देशी कागज। पत्र संख्या—९४। आकार— १०$\frac{1}{4}$" × ५$\frac{1}{4}$"। दशा—जीर्ण क्षीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—१३४१। रचनाकाल— ×। लिपिकाल—वैशाख कृष्णा १०, सं० १६२७।

७२८. **चन्द्रलेहा चरित्र—रामवल्लभ।** देशी कागज। पत्र संख्या—३५। आकार—१०" × ५"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—२५२९। रचनाकाल—अश्विन शुक्ला १०, रविवार, सं० १७२८। लिपिकाल—पौष कृष्णा १०, सं० १८५४।

७२९. **प्रति संख्या २।** देशी कागज। पत्र संख्या—४४। आकार—९"×४$\frac{1}{2}$"। दशा—अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२७५१। रचनाकाल—अश्विन शुक्ला १०, सं० १७२८। लिपिकाल—माघ शुक्ला ११, सं० १८३१।

७३०. **चरित्रसार टिप्पण—चामुण्डराय।** देशी कागज। पत्र संख्या—१०। आकार—१०$\frac{1}{2}$" × ४$\frac{1}{2}$"। दशा—जीर्ण। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—१५१०। रचनाकाल— ×। लिपिकाल— ×।

७३१. **चेतन कर्म चरित्र—भैया भगवतीदास।** देशी कागज। पत्र संख्या— १२। आकार—१२"×५$\frac{3}{4}$"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—२१२२। रचनाकाल—ज्येष्ठ कृष्णा ७, मंगलवार, सं० १७३२। लिपिकाल—मंगसिर कृष्णा ३, सं० १८५६।

विशेष—इस ग्रन्थ की लिपि नागौर में की गई।

७३२. **चेतनचरित्र—यशःकीर्ति।** देशी कागज। पत्र संख्या—१५। आकार—११$\frac{1}{2}$"×५$\frac{3}{4}$"। दशा—जीर्ण। पूर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—१५९९। रचनाकाल—×। लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला ६, सं० १९०८।

७३३. **जम्बूस्वामीचरित्र—भ० सकलकीर्ति।** देशी कागज। पत्र संख्या—५८। आकार—१०"×४$\frac{1}{2}$"। दशा—जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—१८०३। रचनाकाल—×। लिपिकाल— ×।

७३४. **प्रति संख्या २।** देशी कागज। पत्र संख्या—७५। आकार—११$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा—जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नोनरी। ग्रन्थ संख्या—१०८५। रचनाकाल— ×। लिपिकाल—सं० १७१३।

७३५. **प्रति संख्या ३।** देशी कागज। पत्र संख्या—४८। आकार—१५" × ७"। दशा—अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२६१९। रचनाकाल—×। लिपिकाल—आषाढ़ शुक्ला १५, मंगलवार, सं० १८६६।

विशेष—श्लोक संख्या २१७० हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७३६ जम्बूस्वामीचरित्र— ×। देशी कागज । पत्र संख्या–१२। आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२७१४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला ७, सं० १७२४।

७३७. जिनदत्तचरित्र—पं० लाखू। देशी कागज । पत्र संख्या–१५८। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१२६१ । रचनाकाल–पौष बुदी ६, सं० १२७५ । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ६, बुधवार, सं० १५६८।

नोट—ज्येष्ठ कृष्णा ६, बुधवार को नागपुर (नागौर) में मुहम्मद खाँ के राज्यकाल में लिपि की गई है।

७३८. जिनदत्तचरित्र— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–२५। आकार–१३"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२३४८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

विशेष - इस ग्रन्थ में १०६० श्लोक हैं, संपूर्ण ग्रन्थ में ६ सर्ग हैं। श्री विद्यानन्ददेव ने अपने पढ़ने के लिए लिपि करवाई।

७३९. जीवंधरचरित्र—म० शुभचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–७७। आकार–११$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतीजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१३७०। रचनाकाल–अश्विन शुक्ला १३, सं० १६२८। लिपिकाल– ×।

आदिभाग—

श्रीसन्मतिः सतां कुर्यात्समीहितफलं परं।
येनाप्येत महामुक्तराजस्य वर—वैभवः ।।१।।

अन्तभाग—

येषां धर्मकथासुयोगसुविधिज्ञान प्रमोदा,
गमाचार श्रीशुभचन्द्र एष भविनां संसारतः संभवं।
मार्गादर्शनकोविदं हतहितं तामस्यभारं सदा,
छिद्याद्वाक्किरणैः कथंचिदतुलैः सर्वत्र सुव्यापिभिः ।।८५।।

श्रीमूलसंघो यातिमुख्यसेव्यः श्रीभारतीगच्छ विशेषशोभः।
मिथ्यामतध्वान्त विनाशदक्षो जीयाच्चिरं श्रीशुभचन्द्रभासी ।।६।।

श्रीमद्विक्रमभूपतेर्वसुहत द्वैतेशते सप्तके,
वेदैः न्युनतरेसमे शुभतरे मासे वरेण्ये शुचौ।
वारे गीष्पतिके त्रयोदश तिथौ सन्नूतने पत्तने,
श्रीचन्द्रप्रभधाम्नि वै विरचितं चेदं मया तोषतः ।।७।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचंद्रार्कं चिरं जीयाच्छुभचन्द्रेण भाषितं ।
चरितं जीवकस्याऽत्र स्वामिनः शुभकारणं ।।८८।।

इति श्री मुमुक्षु—शुभचन्द्रविरचिते श्रीमज्जीवंधरस्वामिचरिते जीवंधरस्वामिमोक्ष गमनवर्णनं नाम त्रयोदशोलंभ ।।१३।।

७४०. धन्यकुमारचरित्र—ब्रह्म नेमिदत्त । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–१०१/२"×४१/२" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१३८६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७४१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–२२ । आकार–११"×५१/४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२३४१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७४२. धन्यकुमार चरित्र—भ० सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या–३१ । आकार–१११/४"×५१/२" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१२५१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–बैशाख कृष्णा ४, रविवार, सं० १८५० ।

७४३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–२६ । आकार–१११/२"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ सं० १८९१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–सं० १८४४ ।

७४४. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–२० । आकार–१०१/२"×४१/२" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२३९३ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—माघ शुक्ला ४, मंगलवार, सं० १९९४ ।

७४५, धन्यकुमारचरित्र—गुणभद्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–४४ । आकार–१०"×५१/४" । दशा- जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१०४२ । रचनाकाल—× । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ५, शुक्रवार, सं० १६५३ ।

आदिभाग—

स्वयंभूवं महावीरं लब्धाऽनन्तचतुष्टयं ।
शतेन्द्रप्रणतं वन्दे मोक्षाय शरणं सताम् ।।१।।
प्रणमामि गुरुंश्चैव सर्वसत्वाऽभयंकरान् ।
रत्नत्रयेण संयुक्तान्ससारार्णवतारकान् ।।२।।
दिश्यात्सरस्वती बुद्धि मम मन्दधियो दृढ़ां ।
भक्त्यानुरंजिता जैनी मातेव पुत्र वत्सला ।।३।।
स्याद्वादवाक्यसंदर्भं प्रणमम् परमागमम् ।
श्रुतार्थभावनां वक्ष्ये कृतपुण्येन भाविताम् ।।४।।

अन्तभाग—

यः संसारमसारमुन्नतमतिर्ज्ञात्वा विरक्तोऽभवद्धत्वा
मोहमहाभटं शुभमना रागांधकारं तथा ।
आदायेति महाव्रतं भवहरं माणिक्यसेनो मुनि–
नैर्ग्रन्थ्यं सुखदं चकार हृदये रत्नत्रयं मण्डनं ।।१।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिष्योऽभूत्पदपंकजैकभ्रमरः श्रीनेमिसेनोविभूस्तस्य,
श्रीगुरु पुंगवस्य सुतपाश्चारित्रभूषान्वितः ।
कामक्रोधमदान्ध गन्ध करिणो ध्वंसे मृगाणां पतिः,
सम्यग्दर्शन–बोध–साम्य निचितो भवयांऽबुजानां रविः ॥२॥

आचारं समितीर्दधौ दशविधं धर्मं तपः संयमम्
सिद्धान्तस्य गणाधिपस्य गुणिनः शिष्यो हि मान्योऽभवत् ।
सैद्धान्ती गुणभद्रनाममुनिपो मिथ्यात्वकामान्तकृत्
स्याद्वादामलरत्नभूषणधरो मिथ्यानयध्वंसकः ॥३॥

तस्येयं निरलंकारा ग्रन्थाकृतिरसुन्दरा ।
अलंकारवता दृष्या सालंकाराकृता न हि ॥४॥

शास्त्रमिदं कृतं राज्ये राज्ञी श्रीपरमार्दिनः ।
पुरे विलासपूर्वे च जिनालयैर्विराजिते ॥५॥

यः पाठयति पठत्येव पठन्तमनुमोदयेत् ।
सः स्वर्गं लभते भव्यः सर्वाक्षसुखदायकं ॥६॥

लम्वकंचुकऽगोत्रीऽभूच्छुभचन्द्रो महामनाः ।
साधुः सुशीलवान शान्तः श्रावको धर्मवत्सलः ॥७॥

तस्य पुत्रो वभूवाऽत्र वल्हणो दानवान्वशी ।
परोपकारचेतस्को न्यायेनार्जितसद्धनः ॥८॥

धर्मानुरागिणा तेन धर्मकथा निबन्धनं ।
चरितं कारितं पुण्यं शिवायेति शिवार्थिनः ॥९॥

इति धन्यकुमारचरित्रं सम्पूर्णं ।

७४६. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या–६ । आकार–९½″×३½″ । दशा-अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११७९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ९, बृहस्पतिवार, सं० १५२० ।

७४७. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–५० । आकार–११¼″×५″ । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१४१४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट—कई पत्र परस्पर चिपक गये हैं जिनको अलग करने पर भी अक्षर स्पष्ट नहीं हैं ।

७४८. धन्यकुमारचरित्र—पं० रयधू । देशी कागज । पत्र संख्या – १४ । आकार–१०″×४½″ । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१२३९ । रचनाकाल— × । लिपिकाल– × ।

७४९. नवपदयंत्रचक्रद्वार (श्रीपालचरित्र)– × । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०″×५½″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६३० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ६, सं० १९२२ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नोट—यह ग्रन्थ श्वेताम्बराम्नाय के अनुसार है। इसमें श्रीपाल का चरित्र प्राकृत गाथाओं में निबद्ध किया हुआ है।

७५०. नागकुमारचरित्र--पुष्पदन्त। देशी कागज। पत्र संख्या-७०। आकार—११"×४¾"। दशा—जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा—अपभ्रंश। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—१०७३। रचनाकाल-×। लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला १३, सोमवार, सं० १६३९।

७५१. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या—६७। आकार-१२"×५"। दशा-जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-२६७६। रचनाकाल—×। लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला ५, सोमवार, सं० १५३८।

७५२. नागकुमारचरित्र—पं० धर्मधर। देशी कागज। पत्र संख्या-४२। आकार-११⅞"×५"। दशा-जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-११३४। रचनाकाल—श्रावण शुक्ला १५, सोमवार, सं० १२१३। लिपिकाल-चैत्र शुक्ला २, शुक्रवार, सं० १५९६।

७५३. नागकुमार चरित्र—मल्लिषेण सूरी। देशी कागज। पत्र संख्या—२८। आकार—११⅞"×५"। दशा-जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१२७१। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।

आदिभाग—

श्रीनेमिं जिनमृनम्य सर्वसत्वहितप्रदम्।
वक्ष्ये नागकुमारस्य चरितं दुरितापहं ॥१॥
कविभिर्जयदेवाद्यैर्पद्यैर्विनिर्मितम्।
यत्तदेवारित चेदत्र विषम मन्दमेध्साम् ॥२॥
प्रसिद्धैः संस्कृतैर्वापयैविद्वज्जन मनोहरम्।
तन्मया पद्यवन्धेन मल्लिषेणेन रच्यते ॥३॥

अन्तभाग—

श्रुत्वा नागकुमार चारु चरितं श्री गौतमेनोदितं।
भव्यानां सुखदायकं भवहरं पुण्यास्रवोत्पादकं।
नत्वा तं मुगधाधिपो गणधरं भक्त्या पुरं प्रागम—
च्छीमद्राजगृहं पुरन्दरपुराकारं विभूत्या समं ॥६१॥
इत्युमयभाषाकविचक्रवर्ति श्री मल्लिषेणसूरि
विरचितायां श्री नागकुमार पचमीकथ-यां नागकुमार मुनीश्वर—
निर्वाणगमनो नाम पंचमः सर्गः।

७५४. नागश्रीचरित्र—कवि किशनसिंह। देशी कागज। पत्र संख्या-२८। आकार-९"×४½"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-हिन्दीपद्य। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-११६२। रचनाकाल-श्रावण बुदी ६, बृहस्पतिवार, सं० १७७०। लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला २, स० १७७९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७५५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१८ । आकार–९½"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१०१५ । रचनाकाल–श्रावण शुक्ला ६, बृहस्पतिवार, सं० १७७३ । लिपिकाल– × ।

७५६. नैषधचरित्र (केवल द्वितीय सर्ग)–महाकवि हर्ष । देशी कागज । पत्र संख्या–१४ । आकार–१२"×६" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२३२९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७५७. पज्जुंगमहाराज चरित्र–पं० दामोदर । देशी कागज । पत्र संख्या–११ । आकार ११½"×४½" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७७२ । रचनाकाल— × । लिपिकाल– × ।

७५८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–८९ । आकार–११½"×५" । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७६६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७५९. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–८९ । आकार १०¾"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१७६७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७६०. ४०७. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–७८ । आकार–११"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१०९१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ५, मंगलवार, सं० १८२१ ।

७६१. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या–१३१ । आकार–१०"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१११४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ५ मंगलवार, सं० १८२१ ।

७६२. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या–१०८ । आकार–११½"×४½" दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२४९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७६३. प्रद्युम्न चरित्र—पं० रयधू । देशी कागज । पत्र संख्या–११९ । आकार–१०¾"×५" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४१० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७६४. प्रद्युम्न चरित्र—महासेनाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–१३० । आकार–१०¾"×४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१३७२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–पौष शुक्ला ९, शनिवार, सं० १६६० ।

७६५. प्रद्युम्न चरित्र–श्री सिंह । देशी कागज । पत्र संख्या–११८ । आकार–१०¾"×४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१०७२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७६६. प्रति संख्या २ । । देशी कागज । पत्र संख्या–१४३ । आकार–९¾"×४½" ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११३१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला १४, बृहस्पतिवार, सं० १६८० ।

७६७. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–४०३ । आकार–८$\frac{3}{4}$"×६" । दशा– प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२२६० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७६८. प्रद्युम्न चरित्र—आचार्य सोमकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या–१३८ । आकार–१२"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–११२४ । रचनाकाल–×। लिपिकाल–आषाढ़ बुदी ११, मंगलवार, सं० १९२८ ।

७६९. प्रभजंन चरित्र - × । देशी कागज । पत्र संख्या–१७ । आकार–११"×५" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२११४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १, रविवार, सं० १७४२ ।

७७०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०१० । रचनाकाल × । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १५, शनिवार, सं० १७०० ।

नोट—यशोधर चरित्र पीठिका में से ही प्रभजंनचरित्र लेकर वर्णन किया गया है ।

७७१. प्रीतिकंरमहामुनि चरित्र—ब्रह्म नेमिदत्त । देशी कागज । पत्र संख्या–३० । आकार–११"×५" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५८१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

७७२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–२६ । आकार–११$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१११९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–पौष शुक्ला ८, सं० १६०६ ।

७७३. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–३२ । आकार–११"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१३९६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल -कार्तिक कृष्णा ८, सं० १७४९ ।

७७४. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–१९ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा– अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२६४३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–बैशाख शुक्ला ५, सं० १६८२ ।

७७५. प्रीतिकंरमुनि चरित्र भाषा– साह जोधराज गोदीका । देशी कागज । पत्र संख्या–५३ । आकार- ११$\frac{1}{2}$"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६१५ । रचनाकाल–फाल्गुन शुक्ला ५, शुक्रवार, सं० १७२१। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा १, सं० १८६४ ।

७७६. बाहुबली चरित्र—धनपाल । देशी कागज । पत्र संख्या–२४६ । आकार–१२"×५$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१०५५ । रचनाकाल–बैशाख शुक्ला १३, सं० १४५० । लिपिकाल–× ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७७७. वाहुवली पाथड़ी—अभयवली। देशी कागज। पत्र संख्या—३। आकार—१०"×४½"। दशा—जीर्ण। पूर्ण। भाषा—प्राकृत। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—१४५६। रचनाकाल—×। लिपिकाल—फाल्गुन कृष्णा १, सं० १६६८।

७७८. भद्रवाहु चरित्र—आचार्य रत्ननन्दि। देशी कागज। पत्र संख्या—२२। (२१वां नहीं है)। आकार—१२"×५½"। दशा—प्रति जीर्ण क्षीण। अपूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—१७०४। रचनाकाल—×। लिपिकाल—माघ शुक्ला १, सोमवार, सं० १६३६।

७७९. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या—२३। आकार—११"×४¾"। दशा—जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—१६२६। रचनाकाल—×। लिपिकाल—भाद्रपद कृष्णा १, सम्वत् १८४३।

७८०. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या—२८। आकार—११"×४¾"। दशा—जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—१०८८। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

७८१. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या—५१। आकार—१२"×५½"। दशा—बहुत अच्छी। पूर्ण। भाषा—हिन्दी टीकाकी। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—१५६८। रचनाकाल—श्रावण शुक्ला १५, सं० १८६३। लिपिकाल—×।

७८२. प्रति संख्या ५। देशी कागज। पत्र संख्या—२२। आकार—११"×५"। दशा—अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या— २३५०। रचनाकाल—×। लिपिकाल—पौष शुक्ला १२, बृहस्पतिवार, सं० १६४५।

७८३. प्रति संख्या ६। देशी कागज। पत्र संख्या— २२। आकार—११¾"×५½"। दशा—जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या— २४५१। रचनाकाल — ×। लिपिकाल— सं० १६५०।

७८४. भविष्यदत्त चरित्र—पं० श्रीधर। देशी कागज। पत्र संख्या—७३। आकार—१०½"×४½"। दशा—जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—१११८। रचनाकाल—×। लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला १२, बृहस्पतिवार, सं० १६१४।

आदि भाग :—

श्रीमतं त्रिजगन्नाथं नमामि वृषभं जिनं।
इन्द्रादिभिः सदा यस्य पादपद्मद्वयी नता।। १ ।।

अन्त भाग :—

श्री चन्द्रप्रभस्य जगतामधिपस्य तीर्थे यातेयमद्भुतकथा कविकंठभूषा।
विस्तारिता च मुनिनाथगणैः क्रमेण ज्ञाता मयाप्यपरसूरि मुखाम्बुजेभ्यः ।।५१।।
भक्त्याऽत्र ये चरितमेतद नूनबुद्धया श्रण्वंति संसदि पठंति च पाठयंति।
दत्वा धनं निजकरेण च लेखयंति व्युदग्राहभावरहिताश्च लिखंति संतः ।।५२।।
ते भवंति बललक्षणशुद्धाः श्रीधरामलमुखा जनमुख्याः।
प्राप्त चिंतित समस्त सुखार्थाः शुभ्रकीर्तिधवली कृतलोकाः ।।५३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इति श्री भविष्यदत्त चरिते श्रीधरविरचिते साधु लक्ष्मण नामांकिते श्री वद्र्धन—नंदि वदूर्धन मोक्षगमन वर्णनं नाम पंचदशः सर्ग समाप्तः ॥

७८५. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–९३। आकार–११$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१८४३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १० बृहस्पतिवार सं० १६७२।

७८६. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–६८। आकार–८$\frac{3}{4}$"×६"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१८७६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १९१४।

७८७. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–५४। आकार–११$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५६१। रचनाकाल–×। लिपिकाल– चैत्र शुक्ला १३, रविवार, सं० १५३२।

विशेष :-- ग्रन्थ के दीमक लग जाने से क्षतिग्रस्तता को प्राप्त हो रहा है। श्लोक संख्या १५०४ है।

७८८. भविष्यदत्त चरित्र-धनपाल। देशी कागज। पत्र संख्या–१०४। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि--नागरी। ग्रन्थ संख्या–१०१४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–बैशाख शुक्ला ५ बृहस्पतिवार। सं० १८६२।

७८९. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१४५। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–११३२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला १३, बृहस्पतिवार सं० १५९७।

७९०. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–११६ आकार–११"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–११७०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ५, रविवार सं० १५९५।

७९१. भविष्यदत्त चौपई—ब्रह्मरायमल्ल। देशी कागज। पत्र संख्या ५६। आकार–११$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी पद्य। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१५६१। रचनाकाल–कार्तिक शुक्ला १४, सं० १६३३। लिपिकाल–श्रावण कृष्णा १४, सं० १८८४।

७९२. मलय सुन्दरी चरित्र—अखयराम लुहाड़िया। देशी कागज। पत्र संख्या–१२०। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१३८५। रचनाकाल–×। लिपिकाल– ×।

विशेष—ग्रन्थ के दीमक लगजाने पर भी अक्षरों की क्षति नहीं हुई है।

७९३. मल्लिनाथ चरित्र-भ० सकलकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–३२। आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८६२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा ११, सं० १८२३।

७९४. महिपाल चरित्र भाषा—पं० नथमल। देशी कागज। पत्र संख्या–६७। आकार–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२$\frac{1}{4}$"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२२७० । रचनाकाल–आषाढ़ कृष्णा ४, बुधवार, सं० १९१८ । लिपिकाल–श्रावण बुदी २, सं० १९३९ ।

विशेष—भाषाकार ने अपनी पूर्ण प्रशस्ति लिखि है ।

७९५. यशोधर चरित्र—मुमुक्षु विद्यानन्द । देशी कागज । पत्र संख्या–६५ । आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१०३५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

७९६. यशोधर चरित्र—सोमकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या–८१ । आकार–१०"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१०४५ । रचनाकाल–पौष बुदी ५, रविवार, सं० १५४२ । लिपिकाल–× ।

आदिभाग—

प्रणम्य शंकरं देवं सर्वज्ञं जितमन्मथं ।
रागादिसर्वदोषघ्नं मोहनिद्रा विवर्जितं ॥ १ ॥

अर्हंतः परमाभक्त्या सिद्धान्सूरीश्वरांस्तथा ।
पाठकान् साधवान्श्चेति नत्वा परमया मुदा ॥ २ ॥

यशोधरनरेन्द्रस्य जनन्या सहितस्य हि ।
पवित्रं चरितं वक्ष्ये समासेन यथागमं ॥ ३ ॥

जिनेन्द्रवन्दनोद्भूतां नमामि शारदां परां ।
श्री गुरुभ्यः प्रमोदेन श्रेयसे प्रणमाम्यहम् ॥ ४ ॥

यत्प्रोक्तं हरिषेणाद्यैः पुष्पदंतपुरस्सरैः ।
श्रीमद्वासवसेनाद्यैः शास्त्रस्यार्णवपारगैः ।

अन्तभाग—

नंदीतटाख्यगच्छे वंशे श्री रामसेनदेवस्य ।
जातो गुणार्णवैकश्च श्रीमांश्च श्रीभीमसेनेति ॥ ६० ॥
निर्मितं तस्य शिष्येण श्रीयशोधर सञ्ज्ञकं ।
श्रीसोमकीर्तिमुनिना विशोध्याऽधीयतां बुधाः ॥ ६१ ॥
वर्षे षट्त्रिंशसंख्ये तिथिपरगणनायुक्त संवत्सरे (१५३६) वै
पंचम्यां पौषकृष्णे दिनकरदिवसे चोत्तरास्थे हि चन्द्रे ।
गोंढिल्यां मेदपाटे जिनवरभवने शीतलेन्द्रस्य रम्ये
सोमादिकीर्तिनेदं नृपवरचरितं निर्मितं शुद्धभक्त्या ॥ ६२ ॥

इति श्री यशोधरचरिते श्री सोमकीर्त्याचार्य—विरचिते अभयरुचि–भट्टारक–स्वर्गगमनो नाम अष्टमः सर्गः ॥ ८ ॥

ग्रन्थाग्रन्थ १०१८ । इति श्रीयशोधर चरितं समाप्तं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७९७. यशोधर चरित्र—सोमदेव सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—२२८ । आकार—१०३/४"×४३/४" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१३६३ । रचनाकाल—चैत्र शुक्ला १३, सं० ८८१ । लिपिकाल—सं० १६५१ ।

७९८. यशोधर चरित्र—पुष्पदन्त । देशी कागज । पत्र संख्या—५७ । आकार—१०३/४"×५१/४" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—अपभ्रंश । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या १०५१ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—भाद्रपद शुक्ला १४, सं० १६६४ ।

७९९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—६८ । आकार—९"×४" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१०६३ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—माघ शुक्ला ५, सं० १५२१ ।

८००. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—५९ । आकार—१०१/४"×४१/२" । दशा—जीर्णक्षीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—११२९ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—पौष कृष्णा ३, सं० १५७४ ।

८०१. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—७४ । आकार—९३/४"×४१/२" । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—११३० । रचनाकाल—× । लिपिकाल—अश्विन शुक्ला ५, शुक्रवार, सं० १४८७ ।

८०२. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या—५९ । आकार—१०१/४"×४१/४" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—११६९ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—अश्विन शुक्ला १, बृहस्पतिवार, सं० १६२१ ।

८०३. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या—८० । आकार—१०१/४"×४१/२" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१२१८ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—आषाढ़ कृष्णा ११, सं० १५८९ ।

८०४. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र संख्या—७४ । आकार—१०१/४"×४३/४" । दशा—जीर्णक्षीण । । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१४०१ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

८०५. प्रति संख्या ८ । देशी कागज । पत्र संख्या—७१ । आकार—११"×५१/२" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१४१२ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—भाद्रपद शुक्ला ५, शनिवार, सं० १६५१ ।

८०६. यशोधर चरित्र—पद्मनाभ कायस्थ । देशी कागज । पत्र संख्या—८१ । आकार—१०१/२"×४३/४" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१०७५ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—चैत्र शुक्ला ९, सं० १६७४ ।

अन्तभाग—

जातः श्री वीरसिंहः सकलरिपुकुलव्रातनिर्घातपातो,
वंशे श्री तोमराणां निजविमल यशोव्याप्तदिक्चक्रवालः ।
दानैर्मानैर्विवेकैर्न भवति समता येन साकं नृपाणां,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केषामेषा कविनां प्रभवति धिषणा वर्णने तद्गुणानां ॥ १ ॥

ईश्वरचूडारत्नं विनिहतकरघातवृत्तसंहातः ।
चन्द्र इव दुग्धसिंघोस्तस्मादुद्धरण भूपतिर्जनितः ॥ २ ॥

यस्य हि नृपतेः यशसा सहसा शुभ्रीकृत त्रिभुवनेऽस्मिन् ।
कैलाशति गिरिनिकरः क्षीरति नीरं शुचीयते तिमिरं ॥ ३ ॥

तत्पुत्रो वीरमेन्द्रः सकलवसुमतीपाल चूड़ामणिर्यः
प्रख्यातः सर्वलोके सकलबुधकलानंदकारी विशेषात् ।
तस्मिन् भूपालरत्ने निखिलनिधिगृहे गोपदुर्गे प्रसिद्धि
भुंजाने प्राज्यराज्यं विगतरिपुभयं सुप्रजः सेव्यमानं ॥ ४ ॥

वंशेऽभूज्जैसवाले विमलगुणनिधिर्भूलणः साधुरत्नं ।
साधुश्री जैनपालो भवदुदित यास्तत्सुतो दानशीलः ।
जैनेन्द्राराधनेषु प्रमुदितहृदयः सेवकः सद्गुरुणां
लोणाख्या सत्यशीलाऽजनिविमलमतिर्जैनपालस्य भार्या ॥ ५ ॥

जाताः षट् तनयास्तयोः सुकृतिनोः श्री हंसराजोऽभवत् ।
तेषामाद्यतमस्ततस्तदनुजः सैराजनामाऽजनि ।
रैराजो भवराजकः समजनि प्रख्यातकीर्तिमहा—
साधुश्री कुशराजकस्तदनुजः च श्री क्षेमराजो लघुः ॥ ६ ॥

जातः श्रीकुशराज एव सकलक्ष्मापाल चूडामणेः ।
श्रीमत्तोमरवीरमस्य विदितो विश्वासपात्रं महान् ।
मंत्री मंत्र विचक्षणः क्षणमयः क्षीणारिपक्षः क्षणात्
क्षोणीमीक्षणरक्षणक्षमतिः जैनेन्द्रपूजारतः ॥ ७ ॥

स्वर्गस्पृद्धिसमृद्धिकोतिविमलश्चैत्यालयः कारितो ।
लोकानां हृदयंगमो बहुधनैश्चन्द्रप्रभस्य प्रभोः ।
येनैतत्समकालमेवरुचिरं भव्यं च काव्यं तथा
साधु श्रीकुशराजकेन सुधिया कीर्तेश्चिरस्थापकं ॥ ८ ॥

तिस्रस्तस्यैव भार्या गुणचरितयुषंस्तासु रल्होभिधाना ।
पत्नी धन्या चरित्रा व्रतनियमयुता शीलशौचेन युक्ता ।
दात्री देवार्चनाढ्या गृहकृतिकुशला तत्सुतः कामरूपो ।
दाता कल्याणसिंहो जिनगुरुचरणाराधने तत्परोऽभूत ॥ ९ ॥

लक्षणश्रीः द्वितीयाभूत्सुशीला च पतिव्रता ।
कौशीरा च तुतीयेयमभूद्गुणवती सती ॥ १० ॥

शान्तिर्द्देशस्य भूयात्तदनु नरपतेः सुप्रजानां जनानां ।
वक्तृणां वाचकानां ... . ,.. ॥ ११ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यावत्कूर्मस्य पृष्ठे भुजगपतिरयं तत्र तिष्ठेद्गरिष्ठे
यावत्तत्रापि चंचद्विकटफणिफणामण्डले क्षोणिरेषा ।
यावत्क्षोणौ समस्त त्रिदश पतिवृत श्चारुचामीकराद्रि ।
स्तावद्भव्यं विशुद्धं जगति विजयतां काव्यमेतच्चिराय ॥ १२ ॥

कायस्थ पद्मनाभेन बुधपादाम्बजरेणुनां ।
कृतिरेषा विजयतां स्थेयांदाचन्द्रतारकं ॥ १३ ॥

इति समाप्तम् ॥

८०७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–७७ । आकार–११"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११७४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक बुदी ५, वृहस्पतिवार, सं० १६२३ ।

८०८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–६४ । आकार–१०"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११७५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– सं० १८०६ ।

८०९. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–७६ । आकार–१०½"×५½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२३८६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

८१०. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या–६४ । आकार–१०"×४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२४२८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–बैशाख शुक्ला १०, वृहस्पतिवार, सं० १६८६ ।

८११. यशोधरचरित्र—भट्टारक सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या–४६ । आकार–१०½"×४¾" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–११३५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ शुक्ला ७, सं० १७४० ।

८१२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–३४ । आकार–११"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१८६३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १३, बृहस्पतिवार, सं० १६४४ ।

नोट—लिपिकार की प्रशस्ति दी हुई है ।

८१३. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–४६ । आकार–११½"×५" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२६८७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

८१४. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–४४ । आकार- १०¾"×४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२६६३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ३, सं० १५४७ ।

८१५. यशोधर चरित्र—पूर्णदेव । देशी कागज । पत्र संख्या–१६ । आकार–१२"×५½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१३१७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–सं० १७६० ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८१६. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–२०। आकार–११"×४"। दशा–जीर्ण क्षीण पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२६२१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १, बुधवार, सं० १६०८।

८१७. यशोधरचरित्र—वासवसेन। देशी कागज़। पत्र संख्या–५८। आकार–११"×५"। दशा–जीर्णक्षीण।। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२५२२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १३, सं० १६१६।

विशेष—लिपिकार की प्रशस्ति का अन्तिम पत्र नहीं है।

८१८. यशोधरचरित्र (पीठिका बंध)—×। देशी कागज। पत्र संख्या–२२। आकार–११"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२५६२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

८१९. यशोधर चरित्र टिप्पण—प्रभाचन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या–१८। आकार–११"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२३५५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ३, शनिवार, सं० १६३५।

विशेष—हुमायु के राज्यकाल में लिपि की गई है।

८२०. रत्न चूड़रास—यशःकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२४७३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–मंगसिर कृष्णा २, सं० १६४०।

८२१. वर्द्धमान काव्य—पं० नरसेन। देशी कागज। पत्र संख्या–१४। आकार–११×"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१३६७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

नोट—पत्र परस्पर में चिपके हुए होने से अक्षर अस्पष्ट हो गये हैं।

८२२. वर्द्धमान चरित्र—कवि असग। देशी कागज। पत्र संख्या–८३। आकार–११"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१२८६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

८२३. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–६०। आकार–१४$\frac{1}{2}$"×६$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२६३८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

८२४. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–७६। आकार–११"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५०३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ५, सं०१६६०।

८२५ वर्द्धमान चरित्र–पुष्पदन्त। देशी कागज। पत्र संख्या–६७। आकार–११$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१०६४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

८२६. वरांग चरित्र—पं० तेजपाल। देशी कागज। पत्र संख्या–५५। आकार—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११½″×४½″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१२१३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला ५, शुक्रवार, सं० १६२१।

८२७. वरांग चरित्र – भट्टारक वर्द्धमान। देशी कागज। पत्र संख्या–३९। आकार–१२½″×५″। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७८३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

८२८. विक्रमसेन चौपई—मानसागर। देशी कागज। पत्र संख्या–५३। आकार—८¾″×५¾″। दशा–जीर्णक्षीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२४५७। रचनाकाल–सं० १७२४। लिपिकाल–×।

८२९. शान्तिनाथ चरित्र—भट्टारक सकलकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–१०५। आकार–१२¾″×६″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१०८३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–चैत्र शुक्ला १४, मंगलवार, सं० १८३३।

८३०. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१७४। आकार–१२¾″×६″। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२३८२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा १३, रविवार, सं० १८३५।

८३१. शालिभद्र महामुनि चरित्र—जिनसिंह सूरि (जिनराज)। देशी कागज। पत्र संख्या–२०। आकार–१०″×४″। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२७३८। रचनाकाल–अश्विन कृष्णा ६, सं० १६७८। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा १, सं० १६८९।

८३२. सन्मतिजिन चरित्र—रयघू। देशी कागज। पत्र संख्या– १४५। आकार—११¼″×४¾″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या—१०५४। रचनाकाल—×। लिपिकाल–माघ शुक्ला ९, सोमवार, सं० १६०६।

८३३. सम्भवनाथचरित्र—पं० तेजपाल। देशी कागज। पत्र संख्या–७९। आकार–११″×५″। दशा–जीर्ण।। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१३५३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ४, सं० १६४८।

८३४. सुकुमाल महामुनि चौपई—शान्ति हर्ष। देशी कागज। पत्र संख्या–११। आकार–९¾″×४½″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१४२१। रचनाकाल–आषाढ शुक्ला ८, सं० १७४१। लिपिकाल–×।

८३५. सुकुमाल स्वामी चरित्र—भट्टारक सकलकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–३४। आकार–१०″×४½″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८३८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–आषाढ कृष्णा ३, सोमवार, सं० १८२४।

८३६. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–४१। आकार–१०¾″×४¾″। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१३७३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा १, सं० १६८१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८३७. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–३६ । आकार–१०$\frac{1}{4}$"×६$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२३७९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–आषाढ़ शुक्ला ७, शनिवार, सं० १८२४ ।

नोट—श्लोक संख्या ११०० है ।

८३८. सुदर्शनचरित्र—भ० सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या–४ से २३ । आकार–११"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२८५९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–द्वितीय श्रावण कृष्णा ५, सं० १५९२ ।

८३९. सुदर्शन चरित्र–मुमुक्षु श्री विद्यानन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या–४२ । आकार–११"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८६६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा, १४, शुक्रवार, सं० १८२५ ।

८४०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–५७ । आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१०८९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–बैशाख शुक्ला ५, सं० १६८२ ।

८४१. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–७९ । आकार–९$\frac{3}{4}$"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२३९० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ८, शुक्रवार, सं० १७०२ ।

८४२. सुदर्शनचरित्र—ब्रह्म नेमिदत्त । देशी कागज । पत्र संख्या–७१ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१२४७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ कृष्णा १२, रविवार, सं० १६६१ ।

८४३. सुदर्शनचरित्र—मुनि नयनंदि । देशी कागज । पत्र संख्या–८६ । आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" ।दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१०५२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–चैत्र शुक्ला २, बुधवार, सं० १५७० ।

८४४. सुरपति कुमार चतुष्पदी—पं० मानसागर गणि । देशी कागज । पत्र संख्या–१४ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५९० । रचनाकाल–सं० १७२९ । लिपिकाल–सं० १७२९ ।

८४५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१६ । आकार–१०"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–११०२ । रचनाकाल–सं० १७२९ । लिपिकाल–माघ शुक्ला १५, सं० १८९९ ।

८४६ श्रीपाल चरित्र—भट्टारक सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या–१९ । आकार–१२"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५२० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ कृष्णा २, सं० १८२७ ।

८४७. श्रीपालचरित्र—पं० नरसेन । देशी कागज । पत्र संख्या– ४१ । आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१३४६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८४८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–४७ । आकार–१०¾"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२५६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

८४९. श्रीपालचरित्र-पं० रयघू । देशी कागज । पत्र संख्या–१११ । आकार–१२"×४" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–११६८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन बुदी १०, सं० १५९५ ।

नोट–पोरवाल वंशीय श्री हरसिंह के पुत्र पं० रयघु ग्वालियर निवासी १५वीं शताब्दी के विद्वान हैं। बादशाह हुमायु के राज्य में लिपि की गई है।

८५०. श्रीपाल चरित्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या–४९ । आकार—११½"×५½" । दशा–सुन्दर । । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५५६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–चैत्र शुक्ला ११, बृहस्पतिवार, सं० १९३६ ।

विशेष—भ० सकलकीर्ति के संस्कृत चरित्र के आधार पर हिन्दी लिखी गई है। हिन्दीकार ने अपना नाम नहीं दिया है।

८५१. श्रीपालरास—यशः विजयगणि । देशी कागज । पत्र संख्या–२६ । आकार–१०½"×४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१००४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–भादवा बुदी ११, सं० १९३२ ।

८५२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–२६ । आकार–१०½"×४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१०९२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–बैशाख कृष्णा ११, सं० १९३२ ।

८५३. श्रेणिकचरित्र—शुभचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–९४ । आकार–१०¾"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७९४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–बैशाख शुक्ला १५, बुधवार, सं० १८५४ ।

आदिभाग—

श्री वर्द्धमानमानंदं नौमि नानागुणाकरं ।
विशुद्ध ध्यान दीप्तार्चिचहुर्तकर्म्मं समुच्चयं ॥ १ ॥

अन्तभाग—

जयतु जितविपक्षो मूलसंघः सुपक्षो,
हरतु तिमिरभारं भारती गच्छवारः ।
नयतु सुगतमार्गं शासनं शुद्धवर्गं
जयतु शुभचन्द्रः कुन्दकुन्दो मुनीन्द्रः ॥ १७ ।
तदन्वये श्रीमुनिपद्मनन्दी विभाति भव्याकर–पद्मनन्दि ।
शोभाधिशाली वरपुष्पदन्तः सुकांतिसंभिन्न सुपुष्पदन्तः ॥ १८ ॥
पुराण काव्यार्थं विदांवरत्वं विकाशयन्मुक्तिविदांवरत्वं ।
विभातु वीरः सकलाद्यकीर्तिः कृतापकेनौ सकलाद्यकीर्तिः ॥ १९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूवनकीर्तिः यतिः जयताद्यमी भुवनपूरितकीर्तिचयः सदा ।
भूवनविम्बजिनागमकारणो भव नवाम्बुदवातभरः परः ॥ २० ॥

तत्पट्टोदयपर्वते रविरभूद्भ व्याम्बुजं भासयन् ।
सन्नेत्रास्त्रहरं तमो विघटयन्नानाकरैः भांसुरः ।
भव्यानां सुगतश्च विग्रहमतः श्रीज्ञानभूषः सदा
चित्रं चंद्रकसंगतः शुभकरः श्रीवर्द्धमानोदयः ॥ २१ ॥

जगति विजयकीर्तिः पुण्यमूर्तिः सुकीर्तिः जयतु च यतिराजो भूमिपैः स्पृष्टपादः ।
नय नलिन हिमांशुर्ज्ञानभूषस्य पट्टे विविध–परविवादिक्ष्माधरे वज्रपातः ॥ २२ ॥

तच्छिष्येण शुभेन्दुना शुभमनः श्रीज्ञानभावेन वै पूतं पुण्यपुराण मानुषभवंसंसार विध्वंसकः ।
नो कीर्त्या व्यरचि प्रमोहवशतो जैने मते केवलं नाहंकारवशात्कवित्तमदतः श्रीपद्मनाभेहितं ॥ २३ ॥

इदं चरित्रं पठतः शिवं वै श्रोतुश्च पद्मेश्वरवत्पवित्रं ।
भविष्णु संसारसुखं नृदेवं संभुज्य सम्यक्त्व फलप्रदीपं ॥ २४ ॥

चन्द्राऽर्कं हेमगिरीसागर भूविमानं गंगानदीगमनसिद्धशिलाश्च लोके ।
तिष्ठंति यावदभितो वरमर्त्यशेवास्तिष्ठंतु कोविदमनोम्बुजमध्यभूताः ॥२५॥

इति श्रीश्रेणिकभवानुबद्ध–भविष्यत्पद्मनाभपुराणे पंचकल्याणवर्णनं नाम पंचदशः पर्वः ॥ १५ ॥

८५४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१२४ । आकार–११"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१०८१ रचनाकाल–× । लिपिकाल—× ।

८५५. श्रेणिकचरित्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या–२२ । आकार–१२"×६$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५०४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

नोट—केवल चार सर्ग ही हैं ।

८५६. श्रेणिक महाराज चरित्र–अभयकुमार । देशी कागज । पत्र संख्या–१७ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रथ संख्या–१४६२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला १५, शुक्रवार, सं० १६६५ ।

८५७. हनुमच्चरित्र ब्रह्मजित । देशी कागज । पत्र संख्या–७८ । आकार–११"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७६३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–पौष शुक्ला ८, रविवार, सं० १६७५ ।

८५८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–७४ । आकार–११"×५" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१०८७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–आश्विन कृष्णा ७, बुधवार, सं० १६४४ ।

८५९. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–७४ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×५" ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–११०७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ११, बृहस्पतिवार, सं० १६४६।

८६०. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–८७। आकार–११½"×५"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१२५६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ५, सं० १५८३।

८६१. प्रति संख्या ५। देशी–कागज। पत्र संख्या–८१। आकार–११"×४¾"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१२५२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १६६१।

८६२. होलरेणुका चरित्र—पं० जिनदास। देशी कागज। पत्र संख्या–४६। आकार–१०½"×५"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१५७३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

८६३. हंसराज वैद्यराज चौपई– जिनोदय सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–२६। आकार–१०½"×४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२८०७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ६, शुक्रवार, सं० १७६६।

८६४. त्रिषष्टि पर्वाणिस्य विरावली चरित्र—हेमचन्द्राचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या–१५४। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१०३४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

नोट—ग्रन्थाग्रं० सं० ३५०० है। गुणसुन्दर के पढ़ने के लिए लिपि की गई, ग्रन्थ १३ सर्गों में विभक्त है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय—सचित्र ग्रन्थ

८६५. अढाई द्वीप चित्र—×। वस्त्र पर। पत्र संख्या—१। आकार—३३½"×३३½"। दशा—अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२२२०। रचनाकाल—×।

विशेष—अढाई द्वीप का रंगीन चित्र कपड़े पर बना हुआ है।

८६६. अढाई द्वीप चित्र—×। वस्त्र पर। पत्र संख्या—१। आकार—४२½×४२½। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत और हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—अढाई द्वीप चित्र। ग्रन्थ संख्या—२२१६। रचनाकाल—चैत्र शुक्ला ५, बृहस्पतिवार, सं० १८०१ को श्री गुणचन्द्र मुनि ने पद्मपुरा में लिखा।

विशेष—वस्त्र में छिद्र हो जाने पर भी अक्षरों को कोई क्षति नहीं हुई है। हाथ से किया हुआ रंगीन चित्र वहुत सुन्दर है।

८६७. अढाई द्वीप चित्र—×। वस्त्र पर। पत्र संख्या—१। आकार—३७"×३७"। दशा—जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२२०८। रचनाकाल—×।

८६८. अरहनाथ जी चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—३¼"×२¼। दशा—प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२२०१। रचनाकाल—×।

विशेष—चित्र श्वेताम्वराम्नायानुसार बना हुआ है।

८६९. कुन्थनाथ जी का चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—३¾"×"३। दशा—अच्छी। पूर्ण। विषय—कुन्थनाथ तीर्थंकर चित्र। ग्रन्थ संख्या—२१९७। रचनाकाल—×।

८७०. गणेश चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—८"×६"। दशा—सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२१६७। रचनाकाल—×।

विशेष—गणेश का अतीव सुन्दर रंगीन चित्र कागज पर बना हुआ है, जिसमें एक स्त्री गणेश जी के समक्ष खड़ी हुई प्रार्थना कर रही है।

८७१. गणेश चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—८¾"×४¾"। दशा—सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२१८९। रचनाकाल—×।

८७२. गणेश व सरस्वती चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—८"×६"। दशा—सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२१६८। रचनाकाल—×।

विशेष—गणेश के चित्र के समक्ष सरस्वती हंस के वाहन सहित है। यह चित्र कागज पर चित्राङ्कित है। सिंहासन के नीचे चुहा भी चित्राङ्कित किया गया है।

८७३. गायक का चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—६¾"×३½"। दशा—सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२१८५। रचनाकाल×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेष—बहुत ही पतले कागज पर हाथ का बना हुआ रंगीन चित्र है।

८७४. चतुर्विंशति तीर्थंकर चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार—५½"×५¼"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२१७६। रचनाकाल—×।

विशेष—यह चित्र श्वेताम्बर आम्नायानुसार बना हुआ है।

८७५. चतुर्विंशति तीर्थंकर चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—२"×१¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२२०२। रचनाकाल—×।

८७६. चन्द्रप्रभ चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–६½"×७¼"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२२०३। रचनाकाल–×।

विशेष—चित्र श्वेताम्बर आम्नायानुसार है।

८७७. चन्द्रप्रभ चित्र— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–४¼"×४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१९४। रचनाकाल– ×।

८७८. चन्द्रप्रभ चित्र। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–६"×४"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१८२। रचनाकाल–×।

विशेष—श्वेताम्बर आम्नायानुसार हाथ का बना हुआ रंगीन चित्र है।

८७९. जम्बूद्वीप चित्र–×। वस्त्र पर। पत्र संख्या–१। आकार–२५½"×२५½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२११३। रचनाकाल—×।

विशेष—जम्बूद्वीप का कपड़े पर रंगीन चित्र है, चित्र में सुनहरी काम अतीव सुन्दर मनोहारी लगता है।

८८०. जम्बूद्वीप चित्र—×। वस्त्र पर। पत्र संख्या–१। आकार–३१½"×२७"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२०५। रचनाकाल–×।

८८१. तीन लोक का चित्र—×। वस्त्र पर। पत्र संख्या–१। आकार–३१"×१९½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२२१२। रचनाकाल ×।

८८२. तीन लोक का चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०½"×५"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२८१४। रचनाकाल–×।

८८३. दुर्गादेवी चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०¼"×४¾"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१७७। रचनाकाल– ×।

विशेष—सिंह पर बैठी हुई दुर्गादेवी के आगे वीर भेरी बजा रहा है तथा पिछे की तरफ़ हाथ में छत्र लिये हुए दूसरा वीर खड़ा है। पतले कागज पर हाथ का बना हुआ अतीव सुन्दर चित्र है।

८८४. दुर्गादेवी चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार–६½"×४"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१८४। रचनाकाल–×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेष—सिंह पर बैठी हुई देवी के समक्ष, योद्धा देवी को रोकते हुए रंगीन चित्र द्वारा बताये गये हैं।

८८५. दुर्गा का चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१० १/४″×५ ३/४″। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१९२। रचनाकाल–×।

८८६. द्वादश भूजा हनुमत् चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१३″×१३″। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२२३५। रचनाकाल–×।

८८७. नरकों के पाथड़ों का चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या-१। आकार–२६ १/२″×२३ १/२″। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२२१५। रचनाकाल–×।

विशेष—कपड़े पर सातों नरकों के पाथड़ों का सुन्दर चित्रण किया हुआ है।

८८८. नेमिनाथ चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–५ १/२″×५ १/२″। दशा–सुन्दर। ग्रन्थ संख्या–२१७५। रचनाकाल–×।

८८९. नेमिनाथ चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–६ ३/४″×४″। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१८१। रचनाकाल–×।

विशेष—श्वेताम्बर आम्नायानुसार कागज पर हाथ का बना हुआ नेमिनाथ का सुन्दर चित्र है।

८९०. नेमिनाथ चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–३ १/२″×२ १/२″। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१९९। रचनाकाल–×।

विशेष—श्वेताम्बर आम्नायानुसार बना हुआ चित्र है।

८९१. पद्मप्रभू चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–५ ३/४″×४ १/४″। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१८०। रचनाकाल–×।

विशेष—श्वेताम्बर मतानुसार बना हुआ कागज पर रंगीन चित्र है।

८९२. पद्मावती देवी व पार्श्वनाथ का चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१० ३/४″×५ १/२″। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१७३। रचनाकाल–×।

विशेष—कागज पर हाथ का बना हुआ सुन्दर रंगीन चित्र है।

८९३. पार्श्वनाथ चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१२″×५ ३/४″। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१९०। रचनाकाल–×।

विशेष—चित्र में पार्श्वनाथ स्वामी के दाहिनी ओर श्री ऋषभनाथ और सम्भवनाथ का चित्र है। बाई ओर श्री नेमिनाथ और महावीर स्वामी का चित्र है।

८९४. पार्श्वनाथ चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–४ १/४″×२ ३/४″। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१९६। रचनाकाल–×।

विशेष—श्वेताम्बर मतानुसार चित्र है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८९५. पार्श्वनाथ का चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–६"×४"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१८३। रचनाकाल–×।

विशेष—कागज पर हाथ का बना हुआ मनोहारी चित्र है।

८९६. पार्श्वनाथ का चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–५$\frac{3}{4}$"×३$\frac{1}{4}$"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१८६। रचनाकाल–×।

८९७. पार्श्वनाथ व पद्मावती का चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–६$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१७४। रचनाकाल–×।

८९८ पार्श्वनाथ व पद्मावती देवी का चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–८$\frac{1}{2}$"×५"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१७२। रचनाकाल–×।

८९९. पुष्पदन्त चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–४$\frac{1}{4}$"×४"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१९५। रचनाकाल–×।

विशेष—श्वेताम्बर मतानुसार रंगीन चित्र है।

९००. पुष्पदन्त चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–५$\frac{1}{2}$"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१७९। रचनाकाल–×।

९०१. भरत क्षेत्र विस्तार चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–११$\frac{1}{2}$"×५"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२८२०। रचनाकाल–×।

९०२. भैरव चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–८"×६"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१७१। रचनाकाल–×।

विशेष—भैरव जी का चित्र, विशाल नरमुण्डी व खाण्डा हाथ में लिए हुये है।

९०३. महावीरस्वामी चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–५"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१७८। रचनाकाल–×।

विशेष—श्वेताम्बर आम्नायानुसार कागज पर रंगीन चित्र अतीव सुन्दर बना हुआ है।

९०४. महावीरस्वामी चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–६$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{2}$"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१९१। रचनाकाल–×।

विशेष—श्वेताम्बर आम्नाय के अनुसार चित्र है।

९०५. बृहद् कलिकुण्ड चित्र—×। वस्त्र पर। पत्र संख्या–१। आकार–२३$\frac{3}{4}$"×२३$\frac{1}{4}$"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२०९। रचनाकाल–फाल्गुन शुक्ला ५, सं० १६०७।

विशेष—कपड़े पर बने हुए इस चित्र में ९ कोठे हैं।

९०६. वासुपूज्य चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–३$\frac{1}{4}$"×२$\frac{1}{2}$"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२२००। रचनाकाल–×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेष—चित्र श्वेताम्बर आम्नायानुसार है।

९०७. शीतलनाथ चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–३½"×२½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१९८। रचनाकाल–×।

विशेष—चित्र श्वेताम्बर मतानुसार है।

९०८. श्रीकृष्ण का चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–६"×४"। दशा–प्राचीन। अपूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१९३। रचनाकाल–×।

विशेष—केवल खाका बना हुआ है।

९०९. श्रीकृष्ण चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–६½"×३¾"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२१८७। रचनाकाल–×।

विशेष—पतले कागज पर हाथ का बना हुआ रंगीन चित्र है, साथ ही नीचे श्रीकृष्ण की संस्कृत में स्तुति भी दी गई है।

९१०. सरस्वती चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–४¾"×३¾"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१८८। रचनाकाल–×।

विशेष—चित्र में हंस पर एक बैठी हुई देवी का चित्र है और समक्ष में एक स्त्री प्रार्थना करती हुई चित्रित है।

९११. सामुद्रिक विचार चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–२१½" × ११¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। विषय–ज्योतिष। ग्रन्थ संख्या–२२२४। रचनाकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ३, सं० १८७०।

विशेष—स्त्री और पुरुष के हाथ व पैर का चित्र अंकित है। १८७० ज्येष्ठ कृष्णा ३, इस चित्र पर लिखा हुआ है। "आचर्यश्री रामकीर्ति छात्र रामचन्द्रस्यमिदं पत्रम्," हाथ व पैर के चित्रों में चित्राङ्कित है।

९१२. हनुमान चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–८"×६"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१६६। रचनाकाल–×।

विशेष—हनुमान जी का रंगीन चित्र जिसके एक हाथ में गदा तथा दूसरे हाथ में नर मुण्डि है। चित्र हाथ का बनाया हुआ है और अतीव सुन्दर लगता है।

९१३. हनुमान चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–८"×६"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१९६। रचनाकाल– ×।

विशेष—कागज के सुन्दर बने हुए चित्र में हनुमान जी को पहाड़ ले जाते हुए चित्रित किया गया है।

९१४. हनुमान चित्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–८"×६"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१७०। रचनाकाल– ×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेष—कागज पर हाथ से बने हुए चित्र में हनुमानजी हाथ में गदा तथा कुत्ते की मुण्डि लिए हुए हैं।

९१५. ज्ञानचौपड़—×। वस्त्र पर। पत्र संख्या-१। आकार-३५"×२६½"। दशा-सुन्दर। पूर्ण। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-२२२९। रचनाकाल-×।

९१६. ज्ञानचौपड़—×। वस्त्र पर। पत्र संख्या-१। आकार-२२" × २१¼"। दशा-सुन्दर। पूर्ण। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-२२२८। रचनाकाल-सं० १८९२।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय—छन्द शास्त्र एवं अलंकार

९१७ खूदीप भाषा—कुंवर भूवानीदास। देशी कागज । पत्र संख्या—९। आकार—९½"×४¼"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—छन्द शास्त्र। ग्रन्थ संख्या— २०५८। रचनाकाल—भाद्रपद शुक्ला २, बृहस्पतिवार, सं० १७७२। लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा ३, सं० १८१८।

९१८. छन्द रत्नावली—हरिराम । देशी कागज । पत्र संख्या—१४। आकार—१०¼"×५"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—छन्द शास्त्र। ग्रन्थ संख्या—२५४०। रचनाकाल—×। लिपिकाल—वैशाख शुक्ला ६, सं० १८३४।

९१९. छन्द शतक— हर्षकीर्ति सूरि। देशी कागज । पत्र संख्या—१७। आकार—९½"×४"। दशा—जीर्ण। पूर्ण। भाषा—अपभ्रंश। लिपि—नागरी। विषय—छन्द शास्त्र। ग्रन्थ संख्या—१४६१। रचनाकाल— ×। लिपिकाल— ×।

९२०. छन्द शास्त्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या—३। आकार—८½"×४½"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—छन्द शास्त्र। ग्रन्थ संख्या—१४८५। रचनाकाल— ×। लिपिकाल—×।

९२१. छन्दसार—नारायण दास। देशी कागज। पत्र संख्या—८। आकार—१०¼"×५"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—छन्द शास्त्र। ग्रन्थ संख्या—१६५५। रचनाकाल—भाद्रपद कृष्णा १४, बृहस्पतिवार, सं० १८२९। लिपिकाल—×।

९२२. छन्दोमजंरी —गंगादास। देशी कागज। पत्र संख्या—१४। आकार—१०½"×४"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—प्राकृत और संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—छन्द शास्त्र। ग्रन्थ संख्या—२५८१। रचनाकाल—×। लिपिकाल—चैत्र कृष्णा ११, सं० १८४९।

९२३. छन्दोवंतस—×। देशी कागज। पत्र संख्या—१२। आकार—१०¼"×४½"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—छन्द शास्त्र। ग्रन्थ संख्या—२२५४। रचनाकाल—×। लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा १०, बृहस्पतिवार, सं० १७८४।

९२४. पार्श्वनाथजी री देशान्तरी छन्द—×। देशी कागज। पत्र संख्या—५। आकार—९½"×४¼"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—छन्द शास्त्र। ग्रन्थ संख्या—२१५३। रचनाकाल— ×। लिपिकाल—सं० १८६८।

विशेष—कवि ने अपना नाम न लिख कर कविराज लिखा है। आगे कवि ने लिखा है कि मैंने कालिदास कवि जैसे छन्दों की रचना की है।

९२५. पिंगल छन्दशास्त्र—पुहुप सहाय (पुष्प सहाय)। देशी कागज। पत्र संख्या—९। आकार—१०¼"×४¼"। दशा—जीर्ण। पूर्ण। भाषा—अपभ्रंश। लिपि—नागरी। विषय—छन्द शास्त्र। ग्रन्थ संख्या—१७११। रचनाकाल—×। लिपिकाल—सं० १७४६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६२६. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१४। आकार–१०"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२३१६। रचनाकला– ×। लिपिकाल–×। सं० १६३६।

६२७. पिङ्गल रूप दीपक—जयकिशन। देशी कागज। पत्र संख्या–१२। आकार–८$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–छन्द शास्त्र। ग्रन्थ संख्या–२४६३। रचनाकाल–फाल्गुन शुक्ला २, सं० १७७२। लिपिकाल–सं० १८८२।

६२८. प्रस्तार वर्णन—हर्षकीर्ति सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–छन्द शास्त्र। ग्रन्थ संख्या–२४२७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६२९. भाषा भूषण—महाराजा जसवन्त सिंह। देशी कागज। पत्र संख्या–१५। आकार–१०"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। विषय–अलंकार शास्त्र। ग्रन्थ संख्या–११०४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६३०. वृत रत्नाकर—केदारनाथ भट्ट। देशी कागज। पत्र संख्या–९। आकार–११"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–छन्द शास्त्र। ग्रन्थ संख्या–१६६४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १, मंगलवार, सं० १६९०।

६३१. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–११$\frac{3}{4}$" × ४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१९९१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १५, बृहस्पतिवार, सं० १५२६।

६३२. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–११$\frac{3}{4}$"×५$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१३८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६३३. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२७६३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १३, सं० १८११।

६३४. प्रति संख्या ५। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–१०" × ४$\frac{1}{4}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२३८७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६३५. वृत रत्नाकर सटीक—पं० केदार का पुत्र राम। देशी कागज। पत्र संख्या–७३। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×५"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–छन्द शास्त्र। ग्रन्थ संख्या–२६४६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६३६. वृतरत्नाकर सटीक—केदारनाथ भट्ट। टीकाकार—समयसुन्दर उपाध्याय। देशी कागज। पत्र संख्या–२७। आकार–१२"×५$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लिपि–नागरी। विषय–छन्द शास्त्र। ग्रन्थ संख्या–१२२८। रचनाकाल–×। टीका का काल–सं० १६९१। लिपिकाल–भाद्रपद कृष्णा १३, शुक्रवार, सं० १७९२।

९३७. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–२४। आकार–१०½"×५½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१०९४। रचनाकाल–×। टीकाकाल–सं० १६९१। लिपिकाल–×।

९३८. वृतरत्नाकर सटीक–केदारनाथ भट्ट। टीका–कवि सुल्हण। देशी कागज। पत्र संख्या–३१। आकार–१०¼"×४¼"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७२४। रचनाकाल–×। टीका काल–×। लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ३, सं० १८७५।

९३९. वाग्भट्टालंकार–वाग्भट्ट। देशी कागज। पत्र संख्या–२६। आकार–१०"×४¾"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–अलंकार शास्त्र। ग्रन्थ संख्या–१४९४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

९४०. प्रति संख्या २।। देशी कागज। पत्र संख्या–१८। आकार–½"×४१०¾"। दशा–जीर्ण क्षीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१२९८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

९४१. विदग्ध मुखमण्डन–धर्मदास। देशी कागज। पत्र संख्या–११। आकार–११¾"×६"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–अलंकार शास्त्र। ग्रन्थ संख्या–१८२५। रचनाकाल–भाद्रपद शुक्ला २, सं० १८३९।

९४२. श्रुतबोध–कालिदास। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–१०"×४¾"। दशा–जीर्णक्षीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–छन्द शास्त्र। ग्रन्थ संख्या–१९४८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–पौष कृष्णा १४ सं० १९३६।

९४३. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–११"×४½"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२६२७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

९४४. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–१०¼"×५"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५४२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

९४५. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१०"×४¼"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५२४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–प्रथम श्रावण कृष्णा ६, रविवार, सं० १७१४।

९४६. प्रति संख्या ५। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१०¾"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२७७०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–पौष कृष्णा ९, सं० १८४२।

९४७. श्रुतबोध सटीक–गुजर। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–१०½×

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४३/४ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६३४ । रचना-काल–× । लिपिकाल–× ।

९४८. श्रुतबोध सटीक–× । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०१/४"×४१/४" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२१६० । रचना काल–× । लिपिकाल–पौष कृष्णा ५, सं० १७७३ ।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय—ज्योतिष

९४९. अध्यात्म तरंगिणी—सोमदेव शर्मा। देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार–११"×४¾"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–ज्योतिष। ग्रन्थ संख्या–१७५१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा १४, बृहस्पतिवार, सं० १८०७।

९५०. अरिष्टफल–×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–११"×४¾"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–ज्योतिष। ग्रन्थ संख्या–१४७५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

९५१. अवयड़ केवली। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–१०¾"×४½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–ज्योतिष। ग्रन्थ संख्या–२८१५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

९५२. अंग फूरकण शास्त्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०¾"×४¾"। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–ज्योतिष। ग्रन्थ संख्या–१३२२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

९५३. आराधना कथा कोष—मुनि सिंहनन्दि। देशी कागज। पत्र संख्या–३४। आकार–११¾"×५½"। दशा–जीर्ण। अपूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–ज्योतिष। ग्रन्थ संख्या–२८४४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

९५४. कालज्ञान—महादेव। देशी कागज। पत्र संख्या–१०। आकार–११¾"×४½"। दशा–अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–ज्योतिष। ग्रन्थ संख्या–२१०२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ८, रविवार, सं० १७१९।

९५५. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–११। आकार–१०½"×४½"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२०७१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

९५६ कालज्ञान—लक्ष्मी वल्लभ गणि। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१०¾"×४½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–ज्योतिष। ग्रन्थ संख्या–१७९२। । रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

९५७. गणित नाममाला—हरिदत्त शर्मा। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–१०¾"×५"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–ज्योतिष। ग्रन्थ संख्या–१९६८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १७७९।

९५८. गर्भिण्यादि प्रश्न विचार—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०"×५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२८३९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९५९. गुरुचार—× । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२३९८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९६०. ग्रह दृष्टि वर्णन—× । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–११"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५४१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९६१. ग्रह दीपक—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२१११ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९६२. ग्रह शान्ति विधि (हवनपद्धति)—× । देशी कागज । पत्र संख्या–३२ । आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५९७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९६३. ग्रह शान्ति विधान—पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–१०"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–होम विधान । ग्रन्थ संख्या–१६९९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ८, सं० १९१९ ।

९६४. ग्रहायु प्रमाण—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–९$\frac{1}{2}$"×४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४५४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९६५. गौरख यन्त्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–११$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१९२१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९६६. चन्द्र सूर्य कालानल चक्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७२३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९६७. चमत्कार चिन्तामणि—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–९$\frac{1}{4}$"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१९४२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

९६८. चमत्कार चिन्तामणि–स्थानपाल द्विज । देशी कागज । पत्र संख्या–९ । आकार–१०"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१४९६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १, सं० १८५८ ।

९६९. चौघड़िया चक्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–९"×" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५९० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९७०. जन्म कुण्डली विचार—×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–११½"×४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१५५२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

९७१. जन्म पत्रिका—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०"×४¼"। दशा–अति जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१५००। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

९७२. जन्मपत्री पद्धति–हर्षकीर्ति द्वारा संकलित। देशी कागज। पत्र संख्या–३४। आकार–१०½"×४¼"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८२३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–चैत्र शुक्ला १३, शनिवार, सं० १७७२।

९७३. जन्मफल विचार—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–७½"×४¼"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१४२९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

९७४. जन्म पद्धति—×। देशी कागज। पत्र संख्या–९३। आकार–९"×४¼"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८३७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

नोट—इसमें जन्म पत्रिका बनाने की विधि को सरल तरीके से समझाया गया है।

९७५. जातक—दण्डिराज दैवज्ञ—×। देशी कागज। पत्र संख्या–४६। आकार–१२"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–११८२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

९७६. जातक प्रदीप–सांवला। देशी कागज। पत्र संख्या–११। आकार–१०"×४¼"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–गुजराती मिश्रित हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१५९१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

९७७. ज्योतिष चक्र—हेम प्रभसूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–६७। आकार–१०½"×४¼"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२३५४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

९७८. ज्योतिष रत्नमाला—श्रीपति। देशी कागज। पत्र संख्या–२१। आकार–१०¼"×४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२४५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १०, बृहस्पतिवार, सं० १६८५।

विशेष—पत्र संख्या १ से १८ तक तो ज्योतिष रत्नमाला ग्रन्थ है और उसके पश्चात् २१ तक श्री भाष्करादित ग्रहागम कुतुहल श्री विदग्ध बुद्धि वल्लभ कृत ग्रन्थ लिखा गया है।

९७९. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–२८। आकार–१०½"×४½"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१२५०। रचनाकाल–सं० १५७३। लिपिकाल–×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६८०. ज्योतिषसार—नारचन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या–६०। आकार–९½"× ५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–११०१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–अधिक मास अश्विन शुक्ला १५, सोमवार, सं० १८७६।

६८१. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–२३। आकार–१०¼"×४¼"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१२०६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६८२. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–३१। आकार–१०½"×४¼"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१२८५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६८३. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–४४। आकार–१०"×३¾"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१२२०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ६, मंगलवार, सं० १७६३।

नोट—पत्रों के कोणे जीर्ण हो गये हैं।

६८४. प्रति संख्या ५। देशी कागज। पत्र संख्या–२५। आकार–६¾"×४¼"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१७८४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६८५. प्रति संख्या ६। देशी कागज। पत्र संख्या–२५। आकार–१०½"×४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१५५८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६८६. प्रति संख्या ७। देशी कागज। पत्र संख्या–२६। आकार–११"×४¾"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१२८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला ६, सं० १७८८।

६८७. ज्योतिषसार भाषा–कवि कृपाराम। देशी कागज। पत्र संख्या–२०। आकार–१०¾"×५¼"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२५८७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–मंगसिर कृष्णा १४, सं० १८८५।

६८८. ज्योतिषसार टिप्पण—पं० नारचन्द। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–८¾"×५½"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२८४७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

६८९. ज्योतिषसार (सटीक)—नारचन्द। टीकाकार—भुजोदित्य। देशी कागज। पत्र संख्या–१७। आकार–१०½"×४¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१४६०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा १, सं० १८३७।

६९०. टीपणैं री पाटी—×। देशी कागज। पत्र संख्या–९। आकार–६¾"×४¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२५४७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–माघ कृष्णा १२, सं० १९३३।

६९१. ताजिक नीलकण्ठी—पं० नीलकण्ठ। देशी कागज। पत्र संख्या–२२। आकार–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०१/४″×५१/२″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८०२। रचनाकाल–सं० १६६४। लिपिकाल–×।

९९२. ताजिक पद्मकोश—पद्मकोश। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–१०″×४१/२″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२०७३। रचनाकाल–सं० १६२३। लिपिकाल–माघ शुक्ला ७, सं० १८५३।

९९३. ताजिक रत्नकोश—×। देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार–१०१/२″×४१/४″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२४८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला २, सं० १८४४।

विशेष—इस ग्रन्थ का अपर नाम पद्मकोष भी है।

९९४. दशान्तर दशा फलाफल—×। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–११″×४१/४″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१५४०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १०, बृहस्पतिवार, सं० १८४१।

९९५. द्वादशराशी फल—×। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–११″×५१/२″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१९५२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

९९६. द्वि घटिक विचार—पं० शिवा। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–११″×५१/४″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८२७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–बैशाख शुक्ला १, बृहस्पतिवार, सं० १८९८।

९९७. दिनमान पत्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–९१/४″×४१/४″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१६३२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ५, सं० १८५१।

९९८. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०१/२″×५१/४″। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१९२०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

९९९. दिन रात्रि मान पत्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१११/४″×५३/४″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२०७८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१०००. दुघड़िया विचार–पं० शिवा। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–११″×५१/४″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८३३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१००१. नवग्रह फल—×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१२१/२″×५१/२″। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या—१९२२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१००२. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–९१/२″×४१/४″। दशा–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२७७३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१००३. नवग्रह स्तोत्र व दान—× । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०½"×४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५५५। रचनाकाल–× । लिपिकाल–×।

१००४. नारद संहिता—× । देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–८¾"×३½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२१५१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१००५. पंचाग विधि— ×। देशी कागज । पत्र संख्या–२। आकार–१२"×५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२५१। रचनाकाल–× । लिपिकाल–×।

१००६. पल्य विचार—वंसतराज। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–६½"×४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२५१५। रचनाकाल–×। लिपिकाल– ×।

१००७. प्रश्नसार—हयग्रीव। देशी कागज। पत्र संख्या–१२। आकार–११½"×६"। दशा–जीर्णक्षीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७००। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा ३, सं० १८८६।

१००८. प्रश्नसार संग्रह। देशी कागज। पत्र संख्या–१४ । आकार–१२"×५½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या–१९१९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ६, सं० १८६८।

१००९. प्रश्नावली जिनवल्लभ सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–१४ । आकार—११"×४¾"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१४३७। रचनाकाल–×। लिपिकाल– ×।

१०१० ब्रह्म प्रदीप—पं० काशीनाथ । देशी कागज । पत्र संख्या–५। आकार—१०"×४½"। दशा जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८६४। रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ कृष्णा ४, सं १६८२।

१०११. भाडली पुराण —भाडली ऋषि । देशी कागज । पत्र संख्या–५। आकार–१०"×४½"। दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८३६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–× ।

१०१२ प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार–१०"×४½"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२६१७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–× ।

१०१३. भुवन दीपक–पद्म प्रभसूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–१६। आकार–१०½"×५½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२४८१। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०१४. मास लग्न फल— × । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार—११"× ५$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६७६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०१५. मुहूर्त चिन्तामणि—दैवज्ञराम । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–११$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७३० । रचनाकाल – × । लिपिकाल–× ।

१०१६. मुहूर्त चिन्तामणि सटीक—दैवज्ञाम । टीकाकार–नारायण । देशी कागज । पत्र संख्या–६५ । आकार–१३$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६८३ । रचनाकाल–× । टीकाकाल–सं० १६२६ । लिपिकाल– सं० १६३१ ।

१०१७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१५७ । आकार–१०$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१८५२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

नोट—इस ग्रन्थ की टीका सं० १६५७ गीरीश नगर (अब वाराणसी) में होना बताया गया है ।

१०१८. मुहूर्त मुक्तावली—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–६$\frac{3}{4}$"× ४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५१८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ कृष्णा १, सं० १८५२ ।

१०१९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०"×५" । दशा–प्राचीन । अपूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१५५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०२०. मेघवर्षा—× । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–११"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४७६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०२१. मेदनीपुर का लग्न पत्र–× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–११$\frac{1}{4}$"× ५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२०७७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१०२२. योगसार ग्रहफल—× । देशी कागज । पत्र सख्या–६ । आकार–७"×६" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२४६८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ५, सोमवार, सं० १६०७ ।

१०२३. रमल शकुनावली । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२४४४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ कृष्णा १, सं० १८४४ ।

१०२४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१२$\frac{1}{2}$"×६$\frac{1}{4}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६३६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ६, सोमवार, सं० १८७० ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०२५. रमल शास्त्र—पं० चिन्तामणि । देशी कागज । पत्र संख्या–१४ । आकार–६½"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६३८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०२६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१५ । आकार–६½"×४¼" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५५६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०२७. राशि नक्षत्र फल—महादेव । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१०¼"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५४४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०२८. राशि फल—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार—८¾"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५४६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०२९. राशि लाभ व्यय चक्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार—६¼"×४¼" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५८४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०३०. राशि संक्रान्ति—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–९"×४¼" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६३३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–सं० १८४४ ।

१०३१. लग्न चक्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१२¾"×४¼" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२८१३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०३२. लग्नचन्द्रिका—काशीनाथ । देशी कागज । पत्र संख्या–६६ । आकार–९"×४¼" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२६०३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला २, बृहस्पतिवार, सं० १८४१ ।

१०३३. लग्न प्रमाण –× । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८३७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०३४. लग्नादि वर्णन—× । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०½"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५४२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०३५. लग्नाक्षत फल—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–७½"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७१६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०३६. लघु जातक (सटीक)—भट्टोत्पल । देशी कागज । पत्र संख्या–१६ । आकार–$६\frac{3}{4}$"×$४\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८२४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०३७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–२१ । आकार—१०"×$४\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१०७४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल— सं० १८३५ ।

१०३८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–$११\frac{1}{4}$"×$५\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१८२१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०३९. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार—९"×$४\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२२४६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ३, रविवार, सं० १८१६ ।

१०४०. लघु जातक भाषा—कृपाराम । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार–११"×$५\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५४६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

विशेष—ज्योतिष सार नामक संस्कृत ग्रन्थ का ही हिन्दी ग्रन्थ नाम लघु जातक रखकर कर्ता ने लिखा है ।

१०४१. लीलावती भाषा—लालचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या–१५ । आकार—१२"×$५\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५५७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–मंगसिर कृष्णा १, बृहस्पतिवार, सं० १७९८ ।

विशेष—भाषाकार ने उस समय के राजादि का पूर्ण वर्णन किया है । ग्रन्थ इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है ।

१०४२. लीलावती सटीक —भास्कराचार्य । टीकाकार–गंगाधर । देशी कागज । पत्र संख्या–९७ । आकार–$११\frac{1}{2}$"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५९७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०४३. वर्ष कुण्डली विचार–× । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–$१०\frac{1}{4}$"×$४\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२१४१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०४४. वर्ष फलाफल चक्र — × । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–$१०\frac{1}{2}$"×$४\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२८२८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ७, सं० १८४९ ।

१०४५. वृहद जातक (सटीक)—वराहमिहिराचार्य । टीकाकार–भट्टोत्पल । देशी कागज । पत्र संख्या–१७२ । आकार–$१३\frac{1}{4}$"×$४\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६८४ । रचनाकाल–× । टीकाकाल–चैत्र शुक्ला ५, बृहस्पतिवार, सं० १०२३ । लिपिकाल–सं० १९४२ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०४६. चिन्तामणि अंक—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१४। आकार–९"×४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२७८७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ४, मंगलवार सं० १७७३।

१०४७. विपरीत ग्रहण प्रकरण। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०¼"×४¼"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२१४५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१०४८. विवाह पटल—×। देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार–१०"×४¼"। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१५०१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १, सं० १७८१।

१०४९. विवाह पटल—श्रीराम मुनि। देशी कागज। पत्र संख्या–१५। आकार–११"×४"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१९११। रचनाकाल–अश्विन कृष्णा २, बुधवार, सं० १७२०। लिपिकाल–×।

१०५०. विवाह पटल (भाषा)–पं० रूपचन्द। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–१०½"×४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८९९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१०५१. विवाह पटल सार्थ—×। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–७¾"×४¼"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२४१५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–माघ कृष्णा ९, वृहस्पतिवार, सं० १८१७।

१०५२. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार–१०"×३¾"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२२५०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१०५३. शकुन रत्नावली–×। देशी कागज। पत्र संख्या-१३ से ३२। आकार–१०"×४¾"। दशा–अच्छी। अपूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२८५२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१०५४. शकुन शास्त्र—भगवद् भाषित। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार—१०"×४¼"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१६६८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला १०, सं० १८१७।

नोट—सुपारी रखकर देखने से विचारे हुए प्रश्न का फल ज्ञात होता है। इसके लिये इस ग्रन्थ का पत्र ७ और ८ देखें।

१०५५. शकुनावली—×। देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार–८½"×४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२८२३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१०५६. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–१०¼"×४¼"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२७८१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०५७. शीघ्र बोध (सटीक)—काशीनाथ भट्टाचार्य । टीका-श्रीतिलक । देशी कागज । पत्र संख्या-९१ । आकार-१०½"×६¾" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६८१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-वैशाख शुक्ला ५, सं० १९१७।

१०५८. शीघ्रबोध—काशीनाथ भट्टाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-१८ । आकार-११¾"×५½" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८१० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१०५९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३० । आकार-१०"×५½" । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११४२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१०६०. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार-९¾"×४½" । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३३१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-श्रावण कृष्णा ७, सं० १९०९ ।

१०६१. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-९"×४½" । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३३२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१०६२. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-१५ । आकार-१२¼"×५¾" । दशा-अच्छी पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१५२१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल- × ।

१०६३. शीघ्रबोध सार्थ— × । देशी कागज । पत्र संख्या-५३ । आकार-१०¾"× ५¼" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४८९ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-श्रावण शुक्ला ५, रविवार, सं० १८९० ।

१०६४. शुक्रोदय फल— × । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-१०¼"×४¼" । दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६७८ । रचनाकाल-×। लिपिकाल-× ।

१०६५. षट् पंचाशिका-भट्टोत्पल । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार-११¾"× ५" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८४५ । रचनाकाल- लिपिकाल-× ।

१०६६. प्रति संख्या २ । । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार-१०"×४¼" दशा-जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१९६७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१०६७. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार-१०¾"×५¼" । अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१८३० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-श्रावण कृष्णा ५, बृहस्पतिवार सं० १८८५ ।

१०६८. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । आकार-१०½"×४¼" । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१४३० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०६९. प्रति संख्या ५। देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०½"×४½"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२११०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–× ।

१०७०. सट् पंचासिका—वराहमिहिराचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार–१०"×४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२४७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा २, सं० १७९०।

१०७१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–४। आकार–१०½"×४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२६४२। रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०७२. षट् पंचासिक सटीक— ×। देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार—१०¾"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२१२६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–× ।

१०७३. षट् पंचासिका सटीक—वराहमिहिराचार्य । टीकाकार–भट्टोत्पल । देशी कागज। पत्र संख्या–२७। आकार–१०¾"×४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण । भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२३५३ । रचना टीकाकाल–सं० ९०० । लिपिकाल–चैत्र शुक्ला १५, बुधवार, सं० १८७७।

विशेष—टीका का नाम "प्रश्नसागरोत्तरणोत्पल" है।

१०७४. षोडषयोग— ×। देशी कागज । पत्र संख्या–२। आकार–१२"×५½"। दशा–प्राचीन। अपूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी।। ग्रन्थ संख्या–२८४५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१०७५. स्वरोदय—×। देशी कागज। पत्र संख्या–११। आकार–११½"×५¾"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८४७। रचनाकाल–×। लिपिकाल– ×।

१०७६. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१ । आकार–१२¾"×५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१७०२। रचनाकाल–× । लिपिकाल–सं० १८९९।

१०७७. प्रति संख्या ३। देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–११½"×४¾"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१६९८। रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१०७८. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–६ । आकार–१०"×४½"। दशा–प्राचीन । पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२८३३। रचनाकाल–× । लिपिकाल—×।

१०७९. स्वप्न विचार—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०"×४¾"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२७७६। रचनाकाल–×। लिपिकाल– ×।

विशेष—स्वप्न में देखी हुई वस्तुओं का फल का वर्णन वर्णित है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०८०. स्वप्नाध्याय–×। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–९$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२८१६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ७, गुरुवार, सं० १७८३।

१०८१. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१७$\frac{1}{4}$"×९$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२८३७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १७३५।

विशेष—ग्रन्थ की अंबावती नगर में लिपि की गई।

१०८२. साठी संवत्सरी—×। देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१९८८। रचनाकाल–×। लिपिकाल—×।

१०८३. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–११$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५३९। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

१०८४. सामुद्रिकशास्त्र–×। देशी कागज। पत्र संख्या–१६। आकार–१०"×४"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१४८६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१०८५. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२४५६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१०८६. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–१०"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२४७१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१०८७. सारणी—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१२। आकार–११$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२०६८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१०८८. सारणी—×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१०"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१९२७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१०८९. सारणी—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–९$\frac{1}{4}$"×४"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१४२८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१०९०. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१९२६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१०९१. सारणी—×। देशी कागज। पत्र संख्या १३७। आकार–११"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१००२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १, मंगलवार, सं० १८४६।

१०९२. सूर्य ग्रह घात—पं० सूर्य। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–९"×

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५३९ । रचनाकाल–X । लिपिकाल– X ।

१०९३. संवत्सर फल—X । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–११"X४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२१०७ । रचनाकाल– X । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा १०, सं० १७८८ ।

विशेष—इस ग्रन्थ की लिपि डेहू नामक ग्राम में की गई ।

१०९४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–१३"X६$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०७२ । रचनाकाल– X । लिपिकाल– X ।

१०९५. होरा चक्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१२"X५$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६३४ । रचनाकाल– X । लिपिकाल– X ।

१०९६. त्रिपता चक्र—X । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"X५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५५३ । रचनाकाल–X । लिपिकाल– X ।

१०९७. ज्ञान प्रकाशित दीपार्णव–X। देशी कागज । पत्र संख्या–४४ । आकार–११"X ५$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५७९ । रचनाकाल– X । लिपिकाल–X । कार्तिक कृष्णा १४, सं० १६३० ।

१०९८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–४१ । आकार–११"X५$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१५७६ । रचनाकाल– X । लिपिकाल– X ।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय—न्याय शास्त्र

१०९९. अष्ट सहस्त्री—विद्यानन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या—२४५ । आकार—११¾"×५½" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—न्याय शास्त्र । ग्रन्थ संख्या—१३८० । रचनाकाल—× । लिपिकाल—पौष प्रतिपदा, बुधवार, सं० १६७४ ।

११००. आख्या दन्तवाद—× । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार—१०"×४½" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—न्याय शास्त्र । ग्रन्थ संख्या—१७९९ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

११०१. आप्तमीमांसा वचनिका—समन्तभद्राचार्य । टीकाकार—जयचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या—७२ । आकार—११¼"×५" । दशा—सुन्दर । पूर्ण । भाषा—संस्कृत, टीका हिन्दी में । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८७० । रचनाकाल—× । टीकाकाल-चैत्र कृष्णा १४, सं० १८६६ । लिपिकाल—× ।

११०२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—५८ । आकार—१३¼"×६¼" । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२६४७ । वचनिका का रचनाकाल—चैत्र कृष्णा १४,सं० १८६६ । लिपिकाल—अश्विन शुक्ला १०, रविवार, सं० १८९४ ।

११०३. आलाप पद्धति—पं० देवसेन । देशी कागज । पत्र संख्या—१० । आकार—१०"×४½" । दशा—जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५३१ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा ७, सं० १७१५ ।

११०४. प्रति संख्या २ । । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार— १२½" × ५¼" । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१६०९ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

११०५. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—१० । आकार—१०¼" × ४¼" । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२४२३ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—× ।

११०६. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार—१२¼"×५¾" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२३३४ । रचनाकाल—× । लिपिकाल— × ।

११०७. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या—९ । आकार—१०¾"×४¾" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२५९९ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—चैत्र कृष्णा ६, मंगलवार सं० १५६८ ।

११०८. ईश्वर प्रत्यभिज्ञा सूत्र—अभिनव गुप्ताचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—५३ । आकार—१३"×७¼" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—न्याय । ग्रन्थ संख्या—१६८८ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

११०९. गरुड़ोपनिषद्—हरिहर ब्रह्म । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११¾"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७७८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ६, बृहस्पतिवार, सं० १८६४ ।

१११०. गुणस्थान स्वरूप—रत्नशेखर सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६२७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–द्वितीय श्रावण शुक्ला ५, सं० १८१८ ।

११११. चतुर्दश गुणस्थान—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१२½"×४½" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५४६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१११२. जीव चौपई—पं० दौलतराम । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–६"×४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४३८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१११३. तर्क परिभाषा—केशव मिश्र । देशी कागज । पत्र संख्या–१५ । आकार–१०¾"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२३७३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–श्रावण कृष्णा ५, मंगलवार, सं० १६६६ ।

१११४. तर्क संग्रह—अनन्त भट्ट । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१०½"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७१२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–सं० १८७६ ।

१११५. तार्किकसार संग्रह–पं० वरदराज । देशी कागज । पत्र संख्या–२५ । आकार–१३½"×५½" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१०३८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१११६. न्यायसूत्रमिथिलेश्वर सूरी । देशी कागज । पत्र संख्या–१६ । आकार–८¾"×३¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१३१८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ५, शुक्रवार, सं० १६६७ ।

१११७. न्याय दीपिका—अभिनव धर्मभूषणाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–२७ । आकार–११½"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१३५७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १३, रविवार, सं० १८१० ।

१११८. प्रमेय रत्नमाला—माणिक्य नन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या–७७ । आकार–६½"×५¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–११६३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१११६. विधि सामान्य—× । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०½"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७५६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११२०. सप्त पदार्थ सत्रावचूरि—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार–१०$\frac{1}{8}$"×४$\frac{1}{8}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२३१७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

११२१. सिद्धान्त चन्द्रोदय (तर्क संग्रह व्याख्या)—अनन्तभट्ट टीका–श्रीकृष्ण धूर्जटि दीक्षित । देशी कागज । पत्र संख्या–३२ । आकार–१०$\frac{1}{8}$×"×४$\frac{3}{8}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६६६ । रचनाकाल–× । टीकाकाल–सं० १२७५ । लिपिकाल–× ।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय—नाटक एवं संगीत

११२२. मदन पराजय—जिनदेव । देशी कागज । पत्र संख्या—२६ । आकार—११"×४३/४" । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—नाटक । ग्रन्थ संख्या—२४३६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—भाद्रपद शुक्ला १४, सं० १६६१ ।

११२३. मिथ्यात्व खण्डन—कवि अनुप । देशी कागज । पत्र संख्या— । ४५ । आकार—१०३/४"×७" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय— नाटक । ग्रन्थ संख्या—२२७४ । रचनाकाल—पौष शुक्ला ५, रविवार, सं० १८२१ ।

११२४ मिथ्यात्व खण्डन (नाटक)—साह कन्नीराम । देशी कागज । पत्र संख्या—६३ । आकार—६३/४"××४१/२" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । विषय—नाटक । ग्रन्थ संख्या—१२७६ । रचनाकाल—पौष शुक्ला ५, सं० १८२० । लिपिकाल—भाद्रपद कृष्णा ६, शनिवार सं० १६०० ।

नोट—कवि ने अपनी पूर्ण प्रशस्ति लिखि है । ग्रन्थकर्त्ता आदि निवासी चाकसू श्री पेमराज के सुपुत्र हैं । सवाई जैपुर के लश्कर के मन्दिर के पास बोरड़ी के रास्ते में रचना की गई है ।

११२५. हनुमन्नाटक—पं० दामोदर मिश्र । देशी कागज । पत्र संख्या—३६ । आकार—१०१/४"×४३/४" । दशा—सुन्दर । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—नाटक । ग्रन्थ संख्या—१४१६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—बैशाख कृष्णा ६, सं० १८४१ ।

११२६. ज्ञानसूर्योदय नाटक—वादिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या—३१ । आकार—१०३/४"×४१/२" । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—नाटक । ग्रन्थ संख्या—५०७ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—द्वितीय श्रावण सुदी २ सं० १७६८ ।

अन्त—इतिश्रीवादिचन्द्र विरचित ज्ञानसूर्योदयनामनाटको चतुर्थो अध्यायः ४ ।
इति नाटकं सम्पूर्णाम । सं० १७६८ वर्षे मिति द्वितीया श्रावण शुक्ला तृतीया
लिपिकृतं मण्डलसूरि श्री चन्दकीर्तिना लुणवा मध्ये स्वात्मार्थम् लेखकवाचकयो
शिवं भूयात् ।। १ ।।

११२७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—३७ । आकार—१०३/४"×४१/४" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—नाटक । ग्रन्थ संख्या—१२३० । रचनाकाल—माघ शुक्ला ८, सं० १६४८ । लिपिकाल—× ।

११२८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—५३ । आकार—१२१/२"×५३/४" । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१०१ । रचनाकाल—माघ शुक्ला ८, सं० १६४८ । लिपिकाल—× ।

आदिभाग—

अनाद्यनन्तरूपाय पंचवर्णात्ममूर्त्तये ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनन्तमहिमाप्ताय सदोंकार नमोस्तु ते ॥ १ ॥
तस्मादभिन्नरूपस्य वृषभस्य जिनेशतुः ।
नत्वा तस्य पदांभोजं भूषिताऽखिलं भूतलं ॥ २ ॥
भूपीठभ्रान्तभूतानां भूयिष्ठानन्ददायिनीं ।
भजे भवापहां भाषां भवभ्रमणभंजिनीं ॥ ३ ॥
येषां ग्रन्थस्य सन्दर्भो प्रोस्फुरीतिविदोंहृदि ।
ववंदे तान् गुरुन् भूयो भक्तिभारनमः शिराः ॥ ४ ॥

अन्तभाग—

मूलसंघे समासाद्य ज्ञानभूषं बुधोत्तमाः ।
दुस्तरं हि भवांभोधिं सुतरिं मन्दते हृदि ॥ ८५ ॥
तत्पट्टामलभूषणं समभवद्वैगम्बरीये मत्ते,
चंचद्वर्हकरः स भाति चतुरः श्रीमत्प्रभाचन्द्रमाः ।
तत्पट्टेऽजनि वादिवृंदतिलकः श्रीवादिचन्द्रो यति ।
स्तेनायं व्यरचि प्रबोधतरणिः भव्याब्जसंबोधनः ॥ ८६ ॥
वसुवेदरसाब्जांके १६८४) वर्षे माघे सिताष्टमी दिवसे ।
श्रीमन्मधूकनगरे सिद्धोऽयं बोधसंरंभः ॥ ८७ ॥ इति समाप्तम् ॥

११२६. संगीतसार—पं० दामोदर । देशी कागज । पत्र संख्या–८४ । आकार–६$\frac{3}{4}$"× ४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–संगीत । ग्रन्थ संख्या–१३७१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय—नीतिशास्त्र

११३०. चाणक्य नीति – चाणक्य। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१०½"× ५"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–नीतिशास्त्र। ग्रन्थ संख्या–१८४२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १८५३।

११३१. नन्दबत्तीसी—नन्दसेन। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१०¾"× ४¼"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–नीतिशास्त्र। ग्रन्थ संख्या–१३४०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

११३२. नीतिवाक्यामृत—सोमदेव सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–६३। आकार—१०"×५"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–नीतिशास्त्र। ग्रन्थ संख्या—२४१७। रचनाकाल—×। लिपिकाल–×।

११३३. नीतिशतक (सटीक)—भर्तृहरि। देशी कागज। पत्र संख्या–१५। आकार–११¾"×५¼"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–नीतिशास्त्र। ग्रन्थ संख्या–१८७१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १, सं० १८२७।

११३४. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–३३। आकार–११½"×५¼"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–११५८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

११३५. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–१६। आकार–८½"×४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१५६४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला ११, सं० १८७१।

११३६. नीतिशतक सटीक— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–५६। आकार–१२¼× ५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२६४८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–माघ शुक्ला १०, मंगलवार, सं० १८३३।

११३७. नीतिसंग्रह—×। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–११"×४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२८३४। रचनाकाल–×। लिपिकाल– ×।

११३८. पंचतन्त्र–विष्णु शर्मा। देशी कागज। पत्र संख्या–८०। आकार–११"× ४¾"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या– १०१६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

११३९. राजनीतिशास्त्र—चम्पा। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१२½"×

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४४७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

११४०. वृहद् चाणक्य राजनीतिशास्त्र—चाणक्य । देशी कागज । पत्र संख्या–१५ । आकार–१०"×४¾" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१९५५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

११४१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१६ । आकार–११"×४½" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१९५६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ११, बुधवार, सं० १७१९ ।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय—पुराण

११४२. उत्तरपुराण—पुष्पदन्त । देशी कागज । पत्र संख्या–२६३ । आकार–१३½"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । विषय–पुराण । ग्रन्थ संख्या–१०४१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–सं० १४८२ ।

११४३. उत्तरपुराण (सटीक)—पुष्पदन्त । टीकाकार—प्रभाचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–३१ । आकार–११¾"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश और संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पुराण । ग्रन्थ संख्या–११६१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १५, शनिवार, सं० १६५८ ।

११४४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–३३ । आकार–१३½"×५¼" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१०३९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

११४५. उत्तरपुराणटिप्पण –प्रभाचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–६३ । आकार–११"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५२१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

११४६ गरुड़पुराण (सटीक)—वेदव्यास । टीकाकार— × । देशी कागज । पत्र संख्या–९८ । आकार–१३" × ४¾" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पुराण । ग्रन्थ संख्या–१६८० । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

११४७. चक्रधरपुराण—जिनसेनाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–१३९ । आकार–११¾"×५¼" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–४०८अ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

११४८. नेमिजिनपुराण—ब्रह्म नेमिदत्त । देशी कागज । पत्र संख्या–२२६ । आकार–११¼"×५" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । ग्रन्थ संख्या–१२३४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला २, सोमवार, सं० १६०६ ।

११४९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–२०८ । आकार–१०¼" × ४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१४०४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–आषाढ शुक्ला १४, शनिवार, सं० १६६१ ।

११५०. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–१९५ । आकार–१०½" × ४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२९१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

११५१. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–२५३ । आकार–१०" × ४¼" ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१०११ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–फाल्गुन सुदी १३, शुक्रवार, सं० १६७४ ।

११५२. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या–१६९ । आकार–१२"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२६७९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–सं० १६७४ ।

११५३. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या–१८५ । आकार–११$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२५९२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा १, रविवार, सं० १७०९ ।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ संख्या ४५०० है । लिपिकार की प्रशस्ति का अन्तिम पत्र नहीं है ।

११५४. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र संख्या–२३० । आकार–११"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२३२२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–द्वितीय भाद्रपद कृष्णा ८, सोमवार, सं० १६६५ ।

११५५. पद्मनाभपुराण—भट्टारक सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या–९४ । आकार–९"×६$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२३७६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–मंगशीर्ष शुक्ला ५, सोमवार, सं० १८५३ ।

११५६. पद्मपुराण भाषा–पं० लक्ष्मीदास । देशी कागज । पत्र संख्या–१७१ । आकार–११$\frac{3}{4}$"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रथ संख्या–१७८० । रचनाकाल–पौष शुक्ला १०, सं० १७८३ । लिपिकाल–सं० १८१८ ।

११५७. पद्मपुराण—रविषेणाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–५६७ । आकार–१३"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१२२६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–मंगसिर कृष्णा १३, सं० १८२३ ।

नोट—श्री पार्श्वनाथ के मन्दिर में नागौर में लिपि की ।

११५८. पार्श्वनाथपुराण—पद्मकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या–७९ । आकार–११"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७७३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–सं० १५०० ।

११५९. पार्श्वनाथ पुराण –पं० रइधू । देशी कागज । पत्र संख्या–८६ । आकार—११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–११६७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ शुक्ला ६, बुधवार, सं० १६४६ ।

नोट—लिपिकार की प्रशस्ति विस्तृत दी गई है ।

११६०. पार्श्वनाथपुराण—भूधरदास । देशी कागज । पत्र संख्या–९३ । आकार–१०"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१०६६ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रचनाकाल–आषाढ़ शुक्ला ५, सं० १७८९। लिपिकाल–भाद्रपद बुदी ११, सं० १८३८।

११६१. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–५६। आकार–१२½"×५¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२६७०। रचनाकाल–आषाढ़ शुक्ला ५, सं० १७८९। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ६, मंगलवार, सं० १७९८।

११६२. पुण्यचन्द्रोदयमुनिसुव्रतपुराण—केशवसेनाचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या–१११। आकार–१०¾"×६"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२०४६ (ब)। रचनाकाल–×। लिपिकाल–चैत्र बुदी ७, सं० १८६७।

११६३. पुराणसार संग्रह—भ० सकलकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–१२२। आकार–११"×५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२६७४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ९, रविवार, सं० १८३७।

११६४. भविष्यपुराण—×। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–९"×४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१५३८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

११६५. मार्कण्डेयपुराण (सटीक)—ऋषि मार्कण्डेय। देशी कागज। पत्र संख्या-६२। आकार–११¼"×६½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८३५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–मंगसिर कृष्णा ८, बृहस्पतिवार, सं० १९२०।

११६६. रामपुराण—भट्टारक सोमसेन। देशी कागज। पत्र संख्या–१४। आकार–१०"×५¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१२१४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

आदिभाग—

श्रीजिनाय नमः वदेऽहं सुव्रतदेवं पंचकल्याणनायकं।
देवदेवादिभिः सेव्यं भव्यवृंद सुखप्रदं ॥ १ ॥

शेषान् सिद्धजिनान् सरीन् पाठकानां साधू संयुकान्।
नत्वा वक्षे हि पद्मस्य पुराणगुण सागरं ॥ २ ॥

वन्दे वृषभसेनादिन् गुणाधीशान् यतीश्वरान्।
द्वा दशांग श्रुतयैश्च कृतं मोक्षस्य हेतवे ॥ ३ ॥

वंदे समन्तभद्रं तं श्रुतसागरं पारगं।
भविष्यत् समये योऽत्र तीर्थंनाथो भविष्यति ॥ ४ ॥

अन्तभाग—

सप्तदश सहस्राणि वर्षाणि राघवस्येवै।
ज्ञेयं हि परमायुश्च सुखसंतति सम्पदं ॥ १४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अष्टादश सहस्त्राणि वर्षाणि लक्ष्मणस्य च ।
आयु···· ···परमं सौख्यं भोग सम्पत्ति दायकं ॥ १५ ॥

रामस्य चरितं रम्यं श्रणोतियश्च धार्मिकः ।
लभते सः शिवस्थानं सर्वसुखाकरं परं ॥ १६ ॥

विक्रमस्य गते शाके षोडष (१६५६) शतवर्षके ।
शतपंचाशत समायुक्ते मासे श्रावणिके तथा ॥ १७ ॥

शुक्लपक्ष त्रयोदश्यां बुधवारे शुभे दिने ।
निष्पन्नं चरितं रम्यं रामाचन्द्रस्त पावनं ॥ १८ ॥

महेन्द्रकीर्ति योगीन्द्र प्रासादात् च कृतं मया ।
सोमसेन रामस्य पुराण पुण्य हेतवे ॥ १९ ॥

यदुक्तं रविषेणेन पुराणं विस्तरा ·········· ··· ···· ।
······· ········ संकुच्य किंचित विकथितं मया ॥ २० ॥

गर्वेण न कृतं शास्त्रं नापि कीर्ति फलाप्तये ।
केवलं पुण्य हेत्वर्थं स्तुता रामगुणा मया ॥ २१ ॥

नाहं जानामि शास्त्राणि न छन्दो न नाटकं ।
तथापि च विनोदेन कृतं रामपुराणकं ॥ २२ ॥

ये संतति विपुषो लोके मोघयं उचते मम ।
शास्त्रं परोपकाराय ते कृता ब्रह्मणामुखि ॥ २३ ॥

कथा मात्रं च पद्मस्य वर्त्ततेवर्णानां विना ।
अस्मिन् ग्रन्थे उभौ भव्याः श्रण्वन्तु सावधानतः ॥ २४ ॥

विस्तार रुचिनः सिव्या ये संति भद्रमानसाः ।
ते श्रण्वन्तु पुराणं हि रविषेणस्य निर्मितं ॥ २५ ॥

रविषेण कृते ग्रन्थे कथा यावत्पवर्त्तते ।
तावत् च सकलात्रापि वर्तते वर्ण मां विना ॥ २६ ॥

वर्ण्यविषये रम्ये जिनूर नगरे वरे ।
मन्दिरे पार्श्वनाथस्य सिद्धोः ग्रन्थः शुभे दिने ॥ २७ ॥

सेनगणेति विख्याति गुणभद्रो भवन्मुनिः ।
पट्टे तस्यैव संजातः सोमसेनो यतीश्वरः ॥ २८ ॥

तेनेदं निर्मितं शास्त्रं रामदेवस्य भक्तितः ।
स्वस्य निर्वाणहेत्वर्थं संक्षेपेण महात्मनः ॥ २९ ॥

यस्मिन् निदपुरे शास्त्रं श्रण्वन्ति च पठन्ति च ।
तत्र सर्वं सुखक्षेमं परं भवति मंगलं ॥ ३० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्मात् लभन्ते शिव-सौख्य-सम्पदः स्वर्गादि राज्याणि भवन्ति ।
धर्मात् तस्मात् कुर्वन्ति जिनधर्ममेंक, विहाय पाप नरकादिकारकं ।। ३१ ।।

सेणगणे याति परं पवित्रे वृषभषेण गणधर शुभवंशे ।
गुणभद्रोजनिकः विजनमुख्यः पमितवर्गा सुखाकरजातः ।। ३२ ।।

श्री मूलसंघे वर पुष्कराख्ये गच्छे सुजातोगुणभद्रसूरिः ।
पट्टे च तस्यैव सुसोमसेनो भट्टारको भुवि विदुषां शिरोमणि ।। ३३ ।।

सहस्त्रं सप्तशतं त्रीणि वर्त्तते भुवि विस्तरात् ।
सोमसेनमिदं वक्षे चिरंजीव चिरंजीवितं ।। ३४ ।।

इति श्री रामपुराणे भट्टारक श्री सोमसेन विरचिते रामस्वामिनो निर्वाणवर्णननामनो त्रयस्त्रिशत्तमोधिकारः ।।३३।। छः । ग्रन्थाग्रन्थ ७३०० । । मिति श्री जिनायनमः ।।

११६७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१८ । आकार–१२″×६″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२६३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

११६८. रामायण शास्त्र—चिन्तन महामुनि । देशी कागज । पत्र संख्या–५१ । आकार–११¼″×४¼″ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१०५६ । रचनाकाल–आषाढ़ बुदी ५, रविवार सं० १४६३ । लिपिकाल–× ।

११६९. वर्द्धमान पुराण–नवलदास शाह । देशी कागज । पत्र संख्या–१७३ । आकार–१२½″×६″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५८९ । रचनाकाल–मंगशीर्ष शुक्ला १५, सं० १६९१ । लिपिकाल–मंगशीर्ष शुक्ला ८, बुधवार, सं० १८५८ ।

विशेष—भट्टारक सकलकीर्तिजी के उपदेश के मुताविक ग्रन्थ की रचना की है । पुराण कर्ता ने पूर्ण प्रशस्ति तथा उस समय के राज्य कालादि का विस्तृत वर्णन किया है ।

११७०. शान्तिनाथपुराण (सटीक)—भ० सकलकीर्ति । टीकाकार—सेवाराम । देशी कागज । पत्र संख्या–३२७ । आकार–८½″×७″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२४७९ । रचनाकाल–× । टीकाकाल–श्रावण कृष्णा ८, सं० १८३४ । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ११, सं० १९२९ ।

विशेष—भाषाकार ने अपनी पूर्ण प्रशस्ति लिखि है ।

११७१ शिवपुराण—वेदव्यास । देशी कागज । पत्र संख्या–१८९ । आकार–११″×७¼″ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२३६२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

विशेष—वैष्णव पुराण है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११७२. सम्यक्त्वकौमुदी पुराण—महीचन्द। देशी कागज। पत्र संख्या–६७। आकार–१०″×४½″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१११३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १८८४।

११७३. हरिवंशपुराण—ब्रह्म जिनदास। देशी कागज। पत्र संख्या–२६। आकार–६¾″×४″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१५८२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

११७४. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–३४८। आकार–११¼″×४½″। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५६४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा ५, शुक्रवार, सं० १७१८।

११७५ प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–२६६। आकार–१२″×५″। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२४८०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १४, सं० १७५६।

११७६. हरिवंशपुराण—मुनि यशःकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–२६३। आकार–११¼″×५¼″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२६४४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–आषाढ़ शुक्ला ७, बृहस्पतिवार, सं० १६५२।

११७७. त्रिषष्ठिस्मृति—पं० आशाधर। देशी कागज। पत्र संख्या–२२। आकार–१०½″×३¾″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१२६३। रचनाकाल–सं० १२६२। लिपिकाल–पौष शुक्ला ६, शुक्रवार, सं० १५५५।

११७८. त्रिषष्ठिशलाका महापुरुषचरित्र—हेमचन्द्राचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या–११६। आकार–१०″×४½″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१३६२। रचनाकाल–सं० १५०४। लिपिकाल–अश्विन कृष्णा १०, सं० १६४८।

११७९. त्रिषष्ठिलक्षण महापुराण—पुष्पदन्त। देशी कागज। पत्र संख्या–१७१। आकार–१३¾″×५½″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१३५१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

११८०. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–२५३। आकार–१३″×५½″। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१४१५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–वैशाख शुक्ला ६, सं० १५८५।

११८१. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–१५५। आकार–१३½″×५¼″। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१०४०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १४६३।

११८२. त्रिषष्ठि लक्षणमहापुराण—गुणभद्राचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या–४१०। आकार–११¼″×४″। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१२११। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

११८३. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–४६३। आकार–११¼″×५¼″।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१०५०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–आषाढ़ शुक्ला १३, शनिवार, सं० १७०८।

नोट—विस्तृत प्रशस्ति दी हुई है।

११८४. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–३३६। आकार–११"×५"। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१४०२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला १४, बुधवार, सं० १६६०।

११८५. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–३१६। आकार–१३¾"×६"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१८८६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–माघ शुक्ला १३, सं० १६७६।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय—पूजा एवं स्तोत्र

११८६. अकलंक स्तुति—बौद्धाचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या—३। आकार—११"×४$\frac{3}{8}$"। दशा—जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या—२०३६। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

विशेष—इस ग्रन्थ के अन्त में "अकलंकाचार्य विरचितं स्तोत्रं" लिखा है, और इसके निचे बौद्धाचार्य लिखा है। यह स्तुति बौद्धाचार्य ने अवश्य की है। किन्तु बौद्धाचार्य का नाम अकलंक होना शंकास्पद है।

११८७. अग्निस्तोत्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या—४। आकार—६$\frac{1}{2}$"×३$\frac{3}{8}$"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—पूजा। ग्रन्थ संख्या—१६६२। रचनाकाल—×। लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला ३, शुक्रवार, सं० १८१८।

११८८. अढाईद्वीपपूजन भाषा—डालूराम। देशी कागज। पत्र संख्या—२४४। आकार—१३$\frac{3}{8}$"×६। दशा—अतिजीर्ण। पूर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—पूजा। ग्रन्थ संख्या—२८४०। रचनाकाल—ज्येष्ठ शुक्ला १३, शुक्रवार, सं० १८८७। लिपिकाल—द्वितीय बैशाख कृष्णा २, रविवार, सं० १९०७।

११८९. अढाईद्वीपपूजा—×। देशी कागज। पत्र संख्या—८। आकार—१०"×५$\frac{3}{8}$"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—पूजा। ग्रन्थ संख्या—१६०२। रचनाकाल—×। लिपिकाल—सं० १७९४।

११९०. अन्नपूर्णास्तोत्र—शंकराचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या—३। आकार—६$\frac{1}{2}$"×३$\frac{3}{8}$। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या—१६१७। रचनाकाल—×। लिपिकाल—माघ शुक्ला १ सं० १८९०।

११९१. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—६$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा—अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२७७१। रचनाकाल—×। लिपिकाल—पौष कृष्णा १, रविवार, सं० १८२१।

११९२. अपामार्ग स्तोत्र—गोविन्द। देशी कागज। पत्र संख्या—८। आकार—८$\frac{1}{2}$×२$\frac{1}{2}$"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या—२०१८। रचनाकाल—×। लिपिकाल—सं० १८६१।

विशेष—अपामार्ग का हिन्दी नाम "आंधा झाड़ा" है।

११९३. अष्टदल पूजा और षोडषफल पूजा—×। देशी कागज। पत्र संख्या—६। आकार—११"×५$\frac{1}{8}$"। दशा—जीर्ण। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—पूजा। ग्रन्थ संख्या—१५९२। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११६४. अष्टान्हिका पूजा—भ० शुभचन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१०" × ४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२७२५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

११६५. अंकगर्भखण्डारचक्र—देवनन्दि। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१०½" × ४¾"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय-पूजा। ग्रन्थ संख्या–२०२१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

११६६. आशाधराष्टक—शुभचन्द्र सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार–१२"×५"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२६४१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

११६७. इन्द्रध्वज पूजा—×। देशी कागज। पत्र संख्या–७६। आकार–१२¼"× ५¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–१७१७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ५, सं० १८३४।

११६८. इन्द्रध्वज पूजन—भ० विश्व भूषण। देशी कागज। पत्र संख्या–१२२। आकार–१०¾" × ५¾" दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२७४७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ९, सं० १८६६।

११६९. इन्द्र वधुचित हुलास आरती—रुचिरंग। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–७" × ४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–आरती। ग्रन्थ संख्या–२७०६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१२००. इन्द्र स्तुति–×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१०½"×४½"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–१५०४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१२०१. इन्द्राक्षिजगच्चिन्तामणि कवच—×। देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार–८¼"×४¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१६७९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१२०२. इन्द्राक्षि नित्य पूजा—×। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–९¼"×५¼"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–१६२३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–चैत्र शुक्ला १२ सं० १९२२।

१२०३. इन्द्राक्षिसहस्त्रनामस्तवन—×। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–९½"×५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१६२१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१२०४. एकीभावस्तोत्र—वादिराज। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–१२½"×५¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१९९४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२०५. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार– ११$\frac{1}{8}$"×५$\frac{1}{8}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१३१४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–सं० १८६०।

१२०६. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–११"×५$\frac{1}{8}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१६८१। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा १३, सं० १७१४।

१२०७. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–१०$\frac{1}{8}$"×४"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२३४०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ३, शनिवार सं० १४६२।

१२०८. प्रति संख्या ५। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–११$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{8}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२३४५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१२०९. प्रति संख्या ६। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–१०"×४$\frac{1}{8}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२०२७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१२१०. प्रति संख्या ७। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–११$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२०४७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१२११. एकीभाव स्तोत्र (सार्थ)–वादिराज सूरि। टीकाकार—नागचन्द्र सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–१०। आकार–६$\frac{3}{8}$"×४"। दशा–जीर्णक्षीण।। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१३२५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१२१२. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१२। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२४७५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–श्रावण कृष्णा १४, सं० १६८८।

१२१३. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–१३। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२७२८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–प्रथम श्रावण शुक्ला ८, सं० १७१४।

१२१४. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–१३। आकार–११"×४$\frac{3}{8}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२७२१। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१२१५. एकीभाव व कल्याण मन्दिर स्तोत्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार१२$\frac{1}{8}$" × ५$\frac{3}{8}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१८०९। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–वैशाख शुक्ला १२, सं० १८३९।

१२१६. ऋषभदेव स्तवन—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–११" × ४$\frac{3}{8}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१५०२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१२१७. ऋषिमण्डलपूजा—गुणनंदि। देशी कागज। पत्र संख्या–१४। आकार–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११"×५½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२३३८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१२१८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–११ । आकार–११"×५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२५५१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१२१९. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–२० । (२वां तथा १६ वां पत्र नहीं है) । आकार–१०"×४½" । दशा–अच्छी । अपूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२८६० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला ११, सं० १७०८ ।

१२२०. ऋषिमण्डलस्तोत्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–६½"×३½" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१२०७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट : प्रथम पत्र के फट जाने से अक्षर अस्पष्ट हो गये हैं ।

१२२१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१२½"×५¾" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१९५७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– अश्विन शुक्ला ११ सं० १८२६ ।

१२२२. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–८¾"×४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१२० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ८, बृहस्पतिवार सं० १८८१ ।

विशेष—यह स्तोत्र मन्त्र सहित है ।

१२२३ ऋषिमण्डलस्तोत्र (सार्थ)—गौतम स्वामी । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–९¾"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२४८७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१२२४. कर्मदहनपूजा—× । देशी कागज । पत्र संख्या–२५ । आकार–८¾"×४¾" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२२७१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा ७ शनिवार, सं० १८८४ ।

१२२५. कल्याणमन्दिरस्तोत्र—कुमुदचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१०"×४½ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८१४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१२२६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–९ । आकार–१०½"×४½" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१९१४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१२२७. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–११ । आकार–९"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१९५४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–चैत्र शुक्ला १४, सं० १८२७ ।

१२२८. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०½"×४½" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१३८४ । रचनाकाल–× । लिपिकल–×।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२२९. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१०" × ४$\frac{१}{२}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१९४७ । रचनाकाल × । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ५, सं० १८४० ।

१२३०. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–९$\frac{१}{२}$"×४$\frac{१}{४}$" ।दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१९७० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा ८, बुधवार सं० १८४६ ।

१२३१. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । आकार–११" × ४$\frac{१}{२}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पत्र संख्या । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१९७५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१२३२. प्रति संख्या ८ । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार–१०$\frac{१}{४}$"×४$\frac{१}{४}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१७४९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–सं० १६३१ ।

१२३३. प्रति संख्या ९ । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–९$\frac{३}{४}$"×४$\frac{१}{४}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१३६३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१२३४. प्रति संख्या १० । देशी कागज । पत्र संख्या–३ आकार–९$\frac{३}{४}$" × ४$\frac{१}{२}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२०२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१२३५. प्रति संख्या ११ । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–११$\frac{१}{४}$" × ५$\frac{१}{४}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१३१५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला ५, सोमवार, सं० १८६० ।

१२३६. प्रति संख्या १२ । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१०"×४$\frac{१}{४}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२०१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १५ सं० १४६७ ।

१२३७. प्रति संख्या १३ । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१०"×४" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२४११ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–आषाढ़ शुक्ला ९, सं० १६०७ ।

१२३८. प्रति संख्या १४ । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०$\frac{३}{४}$"×५$\frac{१}{२}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२३३१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१२३९. प्रति संख्या १५ । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–८$\frac{१}{२}$"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२२८४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × । पौष शुक्ला ४, सं० १८८१ ।

१२४०. कल्याण मन्दिर स्तोत्र (सटीक)—कुमुदचन्द्राचार्य । टीकाकार–× । देशी कागज । पत्र संख्या–१४ । आकार–८$\frac{१}{२}$"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८६१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–बैशाख कृष्णा १४ बृहस्पतिवार सं० १८७० ।

१२४१. कल्याणमन्दिरस्तोत्र (सटीक)—कुमुदचन्द्राचार्य । टीकाकार—भट्टारक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हर्षकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार–१०½"×४¼" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१३३४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–वैशाख कृष्णा ५, सं० १६७७ ।

१२४२. कल्याणमन्दिरस्तोत्र (सार्थ)—× । देशी कागज । पत्र संख्या–११ । आकार–१०¼" × ४¼" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२७४६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१२४३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–११"×४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२७६८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–चैत्र शुक्ला १, बुधवार, सं० १६०१ ।

१२४४. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०¾"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२७६६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–सं० १६६३ ।

१२४५. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–११"×४¾" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१४० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१२४६. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०½"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०२४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१२४७. कल्याणमन्दिरस्तोत्र (सटीक)—कुमुदचन्द्राचार्य । टीकाकार–श्री सिद्ध-सेनाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या ६ । आकार–८"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७१८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१२४८. कल्याण मन्दिर स्तोत्र (सटीक)–कुमुदचन्द्राचार्य । टीकाकार–हुकमचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०"×४¼" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत व हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५१२ । रचनाकाल—× । लिपिकाल–× ।

१२४९. गणधरलवय–× । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०" × ४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२७६१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१२५०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–१०¼"×४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१५८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१२५१. गर्भखडारचक्र–देवनंदि । देशी कागज । पत्र संख्या–५५ से ६६=२६ आकार–१२"×५" । दशा–जीर्णक्षीण । अपूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तुति । ग्रन्थ संख्या–१३५६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल–× ।

१२५२. गौतम स्तोत्र–जिनप्रभसूरि । देशी कागज । पत्र संख्या– १ । आकार—०¼"×४¼" दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१५६३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१२५३. चतुर्दशीव्रतोद्यापन पूजा—पं० ताराचन्द श्रावक । देशी कागज । पत्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संख्या—८। आकार—१०½"×५"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या—१६१६। रचनाकाल— चैत्र शुक्ला ५, सं० १८०२। लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला ६, सं० १८६२।

१२५४. **चतुर्विंशति जिननमस्कार**—×। देशी कागज। पत्र संख्या-१। आकार-१०½"×४½"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या-२५५०। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।

१२५५. **चतुर्विंशति जिनस्तवन**—×। देशी कागज। पत्र संख्या-२। आकार-१०½"×४½"। दशा-प्राचीन। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या-२३१६। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।

विशेष—अन्तिम पत्र में कुछ उपदेशात्मक श्लोक हैं।

१२५६. **चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति—समन्तभद्र स्वामी**। देशी कागज। पत्र संख्या-१५। आकार-११"×५"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या-२११६। रचनाकाल-×। लिपिकाल-बैशाख कृष्णा १०, मंगलवार, सं० १६५६।

१२५७. **प्रति संख्या २**। देशी कागज। पत्र संख्या-६। आकार-१०½×४½। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-२११५। रचनाकाल-×। लिपिकाल-आषाढ़ कृष्णा ११, मंगलवार, सं० १६७८।

१२५८. **चतुर्विंशति तीर्थंकरों की स्तुति—माघनन्दि**।। देशी कागज। पत्र संख्या-२। आकार-१०¼"×५"। दशा-अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या-१४६६। रचनाकाल-×। लिपिकाल-पौष कृष्णा ६, सं० १६६१।

१२५९. **प्रति संख्या २**। देशी कागज। पत्र संख्या-२। आकार-११"×४¼"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-२०६२। रचनाकाल-×। लिपिकाल-आषाढ़ शुक्ला ७, सं० १७०५।

१२६०. **चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति (सटीक)—पं० घनश्याम। टीकाकार—पं० शोभनदेवाचार्य**। देशी कागज। पत्र संख्या-११। आकार-१०½"×४½"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या-२१६३। रचनाकाल-×। टीकाकाल-×। लिपिकाल-श्रावण कृष्णा ८, सं० १६७०।

विशेष—मूल ग्रन्थ कर्ता पं० धनपाल के लघुभ्राता श्रीशोभनदेवाचार्य ने वृत्ति की है।

१२६१. **चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा—चौधरी रामचन्द्र**। देशी कागज। पत्र संख्या-९०। आकार-९½"×६¼"। दशा-जीर्ण। पूर्ण। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। विषय-पूजा। ग्रन्थ संख्या-१७६५। रचनाकाल-×। लिपिकाल-श्रावण कृष्णा ५, सं० १८५७।

१२६२. **चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा—शुभचन्द्राचार्य**। देशी कागज। पत्र संख्या-५०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आकार–११"×४¾"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१५८३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–आषाढ़ शुक्ला ५, सं० १६६३।

१२६३ चतुर्विंशति जिन स्तवन–पं० रविसागर गणि। देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार–१०" × ४"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१७३९। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–×।

१२६४. चतुर्विंशति जिनस्तवन—जिनप्रभसूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–६¾" × ४¼"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या– १६४४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१२६५. चतुर्विंशति जिनस्तवन—ज्ञानचन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१०¼" × ४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१८८०। रचनाकाल–×। लिपिकाल– ×।

१२६६. चतु:षष्ठी स्तोत्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार– १२½"× ५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि– नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७०१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा १, सं० १९०४।

१२६७. चतु:षष्ठी महायोगीनी महास्तवन—धर्मनन्दाचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०½"×४¼"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या—२६७१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१२६८. चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा—×। देशी कागज। पत्र संख्या—१०। आकार—८"×४¾"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–हिन्दी और संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय—पूजा। ग्रन्थ संख्या—२२९१। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– भाद्रपद शुक्ला ९ सं० १९५८।

विशेष—इसमें गजपंथा जी की पूजा लिखी हुई है।

१२६९. चिन्तामणि पार्श्वजिनस्तवन (सार्थ)—×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–८½"×४¼"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१८८८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१२७०. चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र—धरणेन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१०½"×६¼"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१७०८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल— ×।

१२७१. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१०½"×४¾"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१७०७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–माघ कृष्णा १४, सं० १८७६।

१२७२. चित्र बन्ध स्तोत्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–९"×४¼"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या १३३८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२७३. **चौबीसजिनआशीर्वाद**—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०"×४½"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२१५६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–श्रावण शुक्ला २, सं० १७०१।

१२७४. **चौबीस तीर्थंकर स्तवन**—×। देशी कागज। पत्र संख्या–९। आकार–८¾"×४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२७१८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–माघ शुक्ला ११, सं० १८४१।

१२७५. **चौबीस तीर्थंकरों की पूजा**—वृन्दावनदास। देशी कागज। पत्र संख्या–४२। आकार–१२¾"×५¼"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–१५६७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१२७६. **चौषठयोगीनी स्तोत्र**—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–९¾"×४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२०२२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

विशेष—ग्रन्थ की लिपि नागौर में की गयी है।

१२७७. **जय तिहुअण स्तोत्र**—अभयदेव सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–१०"×४¼"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२७८४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१२७८. **ज्वालामालिनी स्तोत्र**—×। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–९¾"×४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२४९६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ५, सं० १८४४।

१२७९. **जिनगुण सम्पत्ति व्रतोद्यापन**—आचार्य देवनन्दि। देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार–९¼"×६"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१५९६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१२८०. **जिनपूजापुरन्दरविधान**—अमरकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–११"×४¾" दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२८०५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१२८१. **जिनपंचकल्याणकपूजा**—जयकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–९। आकार–११½"×५"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–१६०३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–श्रावण कृष्णा २, रविवार, सं० १६८३।

१२८२. **जिनयज्ञकल्प**—पं० आशाधर। देशी कागज। पत्र संख्या–१५१। आकार–१०½"×४¾"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रंथ संख्या–१६७५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

नोट : प्रारम्भ में श्री वसुनन्दि सैद्धान्ति द्वारा रचित प्रतिष्ठासार संग्रह के ६ परिच्छेद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(पृष्ठ संख्या २२ तक) हैं, पृष्ठ २३ सें ६८ तक पूज्यपाद कृत अभिषेक विधि है। ६९ से १५१ तक पं० आशाधर जी कृत जिनयज्ञकल्प निबन्ध यानी 'कल्प दीपक' प्रकरण पर्यन्त है।

१२८३. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–८८। आकार १०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५०५। रचनाकाल–अश्विन शुक्ला १५, सं० १२८५। लिपिकाल– ×।

१२८४. **जिनरस वर्णन—वेणीराम।** देशी कागज। पत्र संख्या—१७। आकार–८$\frac{3}{4}$"×४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१५९८। रचनाकाल–माघ शुक्ला ११, मंगलवार, सं० १७९९। लिपिकाल–अश्विन कृष्णा ७, सं० १८३९।

१२८५. **जिनसहस्त्रनाम स्तोत्र—×।** देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–८"×५"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१७१०। रचनाकाल–×। लिपिकाल—×।

१२८६. **जिनसहस्त्रनाम स्तोत्र—सिद्धसेन दिवाकर।** देशी कागज। पत्र संख्या–१३। आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२७९३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–माघ शुक्ला १४, सं० १७४७।

विशेष —इसी ग्रन्थ में धरणेन्द्रस्तोत्र, पंच परमेष्ठी स्तोत्र, ऋषि मण्डल स्तोत्र और वृहत् वर्णन भी है।

१२८७. **जिन स्तवन सार्थ—जयानन्द सूरि।** देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२५६६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ५, सं० १७४१।

१२८८. **जिन स्तुति— ×।** देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार—१०$\frac{1}{2}$"×५$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२६६१। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

१२८९. **जिन सुप्रभात स्तोत्र—सि० च० नेमिचन्द्र।** देशी कागज। पत्र संख्या- १। आकार–८$\frac{1}{2}$"×३$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१५३३। रचनाकाल —×। लिपिकाल–×।

१२९०. **जिनेन्द्र वन्दना—×।** देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार- १०"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१७१५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१२९१. **जिनेन्द्र स्तवन–×।** देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्णशीरण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१४७३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–चैत्र शुक्ला ९, सं० १६८५।

१२९२. **तेरह द्वीप पूजा–×।** देशी कागज। पत्र संख्या–१७०। आकार–११$\frac{1}{4}$"×

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत व हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२३३१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–पौष कृष्णा २, सं० १९३९।

१२९३. दशलक्षण जयमाल—भावशर्मा। देशी कागज। पत्र संख्या-११। आकार-१०"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और प्राकृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२३८९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १६८१।

१२९४. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–११। आकार–९$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{4}$। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१३९०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १६७९।

१२९५. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–१३। आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१३८८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१२९६. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–१०। आकार–११$\frac{1}{2}$"×६$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१५८६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ७, बुधवार, सं० १९२९।

१२९७. प्रति संख्या ५। देशी कागज। पत्र संख्या–१२। आकार–१२$\frac{1}{2}$"×६"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२६६९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–माघ कृष्णा ७, मंगलवार, सं० १८८१।

१२९८. दशलक्षणजयमाला—पाण्डे रइधू। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–९$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–१९३०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–श्रावण शुक्ला ९, बृहस्पतिवार, सं० १८१९।

१२९९. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–२ से १०। आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। अपूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२८४८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१३००. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार–८$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या– २०४४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१३०१. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–१२। आकार–११$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५८६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ५, मंगलवार, सं० १७३६।

१३०२. प्रति संख्या ५। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१२×५$\frac{3}{4}$। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५०८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा १०, सं० १८२७।

१३०३. प्रति संख्या ६। देशी कागज। पत्र संख्या–१३। आकार–८"×५$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५०२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १२, सोमवार, सं० १८०८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३०४. **दशलक्षणपूजा—पं० द्यानतराय** । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार– ६$\frac{1}{2}$"×६$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–१७१३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–द्वितीय वैशाख कृष्णा १, सोमवार, सं० १८६९ ।

१३०५. **दशलक्षण पूजा—सुमतिसागर** । देशी कागज । पत्र संख्या–११ । आकार– १७"×६$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२६०७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१३०६. **द्वादश व्रतोद्यापन—×** । देशी कागज । पत्र संख्या–९ । आकार– ११$\frac{1}{4}$"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत, प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाचिकी, अपभ्रंश, चुलिका आदि । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६२८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३०७. **द्वात्रिंशी भावना—×** । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१०" ×४$\frac{1}{4}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या– २२५२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

विशेष—अन्तिम पत्र पर विद्यामंत्र गर्भित स्तोत्र है ।

१३०८. **द्विजपाल पूजादि व विधान—विद्यानंदि** । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–११$\frac{1}{4}$"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या– १९०९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१३०९. **दीपमालिका स्वाध्याय—×** । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार– १०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३१०. **देवागम स्तोत्र - समन्तभद्राचार्य** । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार– १०"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१३२१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१३११. **प्रति संख्या—२** । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–११$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{4}$" दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१९७४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३१२. **नन्दीश्वर पंक्ति पूजा विधान—×** । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–११$\frac{1}{4}$"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय– पूजा । ग्रन्थ संख्या–२१२५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १२, सं० १८०१ ।

१३१३. **नवग्रह पूजा—×** । देशी कागज । पत्र संख्या–८ । आकार–१०"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१९३४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३१४. **नवग्रह पूजा विधान—×** । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार–१०"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४३/४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२६७३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

विशेष—इस ग्रन्थ में चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तवन, पार्श्वनाथ पद्मावती स्तोत्र, पूज्यपादाचार्य कृत पार्श्वनाथ चिन्तामणि पद्मावती स्तोत्र, मध्यवलयपूजा, विद्या देवतार्चन, जिन मातृपूजन, चतुर्विंशति मात्रा विधान और नवग्रहपूजाविधान भी है ।

१३१५. **नवग्रह पूजा सामग्री—×** । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–२५"×१०" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७६६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा ८, सोमवार, सं० १६७६ ।

नोट—इसमें पूजा सामग्री का विस्तृत वर्णन है । इस पत्र में जाप्य के भेद, स्तवन विधि, अट्ठारह धान्य, पण्डितों के धारण करने योग्य आभरण सप्त ध्यान, गुरोपकरण, थापड़ा, खावका सामग्री, मंगल द्रव्य व्योरा, क्षेत्रपाल पूजा विधि, पंच रत्ननाम, सर्वोषधी का व्योरा, दशांग धूप का व्योरा, कुंभकार विधि, खाने की विधि, वास की विधि और ज्वर की विधि एवं पट्टावली का वर्णन है । वचनिकाकार ने अपना पूर्ण परिचय दिया है ।

१३१६. **नारायणपृच्छाजयमाल—×** । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१०१/२"×४१/२" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२०५६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३१७. **निर्वाणकाण्डभाषा—भगवतीदास** । देशी कागज । पत्र संख्या–११ । आकार–८"×५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–हिन्दी और संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२२६६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ शुक्ला १४, रविवार, सं० १९३३ ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ में १ से ७ पत्र तक तीन लोक की पूजा है; तदन्तर पत्र ८ में बारह भावना, इसके बाद ९ वें पत्र में एक पद है और पश्चात् निवार्णकाण्ड पूर्ण किया गया है ।

१३१८. **निर्वाणक्षेत्र पूजा—×** । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१२१/४"×५३/४" । दशा–बहुत अच्छी । पूर्ण । भापा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५२२ । रचनाकाल–भाद्रपद कृष्णा १४, सं० १८७० । लिपिकाल–× ।

१३१९. **नेमिनाथस्तवन—×** । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०१/४"×४१/४" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१६७७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३२०. **नेमिनाथ स्तोत्र--पं० शाली** । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०१/२"×४३/४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१५१९ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३२१. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०"×४१/४" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१९६० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

नोट—स्तोत्र में केवल दो अक्षर 'नेम' का ही प्रयोग किया गया है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३२२. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–११$\frac{1}{8}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१६६१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–पौष शुक्ला ५, शनिवार, सं० १७१२।

१३२३. पद्मावती छन्द—कल्याण। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१०"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२०६६।। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१३२४. पद्मावती पूजन—गोविन्दस्वामी। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२१५७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१३२५ पद्मावती पूजा—×। देशी कागज। पत्र संख्या–२१। आकार–८$\frac{1}{2}$"×६$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी एवं संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–१५२३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१३२६. पद्मावती स्तोत्र–×। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१७०६। रचनाकाल-×। लिपिकाल–×।

१३२७. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–७$\frac{3}{4}$"×४" दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१७२१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१३२८. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–११"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२७२४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–पौष शुक्ला १, सं० १८८७।

१३२९. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–९$\frac{1}{2}$"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२२७६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला १०, बृहस्पतिवार, सं० १९०६।

१३३०. प्रति संख्या ५। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२४६१ रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१३३१, पद्मावती सहस्त्रनाम—अमृतवत्स। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–११"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२५४३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१३३२. पद्मावत्याष्टक सटीक—पार्श्वदेवगणि। देशी कागज। पत्र संख्या–१३। आकार–१०"×५$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–१६२०। रचनाकाल–बैशाख शुक्ला ५, सं० १२०३। लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा १३, सं० १९२२।

१३३३. पल्य विधानपूजा—भ० शुभचन्द्राचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या–७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आकार–११$\frac{1}{8}$" × ५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२८५५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३३४. **पल्य विधान पूजा—रत्न नन्दि** । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–११"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२७८६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–सं० १७६६ ।

१३३५. **पल्य विधान पूजा—अनन्तकीर्ति** । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१०$\frac{1}{8}$" × ४$\frac{1}{8}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२४०६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३३६. **पार्श्वनाथ स्तवन—×** । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०"×४" । दशा–अति जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१४६४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३३७. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–११"×४$\frac{3}{8}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१४६१ । रचनाकाल–× । लिपिकाल—× ।

नोट—इस पत्र में वितराग स्तोत्र तथा शान्ति स्तोत्र भी है ।

१३३८. **प्रति संख्या ३** । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार- १०$\frac{3}{8}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२३०३ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

नोट—इसी पत्र में वीतराग स्तोत्र तथा शान्तीनाथ स्तोत्र भी है ।

१३३९. **पार्श्वनाथ स्तोत्र—शिवसुन्दर** । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–९"×३$\frac{3}{8}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१४७७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३४०. **प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–११"×४$\frac{1}{8}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५१५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल -आषाढ कृष्णा १२, सं० १७१४ ।

१३४१. **प्रति संख्या ३** । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१२$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{2}$" । दशा– अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१७०३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन कृष्णा ८, सं० १८९२ ।

१३४२. **पार्श्वनाथ स्तोत्र सटीक–× । टीकाकार–पद्मप्रभ देव** । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१६१० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३४३. **पार्श्वनाथ स्तवन सटीक—पद्मप्रभ सूरि** । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०$\frac{1}{8}$"×४" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या– २३२१ । । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नोट—इसी पत्र के पीछे की ओर सोमसेनगणि विरचित पार्श्वनाथ स्तोत्र भी है।

१३४४. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–११"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्ण क्षीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२०६१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१३४५. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१३२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१३४६. पार्श्वनाथ स्तुति—×। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–८$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२५७६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१३४७. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–२ आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२६३५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–चैत्र शुक्ला १२, सं० १७२६।

१३४८. पाशा केवली—×। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–१७२६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–मंगसिर कृष्णा १०, सं० १६५२।

१३४९. पुष्पांजली पूजा—×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–८$\frac{1}{4}$"×५$\frac{1}{4}$" दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२४४८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ५, सं० १९०६।

१३५०. पूजासारसमुच्चय—संग्रहीत। देशी कागज। पत्र संख्या–८७। आकार–११"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२५०६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला ११, बृहस्पतिवार, सं० १५१८।

१३५१. पूजा संग्रह—×। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश एवं संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२८३१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला ७, बृहस्पतिवार, सं० १७०४।

विशेष—इस ग्रन्थ में देव पूजा, सिद्धों की जयमाल व पूजा, सौलह कारण पूजा व जयमाल, दशलक्षण पूजा व जयमाल श्री भाव शर्मा कृत और अन्त में नन्दीश्वर पूजा व जयमाल है।

१३५२. प्रतिक्रमण—×। देशी कागज। पत्र संख्या–२३। आकार–११$\frac{1}{4}$"×५"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२३९४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१३५३. प्रतिक्रमण—×। देशी कागज। पत्र संख्या–११। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और प्राकृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२९२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १४, सं १६८१।

१३५४. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१६। आकार–१०"×५$\frac{1}{2}$"।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२५०७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१३५५. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार १०"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२८२६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१३५६. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–१६ । आकार–१०$\frac{1}{4}$"×५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२४६७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

१३५७. प्रतिक्रमण (समाचारी सटीक)—जिनवल्लभ गणि । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४" । दशा–अति जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एवं हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७६३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१३५८. प्रतिष्ठासारसंग्रह —वसुनंदि । देशी कागज । पत्र संख्या–२६ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२५२७ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–श्रावण कृष्णा १५, सं० १५१६ ।

१३५९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–३१ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२४७० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ३, सं० १५६५ ।

१३६०. पंचकल्याणक पूजा—× । देशी कागज । पत्र संख्या–२३ । आकार–६$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत व प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२८०८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१३६१. पंचपरमेष्ठी स्तोत्र—जिनप्रभ सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या–२४ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२७६० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–माघ शुक्ला ६, बुधवार, सं० १८५२ ।

१३६२. पंचमेरु पूजा—श्रीकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–६$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–१६३२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–भाद्र पद कृष्णा २, सं० १८२७ ।

१३६३. पंचमी व्रतोद्यापन पूजा—ताराचन्द श्रावक । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६१५ । रचनाकाल–चैत्र शुक्ला ५, सं० १८०२ । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ६, सं० १८६२ ।

१३६४. बड़ा स्तवन—अश्वसेन । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–७$\frac{3}{4}$"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१३३६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१३६५. बाला त्रिपूरा पद्धति—श्रीराम । देशी कागज । पत्र संख्या–२० । आकार–८$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२५७४ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–मंगसिर कृष्णा ६, शुक्रवार, सं० १६६३ ।

१३६६. भक्तामर स्तोत्र—मानतुगांचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०$\frac{1}{8}$"×४$\frac{1}{8}$"। दशा–अति जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२०००। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

नोट—श्लोक संख्या ४४ हैं।

१३६७. प्रति संख्या २। देशी काजग। पत्र संख्या–३। आकार–१०"×४"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१४६७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १५, सं० १८१४।

नोट—श्लोक संख्या ४४ हैं।

१३६८. प्रति संख्या—३। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२०३३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–श्रावण कृष्णा २, सोमवार, सं० १६७८।

नोट—श्लोक संख्या ४४ हैं।

१३६९. भक्तामर स्तोत्र—मानतुंगाचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–११"×४$\frac{3}{8}$"। दशा–अति जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२०४८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

नोट—श्लोक संख्या ४८ हैं।

१३७०. प्रतिसंख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–८$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{8}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२२८५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१३७१. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–११"×४$\frac{3}{8}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१३८२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

नोट—श्लोक संख्या–४८ हैं।

१३७२. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–९$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{8}$"। दशा–जीर्ण। ग्रन्थ संख्या–१४६८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

नोट—श्लोक संख्या ४४ हैं।

१३७३. प्रति संख्या ५। देशी कागज। पत्र संख्या–९। आकार–९$\frac{3}{8}$"×४$\frac{1}{8}$"। दशा–अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१४६५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

नोट—श्लोक संख्या ४४ हैं।

१३७४. प्रति संख्या ६। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–११$\frac{3}{8}$"×५$\frac{1}{8}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१६५३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १८२३।

१३७५. प्रति संख्या ७। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–८"×६"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१६१३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

नोट—श्लोक संख्या ४८ हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३७६. प्रति संख्या ८। देशी कागज । पत्र संख्या–१२। आकार–१०½"×४½"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२३७७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१३७७. भक्तामर स्तोत्र वृत्ति– ×। देशी कागज। पत्र संख्या–२७। आकार–१०¾"×५⅞"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२४००। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ८, सं० १८६६।

विशेष—ग्रन्थ की लिपि भौपाल में की गई।

१३७८. भक्तामर स्तोत्र (सटीक)—नथमल और लालचन्द। देशी कागज। पत्र संख्या–४३। आकार–११¾"×५¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत व हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२२६६। टीकाकाल–ज्येष्ठ शुक्ला १०, बुधवार, सं० १८२६। लिपिकाल–पौष कृष्णा ११, मंगलवार, सं० १९५०।

टिप्पणी—रायमल्लजी की टीका को देख करके हिन्दी टीका की गई प्रतीत होती है।

१३७९. भक्तामर भाषा—पं० हेमराज। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०"×४½"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१६९०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१३८०. भक्तामर स्तोत्र वृत्ति—मानतुंगाचार्य। वृत्तिकार—रत्नचन्द्र मुनि। देशी कागज। पत्र संख्या–३१। आकार–११"×४½"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१५६९। टीकाकाल–आषाढ़ शुक्ला ५, बुधवार, सं० १६६७। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ८, रविवार, सं० १७११।

१३८१. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–३३। आकार–१०½"×४¾"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१३८७। रचनाकाल– ×। टीकाकाल–आषाढ़ शुक्ला ५, बुधवार, सं० १६६७। लिपिकाल–पौष शुक्ला १, सं० १७७०।

१३८२. भक्तामर (सटीक)—मानतुंगाचार्य। टीका– ×। देशी कागज। पत्र संख्या–१५। आकार–११"×५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७१४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१३८३. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१०"×४"। दशा–जीर्णक्षीण। अपूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१६८६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

नोट—ग्रन्थ की केवल ३२ श्लोकों में ही समाप्ति की गई है।

१३८४. भक्तामर स्तोत्र (सटीक)—मानतुंगाचार्य। टीका—अमरप्रभ सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–१०⅛"×४"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या—१६८९। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१३८५. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–९। आकार–१०⅛"×४½"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१९६५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१३८६. भक्तामर तथा सिद्धप्रिय स्तोत्र— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–१०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आकार–९½"×४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४३९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१३८७. भारती स्तोत्र—शंकराचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१२½"×५¾" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२५१९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१३८८. भुवनेश्वरी स्तोत्र—पृथ्वीधराचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–११¾"×५¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२५१० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१३८९. भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र—पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार–१०¾"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२८०० । रचनाकाल— × । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा २, सं० १७०४ ।

विशेष—इसी ग्रन्थ में वादिराज कृत एकीभाव स्तोत्र तथा अकलंकाष्टक भी है ।

१३९०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१०" × ४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०२६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ६, सं० १६७५ ।

१३९१. भूपाल चतुर्विंशतिस्तोत्र (सटीक)—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–१२½"×५¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१९९३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ५, बृहस्पतिवार, सं० १७९९ ।

१३९२. मंगलपाठ—× । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१०"×४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६०४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१३९३. महर्षि स्तवन—पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०½"×४¾" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२०३२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१३९४. महालक्ष्मी कवच–× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–९¾"×५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१९०३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१३९५. महालक्ष्मी स्तोत्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–८½"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भापा– संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१७३८ । रचनाकाल × । लिपिकाल– × ।

१३९६. महिम्नस्तोत्र (सटीक)–अमोघ पुष्पदन्त । टीका–ललिताशंकर । देशी कागज । पत्र संख्या–१७ । आकार–१२"×५½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१७२७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–सं० १७९९ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३९७. महिम्नस्तोत्र—अमोघ पुष्पदन्त। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–८$\frac{3}{4}$"×४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१३०९। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा २, सं० १८५८।

१३९८. मुक्तावली पूजा—×। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२४०७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१३९९. यमाष्टकस्तोत्र सटीक —×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२०१६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४००. रत्नत्रय पूजा—। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–११"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–१९३३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा ७, सं० १८२६।

१४०१. रत्नत्रय पूजा— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–११"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२२५५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४०२. रामचन्द्र स्तवन—सनतकुमार। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–१०"×५"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२०९७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

अन्तभाग—

श्रीसनतकुमारसंहितायां नारदोक्तं श्रीरामचन्द्रस्तवराज संपूरणम् ॥

विशेष—यह वैष्णव ग्रन्थ है।

१४०३. लघु प्रतिक्रमण— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–१४। आकार–११"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२४३४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४०४. लघु शान्ति पाठ—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–९$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१६४२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४०५. लघु सहस्त्र नाम स्तोत्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२६६०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४०६. लघु स्तवन (सटीक)—श्री सोमनाथ। टीकाकार—मुनि नन्दगुण क्षोणी। देशी कागज। पत्र संख्या–१६। आकार–८$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१६०७। टीकाकाल—सं० १३६७। लिपिकाल–वैशाख शुक्ला १५, सं० १६२२।

१४०७. लघुस्वयंभू स्तोत्र—देवनंदि। देशी कागज। पत्र संख्या–१३। आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१३८३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–आषाढ़ शुक्ला ४, सं० १७१४।

१४०८. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–११$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{2}$"। दशा–अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७४६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १८२०।

१४०९. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१६७३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४१०. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–११$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२४३८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा १४, सोमवार, सं० १८३८।

१४११. प्रति संख्या ५। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१२"×५$\frac{3}{4}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२०६२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ४, सं० १८१७।

१४१२. लघु स्वयंभू स्तोत्र (सटीक)—देवनंदि। टीका— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–११$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{4}$"। दशा–अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१७४७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ६, बृहस्पतिवार, सं० १८२०।

१४१३. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५७५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४१४. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–६"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५३७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ८, सं० १८२७।

१४१५. लब्धिविधान पूजा—ब्र० हर्षकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–११। आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२६५८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–वैशाख कृष्णा १३, सं० १६४३।

१४१६. वर्द्धमान जिन स्तवन—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–७$\frac{1}{2}$"×३"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२८१२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४१७. वर्द्धमान जिन स्तवन (सटीक)—पं० कनककुशल गणि। देशी कागज। पत्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संख्या–१ । आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५६४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–सं० १६५३ ।

१४१८. वन्देतान की जयमाल—माघनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२१३५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–पौष शुक्ला १०, बृहस्पतिवार, सं० १६८२ ।

विशेष—सं० १६८३ वैशाख कृष्णा ६, को ब्रह्मगोपाल ने शोधित किया है ।

१४१९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०$\frac{3}{4}$" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२३६५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४२०. वृहतप्रतिक्रमण (सार्थ)— × । देशी कागज । पत्र संख्या–४५ । आकार–१३"×६" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२७५४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा ३, रविवार, सं० १८५८ ।

१४२१. वृहतशान्ति पाठ— × । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–९$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२५५८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४२२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०$\frac{1}{4}$" × ४"$\frac{1}{2}$ । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२५५९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४२३. वृहदस्वयंभू स्तोत्र (सटीक)—समन्तभद्राचार्य । टीकाकार—प्रभाचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–१३८ । आकार–१२$\frac{1}{2}$"×६$\frac{1}{2}$" । दशा–अति जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–१३४३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा ५, रविवार, सं० १७८८ ।

१४२४. वृहदषोडषकारण पूजा — × । देशी कागज । पत्र संख्या–२८ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा —जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२९३१ । रचनाकाल — × । लिपिकाल— × ।

१४२५. वृहत्प्रतिकमण— × । देशी कागज । पत्र संख्या — ६१ । आकार–११$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–११५१ । रचनाकाल— × । लिपिकाल–पौष शुक्ला ८, बृहस्पतिवार, सं० १४९८ ।

१४२६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१४ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४५३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४२७ विधान व कथा संग्रह - × । देशी कागज । पत्र संख्या–१९६ । आकार–११$\frac{1}{4}$"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत, अपभ्रंश और संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–वृत, विधान एवं कथा । ग्रन्थ संख्या–१०२६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४२८. विनती संग्रह—पं० भूधरदासजी। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–६$\frac{1}{2}$"×५$\frac{3}{4}$"। दशा- अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२७५८। रचनाकाल— ×। लिपिकाल– ×।

१४२९. विमलनाथ स्तवन—विनीत सागर। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–८$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२७८६। रचनाकाल–अश्विन शुक्ला ६, सं० १७८८। लिपिकाल– ×।

विशेष—इस ग्रन्थ में पार्श्वनाथ, आदीश्वर, चौवीस तीर्थंकर, सम्मेद शिखरजी, बारह मासा आदि सिद्धचक्र स्तवन भी है।

१४३०. विषापहार स्तोत्र—धनंजय। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–८$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१८७५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा १०, सं० १८७०।

१४३१. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–११"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२७६७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४३२. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–११"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२७२७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १, सं० १६८२।

१४३३. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार—१०"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२०४१। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४३४. प्रति संख्या ५। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–१०" × ४$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या- २०२५। रचनाकाल— ×। लिपिकाल– ×।

१४३५. विषापहार स्तोत्रादि टीका— ×। टीकाकार–नागचन्द्र सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–२४। आकार–९$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१००४। रचनाकाल— ×। लिपिकाल– ×।

नोट—श्री पं० मोहन ने स्वात्मपठनार्थ लिपि की है। इस ग्रन्थ में श्री देवनंदि कृत सिद्धप्रियै व वादिराज उपनाम वर्द्धमान मूनीश्वर रचित एकीभाव स्तोत्र तथा महापण्डित आशाधर कृत "जिनस्तुति' और अन्त में श्री धनंजय कृत विषापहार आदि स्तोत्रों की टीका नागचन्द्र सूरि ने इसमें की है।

आदिभाग—

वंदित्वा सद्गुरुन् पंचज्ञानभूषणहेतवः
व्याख्या विषापहारस्य नागचन्द्रेण कथ्यते ॥१॥

अन्तभाग—

इयमर्हन्मतक्षीरपारावारपार्वणशशांकस्य मूलसंघदेशीगण पुस्तकगच्छप-नशोकावलीतिलकालंकारस्य तौलवदेशविदेश पवित्रीकरण प्रवण श्रीमल्ललितकीर्तिभ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ट्टारकस्याग्रशिष्य गुणवद्राणपोषण—सकलशास्त्राध्ययन प्रतिष्ठायात्राद्युपदेशाग्नून धर्मप्रभावनाधुरीण — देवचन्द्रमूनीन्द्रचरणनखकिरण चन्द्रिका — चकोरायमाणेन करणाय विप्रकुलोत्तंस श्रीवत्सगोत्रपवित्र पार्श्वनाथंगुमटाम्बातनूजेन प्रवादिग-जकेशरिणा नागचन्द्रसूरिणा विषापहारस्तोत्रस्य कृतव्याख्या कल्पान्तं तत्वबोधायेति भद्रम् । इति विषापहारस्तोत्र-टीका समाप्त ।

१४३६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—२३ । आकार-१०"×४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२६६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला १२, सं० १८६८ ।

१४३७. विषापहार विलाप स्तवन—वादिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार-९$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२००७ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१४३८. शनि, गौतम और पार्श्वनाथ स्तवन-संग्रह-×। देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार-८$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी और संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या २३१८ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-आषाढ़ शुक्ला १२, सं० १८६२ ।

टिप्पणी—शनि स्तवन वि० सं० १८६२ आषाढ़ शुक्ला ११, को लिखा गया । गौतम स्तवन के कर्ता लालूराम हैं । पार्श्वनाथ स्तोत्र के कर्ता श्री समयसुन्दर हैं ।

१४३९. शनिश्चर स्तोत्र—दशरथ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार-८$\frac{3}{4}$"× ४$\frac{1}{4}$" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२७६८ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१४४०. शारदा स्तवन—हीर । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-१०"× ४$\frac{1}{4}$" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१४४५ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१४४१. शिव पच्चीसी व ध्यान बत्तीसी—बनारसीदास । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । आकार-१०"×४$\frac{1}{4}$" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१९३५ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१४४२. शिव स्तोत्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार-८"×४$\frac{1}{2}$" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१९२४ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-पौष शुक्ला ११, सं० १६८० ।

१४४३. शीतलाष्टक—× । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-११"×४$\frac{1}{4}$" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१५५४ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नोट—नवग्रह मंत्र तथा शीतला देवी स्तोत्र है।

१४४४. शोभन स्तोत्र—केशरलाल। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–१०१/४″×४१/४″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२४३६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४४५. षोडषकारण जयमाल—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१०। आकार–१२१/२″×५१/२″। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश और संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२३८४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४४६. षोडषकारण पूजा—×। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१०″×४१/२″। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२४१०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला ५, सं० १७०६।

१४४७. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–१०″ × ४१/२″। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२७२६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१४४८. सन्ध्या वन्दन —×। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–१०१/२″×६१/२″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१६४७। रचनाकाल–×। लिपिकाल– ×।

१४४९. समन्तभद्र स्तोत्र – ×। देशी कागज। पत्र संख्या–२२। आकार–११″×४३/४″। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२७५६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–भाद्रपद कृष्णा १४, सं० १६७६।

१४५० समवशरण स्तोत्र—विष्णु शोभन (सेन)। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–११″×४३/४″। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२३५१। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

टिप्पणी—श्वेताम्वर आम्नायानुसार वर्णन है।

१४५१. समवशरण स्तोत्र—धनदेव। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–१११/४″×५१/४″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–२६५६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ११, रविवार, सं०१६४८।

१४५२. समाधि शतक—पूज्यपाद स्वामी। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–१०१/२″ × ४३/४″। दशा–अनिजीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१९६२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४५३. सम्मेद शिखरजी पूजा—मंतदेव। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–११″×५१/४″। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१५०६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४५४. सम्मेद शिखर पूजा— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–९″×

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–२५५४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४५५. **सम्मेद शिखर महात्म्य—धर्मदास क्षुल्लक ।** देशी कागज । पत्र संख्या–८ । आकार–६$\frac{3}{4}$" × ६$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (गद्य पद्य मिश्रित) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६३६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–पौष शुक्ला ११, सं० १६४२ ।

१४५६. **सम्मेद शिखर विधान—हीरालाल ।** देशी कागज । पत्र संख्या–१८ । आकार–६"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८७३ । रचनाकाल–वैशाख कृष्णा ६, शुक्रवार, सं० १६८१ । लिपिकाल–× ।

१४५५. **सरस्वती स्तोत्र—पं० आशाधर ।** देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०"×५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२१४८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४५८. **सरस्वती स्तोत्र (सार्थ)—× ।** देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२०८८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४५६, **सरस्वती स्तोत्र—पं० बनारसीदास ।** देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२६२६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४६०. **सरस्वती स्तोत्र—बृहस्पति ।** देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा– संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२०३५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

टिप्पणी—सरस्वती का रंगीन चित्र है, जिसमें सरस्वती हंस पर बैठी हुई है । इसको पं० भाग्य समुद्र के पठन के लिए लिखा गया बताया गया है ।

१४६१. **सरस्वती स्तोत्र—× ।** देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–८$\frac{1}{2}$"×४" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२८१७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४६२. **सरस्वती स्तोत्र—श्री ब्रह्मा ।** देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार—१०$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{4}$" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८१६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१४६३. **प्रति संख्या २ ।** देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–६"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१०२३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला १३, शनिवार, सं० १६०६ ।

१४६४. **प्रति संख्या ३ ।** देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–११$\frac{1}{2}$" × ६$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१८२८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–सं० १६४८ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४६५. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या- २। आकार-९$\frac{3}{4}$"×६$\frac{1}{4}$"। दशा-अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-१६१९। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१४६६. प्रति संख्या ५। देशी कागज। पत्र संख्या-१। आकार-८$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा-अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-१६४३। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१४६७. सरस्वती स्तोत्र—विष्णु। देशी कागज। पत्र संख्या-२। आकार-६"×३$\frac{1}{4}$"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या-१८४०। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१४६८. सरस्वती स्तोत्र—नागचन्द्र मुनि। देशी कागज। पत्र संख्या-२। आकार-९" × ४$\frac{1}{2}$"। दशा-अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या-१९१५। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१४६९. सर्वतीर्थमाला स्तोत्र— ×। देशी कागज। पत्र संख्या-१। आकार-१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा-अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या-२१४३। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१४७०. सहस्त्र नाम स्तोत्र—पं० आशाधर। देशी कागज। पत्र संख्या-१३। आकार-११"×४$\frac{3}{4}$"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या-२३६४। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१४७१. सहस्त्र नाम स्तवन - जिनसेनाचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या-१७। आकार-१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१०३०। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१४७२. स्तम्भन पार्श्वनाथ स्तोत्र—नयचन्द्र सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या-१। आकार-९$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा-जीर्ण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१८९३। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१४७३. स्तोत्र संग्रह—संग्रहीत। देशी कागज। पत्र संख्या-१। आकार-१०"×४$\frac{1}{4}$"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या-२४५८। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

टिप्पणी—चतुर्विंशति स्तोत्र, चन्द्रप्रभ स्तोत्र, चौबीस जिन स्तोत्र, पार्श्वनाथ स्तोत्र, शान्ति जिन स्तोत्र, महावीर स्तोत्र और घण्टा कर्ण मंत्रादि हैं।

१४७४. स्वर्णाकर्षण भैरव पद्धति विधि व स्तोत्र- ×। देशी कागज। पत्र संख्या-४। आकार-१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१९०५। रचनाकाल- ×। लिपिकाल-द्वितीय फाल्गुन कृष्णा ६, सं० १९२२।

१४७५. साधु वन्दना—बनारसीदास। देशी कागज। पत्र संख्या-१। आकार-८$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{4}$"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-हिन्दी (पद्य)। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१५०३। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varaṇasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४७६: साधु वन्दना--पार्श्वचन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या-६। आकार-१०" × ३$\frac{३}{४}$"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-पूजा। ग्रन्थ संख्या-२०१४। रचनाकाल- ×। लिपिकाल-वैशाख कृष्णा १, सं० १७७६।

विशेष—अन्तिम पत्र पर वर्तमान काल के २४ तीर्थंकरों के नाम तथा सोलह सतीयों के नाम भी हैं।

१४७७. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या-७। आकार-१०$\frac{१}{२}$"×४$\frac{३}{४}$"। दशा-अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-२७३३। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१४७८. साधु वन्दना—समयसुन्दर गणि। देशी कागज। पत्र संख्या-१९। (१८वां पत्र नहीं है)। आकार-१०$\frac{१}{४}$"×४$\frac{१}{२}$"। दशा-अतिजीर्णक्षीण। अपूर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि-नागरी। विषय-पूजा। ग्रन्थ संख्या-२५३०। रचनाकाल-चैत्र मास सं० १६६७ में अहमदाबाद में। लिपिकाल- ×।

१४७९. साधारण जिनस्तवन (सटीक)—जयनन्द सूरि। टीकाकार—पं० कनक कुशल गणि। देशी कागज। पत्र संख्या-३। आकार- १०$\frac{१}{४}$"×४$\frac{१}{४}$"। दशा-प्राचीन। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या-२५६३। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

टिप्पणी—ग्रन्थ की रचना इन्द्रवज्रा छन्द में की गई है।

१४८०. सामयिक पाठ—×। देशी कागज। पत्र संख्या-२०। आकार-१०"×४$\frac{१}{२}$"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-प्राकृत और संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-११५२। रचनाकाल- ×। लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला ५, सं० १६७६।

१४८१. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या-१९। आकार-१०$\frac{१}{४}$"×४$\frac{३}{४}$"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-१३८१। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१४८२. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या-२६। आकार-११$\frac{१}{४}$"×४"। दशा-अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-१३४७। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१४८३. सामायिक पाठ—। देशी कागज। पत्र संख्या-१०। आकार-११"×५"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-प्राकृत। लिपि-नागरी। विषय-पूजा। ग्रन्थ संख्या-२४३०। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१४८४. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या-६। आकार-१०"×४$\frac{१}{२}$"। दशा-प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-२७५३। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१४८५. सामायिक पाठ—×। देशी कागज। पत्र संख्या-८। आकार-१२$\frac{३}{४}$"×६"। दशा-प्राचीन। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-पूजा। ग्रन्थ संख्या-२०८०। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४८६. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–११। आकार–१०½"×४½"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२०५४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४८७. सामायिक पाठ सटिक— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–१२"×६" दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२७७४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–सं० १७३६।

१४८८. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–१०"×४¼"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२८१८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४८९. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–१४। आकार–१२½"×६"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१२१। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४९०. सामयिक पाठ (सटीक)—×। टीका—×। देशी कागज। पत्र संख्या–४२। आकार–११½"×५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७७९। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४९१. सामायिक पाठ तथा तीन चौबीस नाम—×। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–११½"×५½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१६५२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४९२. सिद्धचक्र पूजा—शुभचन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या–४५। आकार–१०¼"×४½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१५८४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४९३. सिद्धचक पूजा—श्रुतसागर सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–१५। आकार–११"×४¾"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२०३८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४९४. सिद्धचक्र पूजा—पं० आशाधर। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–११¼"×४¾"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२३६७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४९५. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–६½"×४¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२२४४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–मंगसिर कृष्णा ६, सं० १८८६।

१४९६. सिद्धप्रिय स्तोत्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–९¾"×४¼"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१५६०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१४९७, सिद्ध प्रिय स्तोत्र (सटीक)—देवनन्दि। टीकाकार—सहस्त्रकीर्ति। पत्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संख्या–१४। आकार–८$\frac{१}{२}$"×४$\frac{१}{२}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१६६५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१४९८. सिद्ध सारस्वत मन्त्र गर्भित स्तोत्र—अनुभूति स्वरूपाचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०$\frac{३}{४}$"×५$\frac{१}{४}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१८२२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१४९९. सिद्धान्त बिन्दु स्तोत्र—शंकराचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार–१०$\frac{१}{४}$"×४$\frac{३}{४}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१९४९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१५००. सूर्योदय स्तोत्र—पं० कृष्ण ऋषि। देशी कागज। पत्र संख्या–१३। आकार–८$\frac{१}{४}$"×३$\frac{३}{४}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१८३४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–वैशाख शुक्ला ५, सं० १८११।

१५०१. शृंखला बद्ध श्री जिन चतुर्विंशति स्तोत्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–९$\frac{१}{४}$"×४$\frac{३}{४}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१९५०। रचनाकाल–×। लिपिकाल—×।

१५०२. श्रावक प्रतिक्रमण—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१३। आकार–१०$\frac{१}{४}$"×६$\frac{१}{४}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१६००। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१५०३. श्रीपाल स्तोत्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–११$\frac{१}{४}$"×४$\frac{३}{४}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या–१४७२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१५०४. श्रुत स्कन्ध पूजन भाषा—हेमचन्द्र ब्रह्मचारी। भाषाकार—पं० बिरधी चन्द। देशी कागज। पत्र संख्या–१५। दशा–अच्छी। आकार–१२$\frac{१}{२}$×५$\frac{१}{२}$"। पूर्ण। भाषा–संस्कृत व हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२६६६। भाषाकाल–फाल्गुन कृष्णा ५, सोमवार, सं० १९०५। लिपिकाल–×।

१५०५. क्षेत्रपाल पूजा—शान्तिदास। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१०"×४$\frac{३}{४}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–पूजा। ग्रन्थ संख्या–२३९९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१५०६. त्राताष्टक—×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–९$\frac{१}{४}$"×४$\frac{१}{४}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१४९०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १३, सं० १७०९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५०७. ज्ञानांकुश स्तोत्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या—२। आकार—६$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{2}$"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत एवं हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या—२४८६। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

विशेष—ग्रन्थ के अन्त में पं० द्यानतरायजी कृत पार्श्वनाथ स्तोत्र है।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय—मन्त्र एवं यन्त्र

१५०८. अनादि मूल मन्त्र ×। देशी कागज। पत्र संख्या –१। आकार–६"×२½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। विषय–मन्त्र शास्त्र। ग्रन्थ सख्या–१३२६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१५०९. अर्घ काण्ड यन्त्र—×। वस्त्र पर। पत्र संख्या–१। आकार— २६"×२६" दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत व संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय यन्त्र। ग्रन्थ संख्या–२८११। रचनाकाल–×।

१५१० उच्छिष्ट गणपति पद्धति —×। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार— १०"×५¾"। दशा अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–मन्त्र शास्त्र। ग्रन्थ संख्या–१८८५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ३ सं० १९२२।

१५११. ऋषि मण्डल यन्त्र —×। वस्त्र पर। पत्र संख्या–१। आकार–१२¾"× १२¾"। दशा–अच्छी। अपूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–यन्त्र। रचनाकाल–×।

विशेष--वस्त्र पर यन्त्र के पुरे कोठे भरे हुए नहीं हैं।

१५१२. ऋषि मण्डल यन्त्र—×। वस्त्र पर। पत्र संख्या–१। आकार–२१"×२१" दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–यन्त्र। ग्रन्थ संख्या–२२०७। रचना काल–×।

टिप्पणी--वस्त्र कट जाने से छिद्र हो गये हैं।

१५१३. ऋषि मण्डल व पार्श्वनाथ चिन्तामणि बड़ा यन्त्र—×। वस्त्र पर। पत्र संख्या–१। आकार–४३½"× २१½"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–यन्त्र। ग्रन्थ संख्या–२२२३। रचनाकाल–×।

टिप्पणी—ऋषि मण्डल व चिन्तामणि दोनों यन्त्र एक ही कपड़े पर बने हुए हैं।

१५१४. कर्म दहन मण्डल यन्त्र –×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार— २२"×१८½"। दशा–अच्छी। अपूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–यन्त्र। ग्रन्थ संख्या–२२१०। रचनाकाल–अश्विन शुक्ला १, मंगलवार, सं० १८४५, महाराष्ट्र नगर में रचना की गई।

विशेष--कागज पर यन्त्र बनाकर कपड़े पर न फटने के लिए चिपका दिया गया है।

१५१५. कलश स्थापना मन्त्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार– ११"×५"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–मन्त्र शास्त्र। ग्रन्थ संख्या–२७८२। रचनाकाल—×। लिपिकाल–×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५१६. गणधर वलय यन्त्र—×। वस्त्र पर । पत्र संख्या–१ । आकार–१३½"×१३½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-यन्त्र । ग्रन्थ संख्या–२२०४ । रचनाकाल–भाद्रपद शुक्ला १५, बृहस्पतिवार सं० १७८६ ।

१५१७. गाथा यन्त्र–× । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०½"×४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ संख्या–२४२६ । रचना काल–× । लिपिकाल–× ।

१५१८. गुण स्थान चरचा—× । वस्त्र पर । पत्र संख्या–१ । आकार–२४¼"×१५¼" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–प्राकृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२२२५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× ।

विशेष—कपड़े पर गुण स्थानों का पूर्ण विवरण दिया गया है ।

१५१९. चिन्तामणि पार्श्वनाथ यन्त्र—× । वस्त्र पर । पत्र संख्या–१ । आकार–१८"½×१८½" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ संख्या–२२१७ । रचनाकाल–× ।

विशेष—कपड़े पर चिन्तामणि पार्श्वनाथ का रंगीन यन्त्र है ।

१५२०. ज्वालामालिनी यन्त्र—× । वस्त्र पर । पत्र संख्या–१ । आकार–१७½"×१७½" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ संख्या–२२१८ रचनाकाल–× ।

१५२१. दशलक्षण धर्म यन्त्र–× । वस्त्र पर । पत्र संख्या–१ । आकार–६½"×६½" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ संख्या–२२३० । रचना-काल–भाद्रपद शुक्ला ६, सं० १६१८ ।

विशेष—वस्त्र पर दशलक्षण धर्म यन्त्र बना हुआ है ।

१५२२. ध्यानावस्था विचार यन्त्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार—२४¾"×२४¾" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ संख्या –२२२६ । रचनाकाल–× ।

टिप्पणी—इस यन्त्र में माला फेरते समय ध्यानावस्था के विचारों को बताया गया है । इसी यन्त्र में रत्न त्रय के तीन कोठे हैं, दूसरे चक्र में दशलक्षण धर्मों का वर्णन, तीसरे में चौबीस तीर्थङ्करों के तथा अन्तिम वलय में १०८खा ने हैं। उनमें कृत, कारित, अनुमोदना पूर्वक क्रोध, मान, माया और लोभ के त्याग का ध्यानावस्था में विचार करने का वर्णन है ।

१५२३. नवकार महामन्त्र कल्प—× । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०"×४¾"दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–मन्त्र । ग्रन्थ संख्या–२८३६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५२४. नवकार रास—जिनदास श्रावक। देशी कागज । पत्र संख्या–२। आकार–१०"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–मन्त्र। ग्रन्थ संख्या–१७५४। रचनाकाल–×। लिपिकाल– ×।

१५२५. पद्मावती देवी यन्त्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–२१$\frac{1}{2}$"×१६"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–यन्त्र। ग्रन्थ संख्या–२२३७। रचनाकाल–×। लिपिकाल– ×।

१५२६. परमेष्ठी मन्त्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–११"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–मन्त्र। ग्रन्थ संख्या—१४६७। रचनाकाल–×। लिपिकाल– ×।

१५२७. पंच परमेष्ठीमण्डल यन्त्र—×। वस्त्र पर। पत्र संख्या–१। आकार–२१$\frac{1}{2}$"×१८$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–यन्त्र। ग्रन्थ संख्या–२२०६। रचनाकाल–अश्विन शुक्ला १, मंगलवार सं० १८४५।

१५२८. भैरव पताका यन्त्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–२५"×२०$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–यन्त्र। ग्रन्थ संख्या–२२३६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१५२९. भैरव पद्मावती कल्प—मल्लिषेण सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–३६। आकार—११$\frac{1}{4}$"×५$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–मन्त्र। ग्रन्थ संख्या–२७५२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१५३०. वृहत्षोड्ष कारण यन्त्र—×। वस्त्र पर। पत्र संख्या–१। आकार–२६$\frac{1}{2}$"×२६$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–यन्त्र। ग्रन्थ संख्या–२२१४। रचनाकाल–×।

विशेष—कपडे पर रंगीन चित्र है, जिसमें १६८ कोठे बने हुए हैं।

१५३१. वृहद् सिद्धचक्र यन्त्र—×। वस्त्र पर। पत्र संख्या–१। आकार–२५$\frac{1}{2}$"×२५$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–यन्त्र। ग्रन्थ संख्या–२२१६। रचनाकाल–×।

१५३२. विजयपताका मन्त्र—×। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–११"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–मन्त्र। ग्रन्थसंख्या–१५५६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१५३३. विजयपताका यन्त्र— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–६"×५$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–यन्त्र। ग्रन्थ संख्या–२२३६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५३४. शान्ति चक्र मण्डल—× । वस्त्र पर । पत्र संख्या–१ । आकार–९$\frac{3}{8}$" × ८$\frac{3}{8}$" दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ संख्या–२२२७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा २, सं० १८०१ ।

१५३५. शिवार्चन चन्द्रिका—श्रीनिवास भट्ट । देशी कागज । पत्र संख्या ४ । आकार–११" × ५" दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–मन्त्र शास्त्र । ग्रन्थ संख्या–१८८७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५३६. षट्कोण यन्त्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–७" × ५$\frac{1}{8}$" । दशा–अच्छी । अपूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ संख्या–२२३४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट— कपड़े पर षट्कोण का अपूर्ण यन्त्र बना हुआ है ।

१५३७. सम्यक चरित्र यन्त्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–६" × ५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ संख्या–२२३३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५३८. सम्यग्दर्शन यन्त्र—× । वस्त्र पर । पत्र संख्या–१ । आकार–५$\frac{1}{2}$" × ५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ संख्या–२२३२ । रचनाकाल– × ।

१५३९. सम्यग्दर्शन यन्त्र—× । वस्त्र पर । पत्र संख्या–१ । आकार–५$\frac{1}{8}$" × ५" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ संख्या–२२३१ । रचनाकाल– × ।

१५४०. स्वर्णाकर्षण भैरव—× । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०" × ४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–मन्त्र शास्त्र । ग्रन्थ संख्या–१९०४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ३, सं० १९२३ ।

१५४१. हमल वजूं यन्त्र—× । वस्त्र पर । पत्र संख्या–१ । आकार–१८" × १७" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–यन्त्र । ग्रन्थ सख्या–२२२२ । रचनाकाल– × ।

विशेष—यह यन्त्र श्वेताम्बराम्नायानुसार है । यन्त्र में सुनहरी काम है, वह अति सुन्दर लगता है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

योग शास्त्र

१५४२. योग शास्त्र—हेमचन्द्राचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या-४८। आकार-१०$\frac{1}{4}$"×४"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-योग। ग्रन्थ संख्या-१६७०। रचनाकाल- ×। लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला १४, सं० १६६०

१५४३. योगसार संग्रह—×। देशी कागज। पत्र संख्या-३५। आकार-११"×५$\frac{1}{4}$"। दशा-जीर्ण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-योग। ग्रन्थ संख्या-१५६३। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१५४४. योगसाधनविधि (सटीक)— गोरखनाथ। टीकाकार—रूपनाथ ज्योतिषी। देशी कागज। पत्र संख्या-२०। आकार-११"×५$\frac{3}{4}$"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। विषय-योग। ग्रन्थ संख्या-१७२२। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१५४५. योग ज्ञान —×। देशी कागज। पत्र संख्या-६। आकार-१०"×४$\frac{1}{4}$"। दशा-जीर्ण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-योग। ग्रन्थ संख्या-१४२३। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१५४६ प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या-७। आकार-१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा-जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-२०५७। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१५४७. हट प्रदीपिका आत्माराम योगीन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या-१५। आकार-६$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{2}$"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भापा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-योग। ग्रन्थ संख्या-१६४०।। रचनाकाल- ×। लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला १, सं० १८८०।

१५४८. ज्ञान तरंगिणी-मुमुक्षु भट्टारक ज्ञानभूषण। देशी कागज। पत्र संख्या-२७। आकार-११$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{4}$"। दशा-प्राचीन। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१८१७। रचनाकाल-सं० १५६०। लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला १२, सं० १८१८।

१५४९. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या-२८। आकार-६$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा-प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-१२७५। रचनाकाल-सं० १५६०। लिपिकाल-सं० १८५०।

१५५०. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या-१७। आकार-११$\frac{3}{4}$"×५"। दशा-अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-२४४१। रचनाकाल-सं० १५६०। लिपिकाल-माघ शुक्ला १२, सं० १७६२

१५५१. ज्ञानार्णव—शुभचन्द्रदेव। देशी कागज। पत्र संख्या-१४३। आकार-११$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{4}$"। दशा-अतिजीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२०५ । रचनाकाल—× । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ११, सोमवार, सं० १५०७ ।

टिप्पणी—पन्ने परस्पर चिपके हुए हैं ।

१५५२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–६८ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अति जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–११४७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ बुदी ३, शनिवार, सं० १५२३ ।

१५५३. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–२५१ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×६$\frac{1}{2}$" । दशा–सामान्य । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२६७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला १, बृहस्पतिवार, सं० १८४३ ।

१५५४. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–१३७ । आकार–१०$\frac{1}{4}$"×५" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२७६२ । रचनाकाल—× । लिपिकाल–माघ कृष्णा ४, सं० १६१२ ।

१५५५, ज्ञानार्णव गद्यटीका—श्रुतसागर । देशी कागज । पत्र संख्या– ११ । आकार–६$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२७६५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा १, शनिवार, सं० १७८० ।

१५५६. ज्ञानार्णव तत्व प्रकरण—× । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–११"×५" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६६५ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

विशेष—श्री शुभचन्द्राचार्य कृत ज्ञानार्णव के आधार पर हिन्दी में तत्व प्रकरण को लिखा गया है ।

१५५७. ज्ञानार्णव तत्व प्रकरण—× । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–११$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२१५२ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१५५८. ज्ञानार्णव वचनिका—पं० जयचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या–२७१ । आकार–११" × ७$\frac{3}{4}$" । दशा–बहुत अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत टीका हिन्दी में । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८०० । रचनाकाल–माघ शुक्ला ५, सं० १८६९ । लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ८, सं० १८७५ ।

विशेष—वचनिकाकार की विस्तृत प्रशस्ति है ।

१५५९ ज्ञानार्णव वचनिका—शुभचन्द्राचार्य । **टीकाकार—पं० जयचन्द छाबड़ा** । देशी कागज । पत्र संख्या–२ से ४० (प्रथम पत्र नहीं है) । आकार–१३$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । पूर्ण । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२८५३ । रचनाकाल– × ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

टीका रचनाकाल–माघ शुक्ला ५, बृहस्पतिवार, सं० १८१७। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ४, शनिवार, सं० १८६३।

१५६०. ज्ञानाकुंश–×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१०"×४$\frac{3}{8}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२४०१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा ७, सं० १८२०।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्याकरण शास्त्र

१५६१. अनिट कारिका—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–११"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–व्याकरण। ग्रन्थ संख्या–१४८७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१५६२ प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–१०"×४"। दशा–अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१४८८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१५६३. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–८$\frac{3}{4}$"×४"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१४८९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१५६४. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१५०। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१५६५. प्रति संख्या ५। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२६२८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १३, सं० १७१३।

१५६६. प्रति संख्या ६। देशी कागज। पत्र संख्या–१। आकार–११"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२६३३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१५६७. अनिट् कारिका (सार्थ)—×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–११"×५"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२७६७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१५६८. अनिट् सेट कारकष्टी—×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२००९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१५६९. अव्यय तथा उपसर्गार्थ—×। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–११$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–व्याकरण। ग्रन्थ संख्या–१६६४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१५७०. अव्यय दीपिका—×। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१२"×६"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२३०९। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं०१८२३।

१५७१. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–९$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२०८६। रचनाकाल–×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १०, सं० १८२१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५७२. अव्यय दीपिका वृत्ति—×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–१०½" × ४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२००८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१५७३. उपसर्ग शब्द—×। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार–१२"×६"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–व्याकरण। ग्रन्थ संख्या–१८८२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–सं० १९१४।

१५७४. कातन्त्र रूपमाला—शिव वर्मा। देशी कागज। पत्र संख्या–१०५। आकार–१२"×५"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२६८२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१५७५. कातन्त्र रूपमाला वृत्ति—भावसेन। देशी कागज। पत्र संख्या–६८। आकार–१०½"×४¾"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२३७८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१५७६. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१२८। आकार–११"×४¾"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२३७२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१५७७. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–२२। आकार–९¾"×४¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२६६२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ७, सोमवार, सं० १५२४।

१५७८. कारक परीक्षा—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१५। आकार–११½"×५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८३१। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१५७९. कारक विवरण—×। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–८¾"×४"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७४०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ४, सं०१८७३।

१५८०. क्रिया कलाप—विजयानन्द। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–१०"×४½"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१४५५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–सं० १७८४।

१५८१. धातु पाठ—हर्षकीर्ति सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–१४। आकार–११"×५"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२७५०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१५८२. धातु पाठ—हेमसिंह खण्डेलवाल। देशी कागज। पत्र संख्या–१३। आकार–१०" × ४½"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२०३१। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

विशेष—कर्ता ने अपना पूर्ण परिचय दिया है। यह रचना सारस्वत मतानुसार है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५८३. धातु रूपावली—×। देशी कागज। पत्र संख्या–२४। आकार–१२$\frac{१}{२}$"×५$\frac{३}{४}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८०८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१५८४. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–५४। आकार–११$\frac{१}{२}$"×४$\frac{१}{२}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–११८७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१५८५. पद संहिता—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१०। आकार–१०$\frac{१}{२}$"×५"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत और हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८३६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

नोट—परमहंस परिव्राजक अनुभूति स्वरूपाचार्य कृत सारस्वत प्रक्रिया के पद्यों का सरल हिन्दी में अनुवाद है।

१५८६. पाणिनीय सूत्र परिभाषा—व्याडि। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–१०" × ४$\frac{१}{४}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२५३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १, सं० १८४४।

१५८७. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–६$\frac{३}{४}$"×४$\frac{१}{४}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२३१२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल ×।

१५८८. पंच सन्धि शब्द ×। देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार–६"×४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२११६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१५८९. प्रक्रिया कौमुदी—रामचन्द्राश्रम। देशी कागज। पत्र संख्या–१७२। आकार–१२$\frac{१}{२}$"×४$\frac{३}{४}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२६६७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

नोट—द्वितीया वृत्ति है।

१५९०. प्रक्रिया कौमुदी—रामचन्द्राश्रम। देशी कागज। पत्र संख्या–५१। आकार–१२$\frac{१}{२}$"×४$\frac{३}{४}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२६६८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १, सं०१६५४।

नोट—तृतीया वृत्ति है।

१५९१. प्राकृत लक्षण—पं० चण्ड। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–१०$\frac{३}{४}$"×५"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१३३३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१५९२. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१४। आकार–११"×५$\frac{१}{४}$"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१४९२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१५९३. प्राकृत लक्षण विधान—कवि चण्ड। देशी कागज। पत्र संख्या–२०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आकार–१२$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, पैशाची, मागधी और सौरशेनी । लिपि–नागरी । विषय–व्याकरण । ग्रन्थ संख्या–१०४३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला १२, सं० १७३२ ।

१५९४. **लघु सारस्वत—कल्याण सरस्वती** । देशी कागज । पत्र संख्या–२२ । आकार–९$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–व्याकरण । ग्रन्थ संख्या–१९९० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–पौष कृष्णा २, सं० १८०७ ।

१५९५. **लघु सिद्धान्त कौमुदी—पाणिनी ऋषिराज** । देशी कागज । पत्र संख्या–९२ । आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$ । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–व्याकरण । ग्रन्थ संख्या–११९७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५९६. **वाक्य प्रकाश सूत्र सटीक—दामोदर** । देशी कागज । पत्र संख्या–११ । आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२३१४ । रचनाकाल–सं० १६०७ । लिपिकाल– × ।

नोट—ग्रन्थाग्रन्थ संख्या ६३२ है ।

१५९७. **वाक्य प्रकाशामिधस्य टीका— ×** । देशी कागज । पत्र संख्या–९ । आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४७१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५९८. **शब्द बोध– ×** । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–व्याकरण । ग्रन्थ संख्या–१७६० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१५९९. **शब्द भेद प्रकाश—महेश्वर कवि** । देशी कागज । पत्र संख्या–१७ आकार–१२"×५$\frac{1}{2}$ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–व्याकरण । ग्रन्थ संख्या–१९८५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६००. **शब्द रूपावली— ×** । देशी कागज । पत्र संख्या–११ । आकार–१२"×५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१८०७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६०१. **प्रति संख्या—२** । देशी कागज । पत्र संख्या–२० । आकार–१२"×५$\frac{1}{2}$" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२७४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा १२ सं० १८८७ ।

१६०२. **शब्द रूपावली— ×** । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१८$\frac{1}{4}$"×५$\frac{3}{4}$ । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२०१७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६०३. **शब्द रूपावली (अकारान्त पुंलिंग शब्द)– ×** । देशी कागज । पत्र संख्या–४ । आकार–१०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०१७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६०४. शब्द रूपावली— × । देशी कागज । पत्र संख्या–२६ । आकार–८½×४½ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२११६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ शुक्ला ६, सं० १८८३ ।

१६०५. शब्द समुच्चय—अमरचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०½×४¾ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२३३२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६०६. शब्द साधन —× । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–८¼"×४" दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–व्याकरण । ग्रन्थ संख्या–१८५१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ शुक्ला ६, सं० १८८३ ।

१६०७. शब्दानुशासन वृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–५२ । आकार–११½"×४¼" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१२६६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६०८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०½"×४½" । दशा–अतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१६७१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट—चतुर्थ अध्याय पर्यन्त है ।

१६०९. षट् कारक प्रक्रिया—। देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०×४¼ । दशा– प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२१२७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला, ७ सं० १८२१ ।

१६१०. सन्धि अर्थ—पं० योगक । देशी कागज । पत्र संख्या–२० । आकार–६"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत व हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२१४७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–पौष शुक्ला १, सं० १८१६ ।

१६११. सप्त सूत्र–× । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–७½"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–व्याकरण । ग्रन्थ संख्या–१४५० । रचनकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६१२. समास चक्र— × । देशी कागज । पत्र संख्या–८ । आकार–६¼"×४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१६८५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– सं० १६१७ ।

१६१३. समास प्रयोग पटल—वररूचि । । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–११½"×४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–व्याकरण । ग्रन्थ संख्या–१६४५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६१४. समास प्रयोग पटल—पं० वररूचि । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०½"×४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि नागरी । ग्रन्थ संख्या–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६५३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६१५. **सर्वधातु रूपावली**— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–३०। आकार–११¾"×५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि नागरी। विषय–व्याकरण। ग्रन्थ संख्या–१२४२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १४, सं० १८५५।

१६१६. **सारस्वत दीपिका–अनुभूति स्वरूपाचार्य**। टीकाकार–मेघरत्न। देशी कागज। पत्र संख्या–३०६। आकार–१०"×४½"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय–व्याकरण। ग्रन्थ संख्या–१०६५। रचनाकाल– ×। टीकाकाल–विक्रम सं० १५३६। लिपिकाल– ×।

१६१७. **सारस्वत धातु पाठ—हर्षकीर्ति सूरी**। देशी कागज। पत्र संख्या–२०। आकार–१०½" ×४¾"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–व्याकरण। ग्रन्थ संख्या–१३६६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ३, सं० १७५८।

१६१८. **प्रति संख्या २**। देशी कागज। पत्र संख्या–१६। आकार–१०×४½। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१०४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ८, शुक्रवार सं० १६५८।

नोट—ग्रन्थ की नागपुर के तपागच्छ में रचना हुई लिखा है।

१६१९. **प्रति संख्या ३**। देशी कागज। पत्र संख्या–१६। आकार–९½×४½। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१००। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६२०. **सारस्वत प्रक्रिया पाठ –परमहंस परिव्राजक अनुभूति स्वरूपाचार्य**। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार– १०½" × ४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विपय–व्याकरण। ग्रन्थ संख्या–१४८३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६२१. **सारस्वत ऋजूप्रक्रिया—परमहंस परिव्राजक अनुभूति स्वरूपाचार्य**। देशी कागज। पत्र संख्या–९। आकार–१०½"×४½"। दशा–अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१६१६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६२२. **प्रति संख्या २**। देशी कागज। पत्र संख्या–१०। आकार–९"× ४"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१६०८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–माघ कृष्णा ८, सं० १७०३।

१६२३. **सारस्वत प्रक्रिया—परिव्राजक अनुभूति स्वरूपाचार्य**। देशी कागज। पत्र संख्या–१०३। आकार–१०¾" × ४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रंथ संख्या–२६८८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ७, सं० १६४२।

१६२४. **प्रति संख्या २**। देशी कागज। पत्र संख्या–७६। आकार–११¾"×४¾"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२४२५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६२५. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–५६। आकार १०"×४"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१६७३। रचनाकाल–फाल्गुन शुक्ला १, बृहस्पतिवार सं० १७६०।

१६२६. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–१०२। आकार–१०"×४"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या– १५८८। रचनाकाल– × । लिपिकाल—आषाढ़ कृष्णा १४, सं० १७८६।

१६२७. प्रति संख्या ५। देशी कागज। पत्र संख्या–२८। आकार–१०"×४$\frac{१}{४}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–११४८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६२८. प्रति संख्या ६। देशी कागज। पत्र संख्या–८६। आकार- ११$\frac{१}{४}$"×५"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१००६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– कर्तिक शुक्ला ३, बृहस्पतिवार सं० १५७६।

१६२९. प्रति संख्या ७। देशी कागज। पत्र संख्या- ४१। आकार–१०"×४$\frac{१}{४}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–११४३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६३०. प्रति संख्या ८। देशी कागज। पत्र संख्या–५६। आकार—१०$\frac{१}{२}$"×४$\frac{१}{२}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१०६८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६३१. प्रति संख्या ९। देशी कागज। पत्र संख्या–६१। आकार–११$\frac{१}{२}$"×५"। दशा–जीर्ण क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१२६०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ११, शुक्रवार सं० १८०५।

१६३२. प्रति संख्या १०। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१०$\frac{१}{२}$"×४$\frac{३}{४}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१३३०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६३३. प्रति संख्या ११। देशी कागज। पत्र संख्या -४२। आकार–१०"×५"। दशा–अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१०६७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

नोट—अनेक पत्र जीर्णक्षीण अवस्था में हैं। अनुभूति स्वरूपाचार्य का दूसरा नाम नरेन्द्रपूरीचरण है।

१६३४. प्रति संख्या १२। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–११$\frac{३}{४}$"×५$\frac{१}{२}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१२२१। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६३५. प्रति संख्या १३।। देशी कागज। पत्र संख्या–४३। आकार–१०$\frac{१}{४}$"×४$\frac{१}{२}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–११२६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

नोट—अनुभूति स्वरूपाचार्य का दूसरा नाम नरेन्द्रपूरीचरण है, उसी नाम से उल्लेख किया गया है।

१६३६. प्रति संख्या १४। टीकाकार—श्री मिश्र वासव। देशी कागज। पत्र संख्या—८३। आकार–१०$\frac{१}{२}$"×४$\frac{३}{४}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–११८०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ५, रविवार, सं० १६१५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नोट—टीका का नाम बालबोधिनी टीका है ।

१६३७. प्रति संख्या १५ । देशी कागज । पत्र संख्या–५२ । आकार– १०"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१८७१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–पौष कृष्णा ८, सोमवार सं० १८४४ ।

१६३८. प्रति संख्या १६ । देशी कागज । पत्र संख्या–४७ । आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । अपूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११५३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट—अन्तिम पत्र नहीं है ।

१६३९. प्रति संख्या १७ । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार–११×"४$\frac{1}{2}$" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१३९३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–सं० १५४६ ।

१६४०. प्रति संख्या १८ । देशी कागज । पत्र संख्या–१०४ । आकार–११$\frac{1}{4}$"× ४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२४५० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ शुक्ला ७, सं० १६५७ ।

१६४१. प्रति संख्या १९ । देशी कागज । पत्र संख्या–५९ । आकार–१०"×४$\frac{1}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२४९४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६४२. प्रति संख्या २० । देशी कागज । पत्र संख्या–८ । आकार–११"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२८०६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

विशेष— केवल विसर्ग सन्धि है ।

१६४३. प्रति संख्या २१ । देशी कागज । पत्र संख्या–९ । आकार–९$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२६८६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६४४. सारस्वत ऋजू प्रक्रिया—अनुभूति स्वरूपाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत और हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या- २०७६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

विशेष—पं० उघा ने नागौर में लिपि किया ।

१६४५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–८ । आकार–९"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१३७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट—संज्ञा प्रकरण प्रर्यन्त ही है ।

१६४६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–१०" × ४$\frac{1}{4}$ । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०२९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ कृष्णा २, मंगलवार, सं० १७०३ ।

नोट—ग्रन्थ संज्ञा पर्यन्त ही है ।

१६४७. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०"४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२३३० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६४८. सारस्वत व्याकरण (सटीक)—अनुभूति स्वरूपाचार्य। टीका—धर्मदेव। देशी कागज। पत्र संख्या–६५। आकार–११$\frac{3}{4}$"×५"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१०५८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला १, बृहस्पतिवार, सं० १६०३।

१६४९. सारस्वत शब्दाधिकार— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–६१। आकार–९$\frac{1}{2}$"×३$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१५६४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ६, सं० १६८६।

१६५०. सिद्धान्त कौमुदी (सूत्र मात्र)—×। देशी कागज। पत्र संख्या–१७। आकार–११"×५$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–व्याकरण। ग्रन्थ संख्या–१३०५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६५१. सिद्धान्त चन्द्रिका (केवल विसर्ग सन्धि)–×। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–११$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{4}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२२८८। रचनाकाल–×। लिपिकाल– ×।

१६५२. सिद्धान्त चन्द्रिका सटीक–उद्‌भट्ट। देशी कागज। पत्र संख्या–१ से १०। आकार–१२"×५$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। अपूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२८५०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६५३. सिद्धान्त चन्द्रिका मूल – रामचन्द्राश्रम। देशी कागज। पत्र संख्या–२४। आकार–१२$\frac{1}{2}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१८४६ रचनाकाल–×। लिपिकाल– ×।

१६५४ प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–४८। आकार–८$\frac{3}{4}$"×६$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१८७४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–सं० १९६०।

१६५५, प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–५१। आकार– ८$\frac{3}{4}$"×६$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१८७८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला ४, सोमवार सं० १९०६।

१६५६. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–२४। आकार–८$\frac{3}{4}$"×६$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१७३५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

नोट—ग्रन्थ में केवल स्वर सन्धि प्रकरण है।

१६५७. प्रति संख्या—५. देशी कागज। पत्र संख्या–२५। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×६"। दशा–सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–११३९। रचनाकाल–×। लिपिकाल– ×।

१६५८. प्रति संख्या ६। देशी कागज। पत्र संख्या–४०। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२२६४। रचनाकाल– ×। लिपकाल– ×।

नोट—चूरादिक प्रकरण से ग्रन्थ प्रारम्भ किया गया है।

१६५९. सिद्धान्त चन्द्रिका—रामचन्द्राचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या–१३०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आकार–१०"×४½ । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२८०४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ११, सं० १८०६ ।

१६६०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१२१ । आकार–१०"×४½" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२७४० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–पौष शुक्ला १३, शुक्रवार सं० १७८४ ।

१६६१. सिद्धान्त चन्द्रिका वृत्ति—रामचन्द्राश्रमचार्य । वृत्तिकार–सदानन्द । देशी कागज । पत्र संख्या–८० । आकार–६¾"×४¼" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१०७१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६६२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१३२ । आकार–१०"×४½" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१०५७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६६३. प्रति संख्या ४ । देशी कागज . पत्र संख्या–२४२ । आकार–११½"×५¼" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१०६२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–श्रावण बुदी ८, सं० १८६६ ।

१६६४. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या–१३३ । काकार–१०¼"×४¾ । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११२१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६६५. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या–६५ । आकार–१०"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११२० । रचनाकाल– × । लिपिकाल–पौष शुक्ला १४, मंगलवार, सं० १८४० ।

१६६६. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या–१०३ । आकार–११×५¼ । दशा–सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२३१८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल × ।

१६६७. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र संख्या–११३ । आकार–११"×५¼" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२३२७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६६८. संस्कृत मंजरी—× । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२१०८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ६, सोमवार, सं० १८१६ ।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्रत विधान साहित्य

१६६९. अणुव्रत रत्नप्रदीप—साहल सुवलरकण। देशी कागज। पत्र संख्या-१२४। आकार-११½"×४¾"। दशा-अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-अपभ्रंश। लिपि-नागरी। विषय-व्रत विधान। ग्रन्थ संख्या-१४११। रचनाकाल- ×। लिपिकाल-भाद्रपद कृष्णा ९, शनिवार, सं० १५९९।

१६७०. अनन्त विधान कथा- ×। देशी कागज। पत्र संख्या-२ आकार-१०½" ×४½"। दशा-जीर्ण। पूर्ण। भाषा-अपभ्रंश। लिपि-नागरी। विषय-व्रत विधान। ग्रन्थ संख्या-१४३२। रचनाकाल- ×।

१६७१. अष्टक सटीक-शुभचन्द्राचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या-१८। आकार-१०¾"×४½"। दशा-अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-प्राकृत और संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-विधि विधान। ग्रन्थ संख्या-२४०४। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

नोट—ग्रन्थ के दीमक लगजाने से अक्षरों को क्षति हुई है।

१६७२. अक्षय निधि व्रत विधान-×। देशी कागज। पत्र संख्या-४। आकार-१०¾" ×४¾"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-व्रत विधान। ग्रन्थ संख्या-२६६३। रचनाकाल- × । लिपिकाल- ×।

१६७३. एकली करण विधान—×। देशी कागज। पत्र संख्या-२। आकार-११¾"×५½"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-विधि विधान। ग्रन्थ संख्या-२५०९। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१६७४. कल्याण पंचका रूपण विधान—×। देशी कागज। पत्र संख्या-२१। आकार-११"×५"। दशा-जीर्ण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-व्रत विधान। ग्रन्थ संख्या-११९१। रचनाकाल-×। लिपिकाल- ×।

१६७५. कल्याण माला—×। देशी कागज। पत्र संख्या-५। आकार-९½"×४"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-विधान। ग्रन्थ संख्या-१५४३। रचनाकाल-×। लिपिकाल- सं० १६९२।

१६७६. जलयात्रा पूजा विधान—देशी कागज। पत्र संख्या—२। आकार-११"×५¾"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-पूजा विधान। ग्रन्थ संख्या-१८५६। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६७७. जिनयज्ञ कल्प—पं० आशाधर। देशी कागज। पत्र संख्या—७२। आकार—११"×४¾"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—विधि विधान। ग्रन्थ संख्या—२५१४। रचनाकाल—अश्विन शुक्ला १५. सं० १२८५। लिपिकाल—वैशाख शुक्ला ३ सं० १५०३।

१६७८. दशलक्षण व्रतोद्यापन—×। देशी कागज। पत्र संख्या—१८। आकार—१०¾"×४½"। दशा—जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—व्रत विधान। ग्रन्थ संख्या—२१५४। रचनाकाल—×। लिपिकाल सं० १७२१।

१६७९. द्वादश व्रत कथा— देशी कागज। पत्र संख्या—२। आकार—९½"×४¼"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—व्रत विधान। ग्रन्थ संख्या—१३२७। । रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

१६८०. नन्दीश्वर कथा—×। देशी कागज। पत्र संख्या—३। आकार-११"×४¾"। दशा—जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—व्रत कथा। ग्रन्थ संख्या—१९८४। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

१६८१. नन्दीश्वर पंक्ति विधान—शिव वर्मा। देशी कागज। पत्र संख्या—२। आकार—११¼"×४¾"। दशा—प्राचीन। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—विधि विधान। ग्रन्थ संख्या—२०११। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

१६८२. प्रतिमा भंग शान्ति विधि—×। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—९"×४"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—शान्ति विधि। ग्रन्थ संख्या—१४४४। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

१६८३ पंच मास चतुर्दशी व्रतोद्यापन—सुरेन्द्रकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या—२३। आकार—१०½"×५"। दशा—जीर्ण। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी विषय—व्रत विधान। ग्रन्थ संख्या—१२२७। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

१६८४. पंचमी व्रत पूजा विधान—हर्षकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या—५। आकार—१०"×५¼"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—व्रत विधान। ग्रन्थ संख्या—१८४१। रचनाकाल—×। लिपिकाल—माघ कृष्णा ४, रविवार, सं० १९१३।

१६८५. पंचाशत क्रिया व्रतोद्यापन—×। देशी कागज। पत्र संख्या—८। आकार—१०"×४¼"। दशा—प्राचीन। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—व्रत विधान। ग्रन्थ संख्या—२४०८। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

१६८६. बारह व्रत टिप्पणी—×। देशी कागज। पत्र संख्या—८। आकार—९"×४¼"। दशा—प्राचीन। पूर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—व्रत विधान। ग्रन्थ संख्या—२०५१। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६८७. राई प्रकरण विधि—× । देशी कागज । पत्र संख्या- ३ । आकार-६१/४"×४३/४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-विधि विधान । ग्रन्थ संख्या-२७८५ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

विशेष—इस ग्रन्थ में विवाह के समय की जाने वाली क्रियाओं का वर्णन है ।

१६८८. राम विष्णु स्थापना—× । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । आकार-६१/२"×४१/२" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-विधि विधान । ग्रन्थ संख्या-२७९२ । । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

विशेष—इस ग्रन्थ में वैष्णव मतानुसार राम और विष्णु की स्थापना का वर्णन है ।

१६८९. रूक्मणी व्रत विधान कथा —विशालकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या ५ । आकार-१३१/२×८१/२ । दशा-सुन्दर । पूर्ण । भाषा-मराठी । विषय-व्रत विधान । ग्रन्थ सख्या-२६१० । रचनाकाल- × । लिपिकाल-अश्विन कृष्णा १, शनिवार, सं० १९४५ ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ में पद्यों की संख्या १६९ हैं ।

१६९०. व्रतों का वर्णन—× । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार-१२"×५३/४" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-व्रत विधान । ग्रन्थ संख्या-१९५१ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१६९१. व्रत विधान कथा—देवनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार-१०३/४"×५१/४" । दशा-जीर्णशीर्ण । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । विषय-व्रत कथा । ग्रन्थ संख्या-१३३५ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१६९२. व्रत विधान रासो—जिनमति । देशी कागज । पत्र संख्या-१९ । आकार-११"×५१/४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-व्रत विधान । ग्रन्थ संख्या-१९०८ । रचनाकाल-अश्विन शुक्ला १०, सं० १७६७ । लिपिकाल-भाद्रपद कृष्णा १४, सं० १८५९ ।

१६९३ व्रत विधान रासो-पं० दौलतराम । देशी कागज । पत्र संख्या-२९ । आकार-८१/२"×४" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) लिपि-नागरी । विषय-रासो साहित्य । ग्रन्थ संख्या-१६९४ । रचनाकाल-अश्विन शुक्ला १०, बृहस्पतिवार, सं० १७६० । लिपिकाल-आषाढ़ शुक्ला १३, सं० १८६४ ।

१६९४. व्रतसार—× । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-१०"×४१/४" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-व्रत विधान । ग्रन्थ संख्या-२४६४ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१६९५. वसुधारानाम धारिणी महाशास्त्र—× । देशी कागज । पत्र संख्या-६ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आकार–९$\frac{3}{4}$"×४" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा– संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–विधि विधान । ग्रन्थ संख्या–१९९२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१६९६ श्रुतस्तपन विधि - × । देशी कागज । पत्र संख्या–४४ । आकार–११"×५" दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–विधि विधान । ग्रन्थ संख्या–२४०२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोक विज्ञान साहित्य

१६९७. जम्बूद्वीप वर्णन—×। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार– १०$\frac{1}{2}$"× ४$\frac{1}{8}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। विषय–लोक विज्ञान। ग्रन्थ संख्या–१६०१। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६९८. त्रिलोक प्रज्ञप्ति – सि० च० नेमिचन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या–२८९। आकार– १०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। विषय–लोक विज्ञान। ग्रन्थ संख्या–१७६९। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१६९९. त्रिलोक स्थिति— देशी कागज। पत्र संख्या– ३३। आकार–१०$\frac{1}{2}$"× ५$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि––नागरी। विषय–लोक विज्ञान। ग्रन्थ संख्या–११५९। रचनाकाल— ×। लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ९, सं० १६०४।

१७००. त्रिलोकसार - सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमिचन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या–२३। आकार–११"×४$\frac{3}{8}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। विषय–लोक विज्ञान। ग्रन्थ संख्या–१३४२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१७०१. प्रति संख्या—२। देशी कागज। पत्र संख्या–७६। आकार–१०$\frac{1}{8}$"× ४$\frac{3}{8}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–११६६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–माघ शुक्ला १५, सोमवार, सं० १५५१।

१७०२. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–२०। आकार–१२"×४$\frac{3}{8}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२४९९। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला १२, सं० १५१०।

१७०३. त्रिलोकसार (सटीक)—नेमिचन्द्र। टीकाकार–सहस्त्रकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–८५। आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–मूल प्राकृत में और टीका संस्कृत में। लिपि–नागरी। विषय–लोक विज्ञान। ग्रन्थ संख्या–११४०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला ११, सोमवार, सं० १५८४।

१७०४. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–८५। आकार–१०$\frac{3}{8}$"×४$\frac{3}{8}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१२५७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–ज्येष्ठ कृष्णा ११, बृहस्पतिवार, सं० १५६५।

१७०५. त्रिलोकसार सटीक—सि० च० नेमिचन्द्र। टीका—ब्रह्मश्रुताचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या–४६। आकार–११"×४$\frac{3}{8}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–प्राकृत एवं संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१४१३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१७०६. त्रिलोकसार सटीक—सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमिचन्द्र। टीका—×। देशी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कागज। पत्र संख्या–२२१। आकार–११$\frac{1}{4}$" × ५$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–प्राकृत (मूल) टीका संस्कृत में। लिपि–नागरी। विषय–लोक विज्ञान। ग्रन्थ संख्या–१२१६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

नोट—टीका का नाम तत्व प्रदीपिका है।

१७०७. त्रिलोकसार भाषा—सुमतिकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–११। आकार–९$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१६२६। रचनाकाल–माघ शुक्ला १२, सं० १६२७। लिपिकाल– ×।

नोट—त्रिलोकसार (प्राकृत) मूल के कर्ता सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमिचन्द्र हैं। उसी के आधार पर प्रस्तुत ग्रन्थ में भाषा की गई है।

१७०८. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–१२$\frac{1}{2}$"×५$\frac{3}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२७३०। रचनाकाल–माघ शुक्ला १२, सं० १६२७। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा १, सं० १८६०।

१७०९. त्रिलोकसार भाषा—दत्तनाथ योगी। देशी कागज। पत्र संख्या–९२। आकार–११"×५$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१११७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–आषाढ़ बुदी ५, सोमवार, सं० १८९२।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रावकाचार साहित्य

१७१०. आचारसार—वीरनन्दि। देशी कागज। पत्र संख्या–६६। आकार–१०"× ४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–श्रावकाचार। ग्रन्थ संख्या–१०८५ (ब)। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१७११. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–६२। आकार–११"×४½"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१३०२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–पौष कृष्णा ३, रविवार, सं० १६६५।

१७१२. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या–४१। आकार–११"×४¾"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१२६५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१७१३. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–४६। आकार–११"×४¾"। दशा–अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२४६२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१७१४. उपदेश माला—धर्मदास गणि। देशी कागज। पत्र संख्या–३०। आकार–१०¼"×४¼"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। विषय–श्रावकाचार। ग्रन्थ संख्या–११४५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१७१५. उपदेश रत्नमाला—सकलभूषण। देशी कागज। पत्र संख्या–१२७। आकार–१०¼"×३¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–श्रावकाचार। ग्रन्थ संख्या–१६७४। रचनाकाल–श्रावण शुक्ला ६, सं० १६२७। लिपिकाल–भाद्रपद कृष्णा ८, सोमवार, सं० १८०४।

नोट—इस ग्रन्थ का नाम षट्कर्मोपदेश रत्नमाला भी है।

१७१६. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–६८। आकार–१२¼"×५¾"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२७०८। रचनाकाल–श्रावण शुक्ला ६, सं० १६२७। लिपिकाल–भाद्रपद कृष्णा २, शुक्रवार, सं० १८८७।

आदिभाग—

वंदे श्रीवृषभदेवं दिव्यलक्षणलक्षितम्।
प्रीणित-प्राणिसद्वर्गं युगादिपुरुषोत्तमम् ॥१॥

अन्तभाग—

श्रीमूलसंघतिलके वरनंदिसंघे गच्छे सरस्वतिसुनाम्नि जगत्प्रसिद्धे।
श्रीकुन्दकुन्दगुरु पट्टपरम्परायां श्री पद्मनंदि मुनीपः समभुज्जिताक्षः॥
तत्पट्टधारी जनहितकारी पुराणमुख्योत्तमशास्त्रकारी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भट्टारकः श्री सकलादिकीर्तिः प्रसिद्धनामाऽजनि पूण्यमूर्तिः ।
भुवनकीर्तिगुरुस्तत उर्जितो भुवनभासनशासन मण्डनः ।
अजनि तीव्र तपश्चरणक्षमो विविधधर्मसमृद्धि सुदेशकः ।।

श्रीज्ञानभूषेण परिभूषितांगः प्रसिद्ध पाण्डित्यकलानिधानः ।
श्रीज्ञानभूषाख्यगुरुस्तदीय पट्टोदयाद्राविव भानुरासीत् ।।

भट्टारकः श्रीविजयादिकीर्तिस्तदीय पट्टे परिलब्धकीर्तिः ।
महामना मोक्षसुखाभिलाषी वभूवः जैनावनिपार्श्वपादः ।।

भट्टारकः श्रीशुभचन्द्रसूरिस्तत्पट्टपंके रुहतिग्मरश्मिः ।
त्रैविद्यवंद्यः सकल प्रसिद्धो वादीभसिंहो जयताद्धरित्र्यां ।

पट्टे तस्य प्रीणित प्राणिवर्गः शान्तो दान्तः शीलशाली सुधीमान् ।
जीयात्सूरि; श्रीसुमत्यादिकीर्तिर्गच्छाधीशः क्रमकान्तिः कलावान् ।।

तस्याभूच्च गुरु भ्राता नाम्ना सकलभूषणः ।
सूरिर्जिनमते लीनमनाःसन्तोषपोषकः ।।

तेनोपदेशसद्रत्नमालासंज्ञो मनोहरः ।
कृतः कृति जनानंद-निमित्तं ग्रन्थः एषकः ।।

श्रीनेमिचन्द्राचार्यादि यतीनामाग्रहात्कृतः ।
सद्वर्धमानाटोलादि प्रार्थनातो मयैषकः ।।

सप्तविंशत्यधिके षोडशशतवत्सरेषु विक्रमतः ।

श्रावणमासे शुक्लपक्षे षष्ठ्यां कृतो ग्रन्थः ।।

१७१७. उपासकाचार —पूज्यपाद स्वामि । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार—१०¾"×४½" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—श्रावकाचार । ग्रन्थ संख्या—२७६० । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१७१८. उपासकाध्ययन – वसुनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या—२९ । आकार—११"×४½" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—प्राकृत । लिपि—नागरी । विषय—श्रावकाचार । ग्रन्थ संख्या—१३७५ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१७१९. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—३३ । आकार—१०½"×४¼" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१३७७ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—सं०१६५३ ।

१७२०. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—२९ । आकार—११¼"×४½" । दशा—अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । । ग्रन्थ संख्या—१३६७ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१७२१. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—३८ । आकार— १०½"×४¼" । दशा—अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१३७८ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—फाल्गुन कृष्णा ६, रविवार, सं० १५२४ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७२२. प्रति संख्या ५। देशी कागज। पत्र संख्या–३८। आकार–१२"×४¾"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२६७५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१७२३. क्रिया कलाप सटीक—पं० आशाधर। देशी कागज। पत्र संख्या–१०८। आकार–१४"×५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२७५५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–वैशाख कृष्णा १, सं० १५३९।

१७२४. क्रिया कलाप टीका—प्रभाचन्द्र। देशी कागज। पत्र संख्या–१२३। आकार–१०½"×४¾"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१३६६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१७२५. क्रियाकोश भाषा—किशनसिंह। देशी कागज। पत्र संख्या–८६। आकार– १२"×५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी (पद्य)। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१०६६। रचनाकाल–भाद्रपद शुक्ला १५, रविवार, सं० १७८४। लिपिकाल–पौष शुक्ला १५, सं० १८६४।

१७२६ प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–७६। आकार–११½" ५"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१८०४। रचनाकाल–भाद्रपद शुक्ला १५, रविवार, सं० १७८४। लिपिकाल–बैशाख शुक्ला ८, शनिवार, सं० १८४६।

१७२७. क्रिया विधि मंत्र– ×। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार–९¾"×४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१६५७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–बैशाख शुक्ला १२, रविवार, सं० १८४८।

१७२८. जिन कल्याण माला—पं० आशाधर। देशी कागज। पत्र संख्या–२। आकार– ९¾"×४½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७८४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१७२९. जैनरास— ×। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–१०¾"×५½"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या २५३५। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–अश्विन शुक्ला ११, रविवार, सं० १९०५।

१७३०. धर्म परीक्षा—अमितगति। देशी कागज। पत्र संख्या–९२। आकार–११"×४¾" दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२६८९। रचनाकाल–सं० १०७०। लिपिकाल– ×।

नोट—ग्रन्थ कर्ता की पूर्ण प्रशस्ति लिखि हुई है।

१७३१. धर्म प्रश्नोत्तर श्रावकाचार—भट्टारक सकलकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–६६। आकार–१०"×४½"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१७७६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७३२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–८३ । आकार–११"×५" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–१२८६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–चैत्र शुक्ला ८, सोमवार, सं० १६५७ ।

१७३३. धर्म संग्रह—पं० मेधावी । देशी कागज । पत्र संख्या–६६ । आकार–१०½" × ४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१२४१ । रचनाकाल–सं० १४४० । लिपिकाल–श्रावण शुक्ला १४, शनिवार, सं० १५७० ।

१७३४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–६० । आकार–११½"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१०३७ । रचनाकाल–सं० १४४० । लिपिकाल–भाद्रपद बुदी २, सं० १७०८ ।

१७३५. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या–५९ । आकार–१०½"×४¾" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११८७ । रचनाकाल–सं० १४४० । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला ८, बुधवार, सं० १५६७ ।

नोट—ग्रन्थ कर्ता ने अपना पूर्ण परिचय दिया है ।

१७३६. धर्म संग्रह—पं० मेधावी । देशी कागज । पत्र संख्या–७४ । आकार–१०½"×४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२५७३ । रचनाकाल–वैशाख शुक्ला १५, रविवार, सं० १६४६ ।

विशेष—इस ग्रन्थ का नाम "सम्वन्ध संसूचिका चूलिका" भी है ।

१७३७. धर्मामृत सुक्ति—पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या–६० । आकार–१०½"×४¾" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४०७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन कृष्णा १०, सं० १५३९ ।

१७३८ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–४७ । आकार–९½"×६¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–११८५ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट—ग्रन्थ का अपरनाम सुक्ति संग्रह है ।

१७३९. धर्मोपदेशपीयूष वर्ष–ब्रह्म नेमिदत्त । देशी कागज । पत्र संख्या–२६ । आकार–१०"×४¾" । दशा–अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१०४४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट—पत्र अत्यधिक जीर्णावस्था में हैं ।

आदिभाग—

श्री सर्वज्ञं प्रणम्योच्चैः केवलज्ञानलोचनं ।
सद्धर्मं देशयाम्येष भव्यानां शर्महेतवे ।।१।।

अन्तभाग—

गच्छे श्रीमति मूलतिलके सारस्वतीये शुभे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विद्यानंदि गुरूप्रपट्टकमलोल्लास प्रदो भास्करः ।
श्री भट्टारकमल्लिभूषणगुरूः सिद्धान्तसिंधुर्महा—
स्तच्छिष्यो मुनिसिंहनंदि सुगुरूर्जीयात् सतां भूतले ।।१।।
तेषां पादांब्जयुग्मे निहित निजमतिर्नेमिदत्तः स्वशक्त्या ।
भक्त्या शास्त्रं चकार प्रचुरसुखकरं श्रावकाचारमुच्चैः ।
नित्यं भव्यैर्विशुदैः सकलगुणनिधैः प्राप्तिहेतुं च मत्वा ।
युक्त्या संसेवितोऽसौ दिशतु शुभतमं मंगलं सज्जनानां ।।१८।।
लेखकानां वाचकानां पाठकानां तथैव च
पालकानां सुखं कुर्यान्नित्यं शास्त्रमिदं शुभं ।।१६।।

इति श्री धर्मोपदेशपीयूषवर्षनाम श्रावकाचारे भट्टारक श्री मल्लिभूषण-शिष्यब्रह्मनेमिदत्तविरचिते सल्लेखनाक्रम व्यावर्णनोनाम पंचमोऽधिकारः । इति समाप्तः ।

१७४०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—२३ । आकार—$9\frac{3}{4}$"×$4\frac{1}{2}$" । दशा—जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—११४९ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—श्रावण शुक्ला ११, सोमवार, सं० १६२६ ।

१७४१. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—२२ । आकार—१०"×$4\frac{1}{2}$" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१३६२ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला २, सं० १६७७ ।

१७४२. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—२१ । आकार—११"×$4\frac{1}{2}$" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१६१८ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— बैशाख शुक्ला ५, सं० १७०५ ।

१७४३. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या—३१ । आकार—$10\frac{1}{4}$"×$4\frac{1}{2}$" । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२५२३ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— सं० १६४४ ।

१७४४. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या—२५ । आकार—$10\frac{1}{2}$"×$4\frac{3}{4}$" । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२६६६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—भाद्रपद कृष्णा १, सं० १६६० ।

१७४५. धर्मोपदेशामृत—पद्मनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या—२४ । आकार—$11\frac{1}{4}$"×$5\frac{1}{4}$"। दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२७०२ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

विशेष— ग्रन्थ के प्रारम्भ में पद्मनन्दि पच्चीसी लिखा है ।

१७४६. पद्मनंदि पंचविंशति — पद्मनंदि । देशी कागज । पत्र संख्या—२२४ । आकार—११"×$4\frac{1}{2}$" । दशा—अतिजीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—श्रावकाचार । ग्रन्थ संख्या—१२७६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—सं० १५८० ।

नोट—पत्र गल चुके हैं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७४७. प्रति संख्या २। । देशी कागज । पत्र संख्या-६६ । आकार-१२½″×५¼″ । दशा- अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या १२८२ । रचनाकाल— × । लिपिकाल- × ।

१७४८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-५८ । आकार-११¾″×७″ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या- १५३७ । रचनाकाल— × । लिपिकाल- × ।

१७४९. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-६८ । आकार-१०½″×४½″ । दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०४५ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१७५०. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या-८६ । आकार—१२½″×६″ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१००६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१७५१. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या-६४ । आकार-१०¼″×४½″ दशा-जीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१८५७ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-श्रावण कृष्णा ६, शुक्रवार, सं० १८०७ ।

१७५२. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र संख्या-४८ । आकार-११¾″×५¾″ । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६३२ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला ३, सोमवार, सं० १८१६ ।

१७५३. प्रति संख्या ८ । देशी कागज । पत्र संख्या-६८ । आकार-१२½″×५¾″ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३२३ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-× ।

१७५४. पद्मनंदि पंचविंशति (सटीक)— × । देशी कागज । पत्र संख्या-१४७ । आकार-१२¼″×५¼″ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५४६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१७५५, प्रबोधसार—यशःकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । आकार-११½″×५″ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६५६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१७५६. प्रश्नोत्तरोपासकाचार—भट्टारक सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-१२३ । आकार-१०¾″×४½″ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३६५ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१७५७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-७३ । आकार-११¾″×६¾″ । दशा-बहुत सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१५६२ । रचनाकाल— × । लिपिकाल-भाद्रपद कृष्णा १२, सं० १९२१ ।

१७५८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१११ । आकार-११″×४¼″ । दशा-जीर्णक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१७४२ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-आषाढ़ कृष्णा ७, रविवार, सं० १७११ ।

नोट—प्रशस्ति दी गई है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७५९. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–१२७। आकार–१०३/४"× ५१/४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१८९८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१७६०. प्रति संख्या ५। देशी कागज। पत्र संख्या–११४। आकार–१११/४"× ५"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१२९२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–मंगसिर शुक्ला ६, सोमवार, सं० १६६५।

१७६१. प्रति संख्या ६। देशी कागज। पत्र संख्या–१३८। आकार–१०१/२"×५"। दशा–जीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१३५०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–अश्विन कृष्णा ४, सोमवार, सं० १७२६।

१७६२. प्रति संख्या ७। देशी कागज। पत्र संख्या–१५९। आकार–११"× ४३/४"। दशा–अतिजीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१२३३। रचनाकाल– ×। लिपि-काल– ×।

१७६३. प्रति संख्या ८। देशी कागज। पत्र संख्या–१३३। आकार–११"×५१/४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१३०१। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा १, सं० १६५०।

१७६४. प्रति संख्या ९। देशी कागज। पत्र संख्या–११०। आकार–१११/४"×४३/४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१०३६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–माघ बुदी ६, सोमवार, सं० १५९०।

१७६५. प्रति संख्या १०। देशी कागज। पत्र संख्या–११३। आकार–९१/२"×५१/४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२४९२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१७६६. प्रति संख्या ११। देशी कागज। पत्र संख्या–१३४। आकार–१११/४"×५"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२६२४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–मंगसिर कृष्णा ३, सोमवार, सं० १५९३।

टिप्पणी—लिपिकार ने पूर्ण प्रशस्ति लिखि है।

१७६७. प्रति संख्या १२। देशी कागज। पत्र संख्या–१७१। आकार–१११/२"× ५१/४"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२६००। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–माघ शुक्ला ६, बृहस्पतिवार, सं १६५३।

१७६८. प्रति संख्या १३। देशी कागज। पत्र संख्या–८६। आकार–१११/४"×४३/४" दशा–जीर्णक्षीर्ण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२६१६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा २, शनिवार, सं० १७०६।

नोट—लिपिकार की प्रशस्ति का पत्र नहीं हैं।

१७६९. प्रायश्चित शास्त्र—अकलंक स्वामी। देशी कागज। पत्र संख्या–५। आकार–१०"×५"। दशा–अच्छी सुन्दर। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१४७८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७७०. मूलाचार प्रदीपिका—भट्टारक सकलकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–१०७। आकार–१५$\frac{1}{8}$"×६$\frac{1}{8}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–श्रावकाचार। ग्रन्थ संख्या–१०७७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१७७१. रत्नकरण्ड श्रावकाचार (सटीक)—समन्तभद्र। टीकाकार–प्रभाचन्द्राचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या–३८। आकार–१५"×६$\frac{3}{8}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–१२७२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–प्रथम आषाढ़ कृष्णा ७, सं० १८६६।

१७७२. प्रति संख्या २।। देशी कागज। पत्र संख्या–६९। आकार १०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्णक्षीण।। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या १०००। रचनाकाल–×। लिपिकाल–माघ शुक्ला १२, सं० १५४३।

१७७३. रत्नकरण्ड श्रावकाचार—श्रीचन्द। देशी कागज। पत्र संख्या–१४०। आकार–१०$\frac{3}{8}$"×४$\frac{1}{2}$"दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। विषय–श्रावकाचार। ग्रन्थ संख्या–१०६१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा ११, रविवार, सं० १६५१।

१७७४. प्रति संख्या २। देशी कागज़। पत्र संख्या–१३१। आकार–१२$\frac{3}{4}$"×५"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–१७९८। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१७७५. रत्नमाला–शिवकोट्याचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–१२$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{8}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२०१५। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१७७६. रत्नसार—पं० जीवन्धर। देशी कागज। पत्र संख्या–३०। आकार–११"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२७०३। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

१७७७. रात्रि भोजन दोष विचार—धर्म समुद्र वाचक। देशी कागज। पत्र संख्या–१८। आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२४७२। रचनाकाल–×। लिपिकाल-चैत्र शुक्ला ५, सोमवार, सं० १६८७।

१७७८. विवेक विलास—जिनदत्त सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या–४९। आकार–९$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२४३२। रचनाकाल–×। लिपिकाल–सं० १६०६।

विशेष—श्री शेरशाह के राज्य में लिपि की गई। परस्पर में पत्र चिपक जाने से अक्षरों को क्षति हुई है।

१७७९. व्रतसार श्रावकाचार—×। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२५९१। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७८०. षट्कर्मोपदेश माला--अमरकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या-६३। आकार-११$\frac{1}{4}$" × ५"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-अपभ्रंश। लिपि-नागरी। विषय-श्रावकाचार। ग्रन्थ संख्या-१४०८। रचनाकाल- ×। लिपिकाल-माघ कृष्णा १३, सं० १६०७।

१७८१. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या-१०१। आकार-११$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-११३३। रचनाकाल- ×। लिपिकाल-पौष बुदी १३, सोमवार, सं० १५६३।

१७८२. षट्कर्मोपदेश रत्नमाला—भट्टारक लक्ष्मणसेन। पत्र संख्या-६५। आकार-११$\frac{1}{4}$" × ४$\frac{1}{2}$"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-श्रावकाचार। ग्रन्थ संख्या-१०८५। रचनाकाल- ×। लिपिकाल-पौष शुक्ला १५, शुक्रवार, सं० १७३३।

नोट—प्रशस्ति विस्तृत रूप से दी हुई है।

१७८३. श्रवावचूर्णी— ×। देशी कागज। पत्र संख्या-३६। आकार-१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा—जीर्ण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-श्रावकाचार। ग्रन्थ संख्या-१४१६। रचनाकाल—- ×। लिपिकाल—- ×।

१७८४. श्रावक धर्म कथन— ×। देशी कागज। पत्र संख्या- ७। आकार-१०"×४$\frac{1}{4}$"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१३११। रचनाकाल— ×। लिपिकाल- ×।

१७८५. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या-९। आकार-९"×४$\frac{1}{4}$"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-१६१२। रचनाकाल- ×। लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला १२, सं० १६७१।

१७८६. श्रावक व्रत झण्डा प्रकरण सार्थ - ×। देशी कागज। पत्र संख्या-३। आकार-१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-प्राकृत और संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-२०६४। रचनाकाल- ×। लिपिकाल- ×।

१७८७. श्रावकाचार—पद्मनन्दि। देशी कागज। पत्र संख्या-६४। आकार-१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-प्राकृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१०१३। रचनाकाल- ×। लिपिकाल-आषाढ़ सुदी १३, सोमवार, सं० १७०३।

नोट—प्रशस्ति विस्तृत रूप में उपलब्ध है।

१७८८. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या-६४। आकार-१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-११८९। रचनाकाल- ×। लिपिकाल-फाल्गुन कृष्णा २, बृहस्पतिवार सं० १६१५।

१७८९. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या-६८। आकार-११$\frac{3}{4}$"×

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२४३७। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ५, बृहस्पतिवार, सं० १६००।

१७६०. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या–६८। आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२६६६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–पौष शुक्ला १, रविवार, सं० १६७६।

१७६१. प्रति संख्या ५। देशी कागज। पत्र संख्या–७७। आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{4}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२५३४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–चैत्र कृष्णा ८, सं० १६७२।

विशेष—लिपिकार ने अपनी प्रशस्ति में भट्टारकों का अच्छा वर्णन किया है।

१७६२. श्रावकाचार – पं० आशाधर। देशी कागज। पत्र संख्या–१७ से ६५। आकार–१०"×४"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–श्रावकाचार। ग्रन्थ संख्या–१२१०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१७६३. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–१३। आकार–११"×४$\frac{3}{4}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२३६३। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१७६४. श्रावकाचार – ×। देशी कागज। पत्र संख्या–११। आकार–१२"×५"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२३५६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१७६५. श्रावकाचार—भट्टारक सकलकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–७०। आकार–१२"×५"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–श्रावकाचार। ग्रन्थ संख्या–१७३४। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१७६६. श्रावकाचार—पूज्यपाद स्वामी। देशी कागज। पत्र संख्या–६। आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२०५६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–आषाढ़ शुक्ला ५, सं० १६७५।

१७६७. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–४। आकार–१०"×५$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या– २४४६। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

१७६८. श्रावकाराधन– समय सुन्दर। देशी कागज। पत्र संख्या–८। आकार–१०$\frac{1}{4}$"×४$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या–२७१६। रचनाकाल–सं० १६६७। लिपिकाल– ×।

१७६६. स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा— कार्तिकेय। देशी कागज। पत्र संख्या–२७। आकार–१०$\frac{3}{4}$"×५$\frac{1}{4}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–प्राकृत। लिपि–नागरी। विषय–श्रावकाचार। ग्रन्थ संख्या–१३६८। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–कार्तिक शुक्ला ५, सं० १६३५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८०० **सागार धर्मामृत—पं० आशाधर।** देशी कागज। पत्र संख्या-५६। आकार-११" × ५"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-श्रावकाचार। ग्रन्थ संख्या-१२४०। रचनाकाल-सं० १२९६। लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला २, बृहस्पतिवार, सं० १६५३

१८०१. **प्रति संख्या २।** देशी कागज। पत्र संख्या-९६। आकार-१०¾"×५¼"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-१००१। रचनाकाल-पौष कृष्णा ७, सं० १२९६। लिपिकाल-फाल्गुन कृष्णा ८, सोमवार, सं० १६१२।

नोट—प्रशस्ति विस्तृत रूप से उपलब्ध है।

१८०२. **सागार धर्मामृत सटीक—पं० आशाधर।** टीकाकार-×। देशी कागज। पत्र संख्या-९२। आकार-१०"×४¼"। दशा-जीर्णक्षीण। । पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-श्रावकाचार। ग्रन्थ संख्या-१००८। रचनाकाल-पौष बुदी ७, सं० १२९६। लिपिकाल-×।

नोट—टीका का नाम "कुमुद चन्द्रिका" है।

१८०३. **प्रति संख्या २** देशी कागज। पत्र संख्या-११४। आकार-११¼"×५"। दशा-अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-२३२५। रचनाकाल-सं० १३००। लिपिकाल-भाद्रपद कृष्णा ५, मंगलवार, सं० १६८७।

विशेष—वि० सं० १३०० कार्तिक मास में नलकच्छपुर में नेमिनाथ चैत्यालय में रचना की गई।

१८०४. **सार समुच्चय—कुलभद्र।** देशी कागज़। पत्र संख्या-१४। आकार-११"×४½"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-२०१३। रचनाकाल-×। लिपिकाल-फाल्गुन कृष्णा २, मंगलवार, सं० १६९९।

विशेष—इस ग्रन्थ की मालपूरा में लिपि की गई।

१८०५. **प्रति संख्या २।** । देशी कागज। पत्र संख्या-१७। आकार-११"×५"। दशा-जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-२४०६। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।

१८०६. **प्रति संख्या ३।** देशी कागज। पत्र संख्या-१५। आकार-११½"×५"। दशा-अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-२६५५। रचनाकाल-×। लिपिकाल-माघ शुक्ला ७, सोमवार, सं० १६४५।

१८०७. **प्रति संख्या ४।** देशी कागज। पत्र संख्या-२३। आकार-१०"×४½"। दशा-अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या- २६९७। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।

१८०८. **प्रति संख्या ५।** देशी कागज। पत्र संख्या-१६। आकार-१०½"×४½"। दशा-प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-२६९४। रचनाकाल-×। लिपिकाल-भाद्रपद कृष्णा ११, मंगलवार, सं० १५९२।

विशेष—लिपिकार ने अपनी पूर्ण प्रशस्ति लिखि है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८०९. सम्बोध पंचासिका सार्थ – ×। देशी कागज। पत्र संख्या–७। आकार–१०"×४¾"। दशा–प्राचीन। पूर्ण। भाषा–प्राकृत व संस्कृत। लिपि–नागरी। ग्रन्थ संख्या २४२२। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–माघ कृष्णा १४, शनिवार, सं० १७०६।

१८१०. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या–८१। आकार–११½"×५½"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या–२१३०। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–आषाढ़ कृष्णा २, शनिवार, सं० १८१७।

१८११. त्रिवर्णाचार—जिनसेनाचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या–२०२। आकार–१३"×६"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–श्रावकाचार। ग्रन्थ संख्या–१५८९। रचनाकाल– ×। लिपिकाल– ×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवशिष्ट साहित्य

१८१२. अट्ठारह नाता को ब्योरो— × । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—५½″ × २¾″ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—एक ही भव में १८ नाते जीव का वर्णन है । ग्रन्थ संख्या—१६४१ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१८१३. आतुर पंचखाण (आतुर प्रत्याख्यान)— × । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार—१०″ × ४½″ । दशा—अति जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—मंगल पाठ । ग्रन्थ संख्या—१४६६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

नोट—श्वेताम्बर आम्नायानुरूप रचना है ।

१८१४. एकविशंति स्थानक—सिद्धसेन सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । आकार—१०½″ × ४½″ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—प्राकृत व हिन्दी । लिपि- नागरी । विषय—धर्म । ग्रन्थ संख्या—२७८३ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१८१५. ऋषभदास विनती – × । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—७½″ × ६½″ । दशा—जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५४७ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—माघ कृष्णा १२, बृहस्पतिवार, सं० १७८४ ।

१८१६. कोकसार—आनन्द । देशी कागज । पत्र संख्या—४० । आकार—८½″ × ५¾″ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । विषय—कामशास्त्र । ग्रन्थ संख्या—१०८६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—भाद्रपद शुक्ला ६, मंगलवार, सं० १६२८ ।

१८१७. खण्ड प्रशस्ति— × । देशी कागज । पत्र संख्या—८ । आकार—११″ × ४¾″ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—काव्य । ग्रन्थ संख्या—१०४८ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१८१८. गजसिंह कुमार चौपई—ऋषि देवीचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या—१३ । आकार—१०½″ × ५″ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८६५ । रचनाकाल—कार्तिक शुक्ला ५, मंगलवार, सं० १८२७ । लिपिकाल— × ।

१८१९. खंधक मुनि की सज्झाय-- × देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—११″ × ५½″ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—धर्म । ग्रन्थ संख्या—२८२४ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१८२०. गद्य पद्यति— × । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । आकार—१०½″ × ४″ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२३१३ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— सं० १६३० ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८२१. गुर्वावली— × । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१२½"× ६" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–इतिहास । ग्रन्थ संख्या–२६४० । रचनाकाल–× लिपिकाल–× ।

टिप्पणी—अन्तिम पत्र पर प्रायश्चित विधि भी है ।

१८२२. चुने हुए रत्न— × । देशी कागज । पत्र संख्या–३३ । आकार–१०"× ४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–भिन्न-भिन्न विषयों के पद्य । ग्रन्थ संख्या–१२२६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८२३. छाया पुरुष लक्षण — × देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०"× ४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत व प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–सामुद्रिक शास्त्र । ग्रन्थ संख्या–१९२८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८२४. जम्बूद्वीप संग्रहणी—हरिभद्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–१०½"× ४¼" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–गणित । ग्रन्थ संख्या–१५२८ । रचनाकाल–× । लिपिकाल–अश्विन शुक्ला १, सं० १७९८ ।

१८२५. जिनधर्म पद—समय सुन्दर । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१२½"× ५½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–पदावली । ग्रन्थ संख्या–१४४६ । रचनाकाल–× । लिपिकाल– × ।

१८२६. जिन मूर्ति उत्थापक उपदेश चौपई—कवि जगरूप । देशी कागज । पत्र संख्या–२६ । आकार–११¾"× ५⅛" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१७५८ । रचनाकाल–ज्येष्ठ कृष्णा १२, बुधवार, सं० १८१६ । लिपिकाल–वैशाख शुक्ला १५, सं० १८७२ ।

१८२७. ढुण्ढिया मत खण्डन—ढाढसी मुनि । देशी कागज । पत्र संख्या–७ । आकार–१०"× ४½" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–ढुण्ढिया मत का खण्डन । ग्रन्थ संख्या–१५२६ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–ज्येष्ठ शुक्ला २, सं० १८४७ ।

१८२८. दान विधि— × । देशी कागज । पत्र संख्या–९ । आकार–९¾"× ४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–धर्म । ग्रन्थ संख्या–१६५१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× ।

१८२९, दानादि संवाद—समय सुन्दर । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–१०"× ४¼" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–काव्य । ग्रन्थ संख्या–१५५७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८३०. दीक्षा प्रतिष्ठा विधि—× । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–११"× ४½" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत एवं हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–१६२७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८३१. **नन्दीश्वर जयमाल**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । आकार–६¾"×४½" । दशा–अति जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत, संस्कृत व हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । ग्रन्थ संख्या–१९९८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–माघ कृष्णा ६, सं० १७१० ।

१८३२. **नवनिधि नाम**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–११"×५¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–नव निधियों के नाम । ग्रन्थ संख्या–२८२१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८३३. **नेमजी का पद**—उदय रत्न । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०½"×४¼" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–काव्य । ग्रन्थ संख्या–१४१८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

नोट—नेमजी का राजुल से भव-भव का सम्बन्ध बताया गया है ।

१८३४. **नेमजी राजुल सवैया**—रामकरण । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०"×४¼" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१५१४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८३५. **नेमीश्वर पद**—धर्मचन्द नेमिचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१३"×४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–काव्य । ग्रन्थ संख्या–१७६१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८३६. **पार्श्वनाथ विनती**—जिनसमुद्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–६¾"×४" । दशा–जीर्ण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । विषय–विनती । ग्रन्थ संख्या–१४३४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल— × ।

१८३७. **पिण्ड विशुद्धावचूरी**—जिनवल्लभ सूरि । टीका—श्रीचन्द सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१०½"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत एवं प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–पिण्ड शुद्धि वर्णन । ग्रन्थ संख्या–२७८८ । रचनाकाल– × । टीकाकाल–कार्तिक कृष्णा ११, सं० ११७८ । लिपिकाल– × ।

१८३८. **प्रद्युम्न चरित्र**—महासेनाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–७१ । आकार–१०¾"×४¾" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–चरित्र । ग्रन्थ संख्या–२४८८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–बैशाख कृष्णा १३, सं० १६९८ ।

१८३९. **पंचचक्खाण**— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०¼"×४½" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–प्राकृत । लिपि–नागरी । विषय–आचार । ग्रन्थ संख्या–२७३४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८४०. **बुद्धिसागर दृष्टान्त**—बुद्धिसागर । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–६¾"×४" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–उपदेश । ग्रन्थ संख्या–१३१९ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला १५, बुधवार, सं० १६४९ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८४१. भजन व आरती संग्रह— × । देशी कागज । पत्र संख्या–४३ । आकार–१२"×५$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–भजन व आरतीयों का संग्रह । ग्रन्थ संख्या–११६० । रचनाकाल– × । लिपिकाल—आषाढ़ शुक्ला ६, सं० १८६१ ।

१८४२. भविष्यदत्त चरित्र—पं० धनपाल । देशी कागज । पत्र संख्या–१०४ । आकार–११$\frac{3}{4}$"×५" । दशा–अति जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–अपभ्रंश । लिपि–नागरी । विषय–चरित्र । ग्रन्थ संख्या–२५८८ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा ६, बृहस्पतिवार, सं० १५६७ ।

१८४३. भावना बत्तीसी —× । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{3}{4}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–काव्य । ग्रन्थ संख्या–२६५७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८४४. भावी कुलकरों की नामावली— × । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–११"×५$\frac{1}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–नामावली । ग्रन्थ संख्या–२८३२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८४५. भुवनेश्वरी स्तोत्र—पृथ्वीधराचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । आकार–११$\frac{3}{4}$" × ५$\frac{3}{4}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२५१० । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८४६. मूर्ति पूजा मण्डन—पं० मिहिर चन्द्र दास जैनी । देशी कागज । पत्र संख्या–१३ । आकार–८$\frac{3}{4}$"×५" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–तर्कों के आधार पर मूर्ति पूजा का मण्डन किया गया है । ग्रन्थ संख्या–१६३७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल–सं० १६४५ ।

१८४७. मुद्राविधि— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१ आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि– नागरी । विषय–मुद्रा पहिनने का वर्णन । ग्रन्थ संख्या–२७७७ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८४८. रघुवंश के राजाओं की नामावली— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार–१०$\frac{3}{4}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–इतिहास । ग्रन्थ संख्या–१८८१ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८४९. रत्नकोश— × । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । आकार–१०$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–जीर्णक्षीण । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–संगीत । ग्रन्थ संख्या–२११२ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

१८५०. रत्न परीक्षा— × । देशी कागज । पत्र संख्या–५ । आकार–१०"×४$\frac{1}{2}$" । दशा–अच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–रत्नों की परीक्षा । ग्रन्थ संख्या–२७४३ । रचनाकाल– × । लिपिकाल– × ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८५१. रत्न परीक्षा (रत्न दीपिका)—चण्डेश्वर सेठ। देशी कागज। पत्र संख्या—५। आकार—१०"×४½"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—रत्न परीक्षा वर्णन। ग्रन्थ संख्या—२७४४। रचनाकाल—×। लिपिकाल—बैशाख शुक्ला ३, शुक्रवार, सं० १८७८।

१८५२ शील श्री चरित्र— ×। देशी कागज। पत्र संख्या—५। आकार—१२½"×५½"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—चरित्र। ग्रन्थ संख्या—२१०३। रचनाकाल— ×। लिपिकाल— ×।

विशेष—गौतम स्वामी से राजा श्रेणिक ने यह चरित्र सुना है, उसी का वर्णन है।

१८५३ षोडष कारण पूजा— ×। देशी कागज। पत्र संख्या—४। आकार—१०"×४½"। दशा—प्राचीन। पूर्ण। भाषा—प्राकृत व संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—पूजा। ग्रन्थ संख्या—२४१०। रचनाकाल— ×। लिपिकाल—बैशाख शुक्ला ५, सं० १७०६।

१८५४. स्त्री के सोलह लक्षण— ×। देशी कागज। पत्र संख्या—१। आकार—१०¾"×४¼"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत और हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—लक्षणावली। ग्रन्थ संख्या १४६३। रचनाकाल— ×। लिपिकाल— ×।

१८५५. स्वर सन्धि—पं० योगक। देशी कागज। पत्र संख्या—१६। आकार—१०¾"×४½"। दशा—प्राचीन। पूर्ण। भाषा—संस्कृत और हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—व्याकरण। ग्रन्थ संख्या—२०८४। रचनाकाल— ×। लिपिकाल— ×।

१८५६. सज्जन चित्त वल्लभ—मल्लिषेण। देशी कागज। पत्र संख्या—३। आकार—१०½"×४" दशा—जीर्ण। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—१४४१। रचना काल— ×। लिपिकाल— ×।

१८५७. सवैया बत्तीशी—कवि जगन पोहकरण (ब्राह्मण) देशी कागज। पत्र संख्या—४। आकार—१०½"×४¼"। दशा—जीर्ण। पूर्ण। भाषा—हिन्दी (पद्य)। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—१४३१। रचनाकाल— ×। लिपिकाल—पौष कृष्णा ८, मंगलवार, सं० १६६५।

१८५८. संग्रह ग्रन्थ—संग्रहीत। देशी कागज। पत्र संख्या—७४। आकार—११¾"×५½"। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—१२८३। रचनाकाल—×। लिपिकाल—फाल्गुन कृष्णा १२, सं० १८६६।

१८५९. संदीप्त वेदान्त शास्त्र— परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री मध्वंकर। देशी कागज। पत्र संख्या—१४। आकार—१०½"×४½"। दशा—जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—वेदान्त। ग्रन्थ संख्या—१४३५। रचनाकाल—×। लिपिकाल— ×।

१८६०. संयम वर्णन— ×। देशी कागज। पत्र संख्या—८। आकार—१२"×५½"। दशा—जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा—अपभ्रंश और हिन्दी। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—२१४६। रचनाकाल— ×। लिपिकाल— ×।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८६१. हरिवंश पुराण—मुनि यशःकीर्ति। देशी कागज। पत्र संख्या–२६३। आकार–११$\frac{1}{8}$"×५$\frac{1}{8}$"। दशा–अच्छी। पूर्ण। भाषा–अपभ्रंश। लिपि–नागरी। विषय–पुराण। ग्रन्थ संख्या–२६४४। रचनाकाल–×। लिपिकाल–आषाढ़ शुक्ला ७, बृहस्पतिवार, सं० १६५२।

१८६२. त्रिलोचन चन्द्रिका—प्रगल्भ तर्कसिंह। देशी कागज। पत्र संख्या–३। आकार–६$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{8}$"। दशा–जीर्णक्षीण। पूर्ण। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–दर्शन। ग्रन्थ संख्या–१७३७। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अज्ञात एवं अप्रकाशित ग्रन्थों की नामावली

क्र०सं०	ग्रन्थ सूची का क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार	भाषा
१.	११८६	अकलंक स्तुती	बौद्धाचार्य	संस्कृत
२.	५१३	अन्यापदेश शतक	मैथिली मधुसूदन	,,
३.	११९२	अपामार्ग स्तोत्र	गोविन्द	,,
४.	७१६	अंबड़ चरित्र	पं० अमरसुन्दर	,,
५.	७१३	अवन्ति सुकुमाल महामुनि वर्णन	महानन्दमुनि	हिन्दी
६.	२८९	अश्विनी कुमार संहिता	अश्विनी कुमार	संस्कृत, हिन्दी
७.	३७३	आखय दशमी व्रत कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी
८.	१९	आत्मानुशासन	पार्श्वनाग	संस्कृत
९.	९५३	आराधना कथाकोश	मुनि सिंहनन्दि	,,
१०.	२४	आलाप पद्धति	कवि विष्णु	,,
११.	११९६	आशाधराष्टक	शुभचन्द्रसूरि	संस्कृत
१२.	११९९	इन्द्र वधुचितहुलास आरती	रुचिरंग	हिन्दी
१३.	२७	इष्टोपदेश टीका	गौतम स्वामी	संस्कृत
१४.	१८१४	एकविंशति स्थानक	सिंहसेन सूरि	प्राकृत, संस्कृत
१५.	९५४	काल ज्ञान	महादेव	संस्कृत
१६.	३८७	काष्टांगार कथा	—	हिन्दी
१७.	५३६	कुमारसम्भव सटीक	टीका लालु की	संस्कृत
१८.	९१७	खुदीप भाषा	कुवरभुवानीदास	हिन्दी
१९.	९६१	ग्रह दीपक	—	संस्कृत
२०.	१२६७	चतुषष्टि महायोगिनी महास्तवन	धर्मनन्दाचार्य	हिन्दी
२१.	३९३	चन्दनराजा मलय गिरी चौपई	जिनहर्ष सूरि	,,
२२.	७२८	चन्द्रलेहा चरित्र	जिनहर्ष सूरि	,,
२३.	५४७	चातुर्मास व्याख्यान पद्धति	शिवनिधान पाठक	,,
२४.	२९९	चिन्त चमत्कार सार्थ	—	संस्कृत, हिन्दी
२५.	५४८	चौबोली चतुष्पदी	जिनचन्द्र सूरि	हिन्दी
२६.	१०८	चौबीस दण्डक	गजसार	प्राकृत
२७.	१३९	जयति उखाण (बालावबोध)	अभयदेव सूरि	प्राकृत, हिन्दी
२८.	१२८०	जिनपूजा पुरन्दर विधान	अमरकीर्ति	अपभ्रंश

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्र०सं०	ग्रन्थ सूची का क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार	भाषा
२९.	१२८६	जिन सहस्त्र नाम स्तोत्र	सिद्धसेन दिवाकर	संस्कृत
३०.	१२८७	जिनस्तवन सार्थ	जयानन्द सूरि	,,
३१.	११२	जीव तत्व प्रदीप	केशवाचार्य	प्राकृत, संस्कृत
३२.	९७७	ज्योतिष चक्र	हेमप्रभ सूरि	संस्कृत
३३.	१२८	तत्व ज्ञान तरंगिणी	मुमुक्षु भट्टारक ज्ञानभूषण	संस्कृत
३४.	६६८	ज्ञानहीमची	कवि जगरूप	हिन्दी
३५.	९९२	ताजिकपद्मकोश		संस्कृत
३६.	५१२	त्रेषठ श्लाका पुरुष चौपई	पं० जिनमति	हिन्दी
३७.	१४३	दश अच्छेग	—	हिन्दी, अपभ्रंश
३८.	४१०	द्वादश चक्री कथा	ब्रह्म नेमिदत्त	संस्कृत
३९.	१६८	धर्म संवाद	—	,,
४०.	५६५	नन्दे श्वर काव्य	मृगेन्द्र	,,
४१.	१६८१	नन्दीश्वर पंक्ति विधान कथा	शिववर्मा	,,
४२.	१७२	नयचक्र बालावबोध	सदानन्द	हिन्दी
४३.	७५०	नागकुमारी चरित्र	पुष्पदन्त	अपभ्रंश
४४.	१३१६	नारायण पृच्छा जयमाल	—	
४५.	१३६१	पंचपरमेष्ठी स्तोत्र	जिनप्रभ सूरि	संस्कृत
४६.	११५५	पद्मनाभ पुराण	भ० सकलकीर्ति	,,
४७.	१३२४	पद्मावती पूजन	गोविन्द स्वामी	,,
४८.	१९५	प्रथम बखाण	—	हिन्दी
४९.	७६५	प्रद्युम्न चरित्र	महाकवि सिंह	अपभ्रंश
५०.	९२४	पार्श्वनाथजी रो देशान्तरी छंद	कविराज	हिन्दी
५१.	९२५	पिंगल छंद	पहुप सहाय	अपभ्रंश
५२.	९२७	पिंगलरूप दीपक	जयकिशन	हिन्दी
५३.	?	पिंगल भाषा	पं० सुखदेव मिश्र	,,
५४.	१८३७	पिण्डविशुद्धावचूरी	जिनवल्लभ सूरि	संस्कृत, प्राकृत
५५.	४२९	प्रियमेलक कथा	ब्रह्मवेणीदास	हिन्दी
५६.	१३६५	बाला त्रिपुरा पद्धति	श्रीराम	संस्कृत
५७.	५९०	बुद्धि रसायण	पं० महिराज	अपभ्रंश, हिन्दी
५८.	४३७	बाहुबली पाथड़ी	—	अप०, सं०
५९.	४४१	भरत बाहुबली वर्णन	शीशराज	हिन्दी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्र०सं०	ग्रन्थ सूची का क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार	भाषा
६०.	७८८	भविष्यदत्त चरित्र	पं० धनपाल	अपभ्रंश
६१.	२१२	भव्य मार्गणा	—	हिन्दी
६२.	१३८७	भारती स्तोत्र	शंकराचार्य	संस्कृत
६३.	३३९	भूषण बावनी	द्वारकादास पाटणी	हिन्दी
६४	६१३	मंगल कलश चौपई	लक्ष्मी हर्ष	,,
६५.	५९८	मयुराष्टक	कवि मयुर	संस्कृत
६६.	१३९३	महर्षि स्तवन	पं० आशाधर	,,
६७.	४४८	मूलसंघाग्रणी	रत्नकीर्ति	,,
६८	६०५	मेघदूत सटीक	लक्ष्मी निवास	,,
६९.	३१४	योग शतक	विदग्ध वैद्य	,,
७०	१५४५	योग ज्ञान	—	,,
७१.	८२०	रत्नचूड़रास	यशः कीर्ति	हिन्दी
७२.	१८५१	रत्न परीक्षा	चण्डेश्वर सेठ	संस्कृत
७३.	१७७६	रत्नसार	पं० जीवंधर	,,
७४.	१६८७	राई प्रकरण विधि	—	हिन्दी
७५.	६२०	रामाज्ञा	तुलसीदास	हिन्दी
७६.	१४०२	रामचन्द्र स्तवन	सनत्कुमार	संस्कृत
७७.	१७७७	रात्रि भोजन दोष विचार	धर्मसमुद्रवाचक	हिन्दी
७८.	१६८९	रुकमणी व्रत विधान कथा	विशालकीर्ति	मराठी
७९.	६२१	लघुस्तवन सटीक	लघु पण्डित	संस्कृत
८०.	३२५	लंघन पथ्य निर्णय	वाचक दीपचन्द्र	,,
८१.	४६२	लब्धि विधान व्रत कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी
८२.	६२२	लक्ष्मी-सरस्वती संवाद	श्रीभूषण	संस्कृत
८३.	३२६	वनस्पति सत्तरी सार्थ	मुनिचन्द सूरि	प्राकृत, संस्कृत
८४.	१४१७	वर्द्धमान जिनस्तवन सटीक	पं० कनककुशलगणि	संस्कृत
८५.	१०४४	वर्ष कुण्डली विचार	—	,,
८६.	६२५	वसुधारा महाविद्या	नन्दन	संस्कृत
८७.	१५९६	वाक्य प्रकाश सूत्र सटीक	दामोदर	,,
८८.	२३१	वाद पच्चीसी	ब्रह्म गुलाल	हिन्दी
८९.	८२८	विक्रमसेन चौपई	मानसागर	,,
९०.	१०४६	विंचितमणि अंक	—	,,
९१.	६३१	विद्वद्भूषण काव्य	बालकृष्ण भट्ट	संस्कृत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्र०सं०	ग्रन्थ सूची का क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार	भाषा
९२.	१४२९	विमलनाथ स्तवन	विनीत सागर	हिन्दी
९३.	१०५१	विवाहपटल सार्थ	—	संस्कृत, हिन्दी
९४.	१७७८	विवेक विलास	जिनदत्त सूरि	सस्कृत
९५	१४३७	विषापहार विलाप स्तवन	वादिचन्द्र	,,
९६	६३३	वैराग्य माला	सहल	,,
९७.	१४३९	शनिश्चर स्तोत्र	दशरथ	,,
९८.	६२६	वृन्दावन काव्य	कवि माना	,,
९९.	४९५	श्रावक चूल कथा	—	,,
१००.	५११	क्षुल्लककुमार (राजऋषिवर चौपई)	सुन्दर	हिन्दी
१०१.	२८१	श्रेणिक गौतम संवाद	—	सस्कृत
१०२	१६६६	श्रुतस्तपन विधि	—	,,
१०३.	६५१	सप्त व्यसन समुच्चय	पं० भीमसेन	,,
१०४.	४८०	सम्यक्त्व	कवि यशसेन	,,
१०५.	१४५१	समवशरण स्तोत्र	धनदेव	,,
१०६.	१८६०	संयम वर्णन	—	अपभ्रंश, हिन्दी
१०७.	१४५९	सरस्वती स्तुति	बनारसीदास	हिन्दी
१०८.	१०९३	संवत्सर फल	—	संस्कृत
१०९.	१४७६	साधु वन्दना	पार्श्वचन्द्र	,,
११०.	१४७८	साधु वन्दना	समयसुन्दर गणि	हिन्दी
१११.	२६६	सामायिक सटीक	पाण्डे जयवंत	संस्कृत, हिन्दीं
११२	१४९३	सिद्धचक्र पूजा	श्रुतसागर	संस्कृत
११३.	३४१	सिन्दुरप्रकरण	सोमप्रभाचार्य	,,
११४	४८५	सिंहल सुत चतुष्पदी	समयसुन्दर	हिन्दी
११५.	४९०	सुगन्धदशमी कथा	सुशीलदेव	अपभ्रंश
११६.	४९१	सुगन्धदशमी कथा	ब्रह्म जिनदास	संस्कृत
११७.	२७०	सुभद्रानो चोढालीयो	कवि मानसागर	हिन्दी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्र०सं०	ग्रन्थ सूची का क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार	भाषा
११८.	२७१	सुभाषित कोश	हरि	संस्कृत
११९	८४४	सुरपति कुमार चतुष्पदि	पं० मानसागर	हिन्दी
१२०.	६६४	स्थूलभद्रमुनि गीत	नथमल	,,
१२१.	५००	हरिश्चन्द्र चौपई	ब्रह्मवेणीदास	,,
१२२	५०९	हन्सवत्स कथा	—	,,
१२३.	५०८	हन्सराज वच्छराज चौपई	भावहर्ष	,
१२४	५०२	हेम कथा	रक्षामणि	संस्कृत और हिन्दी

—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनुक्रमणिका अकारादि स्वर

ग्रंथ का नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रंथ सूची क्रमांक
		(अ)		
अकलंक स्तुति	बोद्धाचार्य	संस्कृत	१३१	११८६
अक्षयनिधि व्रत-विधान	–	,,	१८०	१६७२
अग्नि स्तोत्र	–	,,	१३१	११८७
अर्घ कांड यंत्र	–	प्राकृत-संस्कृत	१६३	१५०९
अट्ठारह नाता को व्योरो	–	हिन्दी	१९८	१८१२
अढ़ाई द्वीप चित्र	–	–	९३	८६५
अढाई द्वीप चित्र	–	–	९३	८६६
अढाई द्वीप चित्र	–	–	९३	८६७
अढ़ाई द्वीप पूजन भाषा	डालूराम	हिन्दी	१३१	११८८
अढ़ाई द्वीप पूजा	–	,,	१३१	११८९
अणुव्रत रत्नदीप	साहल सुबलरकण	अपभ्रंश	१८०	१६६९
अध्यात्म तरंगिणी	सोमदेव शर्मा	संस्कृत	१०३	९४९
अनन्तव्रत कथा	पद्मनन्दि	,,	३७	३६६
अनन्तव्रत कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	३७	३६८
अनन्त विधान कथा	–	अपभ्रंश	१८०	१६७०
अन्नपूर्णा स्तोत्र	शंकराचार्य	संस्कृत	१३१	११९०
अन्यापदेश शतक	मैथिली मधुसूदन	,,	५३	५१३
अनादि मूल मंत्र	–	प्राकृत	१६३	१५०८
अनिट कारिका	–	संस्कृत	१७०	१५६१
अनिट कारिका सार्थ	–	,,	१७०	१५६७
अनिट सेट कारकष्टी	–	,,	१७०	१५६८
अनित्य निरूपण चतुर्विंशति	–	,,	५३	५१७
अनेकार्थ ध्वनि मंजरी	कवि सूद	,,	६८	६७१
अनेकार्थ ध्वनि मंजरी	–	,,	६८	६७२
अनेकार्थ नाममाला	हेमचन्द्राचार्य	,,	६८	६७४
अनेकार्थ मंजरी	नन्ददास	हिन्दी	६८	६६९
अपामार्ग स्तोत्र	गोविन्द	संस्कृत	१३१	११९२
अभक्ष वर्णन	–	हिन्दी	१	१
अभिधान चिन्तामणि	हेमचन्द्राचार्य	संस्कृत	६८	६७६
अमर कोश	अमरसिंह	,,	६८	६७७
अमरकोश वृत्ति	–	,,	६९	६८१
,,	भट्टोपाध्याय सुनुलिंगयसूरि	,,	६९	६८२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
अर्जुन चौपाई	समयसुन्दर	हिन्दी	७२	७१२
अरहनाथ चित्र	–	–	९३	८६८
अरिष्ट फल	–	संस्कृत	१०३	९५०
अवन्ति सुकुमाल कथा	हस्ती सूरि	हिन्दी	३७	३६९
अवन्ति सुकुमाल महामुनि वर्णन	महानन्द मुनि	,,	७२	७१३
अवयड़ केवली	–	संस्कृत	१०३	९५१
अव्यय तथा उपसर्गार्थ	–	,,	१७०	१५६९
अव्यय दीपिका	–	,,	१७०	१५७०
अव्यय दीपिका वृत्ति	–	,,	१७१	१५७२
अश्विनी कुमार संहिता	अश्विनी कुमार	,,	२९	२८९
अशोक सप्तमी कथा	–	,,	३७	३७०
अष्टक सटीक	शुभचन्द्राचार्य	प्राकृत-संस्कृत	१८०	१६७१
अष्ट नायिका लक्षण	–	संस्कृत	५६	५१६
अष्ट दल पूजा और षोडष दल पूजा	–	हिन्दी	१३१	११९३
अष्ट सहस्त्री	विद्यानन्दि	संस्कृत	११७	१०९९
अष्टाह्निका पूजा	भ० शुभचन्द्राचार्य	,,	१३२	११९५
अस्टाह्निका व्रत कथा	–	,,	३७	३७१
अष्टोत्तरी शतक	पं० भगवती दास	हिन्दी	१	२
अंक गर्भ खण्डार चक्र	देव नन्दि	संस्कृत	५	४२
,,	–	,,	१३२	११९५
अंक प्रमाण	–	प्राकृत-हिन्दी	५	४६
अंग फूरकण शास्त्र	–	हिन्दी	१०३	९५२
अंजन निदान सटीक	अग्निवेश	संस्कृत-हिन्दी	२९	२९०
अंबड़ चरित्र	पं० अमर सुन्दर	संस्कृत	७२	७१६
(आ)				
आकाश पंचमी व्रत कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	३७	३७२
आखय दशमी व्रत कथा	–	,,	३७	३७३
आख्या दन्तवाद	–	संस्कृत	११७	११००
आगम	–	प्राकृत-हिन्दी	१	३
आचारसार	वीर नन्दि	संस्कृत	१८६	१७१०
आठ कर्म प्रकृति विचार	–	हिन्दी	१	४
आत्म मीमांसा वचनिका	समन्तभद्र	संस्कृत-हिन्दी	१	५
आत्म मीमांसा वचनिका	जयचन्द छाबड़ा	,,	१	५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रंथ सूची क्रमांक
आत्म सम्बोध काव्य	रयधू	अपभ्रंश	१	६
आत्म सम्बोध काव्य	—	,,	५३	५१८
आत्म सम्वोध पंचासिका	—	,,	५३	५२०
आत्मानुशासन	गुणभद्राचार्य	संस्कृत	२	१४
आत्मानुशासन	पार्श्वनाग	संस्कृत	३	१६
आत्मानुशासन सटीक	पं० प्रभाचन्द्राचार्य	,,	२	१८
आत्मानुशासन सटीक	—	हिन्दी	२	१७
आतुर पंचखाण	—	संस्कृत	१६८	१८१३
आदित्यवार कथा	भानुकीर्ति	हिन्दी	३८	३७५
आप्त मीमांसा	समन्तभद्राचार्य	संस्कृत	११७	११०१
आयुर्वेद संग्रहीत ग्रंथ	—	संस्कृत-हिन्दी	२६	२६१
आर्यं वसुधारा धारणी नाम महाविद्या	श्री नन्दन	संस्कृत	५३	५२१
आराधना कथा कोश	ब्रह्म नेमिदत्त	,,	३८	३७६
आराधना कथा कोश	मुनि सिंहनन्दि	,,	१०३	६५३
आराधनासार	मित्रसागर	प्राकृत-संस्कृत और हिन्दी	३	२०
आराधनासार	पं० देवसेन	प्राकृत	३	२२
आलाप पद्धति	कवि विष्णु	संस्कृत	३	२४
आलाप पद्धति	पं० देवसेन	,,	११७	११०३
आलोचना पाठ	जोहरी लाल	हिन्दी	३	२५
आशाधराष्टक	शुभचन्द्र सूरि	संस्कृत	१३२	११६६
आसव विधि	—	हिन्दी	२६	२६२

(इ+ई)

इन्द्रध्वज पूजन	भ० विश्वभूषण	संस्कृत	१३२	११६८
इन्द्रध्वज पूजा	—	,,	१३२	११६७
इन्द्र वधुचित हुलास आरती	रुचिरंग	हिन्दी	१३२	११६६
इन्द्र स्तुति	—	अपभ्रंश	१३२	१२००
इन्द्राक्षि जगच्चिन्तामणि कवच	—	संस्कृत	१३२	१२०१
इन्द्राक्षि नित्य पूजा	—	,,	१३२	१२०२
इन्द्राक्षि सहस्त्र नाम स्तवन	—	,,	१३२	१२०३
इष्टोपदेश	पूज्यपाद गौतम स्वामी	,,	३	२७
इष्टोपदेश	पूज्यपाद	,,	४	२६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
इष्टोपदेश टीका	पं० आशाधर	संस्कृत	४	३२
ईश्वर कार्तिकेय संवाद एवं रूद्राक्ष उत्पत्ति, धारण मंत्र विधान	–	,,	५४	५२३
ईश्वर प्रत्यभिज्ञा सूत्र	अभिनव गुप्ताचार्य	,,	११७	११०८
(उ)				
उच्छिष्ट गणपति पद्धति	–	संस्कृत	१६३	१५१०
उत्तम चरित्र	–	,,	७२	७१४
उत्तर पुराण	पुष्पदन्त	अपभ्रंश	१२४	११४२
उत्तर पुराण सटीक	–	अपभ्रंश, संस्कृत	१२४	११४३
उत्तर पुराण सटीक	प्रभाचन्द्राचार्य	संस्कृत	१२४	११४५
उत्तराध्ययन	–	प्राकृत	४	३५
उदय उदीरण त्रिभंगी	सि० च० नेमिचन्द्र	,,	४	३६
उपदेश माला	धर्मदास गणि	अपभ्रंश	१८६	१७१४
उपदेश रत्नमाला	सकलभूषण	संस्कृत	१८६	१७१५
उपसर्ग शब्द	–	,,	१७१	१५७३
उपासकाचार	पूज्यपाद	,,	१८७	१७१७
उपासकाध्ययन	वसुनन्दि	संस्कृत	१८७	१७१८
(ए—ऐ)				
एक गीत	श्रीमति कीर्तिवाचक	हिन्दी	५४	५२४
एक पद	रंगलाल	,,	३८	३७८
एक पद	गुलाबचन्द	,,	३८	३७७
एक लावणी	–	,,	४	४०
एकलीकरण विधान	–	संस्कृत	१८०	१६७३
एक विशंति स्थानक	सिद्धसेन सूरि	प्राकृत और हिन्दी	१९८	१८१४
एकाक्षर नाममाला	पं० वररुचि	संस्कृत	६९	६८४
एकाक्षरी नाममाला	प्राक्सूरि	,,	६९	६८६
एकीभाव व कल्याण मन्दिर स्तोत्र	–	,,	१३३	१२१५
एकीभाव स्तोत्र	वादिराज सूरि	,,	१३२	१२०४
एकीभाव स्तोत्र सार्थ	–	,,	१३३	१२११
एकीभाव स्तोत्र टीका	नागचन्द्र सूरि	,,	१३३	१२१२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
		(ऋ)		
ऋषभदास विनती		हिन्दी	१९८	१८१५
ऋषभदेव स्तवन	–	संस्कृत	१३३	१२१६
ऋषभनाथ चरित्र	भ० सकलकीर्ति	,,	७२	७१५
ऋषि मण्डल व पार्श्वनाथ चिन्तामणी बड़ा यन्त्र	–	,,	१६३	१५१३
ऋषि मण्डल पूजा	गुणनन्दि	,,	१३३	१२१७
ऋषि मण्डल यन्त्र	–	,,	१६३	१५१२
ऋषि मण्डल यन्त्र	–	,,	१६३	१५११
ऋषि मण्डल स्तोत्र	–	,,	१३४	१२२०
ऋषि मण्डल स्तोत्र सार्थ	गौतम स्वामी	संस्कृत—हिन्दी	१३४	१२२३
		(क)		
कथाकोश	ब्रह्म नेमिदत्त	संस्कृत	३८	३७९
कथा प्रबन्ध	प्रभाचन्द्र	,,	३८	३८३
कथा संग्रह	–	अपभ्रंश व संस्कृत	३८	३८४
कथा संग्रह	–	संस्कृत	३८	३८५
कनकावली व शील कथा	–	,,	३९	३८६
करकण्डु चरित्र	कनकामर	अपभ्रंश	७२	७१७
कर्म काण्ड सटीक	पं० हेमराज	हिन्दी	५	४७
कर्मकाण्ड सटीक	–	,,	५	४८
कर्म दहन पूजा	–	संस्कृत, हिन्दी	१३४	१२२४
कर्म दहन मण्डल यन्त्र	–	संस्कृत	१६३	१५१४
कर्म प्रकृति	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	५	५०
कर्म प्रकृति सार्थ	–	प्राकृत– संस्कृत	६	५८
कर्म प्रकृति सूत्र भाषा	–	हिन्दी	६	६५
कल्याण पंचका रोपण विधान	–	संस्कृत	१८०	१६७४
कल्याण मन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्राचार्य	,,	१३४	१२२५
कल्याण मन्दिर स्तोत्र (सटीक)	–	,,	१३५	१२४०
कल्याण मन्दिर स्तोत्र टीका	भं० हर्षकीर्ति	,,	१३५	१२४१
कल्याण मन्दिर स्तोत्र सार्थ	–	,,	१३६	१२४२
कल्याण मन्दिर स्तोत्र सार्थ	सिद्धसेनाचार्य	,,	१३६	१२४७
कल्याण मन्दिर स्तोत्र सार्थ	हुकमचन्द	संस्कृत—हिन्दी	१३६	१२४८
कल्याण माला	–	संस्कृत	१८०	१६७५
कलश स्थापना मन्त्र	–	,,	१६३	१५१५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
काठिन्य श्लोक	–	संस्कृत	५४	५२५
कातन्त्र रूपमाला	शिव वर्मा	,,	१७१	१५७४
कातन्त्र रूपमाला वृत्ति	भावसेन	,,	१७१	१५७५
कार्तिकेयानुप्रेक्षा	कार्तिकेय	प्राकृत	७	६७
कारक परीक्षा	–	संस्कृत	१७१	१५७८
कारक विवरण	–	,,	१७१	१५७९
काल ज्ञान	–	,,	२९	२९५
कालज्ञान	महादेव	,,	१०३	९५४
कालज्ञान	लक्ष्मी वल्लभगणि	हिन्दी	१०३	९५६
काव्य टिप्पण	–	संस्कृत	७	६९
काष्टागांर कथा	–	हिन्दी	३९	३८७
क्रिया कलाप	विजयानन्द	संस्कृत	१७१	१५८०
क्रिया कलाप टीका	प्रभाचन्द्र	,;	७	७०
क्रियाकलाप सटीक	पं० आशाधर	,,	१८८	१७२३
क्रियाकलाप सटीक	प्रभाचन्द्र	,,	१८८	१७२४
क्रियाकोश	किशनसिंह	हिन्दी	७,७०,१८८	७१,६९० १७२५
क्रिया गुप्त पद्य	–	संस्कृत	५४	५२६
किरातार्जुनीय	भारवि	,,	५८	५२७
किरातार्जुनीय सटीक	मल्लिनाथ सूरि	,,	५४	५३२
किरातार्जुनीय सटीक	एकनाथ भट्ट	,,	५४	५३३
क्रिया विधि मन्त्र	–	,,	१८८	१७२७
कुन्थनाथ चित्र	–	–	९३	८६९
कुमार-सम्भव	कालिदास	,,	५५	५३४
कुमार सम्भव सटीक	पं० लालु	,,	५५	५३६
कुल ध्वज चौपइ	पं० जयसर	हिन्दी	७२	७१८
केशव बावनी	केशवदास	,,	५५	५३७
कोकसार	आनन्द	,,	१९८	१८१६
		(ख)		
खण्ड प्रशस्ति	–	संस्कृत	१९८	१८१७
खण्ड प्रशस्ति	–	,,	५५	५३८
खंधक मुनि की सज्झाय	–	हिन्दी	१९८	१८१९
खूदीप भाषा	कुंवर भुवानीदास	,,	९९	९१७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
(ग)				
गजसिंह कुमार चौपई	ऋषि देवीचन्द	हिन्दी	१९८	१८१८
गणधर वलय	–	संस्कृत	१३६	१२४९
गणधर वलय यन्त्र	–	,,	१६४	१५१६
गद्य पद्धति	–	,,	१९८	१८२०
गणेश चित्र	–	–	९३	८७०
गणेश व सरस्वती चित्र	–	–	९३	८७२
गणितनाम माला	हरिदत्त	संस्कृत	७०,१०३	६९१,९५७
गर्भ खण्डार चक्र	देवनन्दि	,,	१३६	१२५१
गार्भिण्यादि प्रश्न विचार	–	हिन्दी	१०३	९५८
गरुड़ोपनिषद्	हरिहर ब्रह्म	संस्कृत	११७	११०९
गरूड़ पुराण	वेदव्यास	,,	१२४	११४६
ग्रह दृष्टि वर्णन	–	,,	१०४	९६०
ग्रह दीपक	–	,,	१०४	९६१
ग्रह शान्ति विधि	–	,,	१०४	९६२
ग्रह शान्ति विधान	पं० आशाधर	,,	१०४	९६३
ग्रहायु प्रमाण	–	,,	१०४	९६४
गाथा यन्त्र	–	प्राकृत	१६४	१५१७
गायक का चित्र	–	–	९३	८७३
गीत गोविन्द (सटीक)	जयदेव	हिन्दी, संस्कृत	५५	५४०
गुज सन्घटप चरित्र	पं० जयसर	हिन्दी	७२	७१९
गुणधर ढाल	–	,,	५५	५४१
गुणरत्न माला	दामोदर	संस्कृत	२६	२९७
गुण स्थान कथा	काह्ना छावड़ा	हिन्दी	७	७२
गुण स्थान चर्चा	–	प्राकृत और हिन्दी	७	७३
गुण स्थान चर्चा सार्थ	रत्नशेखर सूरि	संस्कृत	७	७५
गुण स्थान चर्चा सार्थ	–	प्राकृत–हिन्दी	१६४	१५१८
गुण स्थान बंध	–	संस्कृत	७	७६
गुणस्थान स्वरूप	रत्नशेखर सूरि	संस्कृत	११८	१११०
गुरुचार व्युच्छति प्रकरण	–	हिन्दी	१०४	९५९
गुर्वावली	–	संस्कृत	१९९	१८२१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
गोम्मटसार	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	७	७७
गोम्मटसार भाषा	पं० टोडरमल	राजस्थानी	८	८३
गोम्मटसार सटीक (जीवकाण्ड मात्र)	–	प्राकृत–संस्कृत	८	८२
गोम्मटसार सटीक	–	,,	८	८०
गोरख यन्त्र	–	हिन्दी	१०४	९६५
गौतम ऋषि कुल	–	प्राकृत-हिन्दी	३९	३८९
गौतम पुरूखरी	सिद्धस्वरूप	हिन्दी	५५	५४२
गौतम स्वामी चरित्र	मण्डलाचार्य श्रीधर्मचन्द	संस्कृत	७२	७२०
गौतम स्तोत्र	जिनप्रभसूरि	,,	१३६	१२५२
(घ)				
घटकर्पर काव्य	–	संस्कृत	५५	५४३
(च)				
चक्रधर पुराण	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	१२४	११४७
चक्रवर्ती ऋद्धि वर्णन	–	हिन्दी	८	८४
चतुर्दश गुणस्थान चर्चा	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत–संस्कृत	८	८७
चतुर्दश गुणस्थान	–	हिन्दी	३९	३९०
चतुर्दशी गरूड़ पंचमी कथा	–	मराठी	११८	११११
चतुर्दशी व्रतोद्यापनपूजा	पं० ताराचन्द श्रावक	संस्कृत	१३६	१२५३
चतुर्विशंति स्थानक चर्चा	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	९	८८
चतुर्विशंति तीर्थंकर चित्र	–	–	९४	१८७४
चतुर्विशंति तीर्थंकर चित्र	–	–	९४	१८७५
चतुर्विशंति जिन नमस्कार	–	हिन्दी	१३७	१२५४
चतुर्विशंति जिनस्तवन	–	संस्कृत	१३७	१२५५
चतुर्विशंति तीर्थंकर स्तुति	समन्तभद्र	,,	१३७	१२५६
चतुर्विशंति तीर्थंकर स्तुति	पं० घनश्याम	,,	१३७	१२६०
चतुर्विशंति तीर्थंकर पूजा	चौधरी रामचन्द्र	हिन्दी	१३७	१२६१
चतुर्विशंति तीर्थंकर पूजा	शुभचन्द्राचार्य	संस्कृत	१३७	१२६२
चतुर्विशंति जिनस्तवन	पं० रविसागर गणि	,,	१३८	१२६३
चतुर्विशंति जिनस्तवन	जिनप्रभसूरि	,,	१३८	१२६४
चतुर्विशंति जिनस्तवन	ज्ञानचन्द्र	,,	१३८	१२६५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
चतुःषष्ठी स्तोत्र	—	संस्कृत	१३८	१२६६
चतुःषष्ठी महायोगिनी महास्तवन	धर्म नन्दाचार्य	हिन्दी	१३८	१२६७
चतुःत्रिशंद भावना	मुनि पद्मनंदि	संस्कृत	६	६०
चन्दनमलय गिरिवार्ता	भद्रसेन	हिन्दी	३६	३६१
चन्दनराजमलयगिरि चौपई	जिनहर्ष सूरि	—	३६	३६३
चन्द्रप्रभ चरित्र	पं० दामोदर	संस्कृत	७३	७२४
चन्द्रप्रभ चरित्र	यशःकीर्ति	अपभ्रंश	७४	७२६
चन्द्रप्रभु चित्र	—	—	६४	८७६
चन्द्रप्रभ ढाल	—	हिन्दी	५६	५४६
चन्द्रलेहा चरित्र	रामवल्लभ	,,	७४	७२८
चन्द्रहासासव विधि	—	,,	२६	२६८
चन्द्रसूर्य कालानल चक्र	—	संस्कृत	१०४	६६६
चमत्कार चिन्तामणि	स्थानपाल द्विज	,,	१०४	६६७
चरचा पत्र	—	हिन्दी	६	६१
चर्चायें	—	प्राकृत-हिन्दी	६	६४
चर्चा तथा शील की नवपाढी	—	,,	६	६५
चरचा शतक टीका	हरजीमल	हिन्दी	६	६६
चरचा शास्त्र	—	,,	१०	६६
चरचा समाधान	भूधरदास	प्राकृत हिन्दी	१०	१००
चारित्रसार टिप्पण	चामुण्डराय	संस्कृत	७४	७३०
चाणक्यनीति	चाणक्य	,,	१२२	११३०
चिन्त चमत्कार सार्थ	—	संस्कृत हिन्दी	२६	२६६
चिन्तामणि नाममाला	हरिदत्त	संस्कृत	७०	६६१
चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा	—	संस्कृत-हिन्दी	१३८	१२६८
चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र	धरणेन्द्र	संस्कृत	१३८	१२७०
चिन्तामणि पार्श्वनाथ यन्त्र	—	,,	१६४	१५१६
चित्रबन्ध स्तोत्र	—	,,	१३८	१२७२
चुने हुए रत्न	—	,,	१६६	१८२२
चेतन कर्म चरित्र	भैया भगवतीदास	हिन्दी	७४	७३१
चेतन चरित्र	यशःकीर्ति	,,	७४	७३२
चौघड़िया चक्र	—	संस्कृत और हिन्दी	१०४	६६६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
चौबीस कथा	पं. कामपाल	हिन्दी	३९	३९४
चौबीस जिन आशीर्वाद	–	संस्कृत	१३९	१२७३
चौबीस तीर्थंकर स्तवन	–	,,	१३९	१२७४
चौबीस तीर्थंकरों की पूजा	वृन्दावनदास	संस्कृत और हिन्दी	१३९	१२७५
चौबीस ठाणा चौपाई	पं० लोहर	प्राकृत और हिन्दी	१०	१०३
चौबीस ठाणा भाषा	–	प्राकृत	१०	१०५
चौबीस ठाणा पिठिका तथा बंध व्युच्छति प्रकरण	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत और संस्कृत	१०	१०६
चौबीस ठाणा सार्थ	सि० च० नेमिचन्द्र	संस्कृत	१०	१०७
चौबीस दण्डक	गजसार	प्राकृत	१०,११	१०८,१०९
चौबीस दण्डक गीत विवरण	--	हिन्दी	११	११०
चौबोली चतुष्पदी	जिनचन्द्र सूरि	,,	५६	५४८
चौर पंचासिका	कवि चोर	संस्कृत	५६	५४९
चौषठ योगिनी स्तोत्र	–	,,	१३९	१२७६
(छ)				
छन्द रत्नावली	हरिराम	हिन्दी	९९	९१८
छन्द शतक	हर्ष कीर्ति सूरि	अपभ्रंश	९९	९१९
छन्द शास्त्र	–	संस्कृत	९९	९२०
छन्दसार	नारायणदास	हिन्दी	९९	९२१
छन्दोमजंरी	गंगादास	प्राकृत-संस्कृत	९९	९२२
छन्दोवतस	–	संस्कृत	९९	९२३
छाया पुरुष लक्षण	–	संस्कृत-प्राकृत	१९९	१८२३
(ज)				
जन्म कुण्डली विचार	–	संस्कृत	१०५	९७०
जन्म पद्धति	–	संस्कृत-हिन्दी	१०५	९७४
जन्म पत्रिका	–	संस्कृत	१०५	९७१
जन्म पत्री पद्धति	हर्षकीर्ति द्वारा संकलित	,,	१०५	९७२
जन्म फल विचार	–	,,	१०५	९७३
जन्मान्तर गाथा	–	प्राकृत	११	१११
जम्बू स्वामी कथा	पाण्डे जिनदास	हिन्दी	३९	३९५
जम्बू स्वामी चरित्र	भं० सकलकीर्ति	संस्कृत	७४	७३३
जम्बूद्वीप चित्र	–	,,	९४	८७९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
जम्बूद्वीप वर्णन	—	हिन्दी	१८४	१३६७
जम्बूद्वीप संग्रहणी	हरिभद्र सूरि	प्राकृत	१६६	१८२४
जयतिहुण स्तोत्र	अभयदेव सूरि	प्राकृत-हिन्दी	१३६	१२७७
जलयात्रा पूजा विधान	—	संस्कृत	१८०	१६७६
ज्वर पराजय	पं० जयरत्न	,,	३०	
ज्योतिष चक्र	हेमप्रभ सूरि	,,	१०५	६७७
ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति	,,	१०५	६७८
ज्योतिष सार	नारचन्द्र	,,	१०६	६८०
ज्योतिष सार भाषा	कवि कृपाराम	हिन्दी	१०६	६३७
ज्योतिष सार सटीक	भुजोदित्य	संस्कृत	१०६	६८१
ज्वाला मालिनी स्तोत्र	—	,,	१३६	१२७८
ज्वाला मालिनी यन्त्र	—	,,	१६४	१५२०
जातक	दण्डिराज दैवज्ञ	,,	१०५	६७५
जातक प्रदीप	साँवला	गुजराती व हिन्दी	१०५	६७६
जिन कल्याण माला	पं० आशाधर	संस्कृत	१८८	१७२८
जिन गुण सम्पतिव्रतोद्यापन	आ० देवनंदि	,,	१३६	१२७६
जिनदत्त कथा	गुणभद्राचार्य	,,	३६	३६६
जिनदत्त चरित्र	—	,,	७५	७३८
जिनधर्म पद	समयसुन्दर	हिन्दी	१६६	१८२५
जिनपूजा पुरन्दर कथा	—	संस्कृत	४०	४०२
जिनपूजा पुरन्दर अमर विधान	अमरकीर्ति	अपभ्रंश	१३६	१२८०
जिनपंच कल्याणक पूजा	जयकीर्ति	संस्कृत	१३६	१२८१
जिन मूर्ति उत्थापक उपदेश चौपई	कवि जगरुप	हिन्दी	१६६	१८२६
जिन यज्ञकल्प	पं० आशाधर	संस्कृत	१३६१८१	१२८२,१६७७
जिन रस वर्णन	वेणिराम	हिन्दी	१४०	१२८४
जिन सहस्त्र नाम स्तोत्र	सिद्धसेन दिवाकर	संस्कृत	१४०	१२८६
जिन स्तवन सार्थ	जयानन्द सूरि	,,	१४०	१२८७
जिन स्तुति	—	,,	१४०	१२८८
जिन सुप्रभात स्तोत्र	सि० च० नेमिचन्द्र	,,	१४०	१२८६
जिन रात्रि कथा	—	,,	४०	४०३
जिनान्तर वर्णन	—	अपभ्रंश, हिन्दी	४०	४०४
जिनेन्द्र वन्दना	—	संस्कृत	१४०	१२६०
जिनेन्द्र स्तवन	—	,,	१४०	१२६१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
जीव चौपई	पं० दौलतराम	हिन्दी	११८	१११२
जीव तत्व प्रदीप	केशवाचार्य	प्राकृत और संस्कृत	११	११२
जीवन्धरचरित्र	भ० शुभचन्द्राचार्य	संस्कृत	७५	७३९
जीव प्ररूपण	गुणरयणभूषण	प्राकृत	११	११३
जीव विचार प्रकरण	–	प्राकृत और संस्कृत	११	११४
जीव विचार सूत्र सटीक	शान्ति सूरि	,,	११	११६
जैन रास	–	हिन्दी	१८८	१७२९
जैन शतक	भूधरदास खण्डेलवाल	,,	११	११९
		(ट–ढ)		
टीपणं री पाटी	–	संस्कृत और हिन्दी	१०६	९९०
ढुण्ढिया मत खण्डन	ढाढसी मुनि	प्राकृत और संस्कृत	१९९	१८२७
ढाढसी मुनि गाथा	ढाढसी	,,	१२	१२०
ढाल बारह भावना	–	हिन्दी	५६	५५०
ढाल मंगल की	–	,,	५६	५५१
ढाल सुभद्रारी	–	,,	५६	५५२
ढाल श्रीमन्दिर जी	–	,,	५६	५५३
ढाल क्षमा की	मुनि फकीरचन्द	,,	५६	५५४
		(त)		
तत्वधर्मामृत	चन्द्रकीर्ति	संस्कृत	१२	१२२
तत्वबोध प्रकरण	–	,,	१२	१२५
तत्वसार	पं० देवसेन	प्राकृत	१२	१२६
तत्वत्रय प्रकाशिनी	ब्रह्मश्रुतसागर	संस्कृत	१२	१२७
तत्वज्ञान तरंगिणी	भ० ज्ञानभूषण	संस्कृत	१२	१२८
तत्वार्थ रत्नप्रभाकर	प्रभाचन्द्र देव	,,	१३	१३०
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	,,	१३	१३३
तत्वार्थ सूत्र टीका	श्रुतसागर	,,	१३	१३५
तत्वार्थ सूत्र टीका	सदासुख	संस्कृत और हिन्दी	१३	१३७
तत्वार्थ सूत्र भाषा	कनककीर्ति	,,	१३	१३८
तत्वार्थ सूत्र वचनिका	पं० जयचन्द	,,	१३	१३९
तर्क परिभाषा	केशव मिश्र	संस्कृत	१२, ११८,	१२१, १११४
तर्क संग्रह	अनन्त भट्ट	,,	११८	१११४
ताजिक नीलकण्ठी	पं० नीलकण्ठ	,,	१०६	९९१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
ताजिक पद्मकोश	—	संस्कृत	१०७	९९२
ताजिक रत्नकोश	—	संस्कृत और हिन्दी	१०७	९९३
तार्किकसार संग्रह	पं० वरदराज	संस्कृत	११८	१११५
तीन लोक का चित्र	—	—	९४	१८८१
तीन लोक चित्र	—	—	९४	१८८२
तीर्थ जयमाल	सुमति सागर	हिन्दी	४०	४०५
तीस बोल	—	,,	५६	५५५
तेरह द्वीप पूजा	—	संस्कृत और हिन्दी	१४०	१२९२
तेरह पंथ खण्डन	पं० पन्नालाल	हिन्दी	१४	१४०

(द)

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
दण्डक चौपई	पं० दौलतराम	हिन्दी	१४	१४१
दण्डक सूत्र	गजसार मुनि	प्राकृत	१४	१४२
दशअच्छेरा	—	अपभ्रंश	१८	१४३
दश अच्छेरा ढाल	रायचन्द्र	हिन्दी	५७	१५७
दर्शनसार	भ० देवसेन	प्राकृत	१४	१४६
दर्शनसार सटीक	शिवजीलाल	प्राकृत और संस्कृत	१४	१४४
दर्शनसार कथा	पं० भारमल	हिन्दी	४१	४०९
दशलक्षण कथा	पं० लोकसेन	संस्कृत	४०	४०६
दशलक्षण कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	४०	४०८
दशान्तर दशा फलाफल	—	संस्कृत	१०७	९९४
दशलक्षण जयमाल	भाव शर्मा	संस्कृत और प्राकृत	१४१	१२९३
दशलक्षण जयमाल	पाण्डे रयघू	अपभ्रंश	१४१	१२९८
दशलक्षण पूजा	पं० द्यानतराय	हिन्दी	१४२	१३०४
दशलक्षण पूजा	सुमतिसागर	संस्कृत	१४२	१३०५
दशलक्षण धर्मयन्त्र	—	,,	१६४	१५२१
दशलक्षण व्रतोद्यापन	—	,,	१८१	१६७८
द्रव्य संग्रह	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	१४	१४७
द्रव्य संग्रह सटीक	प्रभाचन्द्राचार्य	प्राकृत और संस्कृत	१५	१५१
द्रव्य संग्रह सटीक	पर्वत धर्मार्थी	,,	१५	१५२
द्रव्य संग्रह सटीक	ब्रह्मदेव	,,	१५	१५३
द्रव्य संग्रह सार्थ	—	,,	१५	१५५
द्रव्य संग्रह टिप्पण	प्रभाचन्द्रदेव	,,	१५	१५७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
दान निर्णय शतक	कवि सूत	संस्कृत	५७	५५८
दान विधि	—	,,	१९९	१८२८
दानशील तप संवाद शतक	सयमसुन्दर गणि	हिन्दी	३४	३३८
दानादि संवाद	समयसुन्दर	,,	१९९	१८२९
द्वादश चक्री कथा	ब्रह्म नेमिदत्त	संस्कृत	४१	४१०
द्वादश भावना	श्रुतसागर	,,	१६	१६०
द्वादश भूजा हनुमत्चित्र	—	—	९५	८८६
द्वादश राशि फल	—	,,	१०७	९९५
द्वादशव्रतोद्यापन	—	,,	१४२	१३०६
द्वादश व्रतकथा	—	,,	१८१	१६७९
द्वात्रिंशी भावना	—	,,	१४२	१३०७
द्वि.घटिक विचार	पं० शिवा	,,	१०७	९९६
द्विसन्धान काव्य	नेमिचन्द्र	,,	५७	५५९
द्विसन्धान काव्य सटीक	पं० राघव	,,	५७	५६०
द्वि अभिधान कोश	—	,,	७०	६९३
द्विजपाल पूजादि व विधान	विद्यानन्दि	,,	१४२	१३०८
दिनमान पत्र	—	हिन्दी	१०७	९९७
दीपमालिकास्वाध्याय	—	,,	१४२	१३०९
दीक्षा प्रतिष्ठा विधि	—	संस्कृत और हिन्दी	१९९	१८३०
दुर्गादेवी चित्र	—	—	९४,९५	८८३,८८५
दुघड़िया विचार	प० शिवा	संस्कृत	१०७	१०००
देवागम स्तोत्र	समन्तभद्राचार्य	,,	१४२	१३१०
दोहा पाहुड़	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	१५	१५८

(ध)

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
धनंजय नाममाला	धनंजय	संस्कृत	७०	६९४
धन्यकुमार चरित्र	ब्रह्म नेमिदत्त	,,	७६	७४०
धन्यकुमार चरित्र	गुणभद्राचार्य	,,	७६	७४५
धन्यकुमार चरित्र	भ० सकलकीर्ति	,,	७६	७४२
धन्यकुमार चरित्र	पं० रयधू	अपभ्रंश	७७	७४८
धर्मपरीक्षा रास	सुमति कीर्ति सूरि	हिन्दी	१६	१६३
धर्मप्रश्नोत्तर	भ० सकलकीर्ति	संस्कृत	१६	१६४
धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचार	भ० सकलकीर्ति	,,	१८८	१७३१
धर्मरसायण	मुनि पद्मनंदि	प्राकृत	१६	१६५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सुची क्रमांक
धर्म परीक्षा	पं० हरिषेण	अपभ्रंश	५७	५६३
धर्म परीक्षा	अमितगतिसूरि	संस्कृत	५७,१८८	५६१,१७३०
धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई	विजयराज	हिन्दी	४१	४११
धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई	लालचन्द	,,	४१	४१२
धर्मशर्माभ्युदय	हरिश्चन्द्र कायस्थ	संस्कृत	५७	५६४
धर्मसंग्रह	पं० मेधावी	,,	१८६	१७३७
धर्म संवाद	–	,	१६	१६८
धर्मामृत सूक्ति	पं० आशाधर	,	१८९	१७३३
धर्मोपदेश पियुष	ब्रह्म नेमिदत्त	,,	१८९	१७३९
धर्मोपदेशामृत	पद्मनंदि	,,	१९०	१७४५
ध्यान बत्तीसी	बनारसीदास	हिन्दी	१६	१६९
ध्यानावस्था विचार यंत्र	–	संस्कृत	१६४	१५२२
धातुपाठ	हर्षकीर्ति सूरि	,	१७१	१५८१
धातु पाठ	हेमसिंह खण्डेलवाल	,,	१७१	१५८२
धातु रूपावली	–	,,	१७२	१५८३
धूप दशमी तथा अनन्तव्रत कथा	–	,,	४१	४१४

(न)

नन्द बत्तीसी	नन्दसेन	संस्कृत और हिन्दी	१२२	११३१
नन्द सप्तमी कथा	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	४१	४१५
नन्दीश्वर कथा	–	संस्कृत	४१,१८१	४१६,१६८०
नन्दीश्वर काव्य	मृगेन्द्र	,,	५७	५६५
नन्दीश्वर जयमाल	–	प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी	२००	१८३१
नन्दीश्वर पंक्तिपूजा विधान	–	संस्कृत	१४२	१३१२
नन्दीश्वर पंक्ति विधान	शिववर्मा	,,	१८१	१६८१
नन्दी सूत्र	–	अपभ्रंश	१७	१७०
नयचक्र	देवसेन	संस्कृत और प्राकृत	१७	१७१
नयचक्रबालाव बोध	सदानन्द	हिन्दी	१७	१७२
नयचक्र भाषा	पं० हेमराज	,,	१७	१७४
नलदमयन्ती चउपई	सयमसुन्दर सूरि	,,	५८	५६६
नलोदय काव्य	रविदेव	संस्कृत	५८	५६८
नलोदय टीका	रामऋषि मिश्र	,,	५८	५६७
नवकार कथा	श्रीमत्पाद	,,	४१	४१८
नरकों के पाथड़ों का चित्र	–	–	९५	८८७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
नवतत्व टीका	–	संस्कृत	१७	१७५
नवतत्व वर्णन	अभयदेव सूरि	प्राकृत और हिन्दी	१७	१७६
नवपद यन्त्र चक्रद्धार (श्रीपाल चरित्र)	–	प्राकृत	७७	७४६
नवग्रह पूजा	–	संस्कृत	१४२	१३१३
नवग्रह पूजा विधान	–	,,	१४२	१३१४
नवग्रह पूजा सामग्री	–	हिन्दी	१४३	१३१५
नवग्रह फल	–	,,	१०७	१००१
नवग्रह स्तोत्र व दान	–	संस्कृत और हिन्दी	१०८	१००३
नवकार महामन्त्र कल्प	–	संस्कृत	१६४	१५२३
नवकार रास	जिनदास श्रावक	हिन्दी	१६५	१५२४
नवरथ	–	,,	१७	१७६
नवरत्न काव्य	–	संस्कृत और हिन्दी	५८	५७१
न्याय दीपिका	अभिनव धर्मभूषणाचार्य	संस्कृत	११८	१११७
न्याय सूत्र	मिथिलेश्वर सूरि	,,	११८	१११६
नवनिधि नाम	–	हिन्दी	२००	१८३२
नागकुमार चरित्र	पुष्पदन्त	अपभ्रंश	७८	७५०
नागकुमार चरित्र	पं० धर्मधर	संस्कृत	७८	७५२
नागकुमार चरित्र	मल्लिषेण सूरि	,,	७८	७५३
नागकुमार पंचमी कथा	मल्लिषेण सूरि	,,	४१	४१६
नागश्री कथा	ब्रह्म नेमिदत्त	,,	४२	४२०
नागश्री चरित्र	कवि किशनसिंह	हिन्दी	७८	७५४
नाड़ी परीक्षा सार्थ	–	संस्कृत	३०	३०४
नाममाला	हेमचन्द्राचार्य	,,	७१	७०४
नाममाला	कवि धनंजय	,,	७१	७०५
नारद संहिता	–	,,	१०८	१००४
नारायण पृच्छा जयमाल	–	अपभ्रंश	१४३	१३१६
नास्तिकवाद प्रकरण	–	संस्कृत	१७	१८०
निघण्टु	हेमचन्द्र सूरि	,,	३०	३०६
निघण्टु	सोमश्री	,,	३०	३०८
निघण्टु नाम रत्नाकर	परमानन्द	,,	३०	३०७
नित्य क्रिया काण्ड	–	प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी	१७	१८१
निर्दोष सप्तमी कथा	–	हिन्दी	४३	४२२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
निर्वाणकाण्ड भाषा	भगवतीदास	संस्कृत और हिन्दी	१४३	१३१७
निर्वाण क्षेत्र पूजा	—	हिन्दी	१४३	१३१८
नीतिशतक	भर्तृहरि	संस्कृत	५८	५७२
नीतिवाक्यामृत	सोमदेव सूरि	,,	१२२	११३३
नीतिशतक सटीक	—	,,	१२२	११३
नीति संग्रह	—	,,	१२२	११३७
नेमजिन पुराण	ब्रह्म नेमिदत्त	,,	१२४	११४८
नेमजी की ढाल	रायचन्द्र	हिन्दी	५८	५७३
नेमजी का पद	उदयरत्न	,,	२००	१८३
नेमिदूत काव्य	विक्रमदेव	संस्कृत	५८	५७४
नेमजी राजूल सवैया	रामकरण	हिन्दी	२००	१८३४
नेमि निर्वाण महाकाव्य	कवि वाग्भट्ट	संस्कृत	५९	५७३२
नेमीश्वर पद	धर्मचंद नेमिचंद	हिन्दी	२००	१८३५
नेषधकाव्य	हर्षकीर्ति	संस्कृत	५९,७९	५८१,७५६
(प)				
पथ्यापथ्य संग्रह	—	संस्कृत	३०	३१०
पद सहिता	—	संस्कृत और हिन्दी	१७२	१५८५
पद्मनंदि पंचविंशति	पद्मनंदि	संस्कृत	४३,१९०,१९१	४२५, १७४६ १७५४
पद्मप्रभू चित्र	—	—	९५	८९१
पद्म पुराण	भ० सकलकीर्ति	,,	१२५	११५५
पद्मपुराण भाषा	पं० लक्ष्मीदास	हिन्दी	१२५	११५६
पद्म पुराण	रविषेणाचार्य	संस्कृत	१२५	११५७
पद्मावती कथा	महीचन्द सूरि	,,	४३	४२४
पद्मावती छन्द	कल्याण	हिन्दी	१४४	११२३
पद्मावती देवी व पार्श्वनाथ का चित्र	—	,,	९५	८९३
पद्मावती देवी यन्त्र	—	संस्कृत	१६५	१५२८
पद्मावती पूजन	गोविन्द स्वामी	,,	१४४	१३२४
पद्मावती पूजा	—	संस्कृत और हिन्दी	१४४	१३२५
पद्मावती स्तोत्र	—	संस्कृत	१४४	१३२६
पद्मावती सहस्त्रनाम	अमृतवत्स	संस्कृत	१४४	१३३१
पद्मावत्याष्टक सटीक	पार्श्वदेवगणि	,,	१४४	१३३२
पण्डानो गीत	—	हिन्दी	५९	५८३
परमहंस चौपई	ब्रह्म रायमल्ल	,,	४३	२४७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
परमात्म छत्तीसी	पं० भगवतीदास	हिन्दी	१८	१८३
परमात्म प्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	१८	१८४
परमात्म प्रकाश टीका	ब्रह्मदेव	,,	१८	१८५
परमेष्ठी मन्त्र	—	संस्कृत	१६५	१५२६
पल्य विचार	वसन्तराज	,,	१०८	१००६
पल्य विधान पूजा	भ० शुभचन्द्राचार्य	,,	१४४	१३३३
पल्य विधान पूजा	अनन्तकीर्ति	,,	१४५	१३३५
पल्य विधान पूजा	रत्ननन्दि	,,	१४५	१३३४
पहंजण महाराज चरित्र	पं० दामोदर	अपभ्रंश	७९	७५७
प्रक्रिया कौमुदी	रामचन्द्राश्रम	संस्कृत	१७२	१५८९
प्रतापसार काव्य	जीवन्धर	हिन्दी	५९	५८५
प्रतिक्रमण	—	प्राकृत	१४६	१३५२
प्रतिक्रमण सार्थ	—	प्राकृत, हिन्दी	१९	१९३
प्रतिक्रमण सार्थ	—	प्राकृत, संस्कृत	१४६	१३५३
प्रतिमा बहोत्तरी	द्यानतराय	हिन्दी	१९	१९४
प्रतिमा भंग शान्ति विधि विधान	—	,,	१८१	१६८२
प्रथम बखाण	—	,,	१९	१९५
प्रद्युम्न कथा	ब्रह्म वेणीदास	,,	४४	४३५
प्रद्युम्न चरित्र	पं० रयधू	अपभ्रंश	७९	७६३
प्रद्युम्न चरित्र	महासेनाचार्य	संस्कृत	७९, २००	७६४, १८३८
प्रद्युम्न चरित्र	श्री सिंह	अपभ्रंश	७९	७६५
प्रद्युम्न चरित्र	सोमकीर्ति	संस्कृत	८०	७६८
प्रबोधसार	यशः कीर्ति	,,	१९१	१७५५
प्रभंजन चरित्र	—	,,	८०	७६९
प्रमेयरत्नमाला वचनिका	—	संस्कृत, हिन्दी	१९	१९६
प्रमेयरत्नमाला	पं० माणिक्यनन्दि	संस्कृत	११८	१११८
प्रलय प्रमाण	—	,,	१९	१९७
प्रवचनसार वृत्ति	—	प्राकृत, संस्कृत	१९	१९८
प्रवचनसार वृत्ति	अमृतचन्द्र सूरि	,,	१९	१९९
प्रवचनसार सटीक	—	प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी	१९	२०२
प्रस्तारवर्णन	हर्षकीर्ति सूरि	संस्कृत	१००	९२८
प्रश्नसार	हयग्रीव	,,	१०८	१००७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
प्रश्नसार सग्रह	–	संस्कृत, हिन्दी	१०८	१००८
प्रश्नावली	जिनवल्लभ सूरि	संस्कृत	१०८	१००९
प्रश्नोत्तरोपासकाचार	भ० सकलकीर्ति	,,	२०, १९१	२०३, १७५६
प्रश्नोत्तर रत्नमाला	विमल	,,	५९	५८६
प्रश्नोत्तर रत्नमाला	राजा अमोघवर्ष	,,	२०	२०४
प्राकृत लक्षण विधान	कवि चण्ड	प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश पैशाची, मागधी आदि	१७२	२०४
पाकार्णव	–	संस्कृत	३०	३११
पाणिनीयसूत्र	व्याडि	,,	१७२	१५८६
प्रायश्चित	अकलंक स्वामी	,,	१९२	१७६९
प्रायश्चित बोल	–	हिन्दी	६०	५८७
पार्श्वनाथ चित्र	–	–	९५, ९६	८९४, ८९५
पार्श्वनाथ और पद्मावती चित्र	–	–	९६	८९२
पार्श्वनाथजी के देशान्तरी छन्द	–	हिन्दी	९९	९२४
पार्श्वनाथ पुराण	पद्मकीर्ति	अपभ्रंश	१२५	११५८
पार्श्वनाथ पुराण	पं० रयधू	,,	१२५	११५९
पार्श्वनाथ पुराण	भूधरदास	हिन्दी	१२५	११६०
पार्श्वनाथ विनती	जिनसमुद्रसूरि	अपभ्रंश	२००	१८३६
पार्श्वनाथ स्तवन	–	संस्कृत	१४५	१३३६
पार्श्वनाथ स्तवन सटीक	पद्मप्रभसूरि	,,	१४५	१३४३
पार्श्वनाथ स्तोत्र	शिवसुन्दर	,,	१४५	१३३९
पार्श्वनाथ स्तोत्र	–	,,	१४६	१३४६
पार्श्वनाथ स्तोत्र	–	संस्कृत, हिन्दी	१४५	१३४२
पाशा केवली	–	संस्कृत	१४६	१३४८
पिगंल छन्द शास्त्र	पहुपसहाय	अपभ्रंश	९९	९२५
पिगंल रूप दीपक	जयकिशन	हिन्दी	१००	९२७
पिण्ड विशुद्धावचूरि	जिनवल्लभ सूरि	संस्कृत, प्राकृत	२००	१८३७
प्रियमेलक कथा	ब्रह्म वेणीदास	हिन्दी	४३	४२९
प्रीतिकंर मुनि चरित्र भाषा	जोधराज गोदीका	,,	८०	७७५
पुण्य बत्तीसी	समय सुन्दर	,,	१८	१८६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
पुण्याश्रव कथाकोश	रामचन्द्र	संस्कृत	४३, ७१	४३०, ७०६
पुण्याश्रव कथाकोश सार्थ	–	,,	४३	४३१
पुराणसार संग्रह	भ० सकलकीर्ति	,,	१२६	११६३
पुरुषार्थ सिद्धयुपाय	अमृतचन्द्राचार्य	,,	१८	१८७
पुष्पदन्त चित्र	–	–	९६	९००
पुष्पांजली पूजा	–	सस्कृत	१४६	१३४९
पुष्पांजली व्रतोद्यापन	पं० गंगादास	हिन्दी	६०	५८८
पूजासार समुच्चय	संग्रहीत	संस्कृत	१४६	१३५०
पूजा संग्रह	–	अपभ्रंश	१४६	१३५१
पंचक्खाण	–	प्राकृत	२००	१८३९
पंच कल्याणक पूजा	–	संस्कृत, प्राकृत	१४७	१३६०
पंचतन्त्र	विष्णु शर्मा	संस्कृत	१२२	११३८
पंच परमेष्ठी यन्त्र	–	,,	१६५	१५२७
पंच परमेष्ठी स्तोत्र	जिनप्रभसूरि	,,	१४७	१३६१
पंच प्रकाशसार	–	प्राकृत, संस्कृत	१८	१८९
पंच मास चतुर्दशी व्रतोद्यापन	सुरेन्द्रकीर्ति	संस्कृत	१८१	१६८३
पंचमी सप्ताय	कीर्तिविजय	हिन्दी	६०	५८९
पंच सग्रह	–	प्राकृत	१८	१८८
पंच सन्धि शब्द	–	संस्कृत	१७२	१५८८
पंचमीव्रत पूजा विधान	हर्षकीर्ति	,,	१८१	१६८४
पंचाशत क्रिया व्रतोद्यापन	–	,,	१८१	१६८५
पांच बोल	-	,,	५९	५८४
(ब)				
बड़ा स्तवन	अश्वसेन	हिन्दी		
बंध स्वामित्व (बंधतत्व)	देवेन्द्र सूरि	प्राकृत और हिन्दी	२०	२०६
बंधोदयउदीरण सत्ता विचार	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	२०	२०८
बंधोदयउदीरणसत्ता स्वामित्व सार्थ	–	प्राकृत, संस्कृत	२०	२१०
ब्रह्म प्रदीप	पं० काशीनाथ	संस्कृत	१०८	१०१०
बारह व्रत कथा	–	,,	४४	४३६
बारह व्रत टिप्पणी	–	हिन्दी	१८१	१६८६
बाला त्रिपूरा पद्धति	श्रीराम	संस्कृत		
बावन दोहा बुद्धि रसायन	पं० महिराज	अपभ्रंश, हिन्दी	६०	५९०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
बाहुबली चरित्र	धनपाल	अपभ्रंश	८०	७७६
बाहुबली पाथड़ी	—	अपभ्रंश, संस्कृत	४४	४३७
बाहुबली पाथड़ी	अभयवली	प्राकृत	८१	७७७
बुद्ध वर्णन	कविराज सिद्धराज	संस्कृत	४४	४३९
बुद्धिसागर दृष्टान्त	बुद्धिसागर	"	२००	१८४०
वंकचूल कथा	ब्रह्म जिनदास	"	४४	४३९
(भ)				
भक्तामर री ढाल	—	हिन्दी	६०	५९१
भक्तामर स्तोत्र	मानतुगांचार्य	संस्कृत	१४८	१३६९
भक्तामर भाषा	नथमल और लालचन्द	संस्कृत-हिन्दी	१४९	१३७८
भक्तामर भाषा	पं० हेमराज	हिन्दी	१४९	१३७९
भक्तामर स्तोत्र वृत्ति	रत्नचन्द मुनि	संस्कृत	१४९	१३८०
भक्तामर सटीक	—	"	१४९	१३८२
भक्तामर तथा सिद्धप्रिय स्तोत्र	—	"	१४९	१३८६
भगवती आराधना सटीक	—	प्राकृत-संस्कृत	२०	२११
भजन व आरती संग्रह	—	हिन्दी	२०१	१८४१
भद्रबाहु चरित्र	आ० रत्ननन्दि	संस्कृत	८१	७७८
भरत बाहुबली वर्णन	शीशराज	हिन्दी	४५	४४१
भरत क्षेत्र विस्तार चित्र	—	संस्कृत	९६	९०१
भव्य मार्गणा	—	हिन्दी	२०	२१२
भविष्यदत्त चरित्र	पं० श्रीधर	संस्कृत	८१	७७७
भविष्यदत्त चरित्र	पं० धनपाल	अपभ्रंश	८२, २०१	७८८, १८४२
भविष्यदत्त चौपई	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	८२	७९१
भविष्यपुराण	—	संस्कृत	१२६	११६४
भाडली पुराण	भाडली ऋषि	हिन्दी	१०८	१०११
भामिनी विलास	पं० जगन्नाथ	संस्कृत	६०	५९२
भारती स्तोत्र	शंकराचार्य	"	१५०	१३८७
भावनासार संग्रह	महाराजा चामुण्डराय	"	२१	२१५
भाव संग्रह	देवसेन	प्राकृत	२१	२१६
भाव संग्रह	श्रुतमुनि	"	२१	२१८
भाव संग्रह	पं० वामदेव	संस्कृत	२२	२२१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
भाव संग्रह सटीक	—	हिन्दी	२२	२२२
भाव त्रिभंगी सटीक	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत, संस्कृत	२०१	१८४४
भावी कुलकरों की नामावली	—	,,	२०१	१८४४
भाषाभूषण	महाराजा जसवन्तसिंह	हिन्दी	१००	६२६
भुवन दीपक	पद्मप्रभ सूरि	संस्कृत, हिन्दी	१०८	१०१३
भुवनेश्वरी स्तोत्र	पृथ्वीधराचार्य	संस्कृत	२०१	१८४५
भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र	पं० आशाधर	,,	१५०	१३८६
भूषण भावनी	भूषण स्वामी	हिन्दी	३४	३४०
भैरव चित्र	—	—	६६	६०२
भैरव पताका यन्त्र	—	संस्कृत, हिन्दी	१६५	१५२८
भैरव पद्मावती कल्प	मल्लिषेण सूरि	संस्कृत	१६५	१५२६
भोज प्रबन्ध	कवि बल्लाल	,,	६०	५६३
		(म)		
मदन पराजय	जिनदेव	संस्कृत	६०, १२०	५६४, ११२२
मदन पराजय	हरिदेव	अपभ्रंश	६०	५६७
मदन युद्ध	बूचराज	हिन्दी	४५	४४२
मयुराष्टक	कवि मयुर	संस्कृत	६१	५६८
मलय सुन्दरी चरित्र	अखयराम लुहाड़िया	हिन्दी	८२	७६२
मल्लिनाथ चरित्र	भ० सकलकीर्ति	संस्कृत	८२	७६३
महर्षि स्तोत्र	पं० आशाधर	,,	१५०	१३६३
महालक्ष्मी कवच	—	,,	१५०	१३६४
महालक्ष्मी पद्धति	पं० महादेव	,,	७१	७०७
महालक्ष्मी स्तोत्र	—	,,	१५०	१३६५
महावीर जिन नय विचार	यशःविजय	प्राकृत, हिन्दी	२२	२२४
महावीर स्वामी चित्र	—	—	६६	६०४
महिपाल चरित्र भाषा	पं० नथमल	हिन्दी	८२	७६४
महिम्न स्तोत्र सटीक	अमोघ पुष्पदन्त	संस्कृत	१५०, १५१	१३६६, १३६७
मृगी संवाद चौपई	—	हिन्दी	४५	४४३
मृत्यु महोत्सव वचनिका	पं० सदासुख	संस्कृत, हिन्दी	२२	२२६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
मार्कण्डेय पुराण सटीक	मार्कण्डेय	संस्कृत	१२६	११६५
माधवानल कथा	कुंवर हरिराज	हिन्दी	४५	४४४
माधवानल काम कन्दला चौपई	देव कुमार	,,	४५	४४६
मानमंजरी नाममाला	नन्ददास	संस्कृत	७१	७०८
मास लग्न फल	—	,,	१०९	१०१४
मिथ्यात्व खण्डन	कवि अनुप	हिन्दी	१२०	११२३
मिथ्यात्व खण्डन नाटक	साह कन्निराम	,,	१२०	११२४
मुक्तावली कथा	—	संस्कृत	४५	४४७
मुक्तावली पूजा	—	,,	१५१	१३९८
मुद्राविधि	—	,,	२०१	१८४७
मुहूर्त चिन्तामणी सटीक	देवकी राम	,,	१०९	१०१५
मुहूर्त चिन्तामणी	नारायण	,,	१०९	१०१६
मुहूर्त मुक्तावली	—	संस्कृत, हिन्दी	१०९	१०१८
मूर्तिपूजा मण्डन	पं०मिहिर चन्द्रदास जैनी	हिन्दी	२०१	१८४६
मूल संग्राहणी	रत्नकीर्ति	संस्कृत	४५	४४८
मूलाचार प्रदीपिका	भ० सकलकीर्ति	,,	१९३	१७७०
मेघकुमार ढाल	मुनि यशःनाम	हिन्दी	६१	५९९
मेघदूत काव्य	कालिदास	संस्कृत	६१	६००
मेघदूत काव्य सटीक	लक्ष्मी निवास	,,	६१	६०५
मेघदूत काव्य सटीक	वल्लभ देव	,,	६१	६०६
मेघदूत काव्य टीका	वत्स	,,	६१	६०७
मेघमाला व्रत कथा	मुनि वल्लभ	,,	४५	४४९
मेघवर्षा	—	संस्कृत, हिन्दी	१०९	१०२०
मेदनीपूर का लग्न पत्र	—	हिन्दी	१०९	१०२१
मोक्ष मार्ग प्रकाशक वचनिका	पं० टोडरमल	हिन्दी, राजस्थानी	२२	२२५
मंगल कलश चौपई	लक्ष्मी हर्ष	हिन्दी	६२	६१३
मंगल पाठ	—	,,	१५०	१३९२

(य)

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
यमक स्तोत्र	चिरन्तन आचार्य	संस्कृत	६२	६१४
यमाष्टक स्तोत्र सटीक	—	,,	१५१	१३९९
यशोधर चरित्र	मुमुक्षु विद्यानन्द	,,	८३	७९५
यशोधर चरित्र	सोमकीर्ति	,,	८३	७९६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
यशोधर चरित्र	सोमदेव सूरि	,,	८४	७९७
यशोधर चरित्र	पुष्पदन्त	अपभ्रंश	८४	७९८
यशोधर चरित्र	पद्मनाभ कायस्थ	संस्कृत	८४	८०६
यशोधर चरित्र	भ० सकलकीर्ति	,,	८६	८११
यशोधर चरित्र	पूर्णदेव	,,	८६	८१५
यशोधर चरित्र	वासवसेन	,,	८७	८१७
यशोधर चरित्र (पीठिका बंध)	–	,,	८७	८१८
यशोधर चरित्र टिप्पण	प्रभाचन्द्र	,,	८७	८१९
यज्ञदत्त कथा	–	,,	४५	४५१
योग चिन्तामणि	–	संस्कृत, हिन्दी	३१	३१३
योग शतक	विदग्ध वैद्य पूर्णसेन	संस्कृत	३१	३१४
योग शतक	–	,,	३१	३१५
योग शतक टिप्पण	–	संस्कृत, हिन्दी	३१	३१६
योग शतक सटीक	–	संस्कृत	३१	३१७
योग शतक	धन्वन्तरि	संस्कृत, हिन्दी	३१	३१८
योग शतक सार्थ	–	,,	३१	३१९
योग शास्त्र	हेमचंद्राचार्य	संस्कृत	१६७	१५४२
योग साधन विधि (सटीक)	गोरखनाथ	हिन्दी	१६७	१५४४
योगसार गृहफल	–	संस्कृत	१०९	१०२२
योगसार संग्रह	–	,,	१६७	१५४३
योग ज्ञान	–	,,	१६७	१५४५

(र)

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
रघुवंश महाकाव्य	कालिदास	संस्कृत	६२	६१५
रघुवंश राजाओं की नामावली	–	,,	२०१	१८४८
रघुवंश	कालिदास	,,	६२	६१८
रघुवंश टीका	आनंददेव	,,	६२	६१९
रत्नकरण्ड श्रावकाचार	समन्तभद्र	,,	१९३	१७७१
रत्नकरण्ड श्रावकाचार सटीक	प्रभाचंद्राचार्य	,,	१९३	१७७२
रत्नकरण्ड श्रावकाचार	श्रीचन्द	अपभ्रंश	१९३	१७७३
रत्नकोश	–	संस्कृत	२०१	१८४९
रत्न चूड़रास	यशः कीर्ति	हिन्दी	८७	८२०
रत्नमाला	शिवकोट्याचार्य	संस्कृत	१९३	१७७५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
रत्नसार	पं० जीवन्धर	,,	१९३	१७७६
रात्रि भोजन दोष विचार	धर्मसमुद्रवाचक	हिन्दी	१९३	१७७७
रत्नत्रय विधान कथा	पं० रत्नकीर्ति	संस्कृत	४६	४५३
रत्नत्रय व्रत कथा	श्रुतसागर	,,	४६	४५२
रत्नत्रय पूजा	–	,,	१५१	१४००
रत्न परीक्षा (रत्न दीपिका)	चण्डेश्वर सेठ	,,	२०२	१८५१
रत्न परीक्षा	–	हिन्दी	२०१	१८५०
रत्नावली व्रत कथा	–	संस्कृत	४६	४५४
रमल शकुनावली	–	हिन्दी	१०९	१०२३
रमल शास्त्र	पं० चिन्तामणी	,,	११०	१०२५
रस मंजरी	–	संस्कृत	३१	३२०
रस रत्नाकर (धातु रत्नमाला)	–	,,	३१	३२१
रसेन्द्र मंगल	नागार्जुन	,,	३१	३२२
रक्षा वन्धन कथा	–	हिन्दी	४६	४५५
राजनीति शास्त्र	चम्पा	,,	१२२	११३९
राई प्रकरण विधि	–	,,	१८२	१६८७
राजवार्तिक	अकलंकदेव	संस्कृत	२२	२२७
राम आज्ञा	तुलसीदास	हिन्दी	६२	६२०
रामपुराण	भट्टारक सोमसेन	संस्कृत	१२६	११६६
रामायण शास्त्र	चिरन्तन महामुनि	,,	१२८	११६८
रामचन्द्र स्तवन	सनतकुमार	,,	१५१	१४०२
राम विष्णु स्थापना	–	हिन्दी	१८२	१६८८
राम विनोद	रामचन्द्र	,,	३२	३२३
राशि नक्षत्र फल	महादेव	संस्कृत	११०	१०२७
राशिफल	–	संस्कृत, हिन्दी	११०	१०२८
राशि लाभ व्यय चक्र	–	हिन्दी	११०	१०२९
राशि संक्रान्ति	–	,,	११०	१०३०
रात्रि भोजन दोष चौपई	मेघराज का पुत्र	,,	४६	४५६
रात्रि भोजन त्याग कथा	भ० सिंहनंदि	संस्कृत	४६	४५९
रात्रि भोजन त्याग कथा	–	हिन्दी	४६	४६०
रूक्मणी व्रत विधान कथा	विशाल कीर्ति	मराठी	१८२	१६८९
रोटतीज कथा	गुणनंदि	संस्कृत	४६	४६१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
		(ल)		
लग्न चक्र	–	संस्कृत	११०	१०३१
लग्न चन्द्रिका	काशीनाथ	„	११०	१०३२
लग्न प्रमाण	–	संस्कृत, हिन्दी	११०	१०३३
लग्नादि वर्णन	–	संस्कृत	११०	१०३४
लग्नाक्षत फल	–	„	११०	१०३५
लघु जातक (सटीक)	भट्टोत्पल	„	१११	१०३६
लघु जातक भाषा	कृपाराम	हिन्दी	१११	१०३७
लघु तत्वार्थ सूत्र	–	प्राकृत, संस्कृत	२२	२२८
लघुनाम माला	हर्ष कीर्ति सूरि	संस्कृत	७१	७०६
लघु प्रतिक्रमण	–	संस्कृत, प्राकृत	१५१	१४०३
लघु शान्ति पाठ	–	संस्कृत	१५१	१४०४
लघु सहस्त्र नाम स्तोत्र	–	„	१५१	१४०५
लघु स्तवन (सटीक)	सोमनाथ	„	१५१	१४०६
लघु स्वराज काव्य सटीक	लघु पण्डित	„	६३	६२१
लघु स्तवन टीका	मुनि नन्दगुण क्षोणी	„	१५१	१४०६
लघु स्वयंभू स्तोत्र	देवनंदि	„	१५२	१४०७
लघु स्वयंभू स्तोत्र (सटीक)	देवनंदि	संस्कृत, हिन्दी	१५२	१४१२
लघु सारस्वत	कल्याण सरस्वती	संस्कृत	१७३	१५६४
लघु सिद्धान्त कौमुदी	पाणिनी ऋषिराज	„	१७३	१५६५
लब्धि विधान पूजा	ब्र० हर्षकीर्ति	„	१५२	१४१५
लब्धि विधान व्रत कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	४६	४६२
लक्ष्मी सरस्वती संवाद	श्री भूषण	संस्कृत	६३	६२२
लंघन पथ्य निर्णय	वाचक दीपचन्द	„	३२	३२५
लिंगानुशासन	अमरसिंह	„	७१	७१०
लीलावती भाषा	लालचन्द	हिन्दी	१११	१०४१
लीलावती सटीक	भास्कराचार्य	सस्कृत	१११	१०४२
लीलावती भाषा	लालचंद	हिन्दी	१११	१०४१
		(व)		
वर्द्धमान काव्य	जयमित्र हल	अपभ्रंश	६३	६२४
वर्द्धमान काव्य	पं० नरसेन	„	८७	८२१
वर्द्धमान चरित्र	कवि असग	संस्कृत	८७	८२२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
वर्द्धमान चरित्र	पुष्पदन्त	अपभ्रंश	८७	८२५
वर्द्धमान जिन स्तवन	–	संस्कृत	१५२	१४१६
वर्द्धमान जिन स्तवन सटीक	पं० कनककुशल गणि	,,	१५२	१४१७
वर्द्धमान पुराण	नवलदास शाह	हिन्दी	१२८	११६६
वन्देतान की जयमाल	माघनन्दि	संस्कृत	१५३	१४१८
वनस्पति सत्तरी सार्थ	मुनिचन्द्र सूरि	प्राकृत, संस्कृत	३२	३२६
व्युच्छति त्रिभंगी	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	२३	२३०
वरांग चरित्र	पं० तेजपाल	अपभ्रंश	८८	८२६
वरांग चरित्र	भट्टारक वर्द्धमान	संस्कृत	८८	८२७
वर्ष कुण्डली विचार	–	,,	१११	१०४३
वर्ष फलाफल चक्र	–	,	१११	१०४४
वसुधारा धारिणी नाम महाविद्या	नंदन	,,	६३	६२५
वसुधारा धारिणी नाम महाशास्त्र	–	,,	१८२	१६६५
व्रत कथा कोश	श्रुतसागर	,,	४६	४६३
व्रतसार	–	,,	१८२	१६६४
व्रतसार श्रावकाचार	–	,,	१९३	१७७९
विजय पताका मंत्र	–	,,	१६५	१५३३
विजय पताका मंत्र	–	,,	१६५	१५३२
वृत रत्नाकर	केदारनाथ भट्ट	,,	१००	९३०
वृत रत्नाकर सटीक	पं० केदार का पुत्र राम	,,	१००	९३५
वृत रत्नाकर सटीक	केदारनाथ भट्ट	,,	१००, १०१	९३६, ९३७
वृत रत्नाकर टीका	समय सुन्दर उपाध्याय	,,	१००	९३६
वृत रत्नाकर टीका	कवि सुल्हण	,,	१०१	९३८
वृन्दावन काव्य	कवि माना	,,	६३	६२६
वृहद् कलिकुण्ड चित्र	–	–	९६	९०५
वृहद् जातक (सटीक	वराहमिहिराचार्य	,,	१११	१०४५
वृहद् जातक टीका	भट्टोत्पल	,,	१११	१०४५
वृहद् चाणक्य राजनीति शास्त्र	चाणक्य	,,	१२३	११४०
वृहद् द्रव्य संग्रह सटीक	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	२३	२२९
वृहद् प्रतिक्रमण सार्थ	–	प्राकृत, संस्कृत	१५३	१४२०
वृहद् प्रतिक्रमण	–	,,	१५३	१४२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
वृहत् स्वयंभू स्तोत्र (सटीक)	समन्तभद्राचार्य	संस्कृत	१५३	१४२३
वृहत् स्वयंभू टीका	प्रभाचन्द्राचार्य	,,	१५३	१४२३
वृहत् षोडष कारण पूजा	–	,,	१५३	१४२४
वृहत्पोडष कारण यन्त्र	–	,,	१६५	१५३०
वृहद् सिद्धचक्र यन्त्र	–	,,	१६५	१५३१
वाक्य प्रकाश सूत्र सटीक	दामोदर	,,	१७३	१५६६
वाक्य प्रकाशभिधस्य टीका	–	,,	१७३	१५६७
वाद पच्चीसी	ब्रह्मगुलाल	हिन्दी	२३	२३१
वासपूज्य चित्र	–	–	६६	६०६
विक्रमसेन चौपई	–	हिन्दी	६३	६२७
विक्रमसेन चौपई	मानसागर	,,	८८	८२८
विक्रमादित्योत्पत्ति कथानक	भगवती	संस्कृत	४७	४६४
विचार पट् त्रिशंक (चौवीसदण्डक सार्थ)	गजसार	प्राकृत, हिन्दी	२३	२३२
विचिन्तमणी ग्रंक	–	हिन्दी	११२	१०४६
विजय पताका यन्त्र	–	संस्कृत	१६५	१५३३
विदग्ध मुख मण्डन	धर्मदास बौद्धाचार्य	,,	६३, १०१	६२८,, ६४१
विद्वद्भुषण	बालकृष्ण भट्ट	,,	६३	६३१
विद्वद्भूषण टीका	मधुसूदन भट्ट	,,	६३	६३१
विधान व कथा संग्रह	–	,,	४७	४६५
विधान व कथा संग्रह	–	प्राकृत व अपभ्रंश	१५३	१४२७
विधि सामान्य	–	संस्कृत	११८	१११६
विनती संग्रह	पं० भूधरदास	हिन्दी	१५४	१४२८
विपरीत ग्रहण प्रकरण	–	संस्कृत	११२	१०४७
विमलनाथ स्तवन	विनीत सागर	हिन्दी	१५४	१४२६
विवाह पटल भाषा	पं० रूपचन्द	संस्कृत, हिन्दी	११२	१०५०
विवाह पटल	श्रीराम मुनि	संस्कृत	११२	१०४६
विवाह पटल सार्थ	–	संस्कृत, हिन्दी	११२	१०५१
विवेक विलास	जिनदत्त सूरि	संस्कृत	१६३	१७७८
विषापहार स्तोत्र	धनजय	,,	१५४	१४३०
विषापहार स्तोत्रादि टीका	नागचन्द्र सूरि	,,	१५४	१४३५
विषापहार विलाप स्तवन	वादिचन्द्र सूरि	,,	१५५	१४३७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
विशेष सत्ता त्रिभगी	नयनन्दि	प्राकृत	२३	२३३
विशेष महाकाव्य सटीक (ऋतु संहार)	कालिदास	सस्कृत	६४	६३२
विशेष महाकाव्य टीका	अमर कीर्ति	,,	६४	६३२
वेद क्रान्ति	–	,,	२३	२३५
वैताल पच्चीसी कथानक	शिवदास	,,	४७	४६६
वैद्यकसार	नयन सुख	हिन्दी	३२	३२७
वैद्य जीवन	पं० लोलिमराज कवि	संस्कृत	३२	३२८
वैद्य जीवन टीका	रूद्र भट्ट	,,	३२	३३०
वैद्य मनोत्सव	पं० नयनसुख	हिन्दी	३२	३३१
वैद्य रत्नमाला	सि० च० नेमिचन्द्र	,,	३३	३३३
वैद्य विनोद	शंकर भट्ट	संस्कृत	३३	३३४
वैराग्य माला	सहल	,,	६४	६३३
वैराग्य शतक	भृर्तहरि	,,	६४	६३४
वैराग्य शतक सटीक	–	प्राकृत, हिन्दी	६४	६३६
वैराग्य शतक सार्थ	–	,,	६४	६३८
शकुन रत्नावली	–	हिन्दी	११२	१०५३
शकुन शास्त्र	भगवद् भाषित	संस्कृत	११२	१०५४
शकुनावली	–	हिन्दी	११२	१०५५
शत श्लोक	वैद्यराज त्रिमल्ल भट्ट	संस्कृत	३३	३५५
शनिश्चर कथा	जीवणदास	हिन्दी	४७	४६८
शनि, गोतम और पार्श्वनाथ स्तवन संग्रह		हिन्दी, संस्कृत	१५५	१४३८
शनिश्चर स्तोत्र	हरि	हिन्दी	१५५	१४३९
शब्द बोध	–	संस्कृत	१७३	१५९८
शब्द भेद प्रकाश	महेश्वर कवि	,,	१७३	१५९९
शब्द रूपावली	–	,,	१७३,	१६००,
	,,	,,	१७४	१६०४
शब्द समुच्चय	अमरचन्द	,,	१७४	१६०५
शब्द साधन	–	,,	१७४	१६०६
शब्दानुशासन वृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	,,	१७४	१६०७
शत्रुंजय तीर्थद्वार	नयसुन्दर	हिन्दी	६४	३३९
शान्ति चक्र मण्डल	–	संस्कृत	१६६	१५३४
शान्तिनाथ चरित्र	भट्टारक सकलकीर्ति	,,	८८	८१९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
शान्तिनाथ पुराण (सटीक)	भ० सकलकीर्ति	संस्कृत, हिन्दी	१२८	११७०
शालिभद्र महामुनि चरित्र	जिनसिंह सूरि (जिनराज)	हिन्दी	८८	८३१
शिव पच्चीसी एवं ध्यान बत्तीसी	बनारसीदास	,,	१५५	१४४१
शिव पुराण	वेद व्यास	संस्कृत	१२८	११७१
शिव स्तोत्र	–	,,	१५५	१४४२
शिवार्चन चन्द्रिका	श्रीनिवास भट्ट	,,	१६६	१५३५
शिशुपालवध सटीक	–	,,	६४	६४२
शिशुपालवध सटीक	महाकवि माघ	,,	६४	६४०
शिशुपालवध टीका	आनन्द देव	,,	६४	६४३
शीघ्रबोध टीका	तिलक	,,	११३	१०५७
शीघ्रबोध सार्थ	–	संस्कृत, हिन्दी	११३	१०६३
शीतलनाथ चित्र	–	–	९७	९०७
शीतलाष्टक	–	संस्कृत	१५५	१४४३
शीलरथ गाथा	–	प्राकृत	६५	६४४
शील विनती	कुमुदचन्द्र	हिन्दी, गुजराती	६५	६४५
शिलोपारी चितासन पद्मावती कथानक	–	संस्कृत	६५	६४६
शीलश्री चरित्र	–	,,	२०२	१८५२
शोभन स्तोत्र	केशरलाल	,,	१५६	१४४४
शोभन श्रुति	पं० धनपाल	,,	२३	२३६
शोभन श्रुति टीका	क्षेमसिंह	,,	२३	२३६

(स)

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
संगीतसार	पं० दामोदर	संस्कृत	१२१	११२९
सज्जन चित्तवल्लभ	मल्लिषेण	,,	६५, २०२	६४७, १८५६
सत्ता त्रिभंगी	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	१५	६६१
संध्या वन्दन	–	संस्कृत	१५६	१४४८
सन्धि अर्थ	पं० योगक	संस्कृत, हिन्दी	१७४	१६१०
सन्मति जिन चरित्र	रयधू	अपभ्रंश	८८	८३२
सन्निपात कलिका लक्षण	धन्वन्तरि वैद्य	संस्कृत, हिन्दी	३३	३३७
सप्त पदार्थ सत्रावचूरि	–	संस्कृत	११९	११२०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
सप्त व्यसन कथा	आचार्य सोमकीर्ति	,,	४७	४७०
सप्त व्यसन समुच्चय	पं० भीमसेन	,,	६५	६५१
सप्त सूत्र	–	,,	१७४	१६११
समगत वोल	–	हिन्दी	६५	६५२
समन्तभद्र स्तोत्र	–	संस्कृत	१५६	१४४९
समयसार नाटक सटीक	अमृतचन्द्र सूरि	,,	२४, २५	५२०, २५१
समयसार नाटक भाषा	पं० बनारसीदास	हिन्दी	२५	२५७
समयसार भाषा	पं० हेमराज	,,	२५	२५६
समवशरण स्तोत्र	विष्णू शोभन	संस्कृत	१५६	१४५०
समवशरण स्तोत्र	धनदेव	,,	१५६	१४५१
सम्भवनाथ चरित्र	पं० तजपाल	अपभ्रंश	८८	८३३
सम्यक्त्व कौमुदी	जयशेखर सूरि	संस्कृत	४८	४७३
सम्यक्त्व कौमुदी	पं० खेत्ता	,,	४९	४७९
सम्यक्त्व कौमुदी	कवि यशःसेन	,,	४९	४८०
सम्यक्त्व कौमुदी	जोधराज गोदीका	हिन्दी	४९	४८२
सम्यक्त्व कौमुदी सार्थ	–	संस्कृत	४९	४८४
सम्यक्त्व कौमुदी पुराण	महीचन्द	संस्कृत, हिन्दी	१२९	११७२
सम्यक्त्व रास	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	६६	६५३
सम्यक चरित्र यन्त्र	–	संस्कृत	१६६	१५३७
सम्यक दर्शन यन्त्र	–	,,	१६६	१५३९
सम्मेदशिखरजी पूजा	मंतदेव	हिन्दी	१५६	१४५३
सम्मेदशिखर महात्म्य	धर्मदास क्षुल्लक	,,	१५७	१४५५
सम्मेदशिखर विधान	हीरालाल	,,	१५७	१४५६
समाधि शतक	पूज्यपाद स्वामी	संस्कृत	२५, १५६	२६०
समास चक्र	–	,,	१७४	१६१२
समास प्रयोग पटल	पं० वररूचि	,,	१७४	१६१३
सरस्वती चित्र	–	–	९७	९१०
सरस्वती स्तुति सार्थ	–	संस्कृत	१५७	१४५८
सरस्वती स्तुति	नागचन्द्र मुनि	,,	१५८	१४६८
सरस्वती स्तोत्र	पं० बनारसीदास	हिन्दी	१५७	१४५९
सरस्वती स्तोत्र	बृहस्पति	संस्कृत	१५७	१४६०
सरस्वती स्तोत्र	श्री ब्रह्मा	,,	१५७	१४६२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
सरस्वती स्तोत्र	विष्णु	,,	१५८	१४६७
सर्वतीर्थमाल स्तोत्र	—	,,	१५८	१४६९
स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा	—	,,	२६	२६३
स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा	कार्तिकेय	प्राकृत	१९५	१७९९
स्वर सन्धि	पं० योगक	संस्कृत, हिन्दी	२०२	१८५५
सर्वधातु रूपावली	—	संस्कृत	१७५	१६१५
सवैया बत्तीसी	कवि जगन पोहकरण	हिन्दी	२०२	१८५७
सहस्त्रनाम स्तोत्र	पं० आशाधर	संस्कृत	१५८	१४७०
सहस्त्रनाम स्तवन	जिनसेनाचार्य	,,	१५८	१४७१
स्तवन पार्श्वनाथ	नयचन्द्र सूरि	,,	१५८	१४७२
स्तोत्र संग्रह	—	,,	१५८	१४७३
स्थूलभद्र मुनि गीत	नथमल	हिन्दी	६७	६६४
स्याद्वाद रत्नाकर	देवाचार्य	संस्कृत	२६	२६२
स्वर्णाकर्षण भैरव	—	,,	१५८,१६६	१५४४
स्वप्न विचार	—	हिन्दी	११४	१०७९
स्वप्नाध्याय	—	संस्कृत	११५	१०८०
स्वरोदय	—	,,	११४	१०७५
स्त्री के सोलह लक्षण	—	संस्कृत, हिन्दी	२०२	१८५४
सागारधर्मामृत	पं० आशाधर	संस्कृत	१९६	१८०१
साठी संवत्सरी	—	,,	११५	१०८२
साधारण जिन स्तवन सटीक	जयनन्द सूरि	,,	१५९	१४७९
साधारण जिन स्तवन	पं० कनककुशल गणि	,,	१६०	१४७९
साधु वन्दना	बनारसीदास	हिन्दी	१५८	१४७५
साधु वन्दना	पार्श्वचन्द्र	संस्कृत	१५९	१४७६
साधु वन्दना	समय सुन्दर गणि	हिन्दी	१५९	१४७८
सामायिक पाठ	—	प्राकृत, सस्कृत	१५९	१४८०
सामायिक पाठ सटीक	—	संस्कृत, हिन्दी	१६०	१४८७
सामायिक पाठ सटीक	पाण्डे जयवन्त	,,	२६	२६६
सामायिक पाठ तथा तीन चौबीसी नाम	—	प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी	१६०	१४९१
सामुद्रिक शास्त्र	—	संस्कृत	११५	१०८४
सामुद्रिक विचार चित्र	—	—	९७	९११

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
सारणी	—	हिन्दी	११५	१०९१
सार समुच्चय	कुलभद्र	संस्कृत	१९६	१८०४
सारस्वत दीपिका	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	,,	१७५	१६१६
सारस्वत दीपिका	मेघरत्न	,,	१७५	१६१६
सारस्वत प्रक्रिया पाठ	परमहंस परिव्राजक अनुभूतिस्वरूपाचार्य	,,	१७५	१६२०
सारस्वत ऋजू प्रक्रिया	—	संस्कृत, हिन्दी	१७७	१६४४
सारस्वत व्याकरण सटीक	अ० स्वरूपाचार्य	संस्कृत	१७८	१६४८
सारस्वत व्याकरण टीका	धर्मदेव	,,	१७८	१६४८
सारस्वत शब्दाधिकार	—	,,	१७८	१६४९
सिद्ध चक्र पूजा	शुभचन्द्र	,,	१६०	१४९२
सिद्ध चक्र पूजा	श्रुतसागर सूरि	,,	१६०	१४९३
सिद्ध चक्र पूजा	प० आशाधर	,,	१६०	१४९४
सिद्ध दण्डिका	देवेन्द्र सूरि	प्राकृत, संस्कृत	२६	२६७
सिन्दुर प्रकरण	सोमप्रभाचार्य	संस्कृत	३४, ६६	३४१, ६५४
सिन्दुर प्रकरण सार्थ	—	,,	६६	६५७
सिद्धप्रिय स्तोत्र	—	,,	१६०	१४९६
सिद्धप्रिय स्तोत्र	देवनन्दि	,,	१६०	१४९६
सिद्धप्रिय स्तोत्र टीका	सहस्त्र कीर्ति	,,	१६०	१४९७
सिद्ध सारस्वत मन्त्र गर्भित स्तोत्र	अनुभूति स्वरूपाचार्य	,,	१६१	१४९८
सिद्धान्त कौमुदी	—	,,	१७८	१६५०
सिद्धान्त चन्द्रिका	—	,,	१७८	१६५१
सिद्धान्त चन्द्रिका मूल	उद्भट	,,	१७८	१६५२
सिद्धान्त चन्द्रिका मूल	रामचन्द्राश्रम	,,	१७८	१६५३
सिद्धान्त चन्द्रिका	रामचन्द्राश्रमाचार्य	,,	१७९	१६६१
,, ,, वृत्तिका	सदानन्द	,,	१७९	१६६१
सिद्धान्त चन्द्रिका	रामचन्द्राचार्य	,,	१७८	१६५९
सिद्धान्त चन्द्रोदय टीका	श्री कृष्ण धूर्जरि	,,	११९	११२१
सिद्धान्त चन्द्रोदय	अनन्त भट्ट	,,	११९	११२१
सिद्धान्त बिन्दु स्तोत्र	शंकराचार्य	,,	१६१	१४९९
सिद्धान्त सार	जिनचन्द्र देव	प्राकृत	२६	२६८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
सिंहल सुत चतुष्पदी	समय सुन्दर	हिन्दी	४९	४८५
सिंहासन वत्तीसी	सिद्धसेन	,,	४९	४८६
सीता पच्चीसी	वृद्धिचन्द	,,	६६	६५८
सुकुमाल महामुनि चौपई	शान्ति हर्ष	,,	८८	८३४
सकुमाल स्वामी चरित्र	भट्टारक सकलकीर्ति	संस्कृत	८८	८३५
सुखबोधार्थ माला	पं० देवसेन	,,	२७	२७६
सुगन्ध दशमी कथा भाषा	खुशालचन्द	हिन्दी	५०	४८९
सुगन्ध दशमी कथा	सुशील देव	अपभ्रंश	५०	४९०
सुगन्ध दशमी कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	५०	४९१
सुगन्ध दशमी कथा	ब्रह्मज्ञानसागर	,,	५०	४९२
सुगन्ध दशमी व पुष्पांजली कथा	—	संस्कृत	५०	४९३
सुदर्शन चरित्र	भट्टारक सकलकीर्ति	,,	८९	८३८
सुदर्शन चरित्र	मुमुक्षु श्री विद्यानन्दि	,,	८९	८३९
सुदर्शन चरित्र	ब्रह्म नेमिदत्त	,,	८९	८४२
सुदर्शन चरित्र	मुनि नयनन्दि	अपभ्रंश	८९	८४३
सुप्य दोहड़ा	—	,,	३५	३५०
सुभद्रानो चोढालियो	कवि मानसागर	हिन्दी	२६	२७०
सुभाषित काव्य	भ० सकलकीर्ति	संस्कृत	३५	३५१
सुभाषित कोश	हरि	,,	२६	२७१
सुभाषित रत्न संदोह	अमितगति	,,	३५, ६६	३५२, ६६०
सुभाषित रत्नावली	भ० सकलकीर्ति	,,	३५	३५३
सुभाषितार्णव	—	प्राकृत, संस्कृत	३५	३५५
सुभाषितावली	भ० सकलकीर्ति	संस्कृत	३६	३६०
सुमतारी ढाल	शिब्बूराम	हिन्दी	६६	६६१
सुरपति कुमार चतुष्पदी	पं० भावसागर गणि	,,	८९	८४४
सूक्ति मुक्तावली शास्त्र	सोमप्रभाचार्य	संस्कृत	३४	३४३
सूक्ति मुक्तावली सटीक	—	,,	३५	३४९
सूर्य ग्रह घात	पं० सूर्य	हिन्दी	११५	१०९२
सूर्योदय स्तोत्र	पं० कृष्ण ऋषि	संस्कृत	१६१	१५००
सोनागीरी पच्चीसी	कवि भागीरथ	हिन्दी	६६	६६२
सोली रो ढ़ाल	—	,,	६६	६६२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
संग्रह ग्रन्थ	भिन्न-भिन्न कर्त्ता हैं	संस्कृत	२०२	१८५८
संदीप्त वेदान्त शास्त्र	परमहंस परिव्राजकाचार्य	,,	२०२	१८५६
सम्बोध पंचासिका सार्थ	—	प्राकृत, संस्कृत	१६७	१८०६
सम्बोध पंचासिका	कवि दास	,,	२७	२७३
सम्बोध सत्तरी	जयशेखर सूरि	,,	२७	२७४
सम्बोध सत्तरी	—	प्राकृत, हिन्दी	२७	२७५
संस्कृत मंजरी	—	संस्कृत	१७६	१६६८
संयम वर्णन	—	अपभ्रंश, हिन्दी	२०२	१८६०
संवत्सर फल	—	संस्कृत	११६	१०६३

(ष)

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
षट् कर्मोपदेशे माला	अमर कीर्ति	अपभ्रंश	१६४	१७८०
षट् कर्मोपदेश रत्नमाला	भट्टारक लक्ष्मणसेन	संस्कृत	१६४	१७८२
षट् कर्मोपदेश रत्नमाला	अमरकीर्ति	अपभ्रंश	२३	२३७
षट् कारक प्रक्रिया	—	संस्कृत	१७४	१६०६
षट्कोण यन्त्र	—	,,	१६६	१५३६
षट् दर्शन विचार	—	,,	२३	२३६
षट् दर्शन समुच्चय टीका	हरिभद्र सूरि	,,	२३	२४०
षट् द्रव्यसंग्रह टिप्पण	प्रभाचन्द्र देव	प्राकृत, संस्कृत	२४	२४२
षट् द्रव्य विवरण	—	हिन्दी	२४	२४३
षट् पाहुड़	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	२४	२४४
षट् पाहुड सटीक	,,	प्राकृत, संस्कृत	२४	२४४
षट् पाहुड	,,	,,	२४	२४५
षट् पाहुड सटीक	श्रुत सागर	,,	२४	२४६
षट् पंचासिका	भट्टोत्पल	संस्कृत	११३	१०६५
षट् पंचासिका सटीक	—	,,	११४	१०७२
षट् पंचासिका सटीक	वराहमिहिराचार्य	,,	११४	१०७३
षट् त्रिंशति गाथा सार्थ	मुनिराज ढ़ाढ़सी	प्राकृत, संस्कृत	२४	२४६
षोडष कारण कथा	—	हिन्दी, संस्कृत	५०	४६४
षोडष कारण जयमाल	—	अपभ्रंश, संस्कृत	१५६	१४४५
षोडष कारण पूजा	—	प्राकृत, संस्कृत	१५६, २०२	१४४६, १८५३
षोडष योग	—	संस्कृत	११४	१०७४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
		(क्ष)		
श्रवावचूर्णी	–	संस्कृत	१६४	१७८३
श्रावक चूल कथा	–	"	५०	४६५
श्रावक धर्म कथन	–	"	१६४	१७८४
श्रावक प्रतिक्रमण	–	प्राकृत, संस्कृत	१६१	१५०२
श्रावक व्रत झण्डा प्रकरण सार्थं	–	"	१६४	१७८६
श्रावकाचार	पद्मनन्दि	प्राकृत	१६४	१७८७
श्रावकाचार	पं० आशाधर	संस्कृत	१६५	१७९२
श्रावकाचार	–	प्राकृत	१६५	१७९४
श्रावकाचार	भट्टारक सकलकीर्ति	संस्कृत	१६५	१७९५
श्रावकाचार	पूज्यपाद स्वामी	"	१६५	१७९६
श्रावकाराधन	समय सुन्दर	"	१६५	१७९८
श्री कृष्ण का चित्र	–	–	९७	९०८
श्रीपाल कथा	पं० खेमल	संस्कृत	५०	४९६
श्रीपाल चरित्र	पं० रयधू	अपभ्रंश	९०	८४९
श्रीपाल चरित्र	–	संस्कृत, हिन्दी	९०	८५०
श्रीपाल रास	यशः विजय गणि	हिन्दी	९०	८५१
श्रीमान कुतूहल	विजय देवी	अपभ्रंश	६७	६६६
श्रुतबोध	कालिदास	संस्कृत	१०१	९४२
श्रुतबोध सटीक	गुजर	"	१०१	९४७
श्रुत स्कन्ध	ब्रह्मचारी हेमचन्द्र	संस्कृत, हिन्दी	१६१	१५०४
श्रुत स्कन्ध भाषाकार	पं. बिरधीचन्द	संस्कृत, हिन्दी	१६१	१५०४
श्रुतस्कन्ध	ब्रह्म हेमचन्द्र	प्राकृत	२७	२७७
श्रुतस्तपन विधि	–	संस्कृत	१८३	१६९६
श्रुतज्ञान कथा	–	"	५०	४९७
श्रेणिक गौतम संवाद	–	प्राकृत	२७	२८१
श्रेणिक चरित्र	शुभचन्द्राचार्य	संस्कृत	९०	८५३
श्रेणिक चरित्र	–	–	९१	८५५
श्रेणिक महाराज चरित्र	अभयकुमार	हिन्दी	९१	८५६
शृंखला बद्धश्री जिन-चतुर्विंशति स्तोत्र	–	संस्कृत	१६१	१५०१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
		(ह)		
हट प्रदीपिका	आत्माराम योगीन्द्र	संस्कृत	१६७	१५४७
हणवन्त चौपई	ब्रह्मरायमल	हिन्दी	५०	४६६
हनुमान चरित्र	ब्रह्माजित	संस्कृत	६१	८५७
हनुमान टीका	प. दामोदर मिश्र	,,	१२०	११२५
हनुमान कथा	ब्रह्म. रायमल्ल	हिन्दी	५०	४६८
हनुमान चित्र	—	—	६६	६१२
हमन वजूं यन्त्र	—	संस्कृत	१६६	१५४१
हरिवंशपुराण	ब्रह्म. जिनदास	,,	१२६	११७३
हरिवंशपुराण	मुनि यशः कीर्ति	अपभ्रंश	१२६, २०३	११७६, १८६१
हरिश्चन्द्र चौपाई	ब्रह्म. वेणीदास	हिन्दी	५१	५००
हेमकथा	रक्षामणि	संस्कृत, हिन्दी	५१	५०२
होरा चक्र	—	संस्कृत	११६	१०६५
होली कथा	छीत्तर ठोलिया	हिन्दी	५१	५०३
होली पर्व कथा	—	संस्कृत	५१	५०५
होली पर्व कथा सार्थं	—	,,	५१	५०७
होली रेणुका चित्र	पं० जिनदास	,,	६२	८६२
हंसराज वच्छराज चौपाई	भावहर्ष सूरि	हिन्दी	५१	५०८
हंस वत्स कथा	—	,,	५१	५०६
हंसराज वैद्यराज चौपाई	जिनोदय सूरि	अपभ्रंश	६२	८६३
		(क्ष)		
क्षपणसार	माधवचन्द्र गीण	प्राकृत, संस्कृत	२७	२८२
क्षत्र चूड़ामणि	वादिभसिंह सूरि	संस्कृत	५१	५१०
क्षुल्लक कुमार	सुन्दर	हिन्दी	५१	५११
क्षेम कुतूहल	क्षेम कवि	संस्कृत	६७	६६७
क्षेत्रपाल पूजा	शान्तिदास	,,	१६१	१५०५
		(त्र)		
त्राताष्टक	—	संस्कृत	१६१	१५०६
त्रिपताचक्र	—	हिन्दी	११६	१०६६
त्रिभंगी	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	२७	२८३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
त्रिभंगी टिप्पण	–	प्राकृत, संस्कृत	२७	२८४
त्रिभंगी भाषा	–	प्राकृत, हिन्दी	२८	२८७
त्रिलोक प्रज्ञप्ति	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	१८४	१६९८
त्रिलोक स्थिति	–	संस्कृत	१८४	१६९९
त्रिलोकसार	सिद्धान्त च०, नेमिचन्द्र	प्राकृत	१८४	१७००
त्रिलोकसार टीका	सहस्त्र कीर्ति	संस्कृत	१८४	१७०३
त्रिलोकसार टीका	ब्रह्मश्रुताचार्य	संस्कृत, प्राकृत	१८४	१७०५
त्रिलोकसार भाषा	सुमतिकीर्ति	हिन्दी	२८५	१७०७
त्रिलोकसार भाषा	दत्तनाथ योगी	"	१८५	१७०९
त्रिलोचन चन्द्रिका	प्रगल्भ तर्कसिंह	संस्कृत	२०३	१८६२
त्रिवर्णाचार	जिनसेनाचार्य	"	१९७	१८११
त्रिषष्ठि पवर्णस्थविरावली चरित्र	हेमचन्द्राचार्य	"	९२	८६४
त्रिषष्ठि लक्षण महापुराण	पुष्पदन्त	अपभ्रंश	१२९	११७९
त्रिषष्ठि लक्षण महापुराण	गुणभद्राचार्य	संस्कृत	१२९	११८२
त्रिषष्ठि स्मृति	पं० आशाधर	संस्कृत	१२९	११७७
त्रेपठ शलाका पुरुष चौपई	पं० जिनमति	हिन्दी	५२	५१२

(ज्ञ)

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ सूची क्रमांक
ज्ञान चौपड़	–	हिन्दी	९८	९१५
ज्ञान तरंगिणी	मुमुक्षु भट्टारक ज्ञानभूषण	संस्कृत	१६७	१५४८
ज्ञान पच्चीसी	पं० बनारसीदास	हिन्दी	२८	२८८
ज्ञान प्रकाशित दीपार्णव	–	संस्कृत	११६	१०९७
ज्ञान हिमची	कवि जगरूप	हिन्दी	६७	६६८
ज्ञानसूर्योदय नाटक	वादिचन्द्र	संस्कृत	१२०	११२६
ज्ञानाकुशं स्तोत्र	–	संस्कृत, हिन्दी	१६२	१५०७
ज्ञानाकुशं	–	संस्कृत	१६६	१५६०
ज्ञानार्णव	शुभचन्द्रदेव	"	१६७	१५५१
ज्ञानावर्ण गद्य टीका	श्रुतसागर	"	१६८	१५५५
ज्ञानार्णव तत्व प्रकरण	–	हिन्दी, संस्कृत	१६८	१५५६
ज्ञानार्णव वचनिका	पं० जयचन्द	संस्कृत	१६८	१५५८
ज्ञानार्णव वचनिका	शुभचन्द्राचार्य	हिन्दी	१६८	१५५९
ज्ञानार्णव वचनिका टीका	पं० जयचन्द छावड़ा	"	१६८	१५५९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थकार एवं ग्रन्थ

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
अकलंक	प्रायश्चित शास्त्र	१७६६	संस्कृत
	राजवार्तिक	२२७	,,
अखयराम लुहाड़िया	मलय सुन्दर चरित्र	७६२	हिन्दी
अग्निवेश	अंजन निदान सटीक	२६०	संस्कृत और हिन्दी
अनन्तकीर्ति	पल्य विधान पूजा	१३३५	संस्कृत
अनन्त भट्ट	तर्क संग्रह	११.१४	,,
	सिद्धान्त चन्द्रोय	११२१	,,
अनुप कवि	मिथ्यात्व खण्डन	११२३	हिन्दी
अनुभूति स्वरूपाचार्य	सारस्वत दीपिका	१६१६	संस्कृत
	सारस्वत प्रक्रिया पाठ	१६२०	,,
अभयकुमार	श्रेणिक चरित्र	८५६	हिन्दी
अभयदेव सूरि	जयतिहुण स्तोत्र	१२७७	प्राकृत और हिन्दी
	नवतत्व वर्णन	१७६	,,
अभयवली	बाहुबली पाथड़ी	७७७	प्राकृत
अभिनव गुप्ताचार्य	ईश्वर प्रत्यभिज्ञा सूत्र	११०८	संस्कृत
अभिनव धर्मभूषणाचार्य	न्यायदीपिका	१११७	,,
अमरकीर्ति	जिनपूजा पुरन्दर अमर विधान	१२८०	अपभ्रंश
	विशेष महाकाव्य टीका (ऋतुसंहार)	६३२	संस्कृत
	षट् कर्मोपदेश रत्नमाला	२३७, १७८०	अपभ्रंश
अमरचन्द्र	शब्द समुच्चय	१६०५	संस्कृत
अमरसिंह	अमरकोश	६७७	,,
	लिंगानुशासन	७१०	,,
अमोघपुष्प दन्त	महिम्न स्तोत्र सटीक	१३६६, १३६७	,,
अमोघ हर्ष	प्रश्नोत्तर रत्नमाला	२०४	,,
अमृतचन्द्र सूरि	प्रवचनसार वृत्ति	१६६	प्राकृत और संस्कृत
	समयसार सटीक	२५१, ५२०	,,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रंथकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
अमृतचन्द्राचार्य	पुरुषार्थ सिद्धयुपाय	१८७	संस्कृत
अमृतवत्स	पद्मावती सहस्त्रनाम	१३३१	,,
अमितगति सूरि	धर्म परीक्षा	५६१, १७३०	,,
	सुभाषित रत्न संदोह	३५२, ६६०	,,
अशग कवि	वर्द्धमान चरित्र	८२२	,,
अश्वसेन	बड़ा स्तवन	१३६४	हिन्दी
अश्विनीकुमार	अश्विनी कुमार संहिता	२८९	संस्कृत
आत्माराम योगीन्द्र	हट प्रदीपिका	१५४७	,,
आनन्द	कोकसार	१८१६	हिन्दी
आनन्ददेव	रघुवंश टीका	६१९	संस्कृत
	शिशुपालवध टीका	६४३	,,
पं० आशाधर—	इष्टोपदेश टीका	३२	,,
	ग्रहशान्ति विधान	९६३	,,
	जिनकल्याणमालाः	१७२८	,,
	जिन यज्ञकल्प	११८२, १६७७	,,
	धर्मामृत सूक्ति	१७३३	,,
	भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र	१३८९	,,
	महर्षि स्तोत्र	१३९३	,,
	सहस्त्रनाम स्तोत्र	१४७०	,,
	सागारधर्मामृत	१८०१	,,
	सिद्धचक्रपूजा	१४९४	,,
	श्रावकाचार	१७९२	,,
	त्रिषष्टि स्मृति	११७७	,,
उद्भट्ट	सिद्धान्त चन्द्रिका	१६५२	,,
उदय रत्न	नेमजी का पद	१८३	हिन्दी
उमास्वामी	तत्वार्थसूत्र	१३३	संस्कृत
एकनाथभट्ट	किरातार्जुनीय सटीक	५३३	,,
ऋषि देवीचन्द	गजसिंह कुमार चौपई	१८१८	हिन्दी
कनककीर्ति	तत्वार्थसूत्र भाषा	१३८	संस्कृत और हिन्दी
पं० कनककुशलगणि	वर्द्धमान जिनस्तवन सटीक	१४१७, १४७९	संस्कृत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रंथकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
कनकामर	करकण्डु चरित्र	७१७	अपभ्रंश
कन्निराम शाह	मिथ्यात्व खण्डन नाटक	११२४	हिन्दी
कल्याण	पद्मावती छन्द	११२३	,,
कल्याण सरस्वती	लघु सारस्वत	१५६४	संस्कृत
कार्तिकेय	कार्तिकेयानुप्रेक्षा	६७, १७६६	प्राकृत
पं० कामपाल	चौबीस कथा	३६४	हिन्दी
कालिदास	कुमारसम्भव	५३४	संस्कृत
	मेघदूत	६००	,,
	रघुवंश महाकाव्य	६१५, ६१८	,,
	श्रुतबोध	६४२	,,
	ऋतुसंहार	६३२	,,
काहना छावड़ा	गुणस्थान कथा	७२	हिन्दी
पं० काशीनाथ	ब्रह्म प्रदीप	१०१०	संस्कृत
	लग्न चन्द्रिका	१०३२	,,
किशनसिंह	क्रिया कोश	७१, ६६०	हिन्दी
	नागश्री चरित्र	७५४	,,
कीर्तिवाचक	एक गीत	५२४	,,
कीर्तिविजय	पञ्चमी सप्ताय	५८६	,,
कुन्दकुन्दाचार्य	दोहा पाहुड़	१५८	प्राकृत
	षट् पाहुड़	२४४	,,
कुमुदचन्द्राचार्य	कल्यण मन्दिर स्तोत्र	१२२५	संस्कृत
	शील विनती	६४५	हिन्दी
कुलभद्र	सार समुच्चय	१८०४	संस्कृत
कुंवर भूवानीदास	खूदीप भाषा	६१७	हिन्दी
कृपाराम	ज्योतिषसार भाषा	६३७	,,
	लघु जातक भाषा	१०३७	,,
पं० कृष्ण ऋषि	सूर्योदय स्तोत्र	१५००	संस्कृत
पं० केदारनाथ भट्ट	वृत्त रत्नाकर सटीक	३६६	,,
केशरलाल	शोभन स्तोत्र	१४४४	,,
केशवदास	केशव बावनी	५३७	हिन्दी
केशव मिश्र	तर्क परिभाषा	१२१, १११४	संस्कृत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रंथकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
केशवाचार्य	जीव तत्व प्रदीप	११२	प्राकृत और संस्कृत
खुशालचन्द	सुगन्धदशमी कथा भाषा	४८६	हिन्दी
पं० खेत्ता	सम्यक्त्व कौमुदी	४७६	संस्कृत
पं० खेमल	श्रीपाल कथा	४६६	,,
गंगादास	छन्दोमंजरी	६२२	प्राकृत और संस्कृत
	पुष्पांजली व्रतोद्यापन	५८८	हिन्दी
गजसार	चौबीस दण्डक	१०८	प्राकृत
	दण्डक सूत्र	१४२	,,
	विचार षट्त्रिंशक	२३२	प्राकृत और हिन्दी
गोरखनाथ	योगसाधन विधि	१५४४	हिन्दी
गोविन्द स्वामी	अपामार्ग स्तोत्र	११६२	संस्कृत
	पद्मावती पूजन	१३२४	,,
गौतमस्वामी	इष्टोपदेश	२७	,,
	ऋषिमण्डलस्तोत्र सार्थ	१२२३	,,
गुर्जर	श्रुतवोध सटीक	६४७	,,
गुणनन्दि	ऋषि मण्डल पूजा	१२१७	,,
	रोटतीज कथा	४६१	,,
गुणभद्राचार्य	आत्मानुशासन	१४	,,
	जिनदत्त कथा	३६६	,,
	त्रिषष्टि लक्षण महापुराण	११७६	,,
गुणरयणभूषण	जीव प्ररूपण	११३	प्राकृत
गुलाबचन्द	एक पद	३७७	हिन्दी
गुलाल	वाद पच्चीसी	२३१	,,
पं० घनश्याम	चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति	१२६०	संस्कृत
चण्ड कवि	प्राकृत लक्षण विधान	३३१	प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश इत्यादि
चण्डेश्वर सेठ	रत्न परीक्षा	१८५१	संस्कृत
चन्द्रकीर्ति	तत्वधर्मामृत	१२२	,,
चम्पा	राजनीतिशास्त्र	११३६	हिन्दी
चाणक्य	चाणक्यनीति	११३०	संस्कृत
	वृहद् चाणक्य राजनीतिशास्त्र	११४०	,,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रंथकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
चामुण्डराय	चारित्रसार टिप्पण	७३०	,,
	भावनासार संग्रह	२१५	,,
चिन्तामणि	रमलशास्त्र	१०२५	हिन्दी
चिरन्तन आचार्य	यमक स्तोत्र	६१४	संस्कृत
	रामायणशास्त्र	११६८	,,
चोर कवि	चौर पंचासिका	५४६	,,
छीत्तर ठोलिया	होली कथा	५०३	हिन्दी
जगनपोहकरण	सवैया बत्तीसी	१८५७	,,
पं० जगन्नाथ	भामिनी विलास	५६२	संस्कृत
पं० जगरूप	जिनमूर्ति उत्थापक चौपई	१८२६	हिन्दी
	ज्ञान हीमची	६६८	,,
जयकिशन	पिंगलरूपदीपक	६२७	,,
जयकीर्ति	जिन पंचकल्याणक पूजा	१२८१	संस्कृत
जयचन्द छावड़ा	आत्म मीमांसा वचनिका	५	संस्कृत और हिन्दी
	तत्वार्थसूत्र वचनिका	१३६	,,
	ज्ञानार्णव वचनिका	१५५८	,,
जयदेव	गीतगोविन्द	५४०	,,
जयमित्र हल	वर्द्धमान काव्य	६२४	अपभ्रंश
पं० जयरत्न	ज्वर पराजय	३००	संस्कृत
पाण्डे जयवन्त	सामायिकपाठ सटीक	२६६	संस्कृत और हिन्दी
जयशेखर सूरि	सम्यक्त्व कौमुदी	४७३	संस्कृत
	सम्बोध सत्तरी	२७४	प्राकृत और संस्कृत
पं० जयसर	कुल ध्वज चौपई	७१८	हिन्दी
जयानन्द सूरि	जिनस्तवन सार्थ	१२८७, १४७६	संस्कृत
जसवन्तसिंह	भाषा भूषण	६२६	हिन्दी
जिनचन्द्र सूरि	चौवोली चतुष्पदी	५४८	,,
जिनदत्त सूरि	विवेक विलास	१७७८	संस्कृत
पाण्डे जिनदास	जम्बू स्वामी कथा	३६५	हिन्दी
	होली रेणुका चित्र	८६२	संस्कृत
ब्रह्म जिनदास	अनन्तव्रतकथा	३६८	हिन्दी
	आकाशपंचमीव्रतकथा	३७२	,,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रंथकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
	बंकचूल कथा	४३६	,,
	लब्धि विधान व्रत कथा	४६२	,,
	सम्यक्त्व रास	६५३	,,
	सुगन्धदशमी कथा	४६१	,,
	हरिवंश पुराण	११७३	संस्कृत
जिनदेव	मदन पराजय	५६४	,,
जिनदास श्रावक	नवकार रास	१५२४	हिन्दी
जिनप्रभसूरि	गौतम स्तोत्र	१२५२	संस्कृत
	चतुर्विंशति जिन स्तवन	१२६४	,,
	पंच परमेष्ठी स्तोत्र	१३६१	,,
पं० जिनमति	त्रेषठ श्लाकापुरुष चौपई	५१२	हिन्दी
जिनवल्लभ सूरि	प्रश्नावली	१००६	संस्कृत
	पिण्डविशुद्धावकूरि	१८३७	संस्कृत और प्राकृत
जिनसमुद्रसूरि	पार्श्वनाथ विनती	१८३६	अपभ्रंश
जिनसेनाचार्य	चक्रधर पुराण	११४७	संस्कृत
	सहस्त्रनाम स्तोत्र	१४७१	,,
	त्रिवर्णाचार	१८११	,,
जिनहर्ष सूरि	चन्दनराजमलयगिरि चौपई	३६३	हिन्दी
	शालीभद्र महामुनि चरित्र	८३१	,,
जिनोदय सूरि	हंसराज वैद्यराज चौपई	८६३	अपभ्रंश
जीवन्धर	प्रतापसार काव्य	५८५	हिन्दी
	रत्नसार	१७७६	संस्कृत
जीवणदास	शनिश्चर कथा	४६८	हिन्दी
जोधराज गोदीका	प्रीतिंकर मुनि चरित्र भाषा	७७५	,,
	सम्यक्त्व कौमुदी	४८२	,,
जौहरीलाल	आलोचना पाठ	२५	,,
पं० टोडरमल	गोम्मटसार भाषा	७७	राजस्थानी
	मोक्षमार्ग प्रकाशक वचनिका	२२५	,,
डालूराम	अढाई द्वीपं पूजन भाषा	११८८	हिन्दी
मुनि ढाढसी	ढुण्ढिया मत खण्ड न	१८२७	प्राकृत और संस्कृत
	ढाढसी मुनि गाथा	१२०	,,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रंथकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
	षट् त्रिशंति गाथा	२४६	,,
तर्कसिंह	त्रिलोचन चन्द्रिका	१८६२	संस्कृत
पं० ताराचन्द श्रावक	चतुर्दशीव्रतोद्यापन	१२५३	,,
तिलक	शीघ्रबोध टीका	१०५७	,,
तुलसीदास	रामाज्ञा	६२०	हिन्दी
पं० तेजपाल	वरांग चरित्र	८२६	अपभ्रंश
	सम्भवनाथ चरित्र	८३३	,,
दण्डिराज दैवज्ञ	जातक	६७५	संस्कृत
दत्तनाथ योगी	त्रिलोकसार भाषा	१७०६	हिन्दी
पं० दामोदर	गुण रत्नमाला	२६७	संस्कृत
	चन्द्रप्रभ चरित्र	७२४	,,
	पंजहण महाराज चरित्र	७५७	अपभ्रंश
	वाक्य प्रकाश सूत्र सटीक	१५६६	संस्कृत
	संगीतसार	११२६	,,
दामोदर मिश्र	हनुमान टीका	११२५	,,
दास कवि	सम्बोध पंचासिका	२७३	प्राकृत और संस्कृत
दीपचन्द वाचक	लंघनपथ्य निर्णय	३२५	संस्कृत
देवकीराम	मुहूर्तचिन्तामणि सटीक	१०१५	,,
देवकुमार	माधवानल कामकन्दला चौपई	४४६	हिन्दी
देवनन्दि	अंक गर्भ खण्डार चक्र	४२	संस्कृत
	जिनगुण सम्प्रति व्रतोद्यापन	१२७६	,,
	लघु स्वयंभू स्तोत्र	१४०७	,,
	सिद्धप्रिय स्तोत्र	१४६६	,,
देवसेन	आराधनासार	२२	प्राकृत
	आलाप पद्धति	११०३	संस्कृत
	दर्शनसार	१४६	,,
	नयचक्र	११०३	संस्कृत और प्राकृत
	भाव संग्रह	२१६	प्राकृत
	सुखबोधार्थ माला	२७६	संस्कृत
देवाचार्य	स्याद्वादरत्नाकर	२६२	,,
देवेन्द्रसूरि	बन्धस्वामित्व	२०६	प्राकृत और हिन्दी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रंथकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
	सिद्ध दण्डिका	२६७	प्राकृत और संस्कृत
दौलतराम	जीव चौपई	१११२	हिन्दी
	दण्डक चौपई	१४१	,,
धनंजय	धनंजयनाममाला	६६४	संस्कृत
	नाममाला	७०५	,,
धनदेव	समवशरण स्तोत्र	१४५१	,,
धन्वन्तरि	योग शतक	३१८	संस्कृत और हिन्दी
	सन्निपातकलिका लक्षण	३३७	,,
पं० धनपाल	बाहुबली चरित्र	७७६	अपभ्रंश
	भविष्यदत्त चरित्र	७८८, १८४२	,,
	शोभन श्रुति	२३६	संस्कृत
धरणेन्द्र	चिन्तामणि पार्श्वनाथस्तोत्र	१२७०	,,
धर्मचन्द मण्डलाचार्य	गौतमस्वामी चरित्र	७२०	,,
धर्मदास गणि	उपदेशमाला	१७१४	अपभ्रंश
धर्मदेव	सारस्वत व्याकरण टीका	१६४८	संस्कृत
पं० धर्मधर	नागकुमार चरित्र	७५२	,,
धर्मनन्दाचार्य	चतुःषष्ठी महायोगिनी महास्तवन	१२६७	हिन्दी
धर्मदास क्षुल्लक	सम्मेदशिखर महात्म्य	१४५५	,,
धर्म समुद्रवाचक	रात्रि भोजन दोष विचार	१७७७	,,
द्यानतराय	दशलक्षण पूजा	१३०४	,,
	प्रतिमा बहोत्तरी	१६४	,,
नथमल	महिपाल चरित्र भाषा	७६४	,,
	स्थूलभद्र मुनि गीत	६६४	,,
नन्दगुणक्षोणी	लघु स्तवन सटीक	१४०६	संस्कृत
नन्ददास	अनेकार्थ मंजरी	६६६	हिन्दी
	मान मंजरी नाममाला	७०८	संस्कृत
नन्दन	आर्य वसुधाराधारिणी–नाम महाविद्या	५२१, ६२५, १६६५	,,
नन्दसेन	नन्द बत्तीसी	११३१	संस्कृत और हिन्दी
नयचन्द्र सूरि	पार्श्वनाथ स्तवन	१४७२	संस्कृत
नयनन्दि	विशेष सत्ता त्रिभंगी	२३३	प्राकृत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची क्रमांक	भाषा
	सुदर्शन चरित्र	७४३	अपभ्रंश
नयनसुख	वैद्यकसार	३२७	हिन्दी
	वैद्यमनोत्सव	३३१	,,
नयसुन्दर	शत्रुंजय तीर्थद्धार	३३६	,,
पं० नरसेन	वर्द्धमान काव्य	८२१	अपभ्रंश
नवलदास शाह	वर्द्धमान पुराण	११६६	हिन्दी
नागचन्द्र मुनि	सरस्वती स्तुति	१४६८	संस्कृत
नागचन्द्र सूरि	एकीभाव स्तोत्र सटीक	१२१२	,,
	विषापहार स्तोत्रादि टीका	१४३५	,,
नागार्जुन	रसेन्द्रमंगल	३२२	,,
नारचन्द्र	ज्योतिषसार	६८०	,,
नारायण	मुहूर्तचिन्तामणि	१०१६	,,
नारायणदास	छन्दसार	६२१	हिन्दी
नीलकण्ठ	ताजिक नीलकण्ठी	६६१	संस्कृत
सि०च० नेमिचन्द्राचार्य	उदय उदीरण त्रिभंगी	३६	प्राकृत
	कर्म प्रकृति	५०	,,
	गोम्मटसार	७७	,,
	चतुर्दशगुणस्थान चर्चा	८७, ८८	हिन्दी
	चौबीस ठाणा चौपई	१०६	संस्कृत
	जिन सुप्रभात स्तोत्र	१२८६	,,
	द्रव्य संग्रह	१४७	प्राकृत
	द्विसन्धानकाव्य	५५६	संस्कृत
	बन्धोदय उदीरण सत्ता विचार	२०८	प्राकृत
	भाव त्रिभंगी सटीक	१८४४	प्राकृत और संस्कृत
	व्युच्छति त्रिभंगी	२३०	प्राकृत
	वृहद् द्रव्य संग्रह सटीक	२२६	,,
	वैद्य रत्नमाला	३३३	हिन्दी
	सत्ता त्रिभंगी	२८३, ६६१	प्राकृत
	त्रिलोक प्रज्ञप्ति	१६६८	,,
	त्रिलोकसार	१७००	,,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रंथकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
पद्मकीर्ति	पार्श्वनाथ पुराण	११५८	अपभ्रंश
पद्मनन्दि	अनन्तव्रतकथा	३६६	संस्कृत
	चतुस्त्रिंशद भावना	६०	,,
	धर्म रसायण	१६५	प्राकृत
	धर्मोपदेशामृत	१७४५	संस्कृत
	पद्मनन्दि पंचविंशति	४२५, १७४६, १७५४	संस्कृत
	श्रावकाचार	१७८७	प्राकृत
पद्मनाभ कायस्थ	यशोधर चरित्र	८०६	संस्कृत
पद्मप्रभसूरि	पार्श्वनाथ स्तवन सटीक	१३४३	,,
	भूवन दीपक	१०१३	संस्कृत और हिन्दी
पन्नालाल	तेरहपंथखण्डन	१४०	हिन्दी
परमानन्द	निघण्टुनाम रत्नाकर	३०७	संस्कृत
पर्वतधर्मार्थी	द्रव्यसंग्रह सटीक	१५२	प्राकृत और संस्कृत
पल्हुप सहाय	पिंगलछन्दशास्त्र	६२५	अपभ्रंश
पाणिनी	लघु सिद्धान्त कौमुदी	१५६५	संस्कृत
पार्श्वचंद्र	साधू वन्दना	१४७६	,,
पार्श्वदेवगणि	पद्मावत्याष्टक सटीक	१३३२	,,
पार्श्वनाग	आत्मानुशासन	१६	,,
पुष्पदन्त	उत्तरपुराण	११४२	अपभ्रंश
	नागकुमार चरित्र	७५०	,,
	यशोधर चरित्र	७६८	,,
	वर्द्धमान चरित्र	८२५	,,
	त्रिषष्ठि लक्षण महापुराण	११७६	,,
पूज्यपाद	इष्टोपदेश	२६	संस्कृत
	उपासकाचार	१७१७	,,
	समाधिशतक	२६०	,,
	श्रावकाचार	१७६६	,,
पूर्णदेव	यशोधर चरित्र	८१५	,,
पूर्णसेन	योगशतक	३१४	,,
पृथ्वीधराचार्य	भूवनेश्वरी स्तोत्र	१८४५	,,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रंथकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
प्रभाचन्द्राचार्य	आत्मानुशासन सटीक	१८	,,
	उत्तरपुराण सटीक	११४५	,,
	कथा प्रवन्ध	३८३	,,
	क्रिया कलाप सटीक	१७२४	,,
	तत्वार्थ रत्न प्रभाकर	१३०	,,
	द्रव्यसंग्रह सटीक	१५१, १५७, २४२	प्राकृत और संस्कृत
	रत्नकरण्ड श्रावकाचार सटीक	१७७२	संस्कृत
	वृहद् स्वयंभू टीका	१४२३	,,
प्राक्सूरि	एकाक्षरीनाममाला	६८६	,,
फकीरचन्द	ढाल क्षमाकी	५५४	हिन्दी
मधुसुदन भट्ट	विद्वदभूषण सटीक	६३१	संस्कृत
मधुसुदन मैथिली	अन्यापदेश शतक	५१३	,,
मयुर कवि	मयुराष्टक	५६८	,,
मल्लिषेण सूरि	नागकुमार चरित्र	७५३	,,
	नागपंचमी कथा	४१६	,,
	भैरव पद्मावती कल्प	१५२६	,,
पं० महादेव	काल ज्ञान	६५४	,,
	महालक्ष्मी पद्धति	७०७	,,
	रात्रि नक्षत्र फल	१०२७	,,
मुनि महानन्द	अवन्ति सुकुमान महामुनि वर्णन	७१३	हिन्दी
महासेनाचार्य	प्रद्युम्न चरित्र	७६४, १८३८	संस्कृत
महिराज	बावन दोहा बुद्धि रसायन	५६०	अपभ्रंश और हिन्दी
महीचन्द सूरि	पद्मावती कथा	४२४	संस्कृत
	सम्यक्त्व कौमुदी पुराण	११७२	संस्कृत और हिन्दी
महेश्वर कवि	शब्द भेद प्रकाश	१५६६	संस्कृत
मार्कण्डेय	मार्कण्डेय पुराण सटीक	११६५	,,
माघ (महाकवि)	शिशुपालवध	६४२	,,
माघनंदि	वन्देतान की जयमाल	१४१८	,,
पं० माणिक्यनंदि	प्रमेयरत्नमाला	१११८	संस्कृत
माधवचन्द्रगणि	क्षपणसार	२८२	प्राकृत और संस्कृत
मानतुंगाचार्य	भक्तामर स्तोत्र	१३६६	संस्कृत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रंथकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
मानसागर	विक्रमसेन चौपई	८२८	हिन्दी
	सुभद्रानो चौढालियो	२७०	,,
माना कवि	वृन्दावन काव्य	६२६	संस्कृत
मिथिलेश्वर सूरि	न्यायसूत्र	१११६	,,
मिहिरचंद्रदास जैनी	मूर्तिपूजा मण्डन	१८४६	हिन्दी
मित्र सागर	आराधनासार	२०	,,
मुनिचंद्र सूरि	वनस्पति सत्तरी सार्थ	३२६	प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी
मेघरत्न	सारस्वत दीपिका	१६१६	संस्कृत
पं० मेघावी	धर्म संग्रह	१७३७	,,
मंतदेव	सम्मेदशिखरजी पूजा	१४५३	हिन्दी
मृगेन्द्र	नन्दीश्वर काव्य	५६५	संस्कृत
यशःकीर्ति	चन्द्रप्रभ चरित्र	७२६	अपभ्रंश
	चेतन चरित्र	७३२	हिन्दी
	प्रबोधसार	१७५५	संस्कृत
	रत्न चूड़रास	८२०	हिन्दी
	हरिवंशपुराण	११७६, १८६१	अपभ्रंश
यशःनाम	मेघकुमार ढ़ाल	५६६	हिन्दी
यशः विजय	महावीर जिन नय विचार	२२४	प्राकृत और हिन्दी
	श्रीपालरास	८५१	हिन्दी
यशःसेन	सम्यक्त्व कौमुदी	४८०	संस्कृत
पं० योगक	सन्धि अर्थ	१६१०	संस्कृत और हिन्दी
	स्वर सन्धि	१८५५	,,
योगीन्द्रदेव	परमात्म प्रकाश	१८४	अपभ्रंश
रत्नकीर्ति	मूलसंघागणि	४४८	संस्कृत
	रत्नत्रय विधान कथा	४५३	,,
मुनि रतनचन्द	भक्तामर स्तोत्र वृत्ति	१३८०	,,
रत्ननन्दि	पल्य विधान पूजा	१३३४	,,
	भद्रबाहु चरित्र	७७८	,,
रत्न शेखर सूरि	गुण स्थान चर्चा सार्थ	७५	,,
	गुणस्थान स्वरूप	१११०	,,
रयध	आतम सम्बोधकाव्य	६	अपभ्रंश

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
	दशलक्षण जयमाल	१२६८	,,
	धन्यकुमार चरित्र	७४८	,,
	प्रद्युम्नचरित्र	७६३	,,
	पार्श्वनाथ चरित्र	११५६	,,
	सन्मति जिन चरित्र	८३२	,,
	श्रीपाल चरित्र	८४६	,,
रविदेव	नलोदयकाव्य	५६८	संस्कृत
रविसागर गणि	चतुर्विंशति जिन स्तवन	१२६३	,,
रविषेणाचार्य	पद्मपुराण	११५७	,,
रक्षामणि	हेमकथा	५०२	संस्कृत और हिन्दी
पं० राघव	द्वि सन्धान काव्य सटीक	५६०	संस्कृत
रामऋषि मिश्र	नलोदय टीका	५६७	संस्कृत
रामकरण	नेमिराजूल सवैया	१८३४	हिन्दी
रामचन्द्र	रामविनोद	३२३	,,
रामचन्द्र चौधरी	चतुर्विंशति तीर्थंकरपूजा	१२६१	,,
रामचन्द्राश्रम	प्रक्रिया कौमुदी	१५८६	संस्कृत
	पुण्याश्रव कथा कोश	४३०	,,
	सिद्धान्त चन्द्रिका	१६५३, १६६१	,,
रामवल्लभ	चन्द्रलेहा चरित्र	७२८	हिन्दी
रामचन्द्र	दश अच्छेराढाल	१५७	,,
	नेमजी की ढाल	५७३	,,
रुचिरंग	इन्द्रवधुचित हुलास आरती	११६६	,,
रुद्रभट्ट	वैद्यजीवन टीका	३३०	संस्कृत
पं० रूपचन्द	विवाह पटल भाषा	१०५०	संस्कृत और हिन्दी
पं० लघु	लघुस्वराज महाकाव्य सटीक	६२१	,,
लक्ष्मणसेन	षट् कर्मोपदेश रत्नमाला	१७८२	,,
पं० लक्ष्मीदास	पद्मपुराण भाषा	१३५६	हिन्दी
लक्ष्मीनिवास	मेघदूत काव्य सटीक	६०५	संस्कृत
लक्ष्मीवल्लभ	कालज्ञान	६५६	हिन्दी
लक्ष्मी हर्ष	मंगल कलश चौपई	६१३	,,
लालचन्द	लीलावती भाषा	१०४१	,,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रंथकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
	धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई	४१२	,,
पं० लालू	कुमार सम्भव सटीक	५३६	संस्कृत
मुनि लिंगयसूरि भट्टोपाध्याय	अमरकोशवृत्ति	६८२	,,
पं० लोकसेन	दशलक्षण कथा	४०६	,,
लोलिमराज कवि	वैद्य जीवन	३३०	,,
पं० लोहर	चौबीस ठाणा चौपई	१०३	प्राकृत और हिन्दी
वल्स	मेघदूत सटीक	६०७	संस्कृत
पं० वरदराज	तार्किकसार संग्रह	१११५	,,
भ० वर्द्धमान	परांग चरित्र	८२७	,,
वररुचि	एकाक्षर नाममाला	६८४	,,
	समास प्रयोग पटल	१६३३	,,
वराहमिहिराचार्य	वृहद् जातक सटीक	१०४५	,,
	षट् पंचासिका सटीक	१०७३	,,
वसन्तराज	पल्य विचार	१००६	,,
वसुनन्दि	उपासकाध्ययन	१७१८	,,
वाग्भट्ट	नेमि निर्वाण महाकाव्य	१७३२	,,
वादिचन्द्र	ज्ञान सुर्योदय नाटक	११२६	प्राकृत और संस्कृत
वादिभसिंह	क्षत्र चुड़ामणि	५१०	संस्कृत
वादिराजसूरि	एकीभाव स्तोत्र	१२०४	,,
	विषापहार विलाप स्तवन	१४३७	,,
वामदेव	भाव संग्रह	२२१	,,
वासवसेन	यशोधर चरित्र	८१७	,,
विक्रमदेव	नेमिदूत काव्य	५७४	,,
विजयदेवी	श्रीमान् कुतुहल	६६६	अपभ्रंश
विजयराज	धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई	४१२	हिन्दी
विजयानन्द	क्रियाकलाप	१५८०	संस्कृत
मुमुक्षु विद्यानन्द	यशोधर चरित्र	७९५	,,
	सुदर्शन चरित्र	८३९	,,
विद्यानन्दि	अष्टसहस्त्रि	१०९९	,,
	द्विजपाल पूजादि विधान	१२०८	,,
विनीतसागर	विमलनाथ स्तवन	१४२९	हिन्दी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
विमल	प्रश्नोत्तर रत्नमाला	५८६	संस्कृत
भ० विश्वभूषण	इन्द्रध्वज पूजन	११९८	,,
विशाल कीर्ति	रूक्मणी व्रत विधान कथा	१६८९	मराठी
विष्णु	आलाप पद्धति	२४	संस्कृत
	पंचतंत्र	११३८	,,
	सरस्वती स्तोत्र	१४६७	,,
विष्णुशोभन	समवशरण स्तोत्र	१४५०	,,
वीरनन्दि	आचारसार	१७१०	,,
वृन्दावनदास	चौवीस तीर्थंकरों की पूजा	१२७५	संस्कृत और हिन्दी
वेणिराम	जिन रस वर्णन	१२८४	हिन्दी
वेद व्यास	गरुड़पुराण	११४६	संस्कृत
	शिवपुराण	११७१	,,
शान्तिदास	क्षेत्रपाल पूजा	१५०५	,,
शान्ति हर्ष	सुकुमाल महामुनि चौपई	८३४	हिन्दी
शिवूराम	सुमतारी ढाल	६६१	,,
शिवजीलाल	दर्शनसार सटीक	१४४	प्राकृत और संस्कृत
शिवदास	वैताल पच्चीसी कथानक	४६६	संस्कृत
शिववर्मा	कातन्त्ररूपमाला	१५७४	,,
	नन्दीश्वर पंक्ति विधान	१३१२	,,
शिव सुन्दर	पार्श्वनाथ स्तोत्र	१३३९	,,
पं० शिवा	द्वि घटिक विचार	९९६	,,
शीशराज	भरत बाहुवली वर्णन	४४१	हिन्दी
शुभचन्द्र सूरि	आशाधराष्टक	११९६	संस्कृत
शुभचन्द्राचार्य	अष्टक सटीक	१६७१	प्राकृत और संस्कृत
	चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा	१२६२	संस्कृत
	पल्यविधान पूजा	१३३३	,,
	सिद्धचक्र पूजा	१४९२	,,
	श्रेणिक चरित्र	८५३	,,
	ज्ञानार्णव	१५५९	,,
शंकर भट्ट	वैद्य विनोद	३३४	,,
शंकराचार्य	अन्नपूर्णा स्तोत्र	११९०	,,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
	भारती स्तोत्र	१३८७	,,
	सिद्धान्त विन्दु स्तोत्र	१४९९	,,
सकलकीर्ति	ऋषभनाथ चरित्र	७१५	,,
	जम्बू स्वामी चरित्र	७३३	,,
	धन्यकुमार चरित्र	७४२	,,
	धर्म प्रश्नोत्तर श्रावकाचार	१६४, १७३१	,,
	पद्मपुराण	११५५	,,
	प्रश्नोत्तरपासकाचार	२०३, १७५६	,,
	पुराणसार संग्रह	११६३	,,
	मल्लिनाथ चरित्र	७९३	,,
	मूलाचार प्रदीपिका	१७७०	,,
	यशोधर चरित्र	८११	,,
	शान्तिनाथ चरित्र	८१९	,,
	सुकुमाल चरित्र	८३५	,,
	सुदर्शन चरित्र	८३८	,,
	सुभाषित काव्य	२५१	,,
	सुभाषित रत्नावली	३५३, ३६०	,,
	श्रावकाचार	१७९५	,,
सकल भूषण	उपदेशरत्नमाला	१७१५	,,
सनतकुमार	रामचन्द्र स्तवन	१४०२	,,
सदानन्द	नयचक्रवालावबोध	१७२	हिन्दी
सदासुख	तत्वार्थ सूत्र टीका	१३७	संस्कृत और हिन्दी
समन्तभद्र	आत्ममीमांसा	५	संस्कृत
	आप्त मीमांसा	११०१	,,
	चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति	१२५६	,,
	देवागम स्तोत्र	१३१०	,,
	रत्नकरण्ड श्रावकाचार	१७७१	,,
	वृहद् स्वयंभू स्तोत्र	१४२३	,,
समय सुन्दर उपाध्याय	वृत रत्नाकर सटीक	९३६	,,
समय सुन्दर गणि	साधू वन्दना	१४७८	हिन्दी
	अर्जुन चौपई	७१२	,,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
	जिनधर्मपद	१८२५	,,
	दानशील तप संवाद	३३८	,,
	पुण्य बत्तीसी	१८६	,,
	सिंहल सूत चतुष्पदी	४८५	,,
	श्रावकाराधन	१७९८	,,
समय सुन्दर सूरि	नलदमयन्ती चौपई	५६६	हिन्दी
सहल	वैराग्यमाला	६३३	संस्कृत
सहस्त्रकीर्ति	सिद्धप्रिय स्तोत्र टीका	१४९७	,,
	त्रिलोकसार टीका	१७०३	,,
साहल सुबलकरण	अणुव्रतरत्न प्रदीप	१६६९	अपभ्रंश
सिद्धसेन सूरि	एक विंशति स्थानक	१८१४	प्राकृत और हिन्दी
	सिंहासन बत्तीसी	४८६	हिन्दी
सिद्धस्वरूप	गौतम पुरुखरी	५४२	,,
सिद्धसेन दिवाकर	जिनसहस्त्रनाम स्तोत्र	१२८६	संस्कृत
सिद्धसेनाचार्य	कल्याणमन्दिर स्तोत्र सार्थ	१२४७	,,
सिंहनन्दि	आराधना कथाकोश	९५३	,,
	रात्रिभोजन त्याग कथा	४५९	,,
सुन्दर	क्षुल्लककुमार	५११	हिन्दी
सुमतिकीर्ति सूरि	धर्म परीक्षा रास	१६३	,,
सुमतिकीर्ति	त्रिलोकसार भाषा	१७०७	,,
सुमतिसागर	तीर्थजयमाल	४०५	संस्कृत
	दशलक्षण पूजा	१३०५	,,
सुल्हण	वृत्त रत्नाकर टीका	९३८	,,
सुरेन्द्रकीर्ति	पंचमास चतुर्दशी व्रतोद्यापन	१६८३	,,
सुशीलदेव	सुगन्ध दशमी कथा	४९०	अपभ्रंश
सूद	अनेकार्थ ध्वनि मंजरी	७२	संस्कृत
	दान निर्णय शतक	५५८	,,
पं० सूर्य	सूर्य ग्रह घात	१०९२	हिन्दी
सोमकीर्ति	प्रद्युम्नचरित्र	७६८	संस्कृत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
	यशोधर चरित्र	७९६	,,
	सप्त व्यसन कथा	४७०	,,
सोमदेव शर्मा	अध्यात्म तरंगिणी	९४९	,,
सोमदेव सूरि	नीतिवाक्यामृत	११३३	,,
सोमनाथ	लघुस्तवन	१४०६	,,
सोमसेन	रामपुराण	११६६	,,
सोमश्री	निघण्टु	३०८	,,
सोमप्रभाचार्य	सिन्दुर प्रकरण	३४१, ६५४	,,
	सुक्ति मुक्तावली शास्त्र	३४३	,,
स्थानपाल द्विज	चमत्कार चिन्तामणि	९६७	,,
सांवला	जातक प्रदीप	९७६	गुजराती और हिन्दी
हरजीमल	चरचा शतक टीका	९६	हिन्दी
हयग्रीव	प्रश्नसार	१००७	संस्कृत
हरि	शनिश्चर स्तोत्र	१४३९	,,
	सुभाषित कोश	२७१	,,
हरिदत्त	गणितनाम माला	६९१, ९५७	,,
	चिन्तामणि नाममाला	६९१	,,
हरिदेव	मदनपराजय	५९७	अपभ्रंश
हरिभद्र सूरि	जम्बूद्वीप संग्रहणी	१८२४	प्राकृत
	षट् दर्शन समुच्चय टीका	२४०	संस्कृत
हरिराज कुंवर	माधवानल कथा	४४४	हिन्दी
हरिराम	छन्द रत्नावली	९१८	,,
भ० हर्षकीर्ति	कल्याण मन्दिर स्तोत्र टीका	१२४१	संस्कृत
	नैषध काव्य	५८१, ७५६	,,
	पंचमी पूजा व्रत विधान	१६८४	,,
हर्षकीर्ति सूरि	छन्दशतक	९१९	अपभ्रंश
	धातु पाठ	१५८१	संस्कृत
	प्रस्तार वर्णा	९२८	,,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
	लघुनाम माला	७०९	,,
हरिश्चन्द्र कायस्थ	धर्मशर्माभ्युदय	५६४	,,
पं० हरिषेण	धर्म परीक्षा	५६३	अपभ्रंश
हस्तिसूरि	अवन्ति सुकुमाल कथा	३६९	हिन्दी
हरिहर ब्रह्म	गरुड़ोपनिषद्	११०९	संस्कृत
हीरालाल	सम्मेद शिखर विधान	१४५६	हिन्दी
हुक्मचन्द	कल्याण मन्दिर स्तोत्र सार्थ	१२४८	सस्कृत
ब्रह्म. हेमचन्द्र	श्रुत स्कन्ध पूजन भाषा	२७७,१५०४	प्राकृत
हेमचन्द्र सूरि	निघण्टु	३०६	संस्कृत
हेमचन्द्राचार्य	अनेकार्थनाम माला	६७४	,,
	नाममाला	७०४	,,
	योग शास्त्र	१५४२	,,
	शब्दानुशासन वृत्ति	१६०७	,,
हेमप्रभ सूरि	ज्योतिष चक्र	९७७	,,
पं० हेमराज	कर्मकाण्ड सटीक	४७	हिन्दी
	नयचक्र भाषा	१७४	,,
	भक्तामर स्तोत्र भाषा	१३७९	,,
	समयसार भाषा	२५६	,,
हेमसिंह खण्डेलवाल	धातुपाठ	१५८२	संस्कृत
क्षेमकवि	क्षेम कुतुहल	६६७	,,
क्षेमसिंह	शोभन श्रुत टीका	२३६	,,
त्रिमल्लभट्ट	शतश्लोक	३५५	,,
ज्ञानचन्द्र	चतुर्विंशतिजिन स्तवन	१२६५	,,
भ० ज्ञानभूषण	तत्वज्ञान तरंगिणि	१२८	,,
	ज्ञान तरंगिणि	१५४८	,,
श्रीकृष्ण घूर्जरि	सिद्धान्त चन्द्रोदय टीका	११२१	,,
श्रीचंद	रत्नकरण्ड श्रावकाचार	१७७३	अपभ्रंश
पं० श्रीधर	भविष्यदत्त चरित्र	७७७	संस्कृत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	भाषा
श्रीनिवास भट्ट	शिवार्चन चन्द्रिका	१५३५	,,
श्रीपति	ज्योतिषरत्नमाला	९७७	,,
श्रीबृह्मा	सरस्वती स्तोत्र	१४६२	,,
श्रीभूषण	लक्ष्मी सरस्वती संवाद	६२२	,,
श्रीमत्पाद	नवकार कथा	४१८	,,
श्रीराम	बालात्रिपुरा पद्धति	१३६५	,,
	विवाह पटल	१०४९	,,
श्रीसिंह	प्रद्युम्न चरित्र	७६५	अपभ्रंश
श्रुतमुनि	भाव संग्रह	२१८	प्राकृत
ब्र० श्रुतसागर	तत्वत्रय प्रकाशिनी	१२७	संस्कृत
	तत्वार्थ सूत्र टीका	१३५	संस्कृत और हिन्दी
	द्वादश भावना	१६०	संस्कृत
	रत्नत्रयव्रत कथा	४५२	,,
	व्रत कथा कोश	४६३	,,
श्रुतसागर सूरि	सिद्ध चक्र पूजा	१४९३	,,
	षट् पाहुड़ सटीक	२४६	,,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३५६६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi